In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-78

स्तुति-कुसुमाञ्जलिः

सम्पादकः
रमाकान्तशुक्लः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला–78

काश्मीरक-महाकवि-श्रीमज्जगद्धरभट्ट-विरचित:

स्तुति-कुसुमाञ्जलि:

सम्पादक:

डॉ. रमाकान्तशुक्ल:

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीन:

राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायित: मानितविश्वविद्यालय:)

नवदेहली

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्रकाशकः
कुलसचिवः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानितविश्वविद्यालयः)
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नवदेहली-110058
ईपीएबीएक्स : 28524993, 28521994, 28524995
ई मेल : rsks@nda.vsnl.net.in
वेबसाईट : www.sanskrit.nic.in

© राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

ISBN : 978-93-82091-12-7

संस्करणम् : 2015

मूल्यम् : ₹ 383.00

मुद्रकः
डी.वी. प्रिंटर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007
मो.: 9818279798

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पुरोवाक्

संस्कृतस्य स्तोत्रसाहित्यं समृद्धं वर्तते। परमेश्वरस्य स्वभावनानुरूपाणां विभिन्नरूपाणां स्तवनं कृत्वा भक्तकवय आह्लादं सन्तोषं चानुभवन्ति। देवाधिदेवस्य महादेवस्य स्तुत्यर्थं विपुलकाव्यराशिः प्रणीतो दृश्यते। शिवस्तुति-परम्परायां पुष्पदन्तकृतं श्रीमहिम्नःस्तोत्रं, रावणकृतशिवताण्डवस्तोत्रम्, उपमन्युकृतं शिवस्तोत्रं, शङ्कराचार्यप्रणीतो वेदसारशिवस्तवः, अन्यानि च नैकानि स्तोत्राणि प्रसिद्धिं भजन्ते। चतुर्दशशताब्द्यां विद्यमानेन काश्मीरकमहाकविना जगद्धरभट्टेन प्रणीतः शिवस्तुतिपरको ग्रन्थः **'स्तुतिकुसुमाञ्जलिः'** अत्यन्तं भक्तिभावपूर्णोऽस्ति यत्र अष्टात्रिंशत् स्तोत्राणि विलसन्ति। सर्वेषु स्तोत्रेषु प्रासादिकतया कविना स्वेष्टदेवं प्रति हार्दिका भावा अभिव्यक्ताः। राजानक-रत्नकण्ठेन स्तुतिकुसुमाञ्जलेः 'लघुपञ्चिका' नाम्नी टीका विरचिता या मूलेन साकं निर्णयसागरमुद्रणालयतः प्रकाशिता जाता। तदनु पं. प्रेमवल्लभत्रिपाठिना सान्वयहिन्दीभावानुवादेन साकमस्य ग्रन्थस्य प्रकाशनं 1938तमे खैष्टेऽब्दे कृतम् यस्य प्रशंसा आचार्यमहावीरप्रसादद्विवेदिना मुक्तकण्ठेन कृता। समाप्ते चास्मिन् संस्करणे 1964तमे खैष्टेऽब्दे अच्युतराय-ग्रन्थमालायां काशीतः स्तुतिकुसुमाञ्जलेः द्वितीयं संस्करणं पं. प्रेमवल्लभत्रिपाठिना विद्वद्द्वयसहयोगेन सम्पाद्य प्रकाशितम्। अस्मिन् संस्करणे राजानक-रत्नकण्ठकृता टीकापि परिशिष्टे संयोजितासीत्। बहोः कालात् 'स्तुतिकुसुमाञ्जलिः' पुस्तकापणेषु अलभ्य एवासीत्।

पद्मश्रीविरुदोपेतेन श्रीमता डा. रमाकान्तशुक्लेनास्य ग्रन्थस्य मूलपाठः सम्पादितः येनास्य स्तोत्राणां धाराप्रवाहपाठार्थं सौकर्यं सिद्ध्येत। श्रीशुक्लेन स्तुतिकुसुमाञ्जलि-पद्यानाम् अकारादिक्रमसूची अपि निर्मिता येन अक्षरश्लोक-स्पर्धालूनामुपकारोऽपि सेत्स्यति। ग्रन्थे प्रयुक्तानां छन्दसां लक्षणैः साकं प्रतिपद्यं प्रयुक्तस्य छन्दसो निर्देशेन ग्रन्थस्यास्य उपादेयता चतुरस्रं संवर्धिता। एतेन पद्यानां छन्दःप्रकृत्यनुसारं पाठः सुगमतया कर्तुं शक्येत। स्तुतिकुसुमाञ्जलेः प्रारम्भिकद्वादशस्तोत्रेषु सुप्रसिद्धसंस्कृतकविना विद्वद्वरेण मञ्जुनाथोपाह्वेन भट्टमथुरानाथशास्त्रिणा विंशशताब्द्या उत्तरार्धस्यारम्भे एका हिन्दी-टीका

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विरचितासीत्। सा टीकापि अस्मिन् संस्करणे परिशिष्टरूपेण संयोज्यते। संस्थानेनास्य ग्रन्थस्य संस्कृत-दिवसे प्रकाशनं क्रियते। अनेन पुस्तकेन सह सुकवेः सुमधुरगायकस्य श्रीरमाकान्तशुक्लस्य स्वरेण संवलिता स्तुतिकुसुमाञ्जलेः ध्वनिसान्द्रमुद्रिकापि प्रस्तूयते।

अहं श्री रमाकान्तशुक्लम् उक्तकार्यद्वयसम्पादनार्थं साधुवादैः सभाजयामि। रसिकाः पाठकाः श्रोतारश्च स्वरमाधुरीसंवलितं पाठं प्रकाशितं संस्करणं च रसयिष्यन्त्याशासे।

दिनांक 05.08.2013

- राधावल्लभः त्रिपाठी
कुलपतिः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
नवदेहली-110058

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भूमिका

महाकवि जगद्धरभट्ट की 'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' संस्कृत का अपूर्व काव्य है। इसमें कवि ने अपने आराध्य परमेश्वर की महिमा का गान किया है तथा आत्मनिवेदन कर उनकी कृपा की आकांक्षा की है। अड़तीस स्तोत्रों में स्तुति की महत्ता प्रतिपादित की है, परमार्थैकरूप परमात्मा शम्भु की स्तुति की है, पाठकों तथा स्वयं के लिए परमेश्वर के आशीर्वाद की कामना की है, परमेश्वर के हरिहरात्मक रूप से सभी के कल्याण की कामना की है, कवि और काव्य की प्रशंसा की है, भगवान् शंकर की लीलाओं का गान किया है; भगवान् आशुतोष की शरण की कामना की है; प्रभु के आगे करुणाक्रन्दन किया है, प्रभु को प्रसन्न करने की चेष्टा की है, मन को हितोपदेश दिया है, भक्ति की स्तुति की है, भगवान् के रूप का वर्णन किया है, भोलेनाथ को विविध अवसरों पर जो हँसी आई उसका मनोरम चित्रण किया है तथा ईश्वर की प्रशंसा से प्राप्त पुण्य का वर्णन किया है।

कवि ने इन स्तोत्रों के माध्यम से मानव सुलभ भावनाओं को अपने रक्षक परमेश्वर के सम्मुख बड़े नैसर्गिक रूप में अभिव्यक्त करते हुए कभी उन्हें उपालंभ दिये है और कभी अपनी दीनता प्रदर्शित करते हुए उनकी कृपा की आकांक्षा की है। साथ ही काव्य सम्बन्धी जो चमत्कार कवि-सम्प्रदाय में मान्य हैं उन सभी का मनोरम प्रदर्शन किया है। ध्वनिरूप उत्तम काव्य हो या फिर चित्रकाव्य, सभी की सरस प्रस्तुति की है। चित्र काव्य के निबन्धन में यमक के विभिन्न रूपों में भी प्रसाद गुण आद्यन्त विद्यमान है। अन्त में कवि ने अपने वंश का परिचय भी दिया है। स्तुतिकुसुमाञ्जलि से गोस्वामी तुलसीदास जी की विनय पत्रिका भी प्रेरणा प्राप्त करती प्रतीत होती है।

महाकवि जगद्धरभट्ट का स्थितिकाल 1350 ईसवी के लगभग माना जाता है। इनके पितामह का नाम गौरधर और पिता का नाम रत्नधर था। ये काश्मीर के रहने वाले थे। इन्होंने ने 'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' के अतिरिक्त 'बालबोधिनी' नामक कातन्त्रवृत्ति की रचना की थी।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' की पाण्डुलिपियाँ जम्मू-कश्मीर, भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान तथा जोधपुर में सुरक्षित हैं। निर्णयसागर प्रेस बम्बई ने सन् 1891 ई. में काव्यमाला सीरीज़ में 23वीं जिल्द के रूप में पं. दुर्गाप्रसाद शास्त्री और पं. काशीनाथ परब के सम्पादकत्व में स्तुतिकुसुमाञ्जलि का प्रकाशन किया था। उसमें औरंगजेब के समकालीन राजानक रत्नकण्ठ द्वारा शाक 1602 में रचित लघुपञ्चिका नामक संस्कृत टीका भी प्रकाशित की गयी थी। उसके बाद 1938 में पं. प्रेमवल्लभ त्रिपाठी ने 'प्रेममकरन्द' नाम से इसका हिन्दी अनुवाद छपाया। उसके बाद वि.सं. 2021 (सन् 1964 ई.) में अच्युत ग्रन्थ माला कार्यालय काशी से उस ग्रन्थ की द्वितीयावृत्ति प्रकाशित हुई जिसमें विस्तृत भूमिका भी दी गयी। इस संस्करण के सम्पादक पं. श्रीकृष्ण पन्त, पं. प्रेमवल्लभ त्रिपाठी और श्रीगोविन्दनरहरि वेजापुरकर थे। बहुत दिनों से यह ग्रन्थ दुर्लभ या अलभ्यप्राय ही था।

प्रस्तुत संस्करण का प्रयोजन

स्तुतिकुसुमाञ्जलि का प्रस्तुत संस्करण विशेष उद्देश्य से सम्पादित किया गया है। उपलब्ध सभी संस्करणों में पाठ्य के साथ टीका या अनुवाद भी दिया गया था। इससे श्लोक का अर्थ समझने में तो सहायता मिलती थी किन्तु स्तोत्र का धारा प्रवाह पाठ करना कठिन प्रतीत होता था। प्रस्तुत संस्करण पाठकों को स्तोत्र के धारा-प्रवाह पाठ की सुविधा देगा। इसमें ग्रन्थ का मूलपाठ एक साथ स्थूलाक्षरों में सुलभ कराया गया है। आबाल वृद्ध बिना उपनेत्र के प्रयोग के, इसका तन्मय होकर पाठ कर सकेंगे और इसके नियमित पाठ से इसे कण्ठस्थ भी कर सकेंगे।

मूलपाठ के अनन्तर ग्रन्थ के सभी पद्यों की अकारादिक्रम सूची भी संलग्न की गयी है। स्तुतिकुसुमाञ्जलि में अड़तीस (38) स्तोत्र हैं तथा अन्त में कविवंश-वर्णन है जिसमें सोलह (16) पद्य हैं। दशम स्तोत्र में सत्ताइसवें श्लोक के बाद का श्लोक प्रक्षिप्त माना गया है। उस श्लोक के बाद में 10/27A संख्या डाली गयी है। कवि वंश वर्णन के पद्यों की संख्या 39/1 से 39/16 डाली गयी है। इस अकारादिक्रम सूची में एक प्रक्षिप्त और कविवंशवर्णन सहित सभी 38 स्तोत्रों में पद्य संख्या 1440 है। इस सूची से उन किशोर और युवक छात्रों को विशेष लाभ होगा जो श्लोकान्त्याक्षरी अथवा अक्षर-श्लोक-स्पर्धा के लिए तैयारी करते हैं। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान प्रतिवर्ष ऐसी अखिल भारतीय स्पर्धा का आयोजन करता है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इसके अतिरिक्त इस संस्करण में स्तुतिकुसुमाञ्जलि में प्रयुक्त छन्दों के नाम तथा लक्षण भी दे दिये गये हैं। अभी तक उपलब्ध किसी भी संस्करण में छन्दों का निर्देश नहीं था। किस-किस छन्द में कितने पद्य रचे गये हैं इसका निर्देश हो जाने से पाठकर्ता को यह सुविधा मिलेगी कि वह छन्द की प्रकृति के अनुसार पद्य का पाठ कर सकेगा। महाकवि जगद्धरभट्ट ने पैंतीस (35) छन्दों का प्रयोग किया है जिनमें कुछ मात्रिक हैं शेष वर्णिक। गीतिका मात्रिक गेय छन्द है। कवि ने अधिकतर प्रसिद्ध छन्दों का ही उपयोग किया है। सर्वाधिक पद्य-484 वसन्ततिलका में रचे गये हैं। कवि ने अवरोह क्रम से इन छन्दों का प्रयोग किया है-

वसन्ततिलका (484), वंशस्थ (119), द्रुतविलम्बित (108), शार्दूलविक्रीडित (107), मन्दाक्रान्ता (60), रथोद्धता (59), मञ्जुभाषिणी (55), आर्या (पथ्या) (47), पुष्पिताग्रा (38), शिखरिणी (37), स्रग्धरा (36), इन्द्रवज्रा (34), वियोगिनी (30), पृथ्वी (27), उपाजाति (इन्द्रवज्रा+उपेन्द्रवज्रा) (25), मालिनी (25), सुमुखी+ शशिलेखा की उपजाति (25), अनुष्टुप् (24), प्रहर्षिणी (18), गीतिका (14), तोटक (11), प्रमिताक्षरा (11), प्रमाणिका (8), उपेन्द्रवज्रा (7) औपच्छन्दसिक (6) हरिणी (5), तामरस (5), शशिकला (5), नर्कुटक/कोकिलक (2), जलोद्धतगति (2), अतिरुचिरा (1), वैतालीय (1), चण्डी (1), सुपवित्रा (1) तथा पञ्चचामर (1)।

क्षेमेन्द्र ने 'सुवृत्ततिलक' ग्रन्थ में विशिष्ट छन्दों का विशिष्ट अवसरों पर औचित्य सिद्ध किया है किन्तु जगद्धरभट्ट के पद्यों को पढ़कर तो ऐसा प्रतीत होने लगता है कि प्रभु की स्तुति में सभी छन्द उपयुक्त हैं। कवि ने किसी राजा की प्रशंसा में वाणी का उपयोग नहीं किया अपितु जगत् के कर्ता, धर्ता और संहर्ता देवाधिदेव महादेव शंकर की स्तुति में ही अपनी वाणी का सदुपयोग किया। प्रत्येक पद्य भावपूर्ण और प्रसाद गुणोपेत है। ये स्तुतियाँ भव-क्लेश पर विजय पाने का सहारा हैं। कवि ने कहा हे-

एताः पूर्वकविप्रणीतविविधग्रन्थामृतास्वादन-
क्रीडादुर्ललितं हरन्ति हृदयं वाचः कथं धीमताम्।
केषाञ्चित्पुनरीश्वरस्तुतिपदव्याहारहेवाकिनां
यास्यन्ति स्पृहणीयतां भुवि भवक्लेशस्पृशां मादृशाम्॥ (स्तु.कु. 5/36)

'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' के मूलपाठ संस्करण तैयार करने का भी एक संयोग है। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली के कुलपति आचार्य श्री राधावल्लभ

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

त्रिपाठी जी ने मुझे 'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' के ध्वन्यंकन के लिए आमन्त्रित किया। उसके लिए मुझे मूलपाठ एक साथ अपेक्षित था। मेरे पास पं. प्रेमवल्लभ त्रिपाठी जी के हिन्दी अनुवाद वाला 1938 में प्रकाशित संस्करण था जो मैं 1960 में वाराणसी से खरीदकर लाया था और जो मुझे एन.आर.ई.सी.कालेज खुर्जा के दीक्षान्त समारोह में 1961 में एम.ए. हिन्दी कक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर पुरस्कार स्वरूप दिया गया था। उस संस्करण से मूलपाठ टाइप कराया गया। जहाँ मुद्रणगत दोष दिखाई दिये उन्हें सुधार दिया गया। 29वें स्तोत्र के 23वें श्लोक का पाठ्य काव्यमाला संस्करण के अनुसार लिया गया है क्योंकि पं. प्रेमवल्लभ त्रिपाठी जी के पाठ में 'वंशस्थ' छन्द का निर्वाह नहीं हो पाता। त्रिपाठी जी के संस्करण में 'समुद्रजालिङ्गितकण्ठपीठं' पाठ है जबकि काव्यमाला में 'समुद्रजालिङ्गितकण्ठमण्डलं' पाठ है यद्यपि पाद टिप्पणी में 'क' प्रति में इस श्लोक की अनुपस्थिति सूचित की है। कुलपति प्रो. त्रिपाठी जी ने इसे ग्रन्थाकार में छापने की स्वीकृति दे दी। इस प्रकार ध्वन्यंकित सी. डी. के साथ 'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' का पूरा पाठ भी सुलभ हो सकेगा।

मैं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली के कुलपति आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी का आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे एक अच्छे काम में लगाया। त्वरित लिपिसंयोजन के लिए चि. विपिन द्विवेदी को शुभाशीर्वाद और साधुवाद देता हूँ। उन सभी पाठकों का अग्रिम आभार मानता हूँ जो इस संस्करण का उपयोग करेंगे।

यद्यपि मूलपाठ को सावधानी से पढ़ा गया है तथापि यदि कोई अशुद्धि रह गयी हो तो विद्वज्जन उसे सुधार लेने और हमें उसकी सूचना देने की कृपा करें।

विद्वच्चरणचञ्चरीक

(रमाकान्त शुक्ल)

'रमालयः'
आर 6 वाणी विहार
नई दिल्ली- 110 059

गुरुपूर्णिमा, वि.सं. 2070
दिनांक - 22.07.2013

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्तुति-कुसुमाञ्जलि-स्तोत्रानुक्रमणिका

❀❀❀

क्र.सं.	स्तोत्रक्रमांकः	स्तोत्रनाम	पद्यसंख्या	पृष्ठ
०१.	प्रथमं स्तोत्रम्	स्तुतिप्रस्तावनास्तोत्रम्	३१	१-६
०२.	द्वितीयं स्तोत्रम्	नमस्कारस्तोत्रम्	३०	७-१२
०३.	तृतीयं स्तोत्रम्	आशीर्वादस्तोत्रम्	६०	१३-२३
०४.	चतुर्थं स्तोत्रम्	मङ्गलाष्टकस्तोत्रम्	०८	२४-२५
०५.	पञ्चमं स्तोत्रम्	कविकाव्यप्रशंसास्तोत्रम्	३६	२६-३२
०६.	षष्ठं स्तोत्रम्	हराष्टकस्तोत्रम्	०८	३३-३४
०७.	सप्तमं स्तोत्रम्	सेवाभिनन्दनस्तोत्रम्	४२	३५-४२
०८.	अष्टमं स्तोत्रम्	शरणाश्रयणस्तोत्रम्	५२	४३-५१
०९.	नवमं स्तोत्रम्	कृपणाक्रन्दनस्तोत्रम्	८२	५२-६६
१०.	दशमं स्तोत्रम्	करुणाक्रन्दनस्तोत्रम्	९२*	६७-८२
११.	एकादशं स्तोत्रम्	दीनाक्रन्दनस्तोत्रम्	१४३	८३-१०७
१२.	द्वादशं स्तोत्रम्	तमःशमनस्तोत्रम्	३२	१०८-११३
१३.	त्रयोदशं स्तोत्रम्	प्रभुप्रसादनस्तोत्रम्	४३	११४-१२१
१४.	चतुर्दशं स्तोत्रम्	हितस्तोत्रम्	२८	१२२-१२६
१५.	पञ्चदशं स्तोत्रम्	करुणाराधनस्तोत्रम्	४०	१२७-१३३
१६.	षोडशं स्तोत्रम्	उपदेशनस्तोत्रम्	२७	१३४-१३८
१७.	सप्तदशं स्तोत्रम्	भक्तिस्तोत्रम्	३०	१३९-१४४
१८.	अष्टादशं स्तोत्रम्	सिद्धिस्तोत्रम्	२५	१४५-१४९
१९.	एकोनविंशं स्तोत्रम्	भगवद्रूपवर्णनस्तोत्रम्	३१	१५०-१५५
२०.	विंशं स्तोत्रम्	हसितवर्णनस्तोत्रम्	४१	१५६-१६३

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

२१.	एकविंशं स्तोत्रम्	अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्	२४	१६४-१६८
२२.	द्वाविंशं स्तोत्रम्	कादिपदबन्धस्तोत्रम्	१२	१६९-१७१
२३.	त्रयोविंशं स्तोत्रम्	शृङ्खलाबन्धस्तोत्रम्	२७	१७२-१७६
२४.	चतुर्विंशं स्तोत्रम्	द्विपदयमकस्तोत्रम्	२८	१७७-१८१
२५.	पञ्चविंशं स्तोत्रम्	रुचिरञ्जनस्तोत्रम्	२७	१८२-१८६
२६.	षड्विंशं स्तोत्रम्	पादादियमकस्तोत्रम्	३५	१८७-१९३
२७.	सप्तविंशं स्तोत्रम्	पादमध्ययमकस्तोत्रम्	३४	१९४-१९९
२८.	अष्टाविंशं स्तोत्रम्	पादान्तयमकस्तोत्रम्	२७	२००-२०४
२९.	एकोनत्रिंशं स्तोत्रम्	एकान्तरयमकस्तोत्रम्	३६	२०५-२११
३०.	त्रिंशं स्तोत्रम्	महायमकस्तोत्रम्	८१	२१२-२२५
३१.	एकत्रिंशं स्तोत्रम्	नतोपदेशस्तोत्रम्	३०	२२६-२३१
३२.	द्वात्रिंशं स्तोत्रम्	शरणागतोद्धरणस्तोत्रम्	०८	२३२-२३३
३३.	त्रयस्त्रिंशं स्तोत्रम्	कर्णपूरस्तोत्रम्	४५	२३४-२४१
३४.	चतुस्त्रिंशं स्तोत्रम्	अग्र्यवर्णस्तोत्रम्	१३	२४२-२४४
३५.	पञ्चत्रिंशं स्तोत्रम्	ईश्वरप्रशंसास्तोत्रम्	२५	२४५-२४९
३६.	षट्त्रिंशं स्तोत्रम्	स्तुतिफलप्राप्तिस्तोत्रम्	४१	२५०-२५७
३७.	सप्तत्रिंशं स्तोत्रम्	स्तुतिप्रशंसास्तोत्रम्	२०	२५८-२६१
३८.	अष्टात्रिंशं स्तोत्रम्	पुण्यपरिणामस्तोत्रम्	३०	२६२-२६७
३९.		ग्रन्थकर्तुर्वंशवर्णनम्	१६	२६८-२७०
४०.		पद्यानाम् अकारादिक्रमसूची		२७१-२९०

समुदितश्लोकसंख्या १४४०

* १०/२७अ प्रक्षिप्त रूप में है। जिसको योग में जोड़ा गया है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

काश्मीरक-महाकवि-श्रीमज्जगद्धरभट्ट-विरचितः

स्तुति-कुसुमाञ्जलिः

(मूलपाठः)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विषयसूची

❀❀❀

१.	पुरोवाक्	III-IV
२.	भूमिका	V-VIII
३.	स्तुतिकुसुमाञ्जलि-स्तोत्रानुक्रमणिका	IX-X
४.	स्तुतिकुसुमाञ्जलिः (मूलपाठः)	००१-२७०
५.	स्तुति-कुसुमाञ्जलि-पद्यानाम् अकारादिक्रमसूची	२७१-२९०
६.	स्तुतिकुसुमाञ्जलि के स्तोत्रों में प्रयुक्त छन्दों का क्रम	२९१-२९४
७.	'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' में प्रयुक्त छन्दों में निर्मित पद्यों की संख्या तथा छन्दों के लक्षण	२९५-३००
८.	स्तुतिकुसुमाञ्जलि की हिन्दी टीका	३०१-४३१

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ॐ श्री गणेशाय नमः

काश्मीरक-महाकवि-श्रीमज्जगद्धरभट्ट-विरचितः

स्तुति-कुसुमाञ्जलिः

(मूलपाठः)

अथ प्रथमं स्तोत्रम्

स्तुतिप्रस्तावनास्तोत्रम्

❀❀❀

ह्लादवद्भिरमलैरनर्गलै
जीर्वनैरघहरैर्नवैरियम्।
स्वामिनः क्लमशमक्षमैः क्षणं,
रोद्धुमर्हति मनः सरस्वती॥ १/१

स्वामिनः स्थिरगुणा सवक्रिमा,
कर्णयोरमृतवर्षिणी मनः।
कर्त्तुमर्हति मुहूर्तमुज्झित-
स्वैरचापलमियं सरस्वती॥ १/२

रम्यरीतिरनघा गुणोज्ज्वला,
चारुवृत्तरुचिरा रसान्विता।
रञ्जयत्वियमलङ्कृता मनः,
स्वामिनः प्रणयिनी सरस्वती॥ १/३

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सत्त्वधाम वरलाभयाचित-
श्लाघ्यवर्ण-विशदा विशत्वियम्।
निर्मलं सघनकालविप्लवा,
मानसं स्मरजितः सरस्वती॥ १/४

भक्तितः सपदि सर्वमङ्ला,
बोधिता निजधियैव मेऽनया।
आरिराधयिषतीश्वरं वरं,
लब्धुमीप्सितमियं सरस्वती॥ १/५

ओमिति स्फुरदुरस्यनाहतं,
गर्भगुम्फितसमस्तवाङ्मयम्।
दन्ध्वनीति हृदि यत्परं पदं,
तत्सदक्षरमुपास्महे महः॥ १/६

भानुना तुहिनभानुना बृहद्-
भानुना च विनिवर्तितं न यत्।
येन तज्झगिति शान्तिमान्तरं
ध्वान्तमेति तदुपास्महे महः॥ १/७

कीचकादिकुहरेष्विवाऽम्बरं,
बिम्बमम्बरमणेरिवोर्मिषु।
एकमेव चिदचित्स्वनेकधा,
यच्चकास्ति तदुपास्महे महः॥ १/८

तर्ककर्कशगिरामगोचरं,
स्वानुभूतिसमयैकसाक्षिणम्।
मीलिताखिलविकल्पविप्लवं,
पारमेश्वरमुपास्महे महः॥ १/९

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वावभासमयमेव मायया,
येन भिन्नमवभास्यते जगत्।
चित्रमिन्द्रधनुरभ्रलेखया,
भास्वतेव तदुपास्महे महः॥ १/१०

हृद्गुहागहनगेहगूहितं,
भासिताऽखिलजगत्त्रयोदरम्।
कन्दकन्दरदरीमुखोद्गत-
प्राणमारुतकृतस्थिरस्थितिम्॥ १/११

त्यक्तसर्वदशमक्षयोदयं,
रूपवर्जितमभित्तिसंश्रयम्।
यं निरञ्जनमनक्षगोचरं,
दीपमद्भुतमुशन्ति तं स्तुमः॥ १/१२ (युग्मम्)

यस्य शस्यमहसो निरर्गलं,
योगमाप्य चरणाब्जरेणुभिः।
अद्भुतां दधति नीरजस्कतां,
तं जगत्पतिमुमापतिं स्तुमः॥ १/१३

चारुचन्द्रकलयोपशोभितं,
भोगिभिः सह गृहीतसौहृदम्।
अभ्युपेतघनकालशात्रवं,
नीलकण्ठमतिकौतुकं स्तुमः॥ १/१४

इच्छयैव भुवनानि भावयन्,
यः प्रियोपकरणग्रहोऽपि सन्।
अप्रियोपकरणग्रहोऽभवत्,
तं स्वशक्तिसचिवं शिवं स्तुमः॥ १/१५

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पद्मसद्म-करमर्दलालितं,
पद्मनाभ-नयनाब्जपूजितम्।
पद्मबन्धु-मुकुटांशु-रञ्जितं,
पादपद्मयुगमैश्वरं स्तुमः॥ १/१६

अंघ्रियुग्ममरेशमस्तक-
स्रग्भिरुज्ज्वलमुरश्च भस्मभिः।
शेखरञ्च हिमरश्मि-रश्मिभि-
र्यो बिभर्ति तमुपास्महे विभुम्॥ १/१७

मूर्ध्नि चन्द्रकर-सुन्दरत्विषं,
फेनपिण्डपरिपाण्डुरस्मिताम्।
देहिनां वहति तापहारिणीं,
सिद्धसिन्धुमतनुं तनुं च यः॥ १/१८

कर्त्तुमुत्सहत एव सेवको,
यस्य कस्य न मनः सकौतुकम्।
नैति शान्तनव-विग्रहोऽपि सन्,
भीष्मतां न च विचित्रवीर्यताम्॥ १/१९

आपतन्तमयमं यमं पुरो,
यः सविग्रहमविग्रहं व्यधात्।
दर्पकं व्यधित योऽप्यदर्पकं,
तं विषादमविषादमाश्रये॥ १/२०

अम्बरेण गगनेन संवृतं,
जीवनैः शिरसि वारिभिः श्रितम्।
भोगिभिश्च भुजगैर्विभूषितं,
शङ्करं शुभकरं भजामहे॥ १/२१

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पावकेन शिखिनोपशोभितं,
भासितं सितरुचा हिमांशुना।
भास्वता च रविणा विराजितं,
लोचनत्रयमुपास्महे विभोः॥ १/२२

अभयङ्करमाश्रितं स्वरूपं,
दधदुद्दामसमग्रधामयोगम्।
शुचितारकमीश्वरस्य नेत्र-
त्रितयं शूलशिखात्रयं च वन्दे॥ १/२३

मीलद्विलोचन-समुद्ग-समुद्गताऽश्रु-
श्रोतःस्त्रुतिस्नपित-मूलकपोलभागाः।
देवं शशाङ्ककलया कलिताऽवतंसं
शंसन्ति सन्त इह शङ्कर शङ्करेति॥ १/२४

भ्रान्तोऽस्मि वैशसमये समयेऽहमत्र
मिथ्यैव दिग्भ्रमहतो महतोऽपमार्गान्।
विश्रम्य नन्दनवने नवने शिवस्य
खेदस्तु सम्प्रति समेति स मेऽवसानम्॥ १/२५

यत्पार्वणेन्दुकर-सुन्दरवाह-हंस-
संवासदुर्ललितयाऽपि वचोधिदेव्या।
विश्रम्यते मनसि नः समले सलीलं
तत्सौभगं भगवतो जयतीन्दुमौलेः॥ १/२६

यं भूषयन्ति कमनीयमहीनभोगाः
स्तुत्वा भवन्ति कृतिनो यमहीनभोगाः।
चित्तोचितं तमपहाय महीनभोगाः
कर्तुं परत्र धृतसंयम! ही न भो गाः॥ १/२७

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अवाप्य गुरुभिर्गुणैर्जगति गौरवं ध्यायत-
स्तमीरमणशेखरं भवति गौरवन्ध्या यतः।
अतस्तमुमया समं कृतमहाविलासं प्रति
स्तुतौ विरचिता मया मतिरनाविला सम्प्रति।। १/२८

मत्त्वा सद्यः सुकृतसुलभं दुर्लभं जीवलोकं
लब्ध्वा सर्वव्यसनशमनं मित्रमेकं विवेकम्।
धन्याः केचित्कृतकुमुदिनीकान्तलेखाऽवतंसं
हंसं शंसन्त्यमलमधुरैर्भक्तिसिक्तैर्वचोभिः।। १/२९

अन्तःशून्यं गुणविरहितं नीरसं सर्गहीनं
काव्यं हृद्यं ननु सुमनसां न स्थलाम्भोरुहाभम्।
तत्रापीशः श्रवणपुलिने गाढरागानुबन्ध-
प्रोद्यद्भक्तिप्रगुणतमदः कर्त्तुमर्हत्यगर्हम्।। १/३०

अथवाऽमृतबिन्दुवर्षिणीन्दु
द्युतिरानन्दममन्दमर्पयन्ती।
नयति ध्रुवमार्द्रतामियं गी-
र्गिरिजाजीवितनाथमिन्दुकान्तम्।। १/३१

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'स्तुतिप्रस्तावना' नामकं प्रथमं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ द्वितीयं स्तोत्रम्

नमस्कारस्तोत्रम्

❀❀❀

ॐ नमः परमार्थैक-
रूपाय परमात्मने।
स्वेच्छावभासिताऽसत्य-
भेदभिन्नाय शम्भवे।। २/१

नमः शिवाय निःशेष-
क्लेश-प्रशमशालिने।
त्रिगुणग्रन्थिदुर्भेद-
भवभेदविभेदिने।। २/२

नमः समस्तगीर्वाण-
किरीटघटिताङ्घ्रये।
जगन्नगरनिर्म्माण-नर्म-
शर्मद-कर्म्मणे।। २/३

नमस्तमस्वतीकान्त-
खण्ड-मण्डित-मौलये।
तापान्धकारनिर्वेद-
खेदविच्छेदवेदिने।। २/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नमः समस्तसंकल्प-
कल्पना-कल्पशाखिने।
विकासिकलिकाकान्त-
कलापाय स्वयम्भुवे॥ २/५

नमस्तमःपराभूत-
भूतवर्गानुकम्पिने।
श्वेतभानुबृहद्भानु-
भानुभासितचक्षुषे॥ २/६

नमः शमनहुङ्कार-
कातराऽऽतुरहर्षिणे।
भवाय भवदावाग्नि-
विविग्नाऽमृतवर्षिणे॥ २/७

नमः समदकन्दर्प-
दर्पज्वर-भरच्छिदे।
दुर्वारभवरुग्भङ्ग-
भिषजे वृषलक्ष्मणे॥ २/८

नमो जन्मजरामृत्यु-
भीतिसातङ्कपालिने।
करुणामृतसम्पर्क-
पेशलाय कपालिने॥ २/९

नमो निसर्ग-निर्विघ्न-
प्रसादामृत-सिन्धवे।
संसार-मरु-सन्ताप-
तापितापन्न-बन्धवे॥ २/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नमः सान्द्राऽमृतस्यन्दि-
घनध्वनितशोभिने।
महाकालाय भीष्मोष्म-
भवग्रीष्मक्लमच्छिदे॥ २/११

नमो वाङ्मनसातीत-
महिम्ने परमेष्ठिने।
त्रिगुणाष्टगुणाऽनन्त-
गुण-निर्गुण-मूर्त्तये॥ २/१२

हंसाय दीर्घदोषान्त-
कारिणेऽम्बरचारिणे।
स्वमहोमहिमध्वस्त-
समस्ततमसे नमः॥ २/१३

यः सुवर्णेन चन्द्रेण
गाङ्गेयेनाग्निजन्मना।
काञ्चनेन श्रियं धत्ते
तस्मै स्मरजिते नमः॥ २/१४

निजाङ्गभङ्गभङ्ग्यापि
भक्तानुग्रहकारिणे।
नमः स्तम्भितजम्भारि-
भुजस्तम्भाय शंभवे॥ २/१५

निःसामान्याय मान्याय
न्यायमार्गोपदेशिने।
मूर्धन्याय वदान्याय
धन्याय स्वामिने नमः॥ २/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नमः संहृतकालाय
कालायसगलत्विषे।
गङ्गाधौतकलापाय
कलापायमविन्दते।। २/१७

जिष्णुना जिष्णुना लोकान्
विष्णुना प्रभविष्णुना।
ब्रह्मणा ब्रह्मणाद्येन
स्तुताय स्वामिने नमः।। २/१८

कुलशैलदलं पूर्ण-
सुवर्ण-गिरि-कर्णिकम्।
नमोऽधितिष्ठतेऽनन्त-
नालं कमलविष्टरम्।। २/१९

निमित्तमन्तरेणापि
यः सपङ्कजनाभये।
प्रवर्तते विभुस्तस्मै
नमः पङ्कजनाभये।। २/२०

नमः सोमार्धदेहाय
सोमार्धकृतमौलये।
श्वेताभयसमुद्धूत-
श्वेताभयशसे नमः।। २/२१

विनतानन्दनं नाग-
विग्रहोग्रमुखं दृशा।
विनायकमुपासीनं
भजते स्वामिने नमः।। २/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नमो ब्रह्म-हरि-त्र्यक्ष-
श्रवसे भवसेतवे।
जगत्सर्ग-स्थिति-ह्रास-
हेतवे वृषकेतवे॥ २/२३

कर्णिकादिष्विव स्वर्ण-
मर्णवादिष्विवोदकम्।
भेदिष्वभेदि यत्तस्मै
परस्मै महसे नमः॥ २/२४

यमेकमेव श्रयतो न जायते
स्पृहा परस्मै महतेऽपि नाकिने।
नमः समस्तापदुपेतपालन-
व्रताय तस्मै विभवे पिनाकिने॥ २/२५

विधौ जगत्सर्गविधौ यदाहितं
प्रतिष्ठितं यत्स्थितिकारणे विधौ।
समूढमूढार्ध-विधौ लये च यत्
पराय तस्मै महसे नमो नमः॥ २/२६

नमः समुत्पादितताकद्विषे
नमस्त्रिधामाश्रित-तारकत्विषे।
नमो जगत्तारकपुण्यकर्म्मणे
नमो नमस्तारकराजमौलये॥ २/२७

नमो नमस्तेऽमृतभानुमौलये
नमो नमस्तेऽमृतसिद्धिदायिने।
नमो नमस्तेऽमृतकुम्भपाणये
नमो नमस्तेऽमृतभैरवात्मने॥ २/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नमस्तमः पारपरार्ध्यवृत्तये
नमः समस्ताध्वविभक्तशक्तये।
नमः क्रमव्यस्त-समस्त-मूर्त्तये
नमः शमस्थार्पितभक्तिमुक्तये॥ २/२९

विजयजयप्रदाय शबराय वराय नमः
सकलकलङ्कसङ्कर-हराय हराय नमः।
जगदगद-प्रगल्भ-विभवाय भवाय नमः
प्रवरवरप्रकाशित-शिवाय शिवाय नमः॥ २/३०

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'नमस्कारात्मक' नामकं द्वितीयं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ तृतीयं स्तोत्रम्

आशीर्वादस्तोत्रम्

❀❀❀

नित्यं निरावृति निजानुभवैकमान-
मानन्दधाम जगदङ्कुरबीजमेकम्।
दिग्देशकाल-कलनादि-समस्त-हस्त-
मर्दासहं दिशतु शर्म महन्महो नः॥ ३/१

व्योम्नीव नीरदभरः सरसीव वीचि-
व्यूहः सहस्रमहसीव सुधांशुधाम।
यस्मिन्निदं जगदुदेति च लीयते च
तच्छाम्भवं भवतु वैभवमृद्धये नः॥ ३/२

लोकत्रयस्थितिलयोदयकेलिकारः
कार्य्येण यो हरि-हर-द्रुहिणत्वमेति।
देवः स विश्वजनवाङ्मनसातिवृत्त-
शक्तिः शिवं दिशतु शश्वदनश्वरं वः॥ ३/३

सर्वः किलायमवशः पुरुषाणुकर्म-
कालादिकारणगणो यदनुग्रहेण।
विश्वप्रपञ्चरचनाचतुरत्वमेति
स त्रायतां त्रिभुवनैकमहेश्वरो वः॥ ३/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एकस्य यस्य सकलः करणानपेक्ष-
ज्ञानक्रियस्य पुरतः स्फुरति प्रपञ्चः।
पश्यञ्जगत् करतलाऽमलकीफलाभं
लाभं स पुष्यतु परं परमेश्वरो वः॥ ३/५

यः कन्दुकैरिव पुरन्दर-पद्म-सद्म-
पद्मापति-प्रभृतिभिः प्रभुरप्रमेयः।
खेलत्यलङ्घ्यमहिमा स हिमाद्रिकन्या-
कान्तः कृतान्तदलनो लघयत्वघं वः॥ ३/६

सेवानमन्निखिलखेचरमौलिरत्न-
रश्मिच्छटा-पटल-पाटल-पादपीठः।
पुष्णातु धाम कपिशीकृत-शैलशृङ्ग-
त्वङ्गन्मृगाङ्क-मधुराकृतिरीश्वरो वः॥ ३/७

अङ्गं भुजङ्गरचिताङ्गदभङ्गि तुङ्गं
त्वङ्गत्तरङ्ग-गगनाङ्गनसङ्गि-गङ्गम्।
बिभ्रद्विभुर्विहितरङ्गदनङ्गभङ्ग-
मङ्गीकरोत्वरमभङ्गुरमिङ्गितं वः॥ ३/८

यः कुण्डमण्डलकमण्डलुमन्त्रमुद्रा-
ध्यानार्चनस्तुतिजपाद्युपदेशयुक्त्या।
भोगापवर्गदमनुग्रहमानतानां
व्यानञ्ज रञ्जयतु स त्रिजगद्गुरुर्वः॥ ३/९

शंभोरदभ्रशरदभ्रतुषारशुभ्रं
भ्राजिष्णु-भूतिभर-शीभर-भास्वराभम्।
दिश्याद्वपुर्भसल-नीलगलं कलङ्का-
लङ्कारशारदशशाङ्कनिभं शुभं वः॥ ३/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

येनोपदिष्टमनपायमुपायमाप्य
स्वर्गापवर्गविभवैर्विभवो भवन्ति।
देवः स वः सकलकर्मफलोपलम्भ-
विस्त्रम्भभूमिरभिवाञ्छितसिद्धयेऽस्तु।। ३/११

मूलोज्झितेन कलिकाकलितेन ताप-
शान्तिक्षमेण नमतामविपल्लवेन।
सद्यःफलेन सुमनोभिरुपासितेन
स्थाणुः श्रियेऽस्तु भवतां वपुषाऽद्भुतेन।। ३/१२

दिव्यापगाप्लवनपावकसेवनाभ्यां
बिभ्रत्तनुं शुचिमपेतकलङ्कशङ्काम्।
दोषानुषङ्गरहितस्तिमिरोष्मशान्त्यै
भूयाद्द्विजाधिपतिरीश्वरवन्दितो वः।। ३/१३

दानाम्बुनिर्भरकरस्तनयः स यस्य
श्रीमान् स यस्य धनदः सविधे विधेयः।
यः संश्रितः शिरसि मुक्तकरेण राज्ञा
पुष्णातु वः कनकवर्षघनः स देवः।। ३/१४

निर्मत्सरौ निवसतः सममर्कचन्द्रौ
नीरानलावमृतहालहलौ च यत्र।
राज्ञा नवेन तदधिष्ठितमुज्ज्वलेन
शार्वं वपुर्भवतु वाञ्छितसिद्धये वः।। ३/१५

वक्ता च यः सुखयिता च विभुः श्रुतीनां
वक्षः करं च वहते कमलाङ्कितं यः।
यो मूर्ध्नि वर्ष्मणि च हैमवतीं बिभर्ति
त्रैधं भवन् भवतु वः स शिवः शिवाय।। ३/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तापत्रयाऽपहृतये त्रिशिखं त्रिवर्ग-
सिद्ध्यै त्रिधामलयनं नयनत्रयं च।
त्रिःस्त्रोतसोऽपि सलिलं त्रिमलापनुत्यै
भूयात्त्रिलोकमहितं त्रिपुरद्विषो वः।। ३/१७

यद्दर्शनाऽमृतसुखानुभवेन धन्या
नेत्रोत्पलानि चिरमर्धनिमीलितानि।
दृङ्मार्गगोचररवीन्दुकर-प्रसङ्ग-
भङ्ग्येव बिभ्रति शिवः शिवदः स वोऽस्तु।। ३/१८

कालं दृशैव शमयन् सफलप्रयासं
यः श्वेतमुत्तमचमत्कृतिकृच्चकार।
श्वेतं यशः प्रशमयन्नसतां सतां च
कालं कृतार्थयति यः स शिवोऽवताद्वः।। ३/१९

बभ्रुर्बिभर्त्यलिकपावकसौहृदं यो
यत्राहिरेति शिखिना सह सामरस्यम्।
जूटः स वः सममरातिभिरप्यमर्ष-
मुक्तां स्थितिं प्रथयतु प्रमथाधिपस्य।। ३/२०

अव्यात्स वः शिरसि यस्य विलोचनाग्नि-
ज्वालावलीढसुरसिन्धुजलोपगूढः।
अद्यापि वाडवशिखापरिणद्धमुग्ध-
दुग्धाब्धिमध्यग इव श्रियमेति चन्द्रः।। ३/२१

अव्यात्सः वः सुकृतिनामलिकेषु धूली-
पट्टीकृतेषु पदरेणुभरेण यस्य।
धाताक्षराणि लिखति क्षितिपालमौलि-
मालार्चिताङ्घ्रिकमलो भविता भुवीति।। ३/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शैवी शिवं दिशतु शीतमरीचिलेखा
जूटाहिरत्नकिरणच्छुरणारुणा वः।
देवी नवीननखलक्ष्मधिया पिधत्ते
यत्संक्रमं कुचतटे पटपल्लवेन।। ३/२३

देव्यास्तदस्तु कुचचूचुकमिन्दुमौलि-
देहार्धबद्धवसतेरमृताप्तये वः।
अभ्येति यन्मदनपूज्यसुवर्णपीठ-
पृष्ठप्रतिष्ठितहरिन्मणिलिङ्गभङ्गिम्।। ३/२४

याः क्षीरसिन्धुलहरीवृतमन्दराद्रि-
मुद्रामनङ्गदमनस्य नयन्ति जूटम्।
द्विर्भाविताविरलसिद्धसरित्तरङ्गा-
स्ता लङ्घयन्त्वघमघर्मरुचो रुचो वः।। ३/२५

लोकत्रयाऽभ्युदयजन्ममही महीयः
स्थानाधिरोहणविधावधिरोहिणी या।
सा चन्द्रचूडमुकुटध्वजवैजयन्ती
जह्नोरनिह्नुतनया तनयाऽवताद्वः।। ३/२६

भालाग्निकीलकलिताखिलरन्ध्रभागं
भर्गस्य वो दिशतु शर्म शिरःकपालम्।
यत्कालवह्निवपुषः पचतः प्रभूत-
भूतव्रजं व्रजति तस्य महानसत्वम्।। ३/२७

चान्द्रं च धाम सुरनिर्झरिणी जलं च
हस्तस्थहेमकलशाऽमृतजीवनं च।
स्निग्धं च दृग्विलसितं हसितं सितं च
युष्माकमूष्मशमनाय भवन्तु शम्भोः।। ३/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मूर्ध्नि द्युसिन्धुधवले धवलेन्दुलेखा
कैलासशैलशिखरे धवलश्च वाहः।
नीहारहारिणि वपुष्यपि भूतिरेषा
पुष्णातु वः सदृशसंघटना शिवस्य॥ ३/२९

उत्तप्तहेमरुचि चन्द्रकला कलापे
बालप्रवालरुचिरे च करे कपालम्।
ताम्रेऽधरे च हसितं सितमद्भुतेयं
विच्छित्तिरिन्दुशिरसः कुशलं क्रियाद्वः॥ ३/३०

श्रेयः प्रयच्छतु परं सुविशुद्धवर्णा
पूर्णाभिलाषविबुधाधिपवन्दनीया।
पुण्या कविप्रवरवागिव बालचन्द्र-
चूडामणेश्चरणरेणुकणावली वः॥ ३/३१

हारीकृतोल्बणफणीन्द्रफणेन्द्रनील-
नीलच्छविच्छुरणशारमुरः स्थलं वः।
पुष्णातु निह्नुतनगेन्द्रसुताकुचाग्र-
कस्तूरिकामकरिकाकिणमिन्दुमौलेः॥ ३/३२

युष्माकमस्तु नवनीलसरोजदाम-
श्यामद्युतिः सुमतये शितिकण्ठकण्ठः।
यः केतकीधवलवासुकिभोगयोगाद्-
गङ्गौघभिन्नगगनाङ्गनभङ्गिमेति॥ ३/३३

क्षीरार्णवस्य चरणाब्जतले निवास-
मासेदुषस्तनयमप्रतिमप्रसादः।
यो मूर्ध्नि लालयति बालमसौ दयाब्धि-
र्देवस्तनोतु मुदमाश्रितवल्लभो वः॥ ३/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

या राजहंसशिखिसंभृतकान्तिरेति
सद्यस्तिरोहितघनावरणा प्रसादम्।
सा प्रावृडन्तशरदादिदिनेष्विव द्यौः
शम्भोरभीष्टफलपाककृदस्तु दृग्वः।। ३/३५

अन्तर्धृताहिमकरज्वलनोदितेन्दुः
स्वःसिन्धुसङ्गसुभगा परमेश्वरस्य।
औदन्वतीव तनुरस्तु गजाश्वरत्न-
श्रीलाभकृत्सुमनसाममृताय दृग्वः।। ३/३६

यत्राग्निरीप्सति कणं न विवृत्य जिह्वां
नैति प्रतिक्षपमपेतवसुस्तमर्कः।
क्षीणस्तमिन्दुरपि न श्रयति श्रियेऽस्तु
श्रीधाम तत्पुररिपोर्नयनत्रयं वः।। ३/३७

अर्कस्य नोदगयनं शिशिरेऽपि यत्र
शीतत्विषो न बहुलेऽपि कलापलापः।
क्षामं च धाम न वहत्यपि वह्निरह्नि
तत्त्रायतां पुररिपोर्नयनत्रयं वः।। ३/३८

यामाश्रितोऽम्बरमणी रमणीयधामा
कामान्तकावनलसाऽनलसाद्ध्यधाद्या।
यापीन्दुसम्भवसुधावसुधा दृशस्ताः
शर्वस्य वः शिवपुषो वपुषो भवन्तु।। ३/३९

पुष्णातु वः प्रथमसङ्गमभीरुगौरी-
विस्रम्भणप्रणयभङ्गभयाकुलस्य।
तत्कालकार्यकरदर्पकदेहदाह-
जातानुतापमुरगाभरणस्य चेतः।। ३/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जूटे कपालशकलानि कलानिधिश्च
हस्ते सुधाम्बु सरलं गरलं गले च।
शक्रादिभिश्च नमनं गमनं गवा च
यस्यास्तु दुर्गतिहरः स हरः सदा वः॥ ३/४१

यस्य क्षितिः शिरसि सौमनसीव शेषा
शेषाहिरङ्गदपदे स चकास्ति यस्य।
तस्य प्रभोरमृतनिर्झरनिर्विशेषा-
शेषाणि हन्तु दुरितानि सरस्वती वः॥ ३/४२

श्रीमानकल्पत न कल्पतरुर्यदाप्त्यै
तृष्णा रसायनरसाय न यं समेत्य।
लभ्यो न यो गहनयोगहवैः स वोऽघ-
मप्राकृतो हरकृतो हरतु प्रसादः॥ ३/४३

मुक्तिर्हि नाम परमः पुरुषार्थ एक-
स्तामन्तरायमवयन्ति यदन्तरज्ञाः।
किं भूयसा भवतु सैव सुधामयूख-
लेखाशिखाभरणभक्तिरभङ्गुरा वः॥ ३/४४

स यत्र गुहबर्हिणो भवभुजङ्गजिह्वाञ्चनै-
र्गजास्यकरकर्षणैः स च गिरीन्द्रकन्याहरिः।
स चार्कसुतसैरिभो रवितुरङ्गहेषारवै-
र्मुदं दधति धाम तद्दिशतु शाम्भवं धाम वः॥ ३/४५

यस्मिञ्जातस्त्रिभुवनजयी भग्नकामः स कामो
यस्मिंल्लेभे शलभलघुतां प्राप्तकालः स कालः।
यस्यौघो न प्रभवति महोनिह्नवे जाह्नवीयः
श्रेयः प्रेयः प्रथयतु स वः शाम्भवो दृक्त्रिभागः॥ ३/४६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यः क्रोधाग्नेः समिधमकरोद्दर्पकं दर्पकन्द-
च्छेदाभिज्ञं व्यधित जगतां यः कृतान्तं कृतान्तम्।
नेतुं यश्च प्रभवति मतिह्रासमस्तं समस्तं
निष्प्रत्यूहं प्रथयतु पथि त्रासदे वः स देवः॥ ३/४७

पायाद्वस्त्रिजगद्गुरुः स्मरहरः सोपग्रहाणां शिरः-
श्यामाकामुकमत्सरेण चरणौ पङ्क्तिर्ग्रहाणामिव।
यस्य प्रह्वसुरासुरेश्वरशिरो-मन्दारमालागल-
त्किञ्जल्कोत्कर-पिञ्जरोन्मुखनखश्रेणीनिभेनाश्रिता॥ ३/४८

अर्केन्दुभौमबुधवाक्पतिकाव्यमन्दा
मन्दारकुन्दकुमुदैर्यमुदर्चयन्ति।
तस्य प्रभोरघमलोष्मशमादमन्दा
मन्दाकिनीव मुदमर्पयतु स्तुतिर्वः॥ ३/४९

भस्मोद्धूलितमूर्तिरिन्दुधवलज्योतीरसोर्वीधर-
स्कन्धासक्ततुषारगौरवृषभारूढोऽस्तु भद्राय वः।
देवो दुग्धमहाब्धिमध्यविकसत्सत्पुण्डरीकोपरि-
क्रीडद्बालमरालनिर्मलरुचिः कात्यायनीकामुकः॥ ३/५०

त्राता भीतिभृतां पतिश्चिदचितां क्लेशं सतां शंसतां
हन्ता भक्तिमतां मतां स्वसमतां कर्ताऽपकर्ताऽसताम्।
देवः सेवकभुक्तिमुक्तिघटनाभूर्भूर्भुवः-स्वस्त्रयी-
निर्म्माणस्थितिसंहृतिप्रकटितक्रीडो मृडः पातु वः॥ ३/५१

कृष्णेन त्रिजगत्प्रसिद्धविजयप्रख्यातिना लोचनं
भक्तां वासवसूनुना कृतवता पादाब्जपूजाविधौ।
यस्मादाप्तसुदर्शनेन निखिलं विश्वं विधेयीकृतं
कृष्णेनेव स धूर्जटिर्घटयतु श्रेयांसि भूयांसि नः॥ ३/५२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रीकण्ठस्य सकृत्तिकार्तभरणी मूर्तिः सदारोहिणी
ज्येष्ठा भद्रपदा पुनर्वसुयुता चित्रा विशाखान्विता।
दिश्यादक्षतहस्तमूलघटिताषाढा मघालङ्कृता
श्रेयो वैश्रवणाश्रिता भगवतो नक्षत्रपालीव वः॥ ३/५३

भिन्द्धि क्ष्माधरसन्धिबन्धमुदधेरम्भोभरं जृम्भय
क्षुन्द्धि क्ष्मापटलं दलत्फणिफणापीठी लुठत्सौष्ठवम्।
पिण्ड्ढ प्रौढचपेटपाटितरटत्ताराकुटुम्बं नभः
प्रारब्धोद्धतसान्ध्यताण्डव इति श्रीभैरवः पातु वः॥ ३/५४

भूत्यै वोऽस्तु विडम्बितस्मितरुतं मूर्ध्नोधृतस्वर्धुनी-
निध्वानध्वनदाननैरभिनये भूषाकपालैः प्रभोः।
त्वङ्गत्तुम्बुरुनारदाहतनदद्गम्भीरभेरीरव-
व्यावल्गद्गुहवाहबर्हिविहितक्रीडानुसारं वपुः॥ ३/५५

आदौ पादतले कृतस्थितिरथो प्राप्तः करालम्बनं
वाल्लभ्यं शुभदृङ्निवेशनवशोत्पन्नं प्रपन्नस्ततः।
अन्ते येन शिरोधिरोपणमहामाहात्म्यमाप्तो विधु-
र्भूत्यै स क्रमवर्द्धमानमहिमा स्वामिप्रसादोऽस्तु वः॥ ३/५६

यस्यैकस्य सुवर्णसंभृतपदन्यासानवद्यक्रम-
व्यक्तिः प्रेङ्खति गौरनर्गलगतिस्वाच्छन्द्यहृद्याकृतिः।
प्रख्याताद्भुतसर्गबन्धरचनासंरब्धिरोजस्विनः
काव्यस्योदयभूरसौ भवतु वः प्रीत्यै पुराणः कविः॥ ३/५७

राकेन्दोरपि सुन्दराणि हृदयग्राहीणि बालाङ्गना-
मुग्धालापकथामृतादपि परं हारीणि हारादपि।
अप्युत्तालशिखालबालवचसः सम्पूर्णकर्णामृत-
स्यन्दीनि त्रिजगद्गुरोः स्तुतिकथासूक्तानि पुष्णन्तु वः॥३/५८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शाणोल्लीढनवेन्द्रनीलमहसि श्रीकण्ठकण्ठस्थले
संसक्ता कनकच्छविर्गिरिसुतादोःकन्दली पातु वः।
यामालोक्य सनीरनीरददलश्लिष्यत्तडिद्विभ्रम-
भ्रान्त्या नोज्झति चण्डताण्डवनवोल्लेखं शिखी षाण्मुखः॥ ३/५९

यत्सर्गाभरणायमानवपुषः केचित्ककुप्कामिनी-
कर्णालङ्करणायमानयशसः स्वर्गायमाणश्रियः।
दुष्कालानलसन्न-सज्जन- सुधावर्षायमाणोक्तयः
प्रेक्ष्यन्ते महिमा स यस्य कुरुतां शार्वः स्तवः शं स वः॥ ३/६०

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'आशीर्वादाख्यं' तृतीयं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ चतुर्थ स्तोत्रम्

मङ्गलाष्टकस्तोत्रम्

❀❀❀

श्रीकम्बुकौस्तुभसुधांशुविषामृतानां
सौदर्यसौहृदसुखानुभवैकधाम।
यत्सत्यधर्मकृतनिष्प्रतिघप्रतिष्ठं
तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/१

आपीडबन्धनविधौ शयने च वर्ष्म
पर्याप्तभोगविभवं बहुमन्यमानः।
यत्र प्रहृष्यतितरामुरगाधिराज-
स्तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/२

अर्धं यदुत्पलदलैरुमयेन्दुगौर-
मर्धं श्रियार्चितमलिद्युति मालतीभिः।
विच्छित्तिमेत्यनिमिषेक्षणशुक्तिपेयां
तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/३

केशाश्रिता नयनवह्निशिखाभ्रसिन्धु-
झाङ्कारगर्भवपुषो जलदा वहन्ति।
यत्राद्भुतं स्थिरतडिद्रसितप्रसङ्गं
तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हीनार्धनाभिनलिनालयसङ्कटत्व-
सातङ्कसङ्कुचितवृत्तिकदर्थिताङ्गः।
अर्धीचिकीर्षति तनुं द्रुहिणोऽपि यत्र
तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/५

दृग्वर्तिनौ रवितमीरमणावखण्ड-
मूर्ती निजं च वपुरर्धमवेत्य वह्निः।
यत्राधिकं ज्वलति लाघवमागतोपि
तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/६

यस्मिन् गुणी सहृदयः सफलः समूलः
स्वातन्त्र्यधामनि करात् पतितः स पद्मः।
कम्बुः स्थितस्तु धृततद्विपरीतरीति-
स्तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/७

पादाग्रनिर्गतमवारितमेव वारि
यत्राधिरोहति शिरस्त्रिदशापगायाः।
अत्यद्भुतं च रुचिरं च निरङ्कुशञ्च
तन्मङ्गलं दिशतु हारिहरं वपुर्वः॥ ४/८

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'मङ्गलाष्टकं' नाम चतुर्थं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ पञ्चमं स्तोत्रम्

कविकाव्यप्रशंसास्तोत्रम्

❀❀❀

आपन्नतापहरणप्रवणा घृणेव
त्वङ्गत्तरङ्गसुभगा गगनापगेव।
पीयूषसारशिशिरा शशभृत्कलेव
वाणी शिवैकशरणा जयतीश्वरीव॥ ५/१

यो मूर्धनि स्रजमिवोद्वहते धरित्री-
मुष्णीषतां श्रयति यस्य स भोगिराजः।
यस्यामसौ वसति वाक्पतिरुक्तिदेवीं
तां ये वहन्ति हृदि ते कवयो जयन्ति॥ ५/२

धन्याः शुचीनि सुरभीणि गुणोम्भितानि
वाग्वीरुधः स्ववदनोपवनोद्गतायाः।
उच्चित्य सूक्तिकुसुमानि सतां विविक्त-
वर्णानि कर्णपुलिनेष्ववतंसयन्ति॥ ५/३

श्रोत्राण्यनर्गलगलन्मधुबिन्दुगर्भ-
सन्दर्भसुन्दरपदोपचितैर्वचोभिः।
धन्याः सतां सुकवयः सुखयन्ति तेऽपि
तेषामकृत्रिमचमत्कृतिसाधुवादैः॥ ५/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते केचिदस्खलितबन्धनवप्रबन्ध-
सन्धानबन्धुरगिरः कवयो जयन्ति।
येषामचर्वितरसापि चमत्करोति
कर्णे कृतैव भणितिर्मधुरा सुधेव।। ५/५

तेऽनन्तवाङ्मयमहार्णवदृष्टपाराः
सांयात्रिका इव महाकवयो जयन्ति।
यत्सूक्तिपेलवलवङ्गलवैरवैमि
सन्तः सदःसु वदनान्यधिवासयन्ति।। ५/६

जिह्वाग्ररङ्गभुवि सत्कवितुर्विलास-
लास्योत्सवव्यसनिनी स्वयमुक्तिदेवी।
भ्रूकाण्डकुण्डलकिरीटशिरोधराणां
नृत्तोपदेशगुरुतां कृतिनामुपैति।। ५/७

आवर्जयन्ति मठराञ्जठरार्थमात्र-
पात्रीकृतार्थकणिका गणिकाविटाद्याः।
प्रौढान् पुनर्भुजगभूषणभक्तिसिक्त-
सूक्तावलीविरचनाचतुराः कवीन्द्राः।। ५/८

धन्यः स कोऽपि सुकविः कविकर्मकृत्त-
लोकार्ति कार्तिकतुषारकरानुकारि।
गायन्ति यस्य कृतिनस्त्रिजगत्पवित्रं
चित्रं चरित्रमिव बालमृगाङ्कमौलेः।। ५/९

त्रैलोक्यभूषणमणिर्गुणिवर्गबन्धु-
रेकश्चकास्ति सविता कविता द्वितीयः।
शंसन्ति यस्य महिमातिशयं शिरोभिः
पादग्रहं विदधतः पृथिवीभृतोऽपि।। ५/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यस्य स्रवन्त्यमृतमेव मुखे तुषार-
हाराभिरामरुचिरञ्चितवक्रभङ्गिः।
सूक्तिर्द्युसिन्धुरिव मूर्ध्नि हरस्य चन्द्र-
लेखेव वा वसति तं सुकविं नमामः।। ५/११

याता गुणैरुपचयं विमला प्रकृत्या
नैसर्गिकीं परिणतिं प्रथमां वहन्ती।
बुद्धिः सतां शशिकलामुकुटप्रसादा-
द्वाणी च न क्वचिदपि प्रतिघातमेति।। ५/१२

चन्द्रावचूडचरणस्मरणप्रसाद-
सन्दर्भ-निर्भरगभीरगिरां कवीनाम्।
सूक्तिर्बिभर्ति मुखपङ्कजरङ्गनृत्य-
द्वाग्देवताकनकनूपुरनादलीलाम्।। ५/१३

काव्यं विभाव्य निजमर्धनिमीलितानि
नैसर्गिकं जहति चापलमीक्षणानि।
गृह्णन्ति तन्मसृणतां सहजां विहाय
भ्रूवल्लयस्तु कृतिनां कविपुङ्गवानाम् ५/१४

नीहारहारधवलस्य जयत्यपूर्वः
पाकः स कोऽपि सुकृतस्य कृतस्य पूर्वम्।
यः सम्प्रति प्रतिफलत्यमलासु बाल-
चन्द्रावचूलनुति-सूक्तिषु सत्कवीनाम्।। ५/१५

सूक्ष्मार्थदर्शनविमर्शवशप्ररूढ-
भ्रूकाण्डताण्डव-निवेदित-चिद्विकासम्।
आस्वाद्य यत्सुमतयो मुखमुद्वहन्ति
सूक्तामृतं जयति तत्कविकुञ्जराणाम्।। ५/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शब्दार्थमात्रमपि ये न विदन्ति तेऽपि
यां मूर्छनामिव मृगाः श्रवणैः पिबन्तः।
संरुद्धसर्वकरणप्रसरा भवन्ति
चित्रस्थिता इव कवीन्द्रगिरं नुमस्ताम्॥ ५/१७

लभ्यः स कुत्र सुजनः स्वकृतीः प्रदर्श्य
भ्रूकन्दलीयुगलमाकलयन्ति यस्य।
नेत्रोत्पलोपरिपरिस्फुरदुत्तरङ्ग-
भृङ्गावलिद्वितयविभ्रमभृत् कवीन्द्राः॥ ५/१८

स्फारेण सौरभभरेण किमेणनाभे-
स्तद्धानसारमपि सारमसारमेव।
स्रक्सौमनस्यपि न पुष्यति सौमनस्यं
प्रस्यन्दते यदि मधुद्रवमुक्तिदेवी॥ ५/१९

संसारमारवपथप्रथमानखेद-
विच्छेदकोविदमिदं कविकर्म्म जीयात्।
विस्मारितं यदमुना यमुनासनाथं
पाथः प्रसिद्धमपि वैबुधसैन्धवं नः॥ ५/२०

गाम्भीर्यशालिनि शुचावमृतौघशीते
नीते सदा सदनतां मदनान्तकेन।
यस्यैकपिङ्गलगिरेरिव मानसेऽन्त-
रर्थाः स्फुरन्ति स विना सुकृतैः क्व लभ्यः॥ ५/२१

यस्य द्युसिन्धुलहरीशुचयो न कस्य
दृष्टिप्रसादमवलोकयतोऽर्पयन्त्यः।
गावः सुधारसमुचः प्रसरन्ति दिक्षु
विश्वैकभूषणमसौ जयति द्विजेन्द्रः॥ ५/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

संयोगमेत्य परमर्थपरिष्कृतस्य
पादान्तगोऽपि गुरुतां लघुरेति यस्य।
तं शङ्करस्तुतिपरं परिशुद्धवृत्तं
सुश्लोकमाप्य मुदमेति न कस्य चेतः॥ ५/२३

इह हि महिमा मायामोहप्ररोहतिरोहित-
त्रिजगदगदङ्कारः सारस्वतः प्रथते सताम्।
प्रभवति जरामृत्युव्याधिप्रबन्धनिबन्धन-
व्यसनजनितव्यापत्तापक्लमापगमाय यः॥ ५/२४

चमत्कारोत्कर्षं कमपि कमनीयं विमृशतां
दिशन्ती सा काचिज्जयति कविवाचां परिणतिः।
यदासृष्टे चेतस्यमृतमिति निःश्रेयसमिति
प्रियं धामेत्युच्चैः पदमिति समुद्यन्ति मतयः॥ ५/२५

मधुस्यन्दी मन्दीकृतविपदुपाधिर्भवमरु-
भ्रमक्लेशावेशप्रशमकमनीयो विजयते।
अखण्ड-श्रीखण्ड-द्रव-नव-सुधासार-सरसः
प्रसादो वाग्देव्याः प्रवरकविकाव्यामृतवपुः॥ ५/२६

घनानन्दस्यन्दोद्गत-विपुलवाष्पार्द्रनयनं
सलीलभ्रूवल्लीवलनविवलद्भालपुलिनम्।
उदञ्चद्रोमाञ्चस्तवकितकपोलं विदधते
सुधार्द्रा धन्यानां वदनमनवद्याः कविगिरः॥ ५/२७

धन्यानाममृतं द्रवन्ति हृदये कर्णे वलन्मल्लिका-
लङ्कारस्तवकन्ति कण्ठपुलिने मुक्ताकलापन्त्यपि।
शैलान्दोलितदुग्ध-सिन्धुलहरीभङ्गाभिरामोद्गमाः
श्यामाकामुकखण्डमण्डनकथासन्दर्भगर्भा गिरः॥ ५/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धन्यानां भणितिच्छलेन वदनेषूद्यन्ति हृत्कर्णिका-
धाम्नः सूक्तिसुधावबोधविधुतापीडस्य चण्डीपतेः।
किं जूटाहिकिरीटरत्नरुचयः किं स्त्रग्रजःसूचयः
किं मौलीन्दुमरीचयः किममरस्त्रोतस्वतीवीचयः॥ ५/२९

सान्द्रानन्दकरे धृतामृतकरे नास्त्येष राकाकरे
न प्रौढप्रसरे निसर्गशिशिरे स्वर्गापगानिर्झरे।
गाढप्रेमभरे स्मरज्वरहरे नोद्दामरामाधरे
यः शम्भोर्मधुरे स्तुतिव्यतिकरे ह्लादः सुधासोदरे॥ ५/३०

ओजस्वी मधुरः प्रसादविशदः संस्कारशुद्धोऽभिधा-
भक्ति-व्यक्तिविशिष्टरीतिरुचितैरर्थैर्धृतालंकृतिः।
वृत्तस्थः परिपाकवानविरसः सद्वृत्तिरप्राकृतः
शस्यः कस्य न सत्कविर्भुवि यथा तस्यैव सूक्तिक्रमः॥ ५/३१

प्राप्ता कल्पलतेव चेद्भगवती वागीश्वरी कैरपि
प्राक्पुण्यैः स्वपरोपकार- करणप्रौढा पुन-र्दुर्लभा।
अज्ञैस्तज्ज्ञजनोपदेशविहितावज्ञैर्दुराशाहतै-
रस्ता दुर्मदकर्दमे फलति किं पापं सशापं विना॥ ५/३२

विस्त्रब्धं विलसन्त्युपस्कृतपदन्यासा विलासालसा
साहङ्कारमकारणारिभिरभिध्यातांऽभिजाताकृतिः।
क्षिप्ता दृप्तनृपान्धकूपकुहरे दाशैरिवाशाग्रहै-
र्ग्रस्तैः सूक्तिनिभेन तारकरुणं गौरीदृशी रोदिति॥ ५/३३

उष्णं निःश्वसिति क्षितिं विलिखति प्रस्तौति न प्रेयसः
प्रीतिं सूक्तिभिरीशितुः करतले धत्ते कपोलस्थलम्।
वाग्देवी हृदयज्वरेण गुरुणा क्रान्ता हताशैर्वृथा
नीताविष्कृतकोपनिष्कृपनृपस्तोत्रत्रपापात्रताम्॥ ५/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अस्थाने गमिता लयं हतधियां वाग्देवता कल्पते
धिक्काराय पराभवाय महते तापाय पापाय वा।
स्थाने तु व्ययिता सतां प्रभवति प्रख्यातये भूतये
चेतो निर्वृतये परोपकृतये प्रान्ते शिवावाप्तये।। ५/३५

एताः पूर्वकविप्रणीतविविधग्रन्थाऽमृतास्वादन-
क्रीडादुर्ललितं हरन्ति हृदयं वाचः कथं धीमताम्।
केषाञ्चित्पुनरीश्वरस्तुतिपद- व्याहारहेवाकिनां
यास्यन्ति स्पृहणीयतां भुवि भवक्लेशस्पृशां मादृशाम्।। ५/३६

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'कविकाव्यप्रशंसाख्यं' पञ्चमं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ षष्ठं स्तोत्रम्

हराष्टकस्तोत्रम्

❀❀❀

जयत्यखिलखेचरप्रवरमौलिरत्नप्रभा-
प्ररोहपरिपीवरीकृतनखांशुपादाम्बुजः।
विशालनयनत्रयीरचितधामधामत्रयी-
तिरस्कृतजगत्रयी-परिणतान्धकारो हरः॥ ६/१

जयत्यमरदीर्घिकासलिलसेकसंवर्धित-
प्रचण्डनयनानलग्लपिततीव्रतापव्यथः।
अचिन्त्यचरितोज्ज्वलज्ज्वलदनन्यसाधारण-
प्रभावमहिमाहितत्रिभुवनोपकारो हरः॥ ६/२

जयत्यचलकन्यकाललितदोर्लतालिङ्गित-
स्फुरद्गरलकालिमाकलितकान्तकण्ठस्थलः।
तडिद्वलयलङ्घितोल्लसदमोघमेघभ्रम-
प्रमत्तगुहबर्हिणोपहृतनृत्तहर्षो हरः॥ ६/३

जयत्यविरलोच्छलद्गरलवह्निहेतिचछटा-
सटालफणभीषणक्षपणपाशमोक्षक्षमः।
उदारकरुणारसप्रसरसारसिक्ताशयः
प्रपन्नविपदर्णवोत्तरणकर्णधारो हरः॥ ६/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जयत्युदधिनिःसरद्गरनिगारलब्धाऽभय-
प्रमोदभरनिर्भरत्रिदशदैत्यवृन्दस्तुतः।
रसातलतलोद्गतज्वलदलङ्घ्यलिङ्गोल्लस-
न्महामहिममोहितद्रुहिणवासुदेवो हरः॥ ६/५

जयत्यतुलविक्रमोन्मिषदखर्वगर्वज्ज्वर-
ज्वलच्चपलमन्मथोन्मथनभग्नभोगस्पृहः।
दशास्यभुजमण्डलीतरलितैकपिङ्गाचल-
त्रसद्गिरिसुताहठग्रथितकण्ठपीठो हरः॥ ६/६

जयत्यकलितोल्लसन्मदभरोद्धरान्धासुर-
प्रतिष्करणसान्त्वनप्रथितनिग्रहाऽनुग्रहः।
जगत्त्रयभयङ्करत्रिपुरघोरदावावली-
सलीलकवलीकृतिप्रलयवारिवाहो हरः॥ ६/७

जयत्यघवनाशनिः सुमतिमाधवीमाधवः
कृपामृतपयोनिधिर्भवमहार्णवैकप्लवः।
विपत्तृणसमीरणः प्रणयिचित्तचिन्तामणिः
समस्तभुवनोदयप्रलयकेलिकारो हरः॥ ६/८

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'हराष्टकं' नाम षष्ठं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ सप्तमं स्तोत्रम्

सेवाभिनन्दनस्तोत्रम्

निशान्तनिद्रेव दशेव शैशवी
नवीनवध्वाश्चकितेव दृक्छटा।
सुरस्त्रवन्तीव कथेव शाम्भवी
कवीन्द्रवाङ्निर्वृतिमातनोतु वः॥ ७/१

अलौकिकाह्लादनिबन्धनं मनः-
प्रसादनं स्वानुभवैकसाक्षिकम्।
प्रकाशतां वो हृदि पारमेश्वरं
महो रहस्यं सुकवेर्गिरामिव॥ ७/२

स यस्य चापात्सपदि च्युतोऽच्युतः
शिखाभिरुग्रो विशिखः शिखावतः।
पुराण्यकार्षीदपुराणि भैरवो
भयानि भिन्द्यादभवो भवः स वः॥ ७/३

स यस्य पृष्ठे चरणार्पणं वृषा
वृषाधिरोहे कलयत्यनुग्रहम्।
त्रिलोकनाथः स गिरा सुधावृषा
वृषाकपिस्तापमपाकरोतु वः॥ ७/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स यस्य पादद्वयमिद्धशासनः
सदा समभ्यर्चति पाकशासनः।
प्रभुः प्रसादाऽमलया दृशा स नः
क्रियाद्विपद्धङ्गमनङ्गशासनः॥ ७/५

चमूर्जयन्भीजनकानका न काः
स यस्य सूनुः क्लमहा महामहाः।
जटाः स बिभ्रत्तरुणारुणारुणाः
श्रियः क्रियाद्वः शुभयाभयाऽभयाः॥ ७/६

मयि ध्रुवं दृग्भवता बताऽवता
कृपामृतार्द्रा महिता हिताऽऽहिता।
अतस्तवास्तप्रमयामया मया
कृता नुतिः सातिशयाशयाऽऽशया॥ ७/७

अनभ्रवर्षप्रतिमं विमत्सरा
नरा जरारुङ्मरणार्त्तिभीरवः।
मुधा सुधासूतिवतंसशंसनं
विहाय धावन्ति रसायनाय किम्॥ ७/८

मणिः सुसूक्ष्मोऽपि यथोल्बणं विषं
कृशोपि वह्निः सुमहद्यथा तृणम्।
शिशुर्मृगेन्द्रोपि यथा गजव्रजं
तनुः प्रदीपोऽपि यथा तमोभरम्॥ ७/९

यथाल्पमप्यौषधमुन्मदं गदं
यथामृतं स्तोकमपि क्षयाद्भयम्।
ध्रुवं तथैवाणुरपि स्तवः प्रभोः
क्षणादघं दीर्घमपि व्यपोहति॥ ७/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अमन्दसन्दर्भगभीरविभ्रमः
प्रगल्भवैदर्भपरिश्रमः क्रमः।
अवश्यमासाद्य गुणोचितं विभुम्
बिभर्त्ति सौभाग्यमभङ्गुरं गिरः॥ ७/११

यथा हि शीलेन विना कुलाङ्गना
यथा विवेकेन विना मनीषिता।
सदर्थबोधेन विना यथा श्रुति-
र्महीभुजङ्गेन विना यथा मही॥ ७/१२

यथा विना द्यौररविन्दबन्धुना
विना शशाङ्केन यथा निशीथिनी।
विदग्धवर्गेण विना यथा सभा
विना विभूतिर्विनयेन वा यथा॥ ७/१३

कृपाविपाकेन विना यथा मति-
र्यथा सुपुत्रेण विना गृहस्थितिः।
तथैव शोच्या हरिणाङ्कशेखर-
स्तवोपयोगेन विना सरस्वती॥ ७/१४ (तिलकम्)

रमापि देवी मम नो मनोरमा
क्षमापि मामभ्यवपत्तुमक्षमा।
मम क्षमैका भगवत्परा नुति-
र्भवार्त्तिभङ्गे सरसा सरस्वती॥ ७/१५

अचेतनो यः किल कुस्थितिप्रियः,
पृथग्विधोपाधिशतक्षताशयः।
निषेव्यते पादतले स यद्गिरि-
श्चिरं मुनीन्द्रैरपि शुद्धमानसः॥ ७/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

निसर्गतः सत्पथगर्हितस्थिति-
मर्लीमसो जिह्मगतिश्च यः फणी।
स कुण्डली यन्मणिमौलिमण्डितो
महाभुजङ्गः पृथुभोगभागपि॥ ७/१७

यदप्यजस्त्रं जडसङ्गमोचितः
स्वभावतुच्छः शशभृत् कलामयः।
कलङ्कमुक्तं वहते सुधामयं
विधूतदोषोदयमुज्ज्वलं वपुः॥ ७/१८

स एष गौरीश्वरसंश्रयात्मनः
फलोद्गमः कल्पमहामहीरुहः।
अमुं समासादयितुं हितायति-
र्यतेत को नाम न चेतनो जनः॥ ७/१९ (सन्दानितकम्)

निदाघनिर्दग्धमहामरुभ्रम-
क्लमच्छिदो मार्गमहीरुहादपि।
कलिन्दकन्यासलिलौघसङ्गत-
त्रिमार्गगाम्भोभरसम्प्लवादपि॥ ७/२०

सरस्वतीसौभगसारसम्भृत-
प्रसन्नगम्भीरपदक्रमादपि।
कुरङ्गनाभीघनकुङ्कुमाङ्कित-
स्तनाङ्गनालिङ्गनविभ्रमादपि॥ ७/२१

अमन्दमानन्दसुधारसद्रवं
स्त्रवन्नवन्ध्यं भवदुःखिते हृदि।
इयत्यमुष्मिन्भुवनाध्वनि ध्वनि-
र्नमः शिवायेति चमत्करोति मे॥ ७/२२ (तिलकम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विचिन्तयञ्जीवनमेव जीवनं
समर्थयन् पार्थिवमेव पार्थिवम्।
विभावयन् वैभवमेव वै भवं
कदाऽऽश्रये शङ्करमेव शङ्करम्।। ७/२३

वरं भवेदप्यवरं कलेवरं
परं हराराधनसाधनं हि यत्।
न तु क्रतुध्वंसिनिषेवणोत्सवं
विनिघ्नती मुक्तिरयुक्तिपातिनी।। ७/२४

क्व नीलकण्ठायतनोपसर्पण-
स्फुटोपकारौ चरणौ महागुणौ।
क्व चाञ्जनोद्वर्त्तनचर्चनादिभिः
पुरारिपूजार्पणतर्पणौ करौ।। ७/२५

क्व नाम नामग्रहणोत्सवं विभो-
रभिप्रवृत्ता रसना दिने दिने।
क्व चाद्रिपुत्रीपतिपादपंकज-
स्फुरद्रजोराजिविराजितं शिरः।। ७/२६

क्व दृक्चिरं पारितचन्द्रशेखर-
स्वरूपसौभाग्यविलोकनस्पृहा।
क्व सन्तताकर्णितदर्पकद्विष-
द्विचित्रचारित्रपवित्रिता श्रुतिः।। ७/२७

क्व निर्धुताऽनल्पविकल्पविप्लव-
त्रिलोचनध्याननिबन्धनं मनः।
क्व चाऽपवर्गोऽयममार्ग एव यः
स्मरारिसेवासुखसर्वसम्पदाम्।। ७/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इदं विदन्तः सुधियो भियोज्झिताः
समाधिमाधिच्छिदमाश्रिता अपि।
प्रभुप्रणामस्तुतिचिन्तनार्चन-
स्फुटोपयोगं बहु मन्वते वपुः॥ ७/२९ (पञ्चभिः कुलकम्)

किमङ्ग मङ्गल्यमनङ्गभङ्गद-
प्रसादनादन्यदधन्य मन्यसे।
यदर्थमर्थक्षतिकृत्सुदुष्कर-
प्रयास-साध्येषु मखेषु खिद्यसे॥ ७/३०

इमा हिमानीविमला हविर्भुजां
प्रभुप्रसादप्रभवा विभूतयः।
करोषि यत्तर्पणमात्रकाम्यया
दयास्पदप्राण्युपघातपातकम्॥ ७/३१

सखे! सखेदस्य धनार्जनं प्रति
प्रतिग्रहाध्यापनयाजनादिभिः।
प्रयाति ते वायुरिवायुरिङ्गितं
विहन्ति हन्त क्रतवे तवेहितम्॥ ७/३२

अतः स्वतः प्रार्थित-संपदां पदं
कदर्थना-हीनमदीनमेनसा।
निदानमानन्दभुवः स्वयम्भुवो
भजस्व पादाम्बुजसेवनोत्सवम्॥ ७/३३

अक्लेशपेशलमलङ्घ्यकृतान्तदूत-
हुङ्कारभङ्गभिदुरं दुरितेन्धनाग्निम्।
को नाम नामयहरं हरपादपद्म-
सेवासुखं सुमतिरन्वहमाद्रियेत॥ ७/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रोमन्थमन्थरकुरङ्गशताश्रितेषु
भागीरथीशिशिरशीकरशीतलेषु।
रोहन्महार्हफलकन्दलसुन्दरेषु
बद्धास्पदास्तुहिनभूधरकन्दरेषु॥ ७/३५

धन्याः समाधिमवधानधना धनादि-
सम्बन्धबन्धमवधूय धियाऽधियन्तः।
ज्योतिः परं गलदनल्पविकल्पजाल-
मालोकयन्ति भगवन्तमनन्तमन्तः॥ ७/३६ (युग्मकम्)

धन्या भजन्ति नृपवेश्मसु वेत्रिवक्त्र-
हुंकारकातरधियस्तरुणेन्दुमौलिम्।
वैराग्यनिर्वृतमनस्विजनावकीर्ण-
स्वर्गापगापुलिनबाललतालयेषु॥ ७/३७

सन्तः स्मरन्ति शशिखण्डशिखण्डसेवा-
हेवाकिनः सुरसरित्पुलिनस्थलेषु।
लक्ष्मीलवोल्लसदमन्दमदाऽवलेप-
भूपालवालिशविलङ्घनविप्लवानाम्॥ ७/३८

इदं मधुमुखं विषं हरति जीवितं तत्क्षणा-
दपथ्यमिदमाशितं व्यथयते विपाके वपुः।
इदं तृणगणावृतं विलमधो विधत्ते क्षणा-
द्यदत्र मलिनोल्बणैर्द्रविणमर्जितं कर्मभिः॥ ७/३९

अतः प्रतनुवैभवोद्धवदखर्वगर्वक्षमा-
पतिप्रणयसंभवं भुवि विडम्बनाडम्बरम्।
विहाय सुरवाहिनीपुलिनवासहेवाकिनो
भजन्ति कृतिनस्तमीरमणखण्डचूडामणिम्॥ ७/४० (युग्मम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

किं भूयोभिः परुषविषयैः श्रीविकारैरसारैः
किं वा भूयः पतनविरसैः स्वर्गभोगाभिलाषैः।
मन्ये नाऽन्यद्भवभयविपत्कातराणां नराणां
मुक्त्वा भक्तिं भगवति भवे शस्यमाशास्यमस्ति॥ ७/४१

दूरोदञ्चच्चटुललहरीहारिहस्तव्युदस्त-
व्यापत्तापत्रिदशतटिनीमज्जनोन्मज्जनेषु।
श्रद्धाबन्धं शशधर-शिरःपादराजीवसेवा-
हेवाकैकव्यसनमनसस्तेन तन्वन्ति सन्तः॥ ७/४२ (युग्मम्)

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'सेवाभिनन्दनं' नाम सप्तमं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ अष्टमं स्तोत्रम्

शरणाश्रयणस्तोत्रम्

कल्याणिनः सुरगिरेरिव संश्रितस्य
लक्ष्म्या हरेरिव रवेरिव दीप्तिभाजः।
पद्यस्य शम्भुविषयस्य जयन्ति पादा
ये मण्डयन्ति च पुनन्ति च विष्टपानि॥ ८/१

याः पङ्क्लेन कलिलेन वियोजयन्ति
नित्योज्ज्वलेन कुशलेन च योजयन्ति।
ता धूर्जटेरमरनिर्झरिणीतरङ्ग-
भङ्गाभिरामगतयः स्तुतयो जयन्ति॥ ८/२

संसारदारुणदवानलदह्यमान-
वाक्-चित्त-काय-कुशलीकरणौषधानि।
श्री-भुक्ति-मुक्ति-वश-कर्म्मणि कार्मणानि
शम्भोर्जयन्ति नुतिचिन्तनपूजनानि॥ ८/३

दोषाकरस्य शिरसि स्थितिमुत्तमाङ्ग-
च्छेदं विधेरविरहं नरवाहनस्य।
भस्मीकृतिं त्रिपुर-पाशधर-स्मराणां
वश्यं दिशाञ्च दशकं दशकन्धरस्य॥ ८/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

शौर्यानलस्य परशुव्यजनेन दीप्तिं
रामस्य बाहुपरिघप्रतिघं मघोनः।
हैमं मरुत्तनृपतेर्दिवसानि सप्त
वर्षं सुदर्शनसमर्पणमच्युतस्य॥ ८/५

श्वेतस्य कण्ठपुलिनात्समवर्तिपाश-
प्रोत्सारणं नयननिर्हरणं भगस्य।
दुग्धाब्धिदानमुपमन्युमुनेः क्रियासु
दक्षस्य विघ्नकरणं मखदीक्षितस्य॥ ८/६

शूलाधिरोहणपराभवमन्धकस्य
पूष्णो हनुग्रहमनुग्रहमर्जुनस्य।
नन्दीश्वरस्य रविजादभयं भुजङ्ग-
भङ्ग्याभिमानमथनं मुनिमानिनीनाम्॥ ८/७

किं वाऽपरं द्रुहिणकृष्णहरत्वमेत्य
सर्गस्थितिप्रशमनानि जगत्त्रयस्य।
क्रीडन्निव व्यधित येन निरङ्कुशं तत्
स्वातन्त्र्यमप्रतिहतं जयतीश्वरस्य॥ ८/८

यस्याऽतिघोरगरलादपि कण्ठपीठा-
त्संजीवनौषधमुदेति वचो नतानाम्।
यस्य ज्वलद्घनकृशानुशिखोल्बणापि
वर्षत्यमोघममृतद्रवमेव दृष्टिः॥ ८/९

दंष्ट्राकरालमपि घोरमघोरवक्त्रं
यस्य प्रपन्नभयभञ्जनभङ्गिमेति।
यस्याङ्गभस्मकणिकाश्चरणाश्रितेषु
कर्पूरधूलिपटलश्रियमाश्रयन्ति॥ ८/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यस्यापि कृष्णभुजगा भुजगा भजन्त-
मिन्दीवरस्त्रज इव प्रविनन्दयन्ति।
किं चाङ्गसङ्गि मरुदीरितमेति यस्य
मुण्डं नमत्स्वमलमङ्गलकम्बुशोभाम्॥ ८/११

यस्येभचर्मघनशोणितपङ्कलिप्त-
मङ्गेषु मङ्गलदुगूलविलासमेति।
यस्यापि तापविधुरेषु करे कपाल-
मालम्बतेऽमृतकमण्डलुखण्डलीलाम्॥ ८/१२

यत्पादपांसुपरिमर्शशुचि श्मशानं
श्रीशैलनैमिषमुखान्यधरीकरोति।
यत्संस्तवादविकलं कुशलं कपाल-
पाली करोति कृतिनां कमलावलीव॥ ८/१३

यं देवमस्तशिरसं सुरभर्त्तुरङ्के
लङ्केशवैरिकरवीजिततालवृन्तम्।
आसीनसुप्तसुखितं शतरुद्रियादि-
मन्त्रैः स्वरेण मधुरेण गृणाति वेधाः॥ ८/१४

हेलावलीढभुवनत्रितयेन येन
गीर्णाः पुरन्दरमुकुन्दरवीन्दवोऽपि।
यस्य ज्वलद्विपुलभालविलोचनाग्नि-
ज्वालावलीशलभतामगमत्स कालः॥ ८/१५

श्वेतं विधोरुदयहेतुमवेत्य पक्षं
कालं च यः क्षयकरं दृशमाश्रितस्य।
श्वेतं दयाविशदयाशु दृशानुगृह्य
कालं दृशैव नयति स्म शमं विपक्षम्॥ ८/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चक्री मुखाग्रविलसज्ज्वलनोग्रजिह्वा-
लीढाम्बरः क्षितिधरेन्द्रधनुर्धरस्य।
यस्यागमन्निधनसाधनतां पुराणां
वाणीकृतश्च रणमूर्ध्नि गुणीकृतश्च॥ ८/१७

चक्रायुधं विशिखतामुडुचक्रवर्ति-
चक्राभिधानसुहृदौ रथचक्रभावम्।
नीत्वाऽसृजत्त्रिदशधाम्नि रसातले च
यो हर्ष-शोकमयमश्रु पुराङ्गनानाम्॥ ८/१८

आरूढरीढमपि येन समर्पितेन
प्रीतिं रतिं च हृदि विस्मरति स्म कामः।
तं दृष्टिपातमधिगम्य बिभर्ति यस्य
प्रीतिं रतिं च हृदि को न सुसिद्धकामः॥ ८/१९

कृष्णोपदर्शितपथः पृथुलोष्मभीष्म-
श्लाघ्यं दधद्वपुरुपात्तवनान्तवासः।
व्याधाकृतेरपि धनञ्जय एव यस्य
दृग्गोचरे कृतपदो महसा दिदीपे॥ ८/२०

युक्तं सुधाकरसुधाकरकद्युसिन्धु-
तोयादि यन्मनसि तापमपाकरोति।
यस्याङ्गसङ्गि शवभस्मकपालमाला-
हालाहलाहिदहनाद्यपि हृद्यमेव॥ ८/२१

मूर्तिः कृमेः शतपदी श्रवणं प्रविष्टा
दृष्टा रुजामसुहृतं सृजती जनानाम्।
सौरी तनुर्ननु सहस्त्रपदी यदीय-
नेत्रस्थिता हरति मृत्युभयं श्रितानाम्॥ ८/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आकर्ण्य यः कृपणमार्त्तवचः कृपाब्धि-
राधूतमूर्धसुरनिर्झरिणीकणौघैः।
उत्सङ्गसङ्गतगिरीन्द्रसुताकुचाग्र-
संसक्तमौक्तिकमणीन्द्विगुणीकरोति॥ ८/२३

उद्गाढभक्तिविधुरव्यपनीततीव्र-
दोषान्धकारमतिमात्रशुचिप्रकाशम्।
पीयूषमुद्वमति यस्य विविक्तवर्णं
कर्णान्तगामि वचनं च विलोचनं च॥ ८/२४

पात्रीभवन्ति न यदङ्घ्रिसरोजरेणु-
मैत्रीपवित्रशिरसः स्थिरसत्यवाचः।
साटोपकोपविकटभ्रुकुटिच्छटाना-
मुत्तालकालभटवक्त्रविभीषिकाणाम्॥ ८/२५

सूक्तिं शुचिं श्रवणयोरमृतं स्रवन्तीं
वक्रामभङ्गुरगुणां महतीं वहन्तः।
गायन्तिं यं श्रितवतः परिशुद्धवंश-
विद्या यशांसि कवयः परिवादकाश्च॥ ८/२६

यत्सेवकस्य मदनोल्बणबाणपूग-
क्रान्ताऽलिकान्तविकसत्तिलकोज्ज्वलश्रीः।
सेव्या भवत्यवसरे कलकण्ठनाद-
हृद्या वधूः कुसुमितोपवनस्थली च॥ ८/२७

यस्मिन्नखिन्नमनसो व्यसनावसन्न-
सन्तापशान्तिकृतसम्मतयो वसन्ति।
कात्यायनी च करुणा च कला च चान्द्री
स्निग्धा च दृक् सुरसरिच्च सरस्वती च॥ ८/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सन्तापसंपदपहारपटूनि सिद्ध-
सिन्धोरिवेन्दुधवलानि जलानि यस्य।
आकल्पयन्ति मदयन्ति पवित्रयन्ति
सञ्जीवयन्ति च जगन्ति भृशं यशांसि॥ ८/२९

दुष्कालसङ्कटकटाहकदर्थितानां
तीव्राभिमानमनसां घनसारभांसि।
भिन्दन्त्यमन्दहरिचन्दनबिन्दुवृन्द-
सन्दोहदोहदमहो चरितानि यस्य॥ ८/३०

फुल्लारविन्दमकरन्दधृतप्रसङ्ग-
भृङ्गाङ्गनागुमगुमारवगीतिगर्भम्।
गायन्ति यस्य चरितं हरितामधीशा
धीशालिनः कमलिनीपुलिनस्थलीषु॥ ८/३१

व्यक्तोज्ज्वलालिकचितं मुखमायताक्षं
विस्तीर्णकर्णिकमनर्गलरूढनालम्।
यं शंसतोऽधिवसति स्वयमुक्तिदेवी
राजीवसद्म-कमला विजिगीषयेव॥ ८/३२

आपन्नबान्धवमवन्ध्यवचोविलास-
मासन्नमज्जननमज्जनसान्त्वनेषु।
देवं सुधाकर-किशोरकृतावतंसं
तं संश्रितार्त्तिहरणं शरणं श्रयामि॥ ८/३३
(पञ्चविंशत्या कुलकम्)

देवं श्रयामि तमहं मुकुटोरगेन्द्र-
स्फूर्जत्फणामणिसहस्रमिषेण यस्य।
भालानलेन सुरसिन्धुजलोक्षितेन
प्रोन्मुक्तमङ्कुरसहस्रमिवाचकास्ति॥ ८/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सानुग्रहोत्तमगणाश्रितपादमूलं
मूर्ध्ना धृताभ्रसरितं सतुषारमूर्तिम्।
आसेवितं विषधरैः कटकेषु ताप-
शान्त्यै गिरीशमतिहृद्यगुहं श्रयामि।। ८/३५

यः क्षीरनीरनिधिमङ्घ्रितले सुधाम्भः-
कुम्भं करे शिरसि देवनदीमदीनाम्।
हर्तुं बिभर्त्ति भविनामणुकर्ममाया-
मूलं मलत्रयमयं तमहं श्रयामि।। ८/३६

यस्यापगा स्त्रगिव सौमनसी जटासु
यः कौमुदीं विरचनामिव मूर्ध्नि धत्ते।
देवीं वराऽभयकरामपि यो बिभर्ति
प्रीतः शिवां दृशमिव प्रभुमाश्रये तम्।। ८/३७

गौरीं गजास्यजननीं हिमवत्प्रसूतिं
सद्यःपवित्रितजगत्त्रितयां य एकः।
कात्यायनीं सुरधुनीं च विभुर्बिभर्ति
निर्वाणदं शरणमेमि तमिन्दुमौलिम्।। ८/३८

क्वाप्युद्धृतक्रतुविधातृमृगोत्तमाङ्ग-
मुत्सङ्गसङ्गतमृगं क्वचिदोषधीशम्।
क्रूरं क्वचिन्मृगवधैकरतिं किरातं
वातं क्वचिन्मृगरथं विभुमाश्रयामि।। ८/३९

उद्दामदोषमपि दीर्घगुणं भुजङ्ग-
भोगोपगूढमपि रूढशिखिप्रसङ्गम्।
कापालिकव्रतसमेतमपि द्विजेन्द्र-
चूडामणिं विभुमनङ्कुशमाश्रयामि।। ८/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अङ्गे धृताङ्गनमनङ्गकृताङ्गभङ्गं
विश्वाधिनाथमथ खण्डकपालपाणिम्।
उग्रं शिवं हरमघोरमजं च सद्यो-
जातं च विस्मयनिधिं विभुमाश्रयामि॥ ८/४१

अस्मिन्भवाध्वनि महाविषमेऽसमेषु-
रोषादितस्करतिरस्करणैकवीरम्।
भीरुः श्रयामि शरणं क्षणदाकुटुम्ब-
लेखाशिखामणिमनुत्तमशक्तिमीशम्॥ ८/४२

किं मेरुमन्दरमुखैर्गिरिभिर्गरीयान्
कैलास एव जगदेकगुरुर्गिरीशः।
यस्याऽभयङ्करमसङ्करमस्तशङ्क-
मङ्कं सुटङ्कमकलङ्कमलङ्करोति॥ ८/४३

उल्लंघ्य शासनमनन्यजशासनस्य
कोऽप्यन्यशासनमुपासितुमेति निष्ठाम्।
हित्वा वनं हि नवनागरपर्णपूर्ण-
मुष्ट्रः श्रयत्यवटमेव सकण्टकौघम्॥ ८/४४

अन्यार्थमप्युपहिता शितिकण्ठसेवा
लोकस्य कल्पलतिकेव फलत्यवश्यम्।
उद्दीपिता खलु परस्य कृतेऽपि येन
तस्यापि दर्शयति दीपशिखाऽर्थसार्थम्॥ ८/४५

यद्यर्चितः स भगवानपि जीविकार्थं
तत्रापि किल्विषविपाकमपाकरोति।
योऽपि द्युसिन्धुपयसि प्लवते निदाघ-
घर्मच्छिदे भवति सोपि हि धौतपापः॥ ८/४६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुर्वन्ति भक्तिमपरैरपि ये नियुक्ता
भर्गस्य तेऽपि भवदुर्गतिमुत्सृजन्ति।
स्तन्यार्थमप्युपहिता पृथुकस्य धात्री
पात्रीभवत्यखिलभोगसुखासिकानाम्॥ ८/४७

दम्भादपि ध्रुवमनङ्गजितः प्रयुक्तः
सेवाविधिः प्रमदसम्पदमादधाति।
वेश्याजनस्य न सुखाय किमङ्राग-
मालादुगूलधवलः कृतकोऽपि वेषः॥ ८/४८

तस्मादुपेत विभुमेव यथातथापि
मुक्तिर्न चेद्भवति किं न गलन्त्यघानि।
यः स्वेच्छयैव निपतत्यमृतह्रदेऽन्त-
र्मज्जत्यसौ यदि न तत्किमुदेत्यसिक्तः॥ ८/४९

क्षीराब्धेरवहेलया वितरणं निर्यन्त्रणं वर्षणं
हेम्नः क्रुद्धकृतान्तमुक्तफणभृत्पाशग्रहोद्वर्हणम्।
यच्चाप्युत्कटकालकूटकवलीकारादिकर्माद्भुतं
क्रीडामात्रकमेव यस्य तदसौ देवः कथं वर्ण्यते॥ ८/५०

स्वच्छन्दस्य यदृच्छया गमयतः प्रेङ्खोलतां भ्रूलता-
माज्ञाऽनुग्रहलाभकत्थनघन- स्पर्धानुबन्धोद्धुराः।
सोष्माणः कलयन्ति यस्य कलहं सेवासु देवासुरा
देवस्याऽस्य महेश्वरस्य महिमश्लाघाविधौ के वयम्॥ ८/५१

उर्वीनीरसमीरणारुणशिखिव्योमात्मसोमात्मकै-
रष्टाभिर्विभवैर्बिभर्ति भुवनं भोक्ता च भोग्यश्च यः।
ब्रूमस्तस्य किमीश्वरस्य महतः स्वैरी स्वकैरेव यः
स्फारैर्ब्रह्मपुरन्दरप्रभृतिभिः शारैरिव क्रीडति॥ ८/५२

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'शरणाश्रयणं' नामाष्टमं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ नवमं स्तोत्रम्

कृपणाक्रन्दनस्तोत्रम्

❀❀❀

दीपोत्करैरविरुचां परिपूरणेयं
नीहारवारिभिरिदं भरणं पयोधेः।
अस्मादृशां मितदृशां नियतैर्वचोभिः
प्रस्तूयते भव तव स्तवचापलं यत्॥ ९/१

अत्राऽपराध्यति गिरो हर धृष्टतेय-
मेषा निसर्गमुखरा मुखरागिणी यत्।
प्रौढिं परामनुपयत्यपि वाञ्छति त्वां
स्वामिन् हठादिव परं पुरुषं ग्रहीतुम्॥ ९/२

यद्वा भवत्यसुलभो भवदाश्रितस्य
शस्यः स कोऽपि महिमा न हि मादृशोऽपि।
स्वच्छन्दमन्दमपि यत्र पदं त्वदुक्षा
धत्ते मही भवति हेममयी हि तत्र॥ ९/३

भीष्मो विषादपि विषादपिनद्धमेत-
च्चेतश्चकार सविकारमकारणारिः।
मोहामयस्तमयमस्तमयं नयामि
स्वामिँस्तव स्तवरसायनसेवनेन॥ ९/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एषः स्तवस्तव नवप्रमदोपदेश-
मादेशयञ्जयति कोऽपि गुरुर्गिरीश।
सद्यः पुरः स्फुरति मे दुरतिक्रमेण
यत्सङ्क्रमक्रमवशेन वचोधिदेवी।। ९/५

नास्य स्पृहाऽस्ति सरसाय रसायनाय
नाऽयन्त्रितेन्दुवदनावदनाऽमृताय।
निर्बन्धमेति तु भवत्सविधे विधेहि
निर्बन्धमन्धकरिपो तदिदं मनो मे।। ९/६

आभाति शक्रनगरी न गरीयसी मे
प्रीतिं च सिञ्चति न काञ्चन काञ्चनाद्रिः।
जाने परं हर शरण्यमरण्यमेव
यत्र त्वदंघ्रिनलिनार्चननिर्वृतिः स्यात्।। ९/७

पुष्पेषु दोहदवशादवशा भृशं या
बभ्राम वामनयनाभुजमञ्जरीषु।
सा साम्प्रतं दृगलिनी वलिनी व्यनक्ति
त्वद्भक्तिकल्पलतिकाफलभोगतृष्णाम्।। ९/८

किं निर्मिता मुकुटचन्द्रकलां निपीड्य
किं वा शिरःशरणनिर्झरिणीजलेन।
किं वा करस्थकलशामृतसंप्लवेन
भक्तिस्त्वया प्रणयिनां भवतापशान्त्यै।। ९/९

स्वामिन्विचित्रचरितस्य तवाऽपदान-
गीतामृतेषु दृढरूढरतिर्ममेयम्।
दूरीकृताऽन्यसरणिर्हरिणीव वाणी
सत्यं पदात्पदमपि क्षमते न गन्तुम्।। ९/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आश्वासनं यमभयाकुलतामृतानां
सञ्जीवनं भवदवव्यथया मृतानाम्।
आलम्बनं सुकविराजगिरामृतानां
सङ्कीर्तनं जयति ते चरितामृतानाम्।। ९/११

दानं तरङ्गतरलः किल दुग्धसिन्धु-
र्मुक्तिः करालतरकालभयात्प्रसादः।
त्यागोऽपि सप्तदिवसानि सुवर्णवृष्टिः
किं किं न चारुचरितं भवतः प्रशस्यम्।। ९/१२

स्वामिन् रजःपरिचितं चपलस्वभावं
जात्या मलीमसमिदं हृदयं मदीयम्।
त्वत्पादपद्मविषये कृतपक्षपातं
धत्ते प्रमोदभरनिर्भरभृङ्गलक्ष्मीम्।। ९/१३

त्वां वामदेवमपि दक्षिणमाश्रितेषु
सर्वत्र शङ्कर वसन्तमपि स्मरारिम्।
अप्यन्तकोपशमहेतुमनन्तकोप-
शान्त्येककारणमचिन्त्यगतिं श्रयामि।। ९/१४

क्वापि प्रसीदसि दिशन्विशदं प्रकाशं
क्वापि प्रयच्छसि घनावरणोपरोधम्।
कुर्मः किमत्र महनीयमहामहिम्नो
नास्त्येव नाम नियतिर्नभसः प्रभोश्च।। ९/१५

चित्तं नतापदुपतापहृतिप्रवृत्तिं
भीताऽभयार्पणपणप्रवणां च वाणीम्।
लोकोपकारपरतन्त्रमिदं वपुश्च
कस्त्वत्परः परमकारुणिको बिभर्ति।। ९/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चित्तं विषादमगमन्न परं प्रसाद-
मौज्झद्विचारमुचितं न बहिः प्रचारम्।
लेभे न कुत्र विवरं प्रवरं न बोध-
मेतत्त्वयैव भगवन्धृतविप्रयोगम्॥ ९/१७

अश्रान्तमान्तरमशान्तरजोविकारं
सारङ्गकेतुमुकुटस्फुटमन्धकारम्।
युक्तं यदन्धयति यद्बधिरीकरोति
कोऽतिप्रसङ्ग इति तत्र न तर्कयामि॥ ९/१८

लीलाविलोलललनानयनान्तवास-
मासाद्य यः क्व न भनक्ति मनस्विनोऽपि।
सोऽयं निविश्य विमले हृदये मदीये
धिङ् मर्ममर्म न भिनत्ति कथं मनोभूः॥ ९/१९

स्वामिन्नसन्तमिव तत्र वसन्तमेव
स त्वामवैति किमिदं, यदि वा किमन्यत्।
दग्धोऽपि यं पुनरवाप्य बिभर्ति गर्वं
सर्वङ्कषो विजयते स तव प्रसादः॥ ९/२० (युग्मम्)

श्रीखण्डचन्दननिघृष्टकुरङ्गनाभि-
कर्पूरकुङ्कुमकरम्बशुभाङ्गरागम्।
उद्यन्नवीनकदलीदलसौकुमार्यं
बिभ्रत्यनङ्गनटमङ्गलरङ्गमङ्गम्॥ ९/२१

फुल्लारविन्दवदना विकसच्छिरीष-
मालाभुजाभिनवनीलसरोजनेत्रा।
ब्रह्मास्त्रमप्रतिहतं विहिता हिताय
पुष्पायुधस्य कुसुमैरिव माधवेन॥ ९/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नाथेति जीवितहरेति दयापरेति
सप्रेमकोपमतिकोमलमालपन्ती।
गाढानुरागविवृताखिलगूढभाव-
मावर्जयन्त्यविषयैर्वचसां विलासैः॥ ९/२३

किं वा परं कुपितनिर्घृणपञ्चबाण-
बाणौघभिन्नहृदया परिरभ्य गाढम्।
मुग्धाजनस्य सहजामवजित्य लज्जा-
मौत्सुक्यसान्द्रमधरामृतमर्पयन्ती॥ ९/२४

आक्षिप्तसिन्धुमथनोत्थमहामृतौघ-
भावत्कभक्तिरसपारणनित्यतृप्तम्।
प्रत्याहृतेन्द्रियमवाप्तसमाधिसौख्यं
न त्वत्परं हरति सा हरिणेक्षणाऽपि॥ ९/२५

हेलावलन्मलयमारुतकम्पितानां
शीर्णैः फलैः स्वयमरण्यमहीरुहाणाम्।
वृत्तिर्हरस्मरणघूर्णितचेतसः क्व
दीनं मुखं क्व च पुरः कुमहीपतीनाम्॥ ९/२६

नेत्रत्वमीश तव मूर्तिविलोकनेषु
वाक्त्वं भवच्चरितचर्वणविभ्रमेषु।
त्वत्संकथाश्रवणकर्मणि कर्णभाव-
मिच्छन्ति गन्तुमपराणि ममेन्द्रियाणि॥ ९/२७

यच्छत्रचामरसिता कृतिनां विभूतिः
सः स्वल्प एव भगवन् भवतः प्रसादः।
त्वत्साम्यमेव तु सतामधिकस्ततोऽपि
यद्वल्कलं च वसनं विपिनं च वासः॥ ९/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

त्वत्पादपङ्कजरजश्छुरितौ च पाणी
वाणी भवच्चरितचर्वणगर्विता च।
चित्तं भवद्गुणगणस्मरणव्रतं च
भूयो भवन्ति मम चेदहहास्मि धन्यः॥ ९/२९

भिक्षाशनोऽपि भगवंस्त्वमकिञ्चनोऽपि
जीर्णश्मशाननिलयोऽपि दिगम्बरोऽपि।
किं वा परं वरद घस्मर भस्मरूक्ष-
गात्रोऽपि सन्मम विभुः प्रतिजन्म भूयाः॥ ९/३०

याचे न किञ्चिदपरं वसतिर्गिरीन्द्रे
कैलासनाम्नि भवदध्युषिते ममास्तु।
किं वा न तत्र भगवन् मम ये सखाय-
स्तेऽन्येऽपि सन्ति गवयाः कपयः कुरङ्गाः॥ ९/३१

वाचाममी न विषये विषयेषु येषु
तृष्णाऽन्वभावि विषमा विषमाकिरन्ती।
तन्मां भजोज्ज्वलविलोलविलोचनान्त-
विन्यासभासुरसुधार-सुधारसेन॥ ९/३२

नानुग्रहस्तव विना त्वयि भक्तियोगं
नानुग्रहं तव विना त्वयि भक्तियोगः।
बीजप्ररोहवदसावनयोर्न कस्य
भूत्यै परस्परनिमित्तनिमित्तिभावः। ९/३३

शान्तं मनो यदि यमैर्नियमैः किमन्यै-
र्वाणी यदि प्रियहिता स्तुतिचाटुभिः किम्।
कारुण्यमस्ति यदि किं व्रतहोमदानै-
र्भक्तिर्भवे यदि किमन्यसुखाभिलाषैः॥ ९/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

भुक्तं विकल्पकवलैः सुरलोकसौख्य-
मालोकिता विविधशास्त्रदृशैव मुक्तिः।
पीता सुधा श्रवणशुक्तिपुटैः समक्ष-
मास्वादिता पुनरियं शिवभक्तिरेव॥ ९/३५

दीर्घाण्यघान्यधिशुचीव भवन्त्यहानि
हानिर्बलस्य शरदीव नदीजलस्य।
दुःखान्यसत्परिभवा इव दुःसहानि
हा, निःसहोऽस्मि कुरु निःशरणेऽनुकम्पाम्॥ ९/३६

निर्भर्त्सितो विपदि बन्धुरिवाऽभिमानी
मा नीरसं स्पृशतु नाम मनो विवेकः।
विद्यां निदाघ इव घर्मरुचिर्हिमानी-
मानीय नाशमुपतापयते तु मोहः॥ ९/३७

तस्मादुपैति न तनुस्तरसाऽवसायं
सायन्तनी प्रतिपदिन्दुकलेव यावत्।
तावत्कृपां कुरु हतोऽस्म्यहमंहसाऽयं
सा यन्त्रिता मयि तवास्तनयेन येन॥ ९/३८

अभ्येति मृत्युभटसंहतिरस्तकम्पा
कम्पामहे मनसि यां विनिवेशयन्तः।
एका गतिर्गिरिश तत्र तवानुकम्पा
कम्पात्रतां नयति या न शुभोदयानाम्॥ ९/३९

यन्निःस्पृहोप्यजनयस्तनयं कुमारं
मारं विधाय शलभं नयनानलस्य।
तत्ते परार्थमिति विश्रुतमाकुमारं
मा रंहसा जहिहि देहि तदेहि वाचम्॥ ९/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सर्वस्वमेव मम दत्तमहाप्रहारा
हारामलं हर हरन्त्यरयो विवेकम्।
रक्षाकरी तव कृपाऽत्र कृताऽवहारा
हा राजशेखरमणेः पुरतो हतोऽहम्।। ९/४१

देवालये वसतिमर्थयते कपोतः
सिन्धौ वणिग्भजति वृत्तिमशङ्कपोतः।
पृष्ठे श्रियं वहति नित्यमनेकपोऽत-
स्त्वद्भक्तिमेमि सरसीमिव भेकपोतः।। ९/४२

लब्धा धृतिर्दिवि कदाचन वासवेन
सैन्येन सा परिवृतेन न वासवेन।
नो वा बलेन भुवि पीतनवासवेन
त्वां भेजुषो भवति याऽभिनवा सवेन।। ९/४३

या दुर्लभा दिवि महर्षभयान कस्य
कालस्य या निधनधाम भयानकस्य।
वाचा तया कृतनतेरभयानकस्य
तुल्यश्रियाऽर्पयसि शं शुभया न कस्य।। ९/४४

यं वीक्षसे क्षतमहाकलिकाल सन्तं
क्लिष्टं कृतीकृतबृहत्कलिकाल सन्तम्।
इन्दोरिवाऽमृतमयी कलिका लसन्तं
बालाऽवलोकयति सोत्कलिकालसं तम्।। ९/४५

मुक्तावलीव रहिता शिव नायकेन
मुक्ता भवद्गणसभेव विनायकेन।
वाणी त्वया परिहृताऽखिलनायकेन
संभाव्यते हृदयसंवननाय केन।। ९/४६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यस्योचितः प्रथितमान समाधिनान्त-
स्तेनार्तिमुद्वहति मानसमाधिनान्तः।
शुद्धां मतिं स्पृशति पांसुलभावलेप-
स्तत्राप्युपैषि न कृपां सुलभावलेपः॥ ९/४७

कामं भवेऽत्र बहवः सुभगस्वभावा
भावा भवन्तु मम तु द्वितयं स्पृहायै।
शब्दार्थपाकरुचिरा कविराजगीर्वा
गीर्वाणसिन्धुधरभक्तिरभङ्गुरा वा॥ ९/४८

ज्योत्स्नाछटाभिरिव देव चकोरकस्य
भास्वत्प्रभाभिरिव पङ्कजकोरकस्य।
दैवीभिरद्भिरिव बर्हिकिशोरकस्य
प्रीतिर्न ते नुतिकथाभिरघोर कस्य॥ ९/४९

वृत्तं क्व ते सकलवाङ्मनसातिवृत्तं
चेतः स्खलद्गति भवावरणात्क्व चेतः।
वित्रासवन्तमिति मामनुदत्पवित्रा
भक्तिः स्तुतिस्तव कृतेयमतः सुभक्तिः॥ ९/५०

वन्दामहे च विविधं विवदामहे च
लज्जामहे च कलुषाणि भजामहे च।
ईहामहे च कुवचांसि सहामहे च
दह्यामहे च दुरितैर्जठरस्य हेतोः॥ ९/५१

लब्धं चिरेण सुकृतैरचिरस्थिरं च
मानुष्यकं पुनरिदं सुलभं न चेति।
जानीम एव च न च स्वहितं विधातु-
मीहामहे वयमहो बत यद्भविष्याः॥ ९/५२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तस्मादवश्यमवशानविशङ्कमेव
भोगोपभोग-रसिकानसमाप्तकृत्यान्।
यावन्न धीवर इवैत्य तिमीनकस्मा-
न्मृत्युः क्षणादशरणान् हरते हठेन॥ ९/५३

तावत्प्रसीद कुरु नः करुणाममन्द-
माक्रन्दमिन्दुधर मर्षय मा विहासीः।
ब्रूहि त्वमेव भगवन् करुणार्णवेन
त्यक्तास्त्वया कमपरं शरणं व्रजामः॥
९/५४ (युग्मम्)

जातस्य मृत्युरिति चेत्स न लङ्घितः किं
श्वेतेन शीतकरशेखरनन्दिना च।
ताभ्यामसौ यदि जितो विपुलैस्तपोभि-
रस्माकमल्पतपसां त्वनिवार्य एव॥ ९/५५

तर्ह्यर्चनान्तसमये तव पादपीठ-
मालिङ्ग्य निर्भरमभङ्गुरभक्तिभाजः।
निद्रानिभेन विनिमीलितलोचनस्य
प्राणाः प्रयान्तु मम नाथ तव प्रसादात्॥
९/५६ (युग्मम्)

एतेन किं निविडबन्धभृतो भुजङ्गाः
किं वा न वक्रिमविलासविकासभाजः।
किंतु क्रमादपचिताः पदगुम्फहीनाः
सूक्तामृतानुकरणे कथमुत्सहन्ते॥ ९/५७

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तस्माद्भयङ्करमदः फणिकर्णपूर-
हेवाकदुर्ललितमस्तनयं विहाय।
स्वामिन्निमाः श्रवणयोः प्रणयोपचार-
गर्भा गिरश्चतुरमाभरणीकुरुष्व॥ ९/५८ (युग्मम्)

स्वामिन्नबान्धवतया बत या तवेयं
वाणी मया निजगदे जगदेकबन्धोः।
तामन्तकान्तकर शङ्कर शंसतो मे
कर्णे कुरुष्व करुणां करुणाम्बुराशे॥ ९/५९

पश्यन्तमन्धमभिमानिनमस्तमानं
विस्तीर्णकर्णमपि या बधिरं करोति।
साऽऽर्त्तिर्न नर्तयति किं कुनृणामिव श्रीः
तस्मात्क्षमस्व भगवन्नतिलङ्घनानि॥ ९/६०

उच्छृङ्खलं खलमलङ्घ्यबलं ज्वलन्त-
मन्तः कृतान्तमविकल्पमनल्पदर्पम्।
आशङ्क्य शङ्करचरित्रपवित्रचित्र-
सूक्तिष्वपि स्थिररुषं प्रतिबोधयामः॥ ९/६१

प्रत्यग्रकर्कशमशल्कमुदर्कपथ्यं
तथ्यं सतोषमपदोषमरोषपोषम्।
सन्धित्सवस्तव कृतान्तहितं मितं च
यद्ब्रूमहे तदवधारय सावधानः॥ ९/६२

अन्यत्र दर्शय निरङ्कुश हुङ्कृतानि
कीनाश नाशय दुराशय माऽभिमानम्।
नाथीकृतेन्दुमुकुटानपि नाम मन्ये
निर्भर्त्सयिष्यसि हतैव तवेयमाशा॥ ९/६३

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

येनेश्वरेण महता विहितागसस्ते
कृत्वाऽपि शासनमकारि पुनः प्रसादः।
तत्सेवका वयमतस्तव विद्विषोऽपि
यद्ब्रूमहे हितमदो मनुषे रुषेति॥ ९/६४

रे दुर्विनीत खल काल पुरा पुरारे-
र्यामाप्तवानसि निजाविनयप्रशास्तिम्।
श्रुत्वैव तां धृतिमतामपि कम्पमेति
चेतः कथं पुनरुपक्रमसे तदेव॥ ९/६५

पाणौ निधेहि पवनाशनपाशमाशु
नास्तीह ते पुरुषपाश रुषोऽवकाशः।
निःसङ्करेषु शरणीकृतशङ्करेषु
रे काल कातरभयङ्कर किं करोषि॥ ९/६६

व्यापारय स्वपुरुषं पुरुषं परेषु
मा रोषमङ्कुरय शङ्करकिङ्कराणाम्।
किं विस्मृतं विषधरायुध निर्निरोध-
क्रोध-प्रबोध-पटहं हरहुङ्कृतं ते॥ ९/६७

कीनाश बालिश निरङ्कुश निर्विमर्श
निस्त्रिंश निष्करुण निःशरणेषु चेत्त्वम्।
निष्कारणं निरनुरोध करोषि रोषं
तत्किं चिकीर्षसि महेश्वरसंश्रितेषु॥ ९/६८

कुर्वन् विरोधमनिरोधमबान्धवेषु
धत्से मुधा यम समुद्धतकन्धरत्वम्।
तीव्राऽपराधविधुरेष्वपि साधवो हि
बाधां विधातुमधमेष्वपि न क्षमन्ते॥ ९/६९

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यत्प्राणिषु प्रभवसि प्रसभं प्रहर्तुं
प्राप्य प्रभोः प्रमथनाथपितुः प्रसादम्।
तत्प्राक्कृतस्य दुरितस्य दुरुत्तरस्य
तेषां फलं तव किमन्तक पौरुषं तत्॥ ९/७०

तत्तथ्यमेव किमकारणकण्टकं त्वां
यद्धर्मराज इति काल जनाः स्तुवन्ति।
लोका न किं जगदमङ्गलमूलकोषं
शंसन्ति मङ्गलविहङ्गम इत्युलूकम्॥ ९/७१

त्वां जीवितेश इति यत्स्तुवते रुदत्यः
कापालिकाः शवदहो गुरवो द्विजाश्च।
तद्युक्तमन्तक यतः परमः सुहृत्त्वं
तेषामकारणरिपुस्त्वसुहृत्परेषाम्॥ ९/७२

क्लिश्यन्त्यवश्यमपमार्जनभूतयाग-
निर्याणकर्मचरमेष्टिशिवक्रियाद्यैः
ये दैशिकाः परमकारुणिकाः परार्थे
त्वां श्राद्धदेव इति ते रविज स्तुवन्ति॥ ९/७३

देशं न यत्त्यजति सन्तमसन्तमन्तं
ध्वान्तं नयंस्तव पिता समवर्त्यतोऽर्कः।
त्वं सत्स्वसत्स्वपि समं प्रहरस्यतोऽपि
सद्यः स्तुवन्ति समवर्त्तिनमन्तक त्वाम्॥ ९/७४

कोपं विधाय तव येन कृतः प्रसाद-
स्तत्सेवकेष्वपि चिकीर्षसि यत्प्रसादम्।
किं तत्र वर्तयसि मां समवर्त्यतोऽपि
त्वं स्तूयसे विषमवर्त्यपि मर्मविद्भिः॥९/७५(युग्मम्

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भालस्थलानि कलयस्यमलेन्दुमौलि-
पादारविन्दमकरन्दसितानि येषाम्।
त्वं मानवानसि विमानय मा नयज्ञ
तन्मानवानवसि रौद्र यदि स्वमौद्रम्।। ९/७६

दुर्वृत्तदर्पशमनाच्छमनोऽसि यत्त्वं
यद्वा यमोऽस्यधमसंयमनात्तदन्यत्।
मन्ये मदं शमयितुं प्रभवस्तवैव
त्वामेव वा यमयितुं भवभक्तिभाजः।। ९/७७

उद्वृत्तमन्तक नृशंस भृशं सगर्व
शर्व-स्तव-व्यवसितेष्वपि चेष्टसे यत्।
तद्भावि भाविभव-भैरव-भैरवोग्र-
भालानलोद्भवपराभवकृत्पुनस्ते।। ९/७८

किं वाऽन्यदर्कज विशङ्क विशङ्कटास्य
हास्यं चिकीर्षसि यदीश्वरसंश्रयाणाम्।
तन्मा कृथा न हि तवाश्रितवत्सलोऽसौ
सानुग्रहोप्यनुचितं क्षमते महेशः।। ९/७९
(कालोपालम्भ-कुलकम्)

भालस्थलीव तिलकेन वधूकटाक्ष-
विक्षोभितेन तिलकेन वनावलीव।
विज्ञप्तिरेणतिलकेन विभावरीव
शोभां वसन्ततिलकेन बिभर्त्ति शम्भोः।। ९/८०

वासः क्षीणदशं वयश्च करणग्रामं मनश्चाऽक्षमं
निःसारेषु दुरीश्वरेष्वपचितेरुद्वेगमङ्गेष्वपि।
व्यर्थं वेश्म नृजन्म चाखिलमिदं कल्याणशून्यं वपुः
कोषं चोद्वहतः कुरुष्व करुणां चित्ते गिरं च श्रुतौ।। ९/८१

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अज्ञस्तावदहं न मन्दधिषणः कर्तुं मनोहारिणी-
श्चाटूक्तीः प्रभवामि यामि भवतो याभिः कृपापात्रताम्।
आर्तेनाऽशरणेन किं तु कृपणेनाक्रन्दितं कर्णयोः
कृत्वा सत्वरमेहि देहि चरणं मूर्धन्यधन्यस्य मे॥ ९/८२

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'कृपणाऽऽक्रन्दनं' नाम नवमं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ दशमं स्तोत्रम्

करुणाक्रन्दनस्तोत्रम्

❀❀❀

जयति चित्तचकोरकचन्द्रिका
सुकृतिनां वदनाब्जरविच्छविः।
श्रवणबर्हिणवर्षणवर्तनी
हरिणकेतुकलामुकुटस्तुतिः॥ १०/१

जयति भक्तिलतानवमाधवः
सुकृतपादपपक्वफलोद्भवः।
विपदुपद्रवविक्लवबान्धवः
सुकविसूक्तिवधूवदनासवः॥ १०/२

भव-महार्णव-निस्तरणप्लवः
प्रवरसूरिमयूरघनारवः।
हृदयदाहहृतावमृतद्रवः
कुमुदिनीरमणाभरणस्तवः॥ १०/३ (युग्मम्)

मधुरमिन्दुमुखीवदनादपि
क्लमहरं सुरसिन्धुजलादपि।
त्रिभुवनाधिपतिस्तुतिपावनं
जयति सत्कविसूक्तिरसायनम्॥ १०/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नवनवभ्रमरस्वनशोभिनी
भवमरुभ्रम-घर्म-शम-क्षमा।
हृदयनन्दनचन्दन-कन्दली
जयति शङ्करभक्तिरभङ्गुरा।। १०/५

अथ कथञ्चन रूढमपि क्षणं
मनसि वीक्ष्य विवेकनवाङ्कुरम्।
बहुविधव्यसनौघविघट्टितं
सपदि विज्ञपयामि जगद्गुरुम्।। १०/६

अपि जगद्विदितः करुणापरः
परहिताऽऽहितमूर्त्तिपरिग्रहः।
किमिति हंसि न हंस हृदम्बुजे
कृतपदो विपदः शरणार्थिनाम्।। १०/७

यदि भवान् विदधीत हृदि स्थितिं
व्यसनसम्पदसौ प्रसरेत्कथम्।
यदि न सा प्रसरेत्प्रसजेत्कथं
बुधजनोऽप्यसमञ्जसकर्म्मसु।। १०/८

इह बृहद्भिरुदग्रपरिग्रह-
ग्रहगृहीतमतिर्व्यसनोद्गमैः।
यदि न कातरतां परतन्त्रता-
मफलतां खलतां च भजेज्जनः।। १०/९

यदि भजेत न सज्जनसङ्गम-
व्यसनसर्पदनल्पकृपास्पदम्।
हृदयमिन्दुमयूखसुखाहति-
व्यतिकरद्रुतचन्द्रमणिश्रियम्।। १०/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अभिलषेयुरनर्गलदुर्गति-
प्रसरदीर्घनिदाघ-निपीडिताः।
यदि घनागमवन्न धनागमं
प्रणयिनस्तृषिता हरिणा इव॥ १०/११

यदि न पीनघनस्तनभङ्गुर-
त्रिवलिभङ्गितरङ्गितमध्यमाः।
इह हरेयुरपाङ्गविलोकितै-
र्धृतरतिप्रमदाः प्रमदा मनः॥ १०/१२

बलवदिन्द्रियतस्करसङ्कुले
विषयभीमभुजङ्गमभीषणे।
दुरितदीर्घदवानलदुःसहे
बहलमोहतमोहतसंविदि॥ १०/१३

कृतधियोऽपि भवाध्वनि धावतः
प्रबलकर्मरयापहृतात्मनः।
अवसरे प्रहरेयुरमी न चेन्-
मदनमानमुखाः परिपन्थिनः॥ १०/१४ (युग्मम्)

उपचितोऽभिनवाम्रदलावली-
कवलनाकुलकोकिलकूजितैः।
यदि न तर्जयितुं प्रभवेन्मधौ
मदनदिग्विजयोद्यमडिण्डिमः॥ १०/१५

यदि मधौ मधुपान-मदोन्मद-
भ्रमर-गायन-गुञ्जित-गीतयः।
सुखलवानुभवाय कृतस्पृहं
हर हरेयुरिमं न मनोमृगम्॥ १०/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अभिनवस्तवक-स्तन-सन्नताः
पवन-नर्तित-पल्लव-पाणयः।
यदि न बन्ध-निबन्धनमृध्नुयु-
र्मधुपगुञ्जितमञ्जुगिरो लताः॥ १०/१७

यदि शुचौ मनसीव न मानिनां
घनमनेहसि तापमुपावहेत्।
सरजसो हरितस्तरुणैः करै-
रविरलं परिरिप्सुरहर्पतिः॥ १०/१८

पृथुलसज्जघनोरुपयोधरा
गुरुमरुच्चपलाकुलिताम्बराः।
यदि भवेयुरिमा न घनागमे
मृगदृशश्च दिशश्च धृतिच्छिदः॥ १०/१९

सुरभिगन्धि-सहास-मुखाम्बुजा
धृतमनोहरहंसकविभ्रमाः।
यदि न मज्जनधाम नतभ्रुवः
शरदि संस्मरयेयुरगापगाः॥ १०/२०

यदि न दीर्घतमाः समवाप्नुयुः
सहसि दुर्विषहोल्बणवायवः।
धृतघनोष्मबृहत्तरुणी-स्तन-
स्मरणकारणतामपि रात्रयः॥ १०/२१

यदि भवेन्न घनावरणोद्गम-
ग्लपितधामनि धामनिधौ बहिः।
तपसि चेतसि च व्यसनाकुले
तपसि रूढरसोऽप्यलसो जनः॥ १०/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तदखिलापदुपोद्धरणक्षमं
समधिगम्य दुरापमिदं पुनः।
पवनवेल्लितबालमृणालिनी-
दलचलज्जलबिन्दुनिभं वपुः।। १०/२३

भव भवत्पदपङ्कजपूजन-
व्यसनसौमनसामपहाय कः।
इह सहेत विभूतिलवोन्मिष-
न्मदकदर्यविकारकदर्थनाम्।। १०/२४
(युग्मम्) (अष्टादशभिः कुलकम्)

इदमुदञ्चति मेघमयं महत्
पिहितभास्वदमन्दमहस्तमः।
घनबलोऽपि स काल उपस्थित-
स्तदिह हंस पदं कुरु मानसे।। १०/२५

इति यदन्तरनन्त तिरोदधन्-
मुदमुदञ्चति मोहमहातमः।
तव रवीन्दुहुताशनचक्षुषो
हृदि निवेदयतीदमसन्निधिम्।। १०/२६

न हि महेश मनस्त्वदधिष्ठितं
भ्रमयितुं प्रभवन्ति भवोर्मयः।
न हि वनं हरिणाधिपरक्षितं
क्षपयितुं कपयः क्वचन क्षमाः।। १०/२७

वरमरण्यसरित्पुलिनस्थली-
तरुतले फलमूलजलाशिनः।
स्थितिरनर्गलवल्कलवाससो
न शिवभक्तिमृते त्रिदशेन्द्रता।।
(प्रक्षिप्तमेतत्)१०/२७अ

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भवति पश्यति नश्यति दुर्गतिः
स्फुरति शक्तिरुपैति धृतिं मतिः।
स्तुतिकृति प्रतिपत्तिमति श्रुति-
स्मृतिभृति स्थितिमेति च निर्वृतिः॥ १०/२८

कति न बुद्बुदवद्भववारिधा-
विह लसन्ति गलन्ति च जन्तवः।
समजनि स्पृहणीयजनिः पुन-
र्जगति कश्चन यः शिवसेवकः॥ १०/२९

सपदि पीठविलोठितमूर्तिभि-
र्भगवतः शुचिभिर्धृतभक्तिभिः।
चरणरेणुकणैरिव मादृशै-
र्दिविषदामपि मूर्ध्नि पदं कृतम्॥ १०/३०

निपततां विषमे विपदम्बुधौ
यदवलम्बनमस्तविडम्बनम्।
जगदमङ्गलभङ्गविधायि त-
ज्जयति रत्नमहो शिवसेवनम्॥ १०/३१

जयति जन्मजरामरणव्यथा-
शमसमर्थमनर्थनिवर्हणम्।
सकलमङ्गलधाम सुधामयं
भगवदर्चननाम महौषधम्॥ १०/३२

इदमसाधितमेव रसायनं
निरुपभोगमिदं सुखमक्षयम्।
अमृतमेतदनम्बुधिमन्थनं
यदविनश्वरमीश्वरसेवनम्॥ १०/३३

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

किमफलैरपरैर्भवशम्बरैः
करितुरङ्गरथाम्बरडम्बरैः।
भगवदंघ्रिसरोरुह-सेवन-
व्यसनमस्तु ममानिधनं धनम्॥ १०/३४

वहतु सा रमणी रमणीयता-
ममृतमस्त्वमृतं मधु वा मधु।
भवतु निर्वृतिधाम तु यामिनी-
रमणमण्डनसेवनमेव नः॥ १०/३५

अहमहर्निशमेकमना मना-
गुपरमन्मदमन्मथमत्सरः।
भवगतीरवगत्य दुरत्ययाः
शशधराभरणं शरणं श्रये॥ १०/३६

इदमहं करुणामृतसागरं
शशिकिशोरशिरोमणिमर्थये।
व्रजतु जन्मनि जन्मनि मे वपु-
र्भवदुपासनसाधनतामिति॥ १०/३७

कमपि नाम निकाममनोहरं
वहति टङ्कमनङ्कुशमेव यत्।
तदकलङ्कमलङ्करणं मुखे
भवतु मे शिवनाम निरामयम्॥ १०/३८

हृदय भावय भावमनाविलं
निरवधान बधान दृढां धृतिम्।
त्वमसमर्थ समर्थयसे सुखं
किमविनाशि विना शिवसेवनम्॥ १०/३९

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भवरसं प्रति सम्प्रति तृष्णया
त्यजसि मानस मानसमुन्नतिम्।
मदनशासनशासनतः परं
कमनपायमुपायमुदीक्षसे॥ १०/४०

उपवने पवनेरितमाधवी-
धवलिते वलिते तरुपंक्तिभिः।
अमल-कोमलकोषनिषण्ण-षट्-
चरण-पारणपावन-पङ्कजे॥ १०/४१

समदने मदनेन वशीकृता
वरवधूरवधूय भज प्रभुम्।
अशरणोद्धरणोद्धतधीः शुचा-
मुपरमं परमं स करोति ते॥ १०/४२ (युग्मम्)

जहिहि मोहमुपेहि निजां स्थितिं
त्यज शुचं भज मानपरिग्रहम्।
अहरहर्हरपाद-सरोरुह-
स्मृतिरसायनपानपरं भव॥ १०/४३

तदसमञ्जसमङ्ग यदङ्गना-
नयनचापलशापमुपेयताम्।
नयसि नित्यबहिर्मुख शङ्कर-
स्मरण-सौमनसीमपि हेयताम्॥ १०/४४

यदि समर्थयसे दुरतिक्रमं
कुपित-काल-भट-भ्रुकुटीभयम्।
तदचिकित्स्यभवामयभेषजं
भज भुजङ्गमभूषणतोषणम्॥ १०/४५

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यदि चिकीर्षसि सौहृदमात्मनः
परिजिहीर्षसि यद्यघबन्धनम्।
यदि तितीर्षसि संसृतिसागरं
श्रय मयस्करमीश्वरसेवनम्।। १०/४६

यदि वराक सुकर्मविपाकतः
करतले पतितस्तव शेवधिः।
तमखिलापदपाकरणक्षमं
नयसि मूढ निरर्थकतां कथम्।। १०/४७

अमल-शीलकुल-श्रुत-विश्रुतं
सदसदर्थविचार-विशारदम्।
पुरजिदर्चनसौख्यपराङ्मुखं
नयसि मानस मानुषजन्म यत्।। १०/४८

भ्रमदमन्थरमन्थरयाहति-
ध्वनदमुद्रसमुद्रसमानया।
शमितशाप-दशा-पदमेहि मे
हर गिरा वितरावितथं वरम्।। १०/४९

अनुगृहाण गृहाण घृणार्णव
प्रणयिनः प्रणयानुगुणं वचः।
उपकुरुष्व कुरुष्व दृढं मना-
गशरणोद्धरणप्रवणं मनः।। १०/५०

पृथुशिरस्त्रिदशापगया श्रितं
करुणया हृदयं शिवया वपुः।
कथमतिप्रमिते भगवन् धृतिः
श्रवणरन्ध्रपदेऽपि न मे गिरः।। १०/५१

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

त्वदनुरागभरेण कदर्थिता
त्वदनुरञ्जनकर्मणि चाक्षमा।
इति मतिर्मम चाटुपराङ्मुखी
हर करोति निजार्तिनिवेदनम्॥ १०/५२

प्रियतमोऽसि मतेर्मम सा पुन-
र्न गुणवत्यपि ते हृदयङ्गमा।
इति महेश भवद्विरहातुरा
भजति कामपि कामकदर्थनाम्॥ १०/५३

भव भवत्परिरम्भसुखोऽस्तु मा
त्वदुपभोगविधौ तु कथैव का।
तव तु दर्शनमात्रककांक्षिणीं
मम मतिं कथमित्थमुपेक्षसे॥ १०/५४

कुटिलतां न जगाम निकामतो
न सहजं मलिनत्वमुपेयुषी।
वहसि किं घनरागकदर्थितां
मम मतिं प्रति कर्कशमाशयम्। १०/५५

अथ गता परिणामदशामिति
त्यजसि चेन्मम मुग्धतमां मतिम्।
किमपरं घनमोहविमूर्छिता
प्रथयतां तव निर्दयतामियम्॥ १०/५६

इदमनङ्गजनङ्गमसङ्गम-
भ्रमदमन्दमलं चपलं मनः॥
अमृतकुम्भकर द्युतरङ्गिणी-
धर सुधाकरशेखर शोधय॥ १०/५७

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भवमरुभ्रमखेदकदर्थितं
सुविषमैस्तृषितं विषयोष्मभिः।
मदयते हृदयं मम निर्भरं
भव भवच्चरणस्मरणामृतम्॥ १०/५८

विषयपन्नगपाशवशीकृतं
भवमहार्णवमग्नमनीश्वरम्।
बहलमोह-महोपलपीडितं
हर समुद्धर मां शरणागतम्॥ १०/५९

यमभटैर्ह्रियमाणमयन्त्रणै-
रशरणं शरणं चरणौ श्रितम्।
घनघृणामृतनिर्भरया दृशा
मदन-मर्दन मामवलोकय॥ १०/६०

अभयघोषमिषोन्मिषिताऽमृत-
द्रवमवन्ध्यधृतस्मितचन्द्रकम्।
वदनचन्द्रमसं तव पश्यतो
मम कदा नु तमः शममेष्यति॥ १०/६१

प्रबलतापकदर्थितविग्रहं
द्विजपतिं परिपालयितुं शिशुम्।
वहसि किं न विभो हृदये दयां
शिरसि निर्जरनिर्झरिणीमिव॥ १०/६२

प्रणततापविपत्क्षपणक्षमां
दलितसन्ततसन्तमस-स्थितिम्।
हृदि निधेहि दयाममृतस्रुतं
हरिणकेतुकलामिव मूर्धनि॥ १०/६३

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अभिमताधिकसिद्धिविधायिनीं
भवदवच्छिदमव्यभिचारिणीम्।
वह विभो हृदये दयितां दयां
वपुषि भूधरराजसुतामिव॥ १०/६४

चिन्तामणिः स्फटिकजातिरचेतनोऽपि
कल्पद्रुमः कठिनकाष्ठविनिर्मितोऽपि।
तिर्यग्दशामपि गता किल कामधेनु-
र्भाग्यैरभीष्टफलदा कृतिनां भवन्ति॥ १०/६५

त्वं तु प्रभो त्रिभुवनैकमहेश्वरोऽपि
पर्याप्तशक्तिरपि पूर्णकृपार्णवोऽपि।
आक्रन्दतोऽपि करुणं विधिवञ्चितस्य
त्यक्तादरोसि मम दर्शनमात्रकेऽपि॥ १०/६६ (युग्मम्)

चिरं द्वारोपान्ते स्थितमवसरोद्वीक्षणधिया
तिरस्कारः सोढः कुपितमुखरद्वाःस्थविहितः।
मुखं दीनं कृत्वा विभवलवगर्वान्धितदृशां
कदीशानामग्रे क इव न विसोढः परिभवः॥ १०/६७

परिम्लानो मानस्तनुरपि तनुस्ताम्यतितमां
मनो मोहावर्ते भ्रमति धृतिरस्तं व्रजति च।
कथापि क्लेशानामवतरति नोच्छेदपदवीं
दवीयस्यामस्यां भवभुवि मुधा धावति मतिः॥ १०/६८

तदेवं दुर्वारव्यसनशतसंपातविषमं
विशन्नेष स्वामिन्नहह सुमहन्मोहगहनम्।
अविन्दन्नाश्वासक्षममपरमापन्नसुहृदं
जनोऽवज्ञापात्रं भवति करुणाब्धेर्न भवतः॥
१०/६९ (तिलकम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कदर्याणामग्रे तरलनलिनीपल्लवतल-
प्रलीनप्रालेयप्रचलकमला-मूढमनसाम्।
अदभ्रभ्रूभङ्गप्रभवमवमानं हतधियः
सहन्ते हन्तेह द्रविणकणतृष्णान्धितदृशः॥ १०/७०

अहं तु प्रत्यग्रप्रभुचरणराजीवरजसा
पवित्रं मूर्धानं दधदधिकभक्तिग्रहगुरुम्।
भ्रुकुंसत्वं बिभ्रत्प्रमदभरसन्दर्भरभसा-
द्व्रजेयं भूतेशभ्रुकुटिघटनाभाजनभुवम्॥ १०/७१(युग्मम्)

सुरस्त्रोतःस्वत्यास्तटविटपिपुष्पौघसुरभौ
गिरिग्रावग्रामस्खलनमुखरस्त्रोतसि जले।
श्रमक्षामैरङ्गैरगणितभवक्लेशविपदां
कदा स्यान्नस्तृप्तिर्हरचरणसेवासुखरसैः॥ १०/७२

अमन्दानन्दानां दलदलघुसन्तापविपदां
पदाम्भोजद्वन्द्वं शिरसि दधतामिन्दुशिरसः।
कदा नः कालिन्दीसलिलशबलैरम्बरसरि-
त्तरङ्गैरङ्गारीभवति भवबन्धेन्धनचयः॥ १०/७३

सान्द्रानन्दस्तिमितकरणः पुण्यनैपुण्यभागी
भागीरथ्यास्तटविटपिनः क्वापि मूले निलीनः।
सर्वाकारं गिरिपतिसुताकान्तमेकं प्रपन्नः
स्वात्मारामः शमसुखसुधास्वादमभ्येति धन्यः॥ १०/७४

अभिजनगुणख्यातिप्रज्ञाभिमानभरोद्धुरां
क इव सदसि प्रह्वीकर्त्तुं क्षमेत शिरोधराम्।
विदधति मुहुर्हेलाखेलं भवत्यवधीरणं
भ्रमयितुममी युक्ता न स्युर्यदीन्द्रियवैरिणः॥ १०/७५

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मानः कस्य न वल्लभः खलमुखप्रेक्षित्वदुःस्था स्थितिः
कस्य प्रीतिकरी त्रपाभरनतं कस्मै शिरो रोचते।
किन्तु स्वामिनि साऽवलेपहृदये दासीकृताः शत्रुभिः
क्षुद्रानद्यतनेश्वरान्धनमदक्षीवान्निषेवामहे।। १०/७६

स्तब्धा द्वारि यदास्महे क्षितिभुजां निर्भर्त्सिता वेत्रिभि-
र्यद्गर्वान्धनरेन्द्रवल्लभदुरुद्गारैर्विदह्यामहे।
यन्मिथ्यास्तुतिपातकैर्भगवतीं वाचं तिरस्कुर्महे
तत्सर्वं तव वक्रवक्त्रवलनामात्रस्य विस्फूर्जितम्।। १०/७७

दृष्ट्वा पाटलगण्डलेखमरुणोद्बाष्पेक्षणं प्रस्फुरद्-
बिम्बोष्ठं प्रथमापराधकुपितं वक्त्रं कुरङ्गीदृशः।
यत्सप्रेम सविस्मयं सविनयं सापत्रपं सस्पृहं
सत्रासं च मनोऽभवत्तदधुना श्रान्तं च शान्तं च नः।। १०/७८

यत्खर्वीक्रियते सुखं विषयजं त्वद्भावनाजन्मना
ह्लादेन क्षणिकं स्थिरेण महता स्वल्पं किमत्राद्भुतम्।
तच्चित्रं भवदुःखजं भवदनुध्यानप्रमोदाश्रुणा
बाष्पाम्बु ध्रुवमध्रुवेण सुमहत्सूक्ष्मेण यद्भिद्यते।। १०/७९

अज्ञानान्धमबान्धवं कवलितं रक्षोभिरक्षाभिधैः
क्षिप्तं मोहमहान्धकूपकुहरे दुर्हृद्भिराभ्यन्तरैः।
क्रन्दन्तं शरणागतं गतधृतिं सर्वापदामास्पदं
मा मा मुञ्च महेश पेशलदृशा सत्रासमाश्वासय।। १०/८०

यद्विश्वोद्धरणक्षमाऽप्यशरणत्राणैकशीलापि ते
मामार्त्तं दृगुपेक्षते स महिमा दुष्टस्य मे कर्म्मणः।
देव्यां दिव्यमृतैः पयोधरधृतैः पृथ्वीं पृणत्यां कणा
द्वित्राश्चेन्न मुखे पतन्ति शिखिनः किं वाच्यमेतद्दिवः।। १०/८१

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शुभ्रं बिभ्रत्तरुणकरुणाऽऽक्रान्तमश्रान्तमन्तः
स्वान्तं शान्तप्रणतजनता-क्लेशलेशप्रवेशम्।
प्राणत्राप्रणयकृपणप्राकृतप्राणिवर्ग-
व्यापत्तापक्षपणनिपुणां मुञ्च चण्डीश वाणीम्।। १०/८२

अदभ्रश्वभ्रेयं भवसरणिरातङ्कबहुला
गलद्बोधज्योत्स्ना निरवधिरसौ मोहरजनी।
नयन्त्येते शान्तिं विषमविषयोत्पातमरुतः
प्रदीपं प्रज्ञाख्यं प्रतिदिश दृशं क्लेशशमनीम्।। १०/८३

शरीरं नीरोगं नवमपि वयः संस्कृतिमती
मतिर्वन्द्या जातिः प्रभुरपि भवान् भक्तिसुलभः।
इतीयं सामग्री सुकृतशतलभ्या विघटते
न यावत्तावन्मे शृणु करुणमाक्रन्दितमिदम्।। १०/८४

जयन्ति कृतिनः कवरेमृतसारसिक्ताक्षरा
विकस्वरशरत्सुधाकरकरानुकारित्विषः।
पुरारिपदपङ्कजस्तवपवित्रचित्रक्रमाः
समुन्मिषितमालतीमुकुलकोमलाः सूक्तयः।। १०/८५

शिवस्तवकृतो मधौ मलयवायुवेल्लल्लता-
गलन्मधुमदोन्मदभ्रमरपुञ्जगुञ्जच्छलात्।
नदन्मदनशिञ्जिनीझणितभीतसीमन्तिनी-
भुजाकलितकन्धरा अधिवसन्ति लीलावनम्।। १०/८६

अदूरबहिरङ्गनोपवनजातचूतावली-
विलीनकलकोकिलाकलितकाकलीकूजितैः।
वलन्मलयमारुतप्रचलदुल्लसन्मल्लिका-
विकासिकुसुमस्खलद्भ्रमरमण्डली-गुञ्जितैः।। १०/८७

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

निगूढतिमिघट्टनस्फुरितदीर्घिकासंभ्रम-
त्रसत्कमलकोटरस्थितमरालबालस्वनैः।
रटत्पटहझल्लरीमुरजतूर्यभेरीगण-
प्रणादमुखरीभवद्धवनबर्हिकेकारवैः॥ १०/८८

सुधामधुरवारुणीरसकषायकण्ठोद्भव-
न्नवश्रुतिरसायनप्रगुणगायनीगीतकैः।
प्रवीणपरिवादकोदितविभासरागस्वर-
क्रमानुगतवल्लकीविकचकीचकप्रक्वणैः॥ १०/८९

प्रभातगुणवर्णनप्रवणबन्दिवृन्दस्तुति-
प्रबुद्धशुकसारिकाकलहकेलिकोलाहलैः।
बहिर्विहरदङ्गनारणितरत्नकाञ्चीगुण-
क्वणत्कनककिङ्किणीझणझणारवाडम्बरैः॥ १०/९०

खुरक्षतवसुन्धरोद्धुरतुरङ्गहेषोन्मिष-
त्प्रबोधधुतकन्धरद्विरदकण्ठघण्टारवैः।
स्मराऽलसविलासिनीस्तनभरोपरुद्धोरस-
स्त्यजन्ति शयनं शनैरुषसि शंभुशंसाजुषः॥ १०/९१

(पञ्चभिः कुलकम्)

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'करुणाक्रन्दनं' नाम दशमं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ एकादशं स्तोत्रम्

दीनाक्रन्दनस्तोत्रम्

❀❀❀

धन्योऽस्मि सम्यगमृतं किमपि स्त्रवन्ती
सञ्जीवनं भगवती विदधाति यस्य।
स्नेह-स्नुतस्तनयुगा जननीव जीव-
रक्षार्थमार्त्तिविधुरस्य ममोक्तिदेवी॥ ११/१

धन्योऽस्मि दुःसहविपत्पतितस्य यस्य
वाणी धृतोन्नतिरपुण्यकृतामभूमिः।
कल्याणिनी सुमनसामुपसेवनीया
सौमेरवीव पदवी न दवीयसीयम्॥ ११/२

धन्योऽस्मि मोहतिमिरान्धदृशोऽपि यस्य
सानुग्रहेण विधिना परिकल्पिता मे।
वल्गुस्वना गुणवती धृतवक्रभङ्गि-
राराधनाय गिरिशस्य सरस्वतीयम्॥ ११/३

सञ्जीवनौषधिरवैमि नवा भवाग्नि-
भस्मीकृतस्य विधिना मम निर्मितेयम्।
वाणी शिवैकविषयाभिनवोढगौरी-
दृष्टिच्छटेव चकिता मकरध्वजस्य॥ ११/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जाने कथञ्चिदुदिता मम शोकवह्नि-
तप्तात्स्खलन्मृदुपदा हृदयादियं गौः।
चेतः प्रवेक्ष्यति शनैः करुणामृतौघ-
निःष्यन्दशीतमपि शीतमयूखमौलेः॥ ११/५

यच्चाटुचापलमलङ्घ्यभवभ्रमोऽहं
मोहं वहन्निह मुहुर्मुहुराचरामि।
तत्र स्पृहावहमहार्यमहार्यपुत्री-
भर्तुः पराध्र्यमपराध्यति सौकुमार्यम्॥ ११/६

यो मूर्धनि ध्वनदनर्गलनिर्झरौघ-
झाङ्कारिणीममरनिर्झरिणीं दधानः।
गृह्णाति भक्तजनतः कलशाभिषेकं
कस्तं न विज्ञपयितुं विभुमुत्सहेत॥ ११/७

दग्धोस्मि तावदमुना दमुना ममाऽन्त-
र्यः प्रज्ज्वलत्यघनिदाघनिदानजन्मा।
मुक्तस्य मे प्रतिभयातिभयाकुलस्य
वाणी कथं विगलतो गलतोऽभ्युदेति॥ ११/८

क्रन्दाम्यतः किमपि नाम पिनाकपाणे
तीव्रार्त्तिनिस्तरणकारण कातरोऽहम्।
मोहाटवीविकटसङ्कट-संस्थितस्य
तन्मेऽवधारय शिवाय शिवातुरस्य॥ ११/९

आक्रन्दमिन्दुधर धारय देव कर्णे
कस्त्वत्परः परमकारण कर्णधारः।
मूर्ध्ना वहन्नुडुपखण्डमखण्डपुण्यं
कं कं न तारयसि संसृतिसागराद्यः॥ ११/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अस्मादृशैरशुचिभिश्चटुचापलानि
क्लृप्तान्यवैमि न मनस्तव नन्दयन्ति।
आवर्जनाय विहितान्यपि चन्द्रमौले
कौलेयकस्य लडितानि किमाद्रियन्ते।। ११/११

यद्वा न मुग्धचरितान्यपि न प्रसाद-
मुत्पादयन्ति भवतः करुणार्णवस्य
स्वामिन्दरत्पुरविहारपरस्य किं न
चेतो हरन्ति तव बालकवल्गितानि।। ११/१२

दीनैर्विमुग्धवचनैरसमञ्जसार्थै-
र्यद्वद्द्रवन्ति हृदयानि दयानिधीनाम्।
तद्वन्न दृष्टसभसप्रतिभप्रगल्भ-
सन्दर्भगर्भरचनाञ्चितवाक्प्रपञ्चैः।। ११/१३

दुग्धाब्धिदोऽपि पयसः पृषतं वृणोषि
दीपं त्रिधामनयनोऽप्युररीकरोषि।
वाचां प्रसूतिरपि मुग्धवचः शृणोषि
किं किं करोषि न विनीतजनानुरोधात्।। ११/१४

यत्सत्यवत्यपि जगद्विदिताऽनसूया
वाणी ममेयमिदमेव हि देव चित्रम्।
अत्यद्भुतं पुनरिदं यदरुन्धतीयं
त्वामारिराधयिषुरेवमुदीरिताऽपि।। ११/१५

स्वे धाम्नि मे हृदि कृतस्थितिमुक्तिदेवीं
कृत्वा प्रवेशमनयः स्वयमुन्मुखत्वम्।
धाराधिरूढविरहव्यथितामिदानी-
माधाय धैर्यमवधारयसीत्ययुक्तम्।। ११/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एका त्वमेव भवितासि मम प्रियेति
दत्तं वरं स्मरसि चेद्गिरिराजपुत्र्याः।
प्रेम्णा बिभर्षि कथमम्बरसिन्धुमिन्दु-
लेखां च मूर्ध्नि हृदये दयितां दयां च॥ ११/१७

एतां निसर्गसरलामभिजातमुग्धा-
मद्धाऽवधीरयसि धीरगभीरमानी।
जानासि किं न शतशो नतसान्त्वनेषु
यद्वृद्धया करुणया नरिनर्तितोऽसि॥ ११/१८

प्रस्तौति निस्त्रपतयार्त्तिकदर्थितेयं
चाटूनि कर्तुमपि मौग्ध्यविसंस्थुलानि।
कात्यायनीवचनदुर्ललितस्य तानि
मुक्तोपमानि न मनस्तव नन्दयन्ति॥ ११/१९

अस्यामसह्यविरहज्वरकातरायां
प्रीतिर्न ते यदि परं निरवग्रहस्य।
सर्वान्तरार्त्तिदलनाय दृढा प्रतिज्ञा
विज्ञाततत्त्व कथमीश्वर विस्मृता ते॥ ११/२०

सत्यं कलां वहसि बिभ्रदुमां यदर्धे
धत्से दयां हृदि ययार्थिषु नर्तयन्त्या।
नीतोऽसि नीलगल नीलगलत्वमेव
मद्वाचि साचि तु मुखं कुरुषे रुषेव॥ ११/२१

गृह्णासि मूर्धनि जलैर्धवलैर्विलोलै-
रुद्वेलितां निजपदस्खलितां द्युसिन्धुम्।
एतामनन्यगतिमुज्झसि साधुवृत्तां
वाचं स्वतन्त्रचरितस्य किमुच्यते ते॥ ११/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

किं भूयसा यदि न ते हृदयङ्गमेय-
मस्या गृहे वससि किं हृदये मदीये।
सार्धं प्रियेण वसनं तदुपेक्षणं च
दुःखावहं हि मरणादपि मानिनीनाम्॥ ११/२३

मातः सरस्वति बधान धृतिं त्वदीयां
विज्ञप्तिमार्त्तिविधुरां विभवे निवेद्य।
देवी शिवा शशिकला गगनापगा च
कुर्वन्त्यवश्यमबलाजनपक्षपातम्॥ ११/२४

एषा निसर्गकुटिला यदि चन्द्रलेखा
स्वर्गापगा च यदि नित्यतरङ्गितेयम्।
देवी दयार्द्रहृदया तु नगेन्द्रकन्या
धन्या करिष्यति न ते निबिडामवज्ञाम्॥ ११/२५

त्वामेव देवि शरणीकरवाणि वाणि
कल्याणि सूक्तिभिरुपस्तुहि चन्द्रमौलिम्।
मातर्नयामि न पुनर्भवतीमलीक-
वाचालबालिशविलङ्घनभाजनत्वम्॥ ११/२६

देवि प्रपन्नवरदे गुणगौरि गौरि
यद्गौरियं परिमितं स्त्रवतीह किञ्चित्।
तत्स्वामिने समुचिते समये सुपाक-
माकूतवेदिनि निवेदयितुं प्रसीद॥ ११/२७

स्वेच्छाविकल्पितमदृष्टविशिष्टपाकं
मात्राविहीनमिदमार्यजनैरजुष्टम्।
उन्मत्तभाषितमथापि भवत्यवश्यं
सद्भेषजं विषमयस्य भवामयस्य॥ ११/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भालानलं तव यथा मुकुटस्थितैव
शक्नोति नो शमयितुं किल सिद्धसिन्धुः।
तद्वज्ज्वलन्तमनिशं हृदि शोकवह्निं
वक्त्रे वसन्त्यपि ममाऽत्र सरस्वतीयम्॥ ११/२९

प्राक्चेन्मया विहितमाविलमेव कर्म
स्वामिन् कुतस्त्वयि ममैष दृढोऽनुरागः।
एकान्तशुक्लमथ चेदतिदुःसहोऽयं
शोकानलो हृदयदाहकरः किमन्तः॥ ११/३०

क्वाप्यन्यजन्मनि विधाय विभोरवश्य-
माराधनामनुशयालु मनो ममाभूत्।
नो चेत् कथं कुलगुणादिपवित्रमेत-
त्सर्वं नृजन्म मम निष्फलमेव जातम्॥ ११/३१

मानुष्यनावमधिगम्य चिरादवाप्य
निस्तारकं च करुणाभरणं भवन्तम्।
यस्याऽभवद्धरवशस्तरितुं भवाब्धिं
सोऽहं ब्रुडामि वद कस्य विडम्बनेयम्॥ ११/३२

स्वामी प्रसादमुपकारिषु सेवकेषु
योग्येषु साधुषु करोति किमत्र चित्रम्।
सन्तस्त्वभाजनजनेष्वपि निर्निमित्तं
चित्तं वहन्ति करुणामृतसारसिक्तम्॥ ११/३३

तस्मात्समाप्तसकलाऽभ्युदयाभ्युपाय-
मायस्तचेतसमसंभवभग्नवृत्तम्।
सीदन्तमन्तकभयादभयार्पणेन
संभावय स्वयमनर्थकदर्थितं माम्॥ ११/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

त्वां नीतिमान् भजति यः स भवत्यनीति-
र्मुक्तः स यो हि भवता हृदयान्न मुक्तः।
यस्ते रतोऽपचितयेऽपचितिं स नैति
तत्त्वां श्रितोऽस्मि भवमस्म्यभवो न कस्मात्॥ ११/३५

स्वापः सचिन्तमनसो निशि मे दुरापो
निर्दाह एव गमयामि कदा सदाहः।
रक्ष त्वदेकवशगं शिव मामवश्यं
कस्माद्भवस्यपरुषो मम कर्कशस्त्वम्॥ ११/३६

पापः खलोऽहमिति नाऽर्हसि मां विहातुं
किं रक्षया कृतमतेरकुतोभयस्य।
यस्मादसाधुरधमोऽहमपुण्यकर्मा
तस्मात्तवास्मि सुतरामनुकम्पनीयः॥ ११/३७

स्वैरेव यद्यपि गतोऽहमधः कुकृत्यै-
स्तत्रापि नाथ तव नास्म्यवलेपपात्रम्।
दृप्तः पशुः पतति यः स्वयमन्धकूपे
नोपेक्षते तमपि कारुणिको हि लोकः॥ ११/३८

अत्युन्नतान्निजपदाच्चपलश्च्युतोऽयं
भूरीन्भ्रमिष्यति जडप्रकृतिः कुमार्गान्।
मत्वेति चेत्त्यजसि मामयमीदृगेव
गाङ्गस्त्वया किमिति मूर्ध्नि धृतः प्रवाहः॥ ११/३९

हन्ताऽयमार्तिमपि नारकिणां धृतश्चे-
न्मूर्ध्ना किलेति वहसे यदि गाङ्गमोघम्।
एतत्तवोचितमनाथजनार्तिभङ्ग
हेवाकिनो घनघृणामृतसागरस्य॥ ११/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अस्मादृशस्य रसना तु सहस्त्रधेयं
गच्छेदवाप्य तव शीर्षमितीरयन्ती।
किं तूद्धरामि भवदग्रपदावमर्श-
मात्रादहं त्रिजगतीमिति मे प्रतिज्ञा।। ११/४१
(तिलकम्)

क्षामो निकामजडिमा कुटिलः कलावान्
दोषाकरोऽयमिति चेत्त्यजसि प्रभो माम्।
एतादृशैरुपगतोऽपि समस्तदोषैः
कस्मात्त्वया शिरसि नाथ धृतः शशाङ्कः।। ११/४२

शान्ताकृतिर्द्विजपतिर्विमलः कलङ्क-
मुक्तः किलेति यदि मूर्ध्नि विधुं बिभर्षि।
एवं विधोऽपि भवता कथमङ्घ्रिपीठ-
प्रान्तेऽपि धर्तुमुचितो न समर्थितोऽहम्।। ११/४३

पापग्रहो धृतिमुपैति विना परेषां
न स्वापहारमयमित्यथ मां जहासि।
एवंविधोऽपि तव दक्षिणदृष्टिपात-
पात्रत्वमीश्वर कथं रुचिमानुपेतः।। ११/४४

मित्रत्वमेष भवतो गुणिबन्धुतां च
प्रख्याप्य चेदुपगतस्तव वल्लभत्वम्।
दासत्वमेव तव नित्यमुपेत्य भूत्वा
सेवापरश्च गुणिनां कथमप्रियोऽहम्।। ११/४५

अत्यूष्मलं मलिनमार्गमनेकजिह्वं
स्पर्शेऽप्यनर्हमवधार्य जहासि चेन्माम्।
एतादृशोऽपि शुभदृष्टिनिवेशनस्य
पात्रीकृतः कथमयं भवताऽऽश्रयाशः।। ११/४६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यद्बन्धुजीवदलसद्रुचिरर्थिभाव-
मायाति साधुविबुधव्रजजीवनाय।
यन्मित्रमण्डलमुखेन च विश्वमेषः
पुष्णाति तेन दहने यदि सादरोऽसि॥ ११/४७

आप्यायनं सुमनसामनिशं विधातु-
मर्थीभवामि यदि कोऽपि न मेऽस्ति दाता।
कर्तुं च बन्धुजनजीवनमक्षमोऽहं
विश्वं च पोषयितुमीश सुहृन्मुखेन॥ ११/४८

तेनाऽत्र मां निरपराधमवेहि देहि
दृष्टिं प्रसादविशदाममृतद्रवार्द्राम्।
दीनं दयास्पदमदभ्रमदभ्रमेण
भ्रूविभ्रमेण सदयं भज भङ्गुरेण॥ ११/४९
(तिलकम्)

अन्वग्रहीरमलदृष्टिसमर्पणेन
मित्रं शुचिं द्विजपतिं यदि युक्तमेतत्।
एवंविधेऽपि भगवन् दृशमप्रसन्नां
धत्से मयीति विधिरेष पराङ्मुखो मे॥ ११/५०

निष्कर्ण एष कुसृतिव्यसनी द्विजिह्वो
मत्वेति चेत्त्यजसि निःशरणं प्रभो माम्।
एतादृशोऽपि पवनाशन एष कस्मा-
च्छ्रीकण्ठ कण्ठपुलिने भवता गृहीतः॥ ११/५१

जिह्वासहस्त्रयुगलेन पुरा स्तुतस्त्व-
मेतेन तेन यदि तिष्ठति कण्ठपीठे।
एकैव मे तव नुतौ रसनाऽस्ति तेन
स्थानं महेश भवदङ्घ्रितले ममाऽस्तु॥ ११/५२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शृङ्गी विवेकरहितः पशुरुन्मदोऽयं
मत्वेति चेत्परिहरस्यतिकातरं माम्।
एवंविधोऽपि वृषभश्चरणार्पणेन
नीतस्त्वया कथमनुग्रहभाजनत्वम्॥ ११/५३

पृष्ठे भवन्तमयमुद्वहते कदाचि-
देतावता यदि तवैति दयास्पदत्वम्।
स्वामिन्नहं तु हृदयेऽन्वहमुद्वहामि
त्वामित्यतः कथमहो न तवाऽनुकम्प्यः॥ ११/५४

क्रूरः पराङ्मुखमसावनृजुर्जहाति
योग्यं गुणग्रहणकर्मणि मार्गणौघम्।
मत्वेति चेत्त्यजसि मां कथमीदृगेव
स्वामिन्धृतः करतले भवता पिनाकः॥ ११/५५

कोटिं परामुपगतेऽपि गुणे नितान्तं
नम्रं विमृश्य यदि नाऽजगवं जहासि।
स्वल्पे गुणेऽपि नतिमानतिमात्रमेव
किं तच्च येन न भवामि तवानुकम्प्यः॥ ११/५६

अत्यन्ततीक्ष्णमतिकर्कशमार्जवेन
कृत्वा प्रवेशमतिमात्रमरुन्तुदं माम्।
मत्वा जहासि यदि नाथ किमर्थमेत-
देवंविधं वहसि हस्तगतं त्रिशूलम्॥ ११/५७

ज्ञात्वाऽथ चेत्समरसंहितकर्मयोग्यं
कोटित्रयोज्ज्वलमुखं त्रिशिखं बिभर्षि।
निःस्वं न किं समरसं हितकर्मयोग्यं
मां वेत्सि येन कुरुषे मयि न प्रसादम्॥ ११/५८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

न्यग्भावितद्विजमखर्वितपूर्वदेव-
गुर्वापदर्पणपरं कृतगोत्रभेदम्।
संभाव्य चेत्त्यजसि मां कथमीदृगेव
नेत्रोत्सवस्तव जगद्विजयी कुमारः॥ ११/५९

मत्त्वाऽथ नाथ शुचिजातिममुं विशाख-
मस्मिन्मनो यदि बिभर्षि दृढप्रसादम्।
एवंविधोऽप्यहमनन्यपरायणस्ते
कस्माद्भवामि भगवन्नवलेपभूमिः॥ ११/६०

सर्वापहाररतिरुन्मदवक्रवक्त्र-
स्त्याज्योऽस्मि कर्णचपलो यदि तुन्दिलस्ते।
एवंविधोऽपि भगवन् गणनायकत्वे
कस्मादयं गजमुखो भवता नियुक्तः॥ ११/६१

हस्तं सदा वहति दानजलावसिक्तं
तेनैष चेदलभत प्रमथाधिपत्यम्।
दानं प्रदातुमधनो यदि न क्षमोऽहं
दासत्वमस्तु मम देव भवद्गणानाम्॥ ११/६२

हेयोऽस्म्यसेवकतया तव चेद् ग्रहेषु
कुर्वत्सु तुल्यमखिलेष्वपि राशिभोगम्।
द्वावुज्झतस्तव न दृक्पथमर्कचन्द्रा-
वेतावता परिहृता भवता किमन्ये॥ ११/६३

बालावुभौ द्विजपती तव नाथ भक्ता-
वेकस्तयोर्हरति सन्तमसं प्रजानाम्।
तेनावृतं यदि परं सहसे महेश
द्रष्टुं ततो विषमदृष्टिरिति श्रुतोऽसि॥ ११/६४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

युक्तं रिपौ सुहृदि वा समदर्शनस्य
दोषोद्धतेऽपि यदि ते हृदयं दयार्द्रम्।
तत्साम्प्रतं गतिविहीनमनात्मनीनं
दीनं जनं प्रति कुतः करुणाऽवलेपः।। ११/६५

अभ्युद्गमोऽयमशनेरमृतांशुबिम्बा-
त्स्वामिन्नसौ दिनमणेस्तिमिरप्ररोहः।
युष्मादृशस्य करुणाम्बुनिधेरकस्मा-
दस्मादृशेष्वशरणेष्ववधीरणं यत्।। ११/६६

स्वामिन् मृडस्त्वमुरुदुःखभरार्दितोऽहं
मृत्युञ्जयस्त्वमथ मृत्युभयाकुलोऽहम्।
गङ्गाधरस्त्वमहमुग्रभवोपताप-
तप्तः कथं कथमहं न तवानुकम्प्यः।। ११/६७

भक्तप्रियः स्वयमपि क्षुधयाऽन्वितस्य
पानोत्सवैकरसिकोऽपि पिपासितस्य।
तापातुरस्य घनसेवनसादरोऽपि
जानासि नाथ न कथं सहसा ममार्तिम्।। ११/६८

सर्वज्ञ सर्वमवगच्छसि भूतभावि
भाग्यक्षयः पुनरसौ भगवन् ममैव।
जानासि यस्य हृदयस्थित एव नार्त्तिं
ज्ञात्वाऽपि वा गजनिमीलितमातनोषि।। ११/६९

भालेऽनलं तव गले गरलं करे च
शूलं प्रकाशमखिलोऽयमवैति लोकः।
अन्तर्गतं त्रयमिदं तु मम त्वमेव
जानासि नासि च दयालुरतो हतोऽहम्।। ११/७०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एकस्त्वमेव भविनामनिमित्तबन्धु-
नैंसर्गिकी तव कृपा सवितुः प्रभेव।
वामः पुनर्मम विधिः परिदेवितानि
जातान्यरण्यरुदितेन समानि यस्य॥ ११/७१

अत्यन्तदुर्भगमयोग्यमभाग्यभाज-
माजन्मनर्मविमुखं मुखरोग्रवाचम्।
दैवादवाप्य सकलापसदं महेश
नैवाऽत्यजत्कुलवधूरिव दुर्गतिर्माम्॥ ११/७२

मुक्त्वा समाधिमसमाधिहरं परं च
प्रोद्दामधाम शिव धाम सुधामयं ते।
भ्रान्तोऽस्मि तेन मलयानिलवेल्ल्यमान-
कल्लोललोलनिधनानि धनानि लब्धुम्॥ ११/७३

आराधिताः प्रचपलाश्चपलावदेव
दुष्टेश्वरा न गुरवो गुरवो गुणौघैः।
यातानि तानि मम हानिमहानि मिथ्या
श्रान्तोऽस्मि हा विततमोहतमोहतोऽहम्॥ ११/७४

तृष्णा दिनाद्दिनमबृंहत बंहिमान-
मायामिनी मनसि हैमनयामिनीव।
नाथ त्रिधामनयनाऽर्पय दृक्प्रसादं
सादं नयान्धतमसं भ्रमसंभृतं मे॥ ११/७५

स्तम्भं विजृम्भयति दम्भमयं भ्रमं च
कंचित्प्रपञ्चयति यच्छति वाचि मुद्राम्।
कं नाम नाऽऽमयमयं प्रथयत्यखर्व-
गर्वज्वरज्वलनदुःसहसन्निपातः॥ ११/७६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तत्साम्प्रतं भुवनविश्रुतहस्तसिद्धिं
त्वामोषधीपतिशिखामणिमाश्रयामि।
मौनं विमुद्रय दरिद्रय मोहनिद्रां
विद्रावय द्रुतमुपद्रवमिन्द्रियाणाम्।। ११/७७

विस्त्रम्भमम्भसि भजे भगवन्नगाधे
बाधे रिपुव्यवसितेऽप्यलसीभवामि।
जागर्मि यन्न समवर्तिनि हन्तुकामे
का मे गतिर्यदि करोषि मनागवज्ञाम्।। ११/७८

यस्ते ददाति रवमस्य वरं ददासि
यो वा मदं वहति तस्य दमं विधत्से।
इत्यक्षरद्वयविपर्ययकेलिशीलः
किं नाम कुर्वति नमो न मनः करोषि।। ११/७९

चन्द्रः करे शिरसि चक्षुषि पादमूले
मूर्तावपीति शिव चन्द्रसुभिक्षमेतत्।
तापान्धकारविधुरं शरणागतं कि-
मायातु लङ्घितवतस्तव मोघभावम्।। ११/८०

कौटिल्यमिन्दुदलतो न सुधामयत्व-
मूष्माणमूर्ध्वनयनान्न परं प्रकाशम्।
मालिन्यमेव गलतो न गभीरभावं
त्वत्तोऽपि मे तितउकल्पमवाप चेतः।। ११/८१

किं वर्णयामि गुरुतां विपदः पदे मां
स्थाणोर्न्ययुङ्क्त यदियं सहसोपदिश्य।
निःशाखतां सुमनसामनुमेयभावं
विच्छायतां विफलतां रसहीनतां च।। ११/८२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सर्वज्ञशम्भुशिवशङ्करविश्वनाथ-
मृत्युञ्जयेश्वरमृडप्रभृतीनि देव।
नामानि तेऽन्यविषये फलवन्ति किन्तु
त्वं स्थाणुरेव भगवन् मयि मन्दभाग्ये॥ ११/८३

श्वेते सुदर्शनसमर्पणतत्परस्य
कृष्णे च यस्य न बभूव विशेषबुद्धिः।
सत्त्वं श्रियं सृजसि पुण्यजनेषु मां च
मुञ्चस्यपुण्यजनमेष विधिः क्षतो मे॥ ११/८४

आवर्जनं क्रतुभुजां गजवाजिरत्न-
श्रीपारिजातमदिरेन्दुसुधाऽर्पणेन।
कृत्वाऽग्रहीर्गरलमात्मनि यन्महिम्ना
सा ते क्व सम्प्रति कृपा मयि मन्दभाग्ये॥ ११/८५

दृप्तेषु ते मदनदक्षयमाऽन्धकेषु
प्रादुर्भवन्मनसि रोषविषप्ररोहः।
सिक्तः सुधामयमसूत यया प्रसादं
सा ते क्व सम्प्रति कृपा मयि भाग्यहीने॥ ११/८६

केचिद्वरस्य भगवन्नभयस्य केचि-
त्सान्द्रस्य केचिदमृतस्य करस्थितस्य।
प्रापुः कृपाप्रणयिनस्तव भाजनत्वं
शूलस्य केवलमभाग्यपरिक्षतोऽहम्॥ ११/८७

अभ्रान्तवृत्ति भवतान्तरधिष्ठितं मे
चेतः प्रकाशवपुषा रविणेव बिम्बम्।
सोपप्लवं यदि कृतं तमसा कदाचि-
दक्षीणपुण्यमहिमैव तदा विभाति॥ ११/८८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जानामि नाऽमृतमयं हृदयं प्रवेष्टु-
मुद्दामदुःखदवदाहहतस्तवाऽहम्।
धर्तुं हृदि त्रिदशसिन्धुसुधा-सुधांशु-
शीतं भवन्तमपि न प्रभवामि धिङ्माम्।। ११/८९

क्षीणः क्षताऽखिलकलः प्रविलीनधामा
त्वामाश्रितोऽस्मि सवितारमिवाऽमृतांशुः।
नास्त्येव जीवनकला मम काचिदन्या
पादार्पणेन कुरुषे यदि न प्रसादम्।। ११/९०

घोरान्धकारविधुरं विविधोपताप-
तप्तं विपद्गुरुतुषारपराहतं माम्।
त्वं चेज्जहासि वद कस्तपनेन्दुवह्नि-
नेत्रो हरिष्यति परस्त्रिविधां ममार्तिम्।। ११/९१

व्यक्तिर्न यस्य न मतिर्न गतिर्न शक्ति-
र्नापि स्मृतिर्विपदपस्मृतिपीडितस्य।
तस्यौषधीशमुकुटं त्रिजगद्गुरुं त्वां
मुक्त्वा करिष्यति परो मम कश्चिकित्साम्।। ११/९२

त्वं निर्गुणः शिव तथाहमथ त्वदीयं
शून्यं परं किमपि धाम तथा मदीयम्।
त्वं चेद्गवि प्रविदधासि धृतिं तथाऽहं
कष्टं शिवस्त्वमशिवस्तु विधिक्षतोऽहम्।। ११/९३

कामस्त्वयीव मयि निष्फलतामवाप
क्षिप्तो मयापि विफलो भवतेव कालः।
विध्वस्तधाम मम देव वपुस्तवेव
कष्टं शिवस्त्वमशिवस्तु विधिक्षतोऽहम्।। ११/९४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यद्वद्विभो तव हृदि प्रविभाति नाग-
स्तद्वन्ममापि भवदेकपरायणस्य।
यद्वत्स्वधर्मनिरतस्त्वमहं तथैव
कष्टं शिवस्त्वमशिवस्तु विधिक्षतोऽहम्।। ११/९५

मूर्त्तिस्तवेव शिव मे विधुरोचितेयं
दृष्टिस्तवेव भगवन् विषमा ममापि।
शूली विषादहतशक्तिरहं यथा त्वं
कष्टं शिवस्त्वमशिवस्तु विधिक्षतोऽहम्।। ११/९६

कण्ठे विषं वसति मे विषमं तवेव
भूतेश्वरः पशुपतिश्च भवानिवाऽहम्।
अङ्गं ममापि गुरुरुग्ज्वलितं तवेव
कष्टं शिवस्त्वमशिवस्तु विधिक्षतोऽहम्।। ११/९७

स्वर्भानुगीर्णमिव पूर्णशशाङ्कबिम्बं
बालाङ्गनाङ्गमिव दारुणरुग्विरुग्णम्।
श्रीखण्डचन्दनमिवाऽजगरोपगूढं
व्यूढं नृपस्य पिशुनैरिव पादमूलम्।। ११/९८

हालाहलाक्तमिव दुग्धमहाब्धिनीरं
तीरं महामकररुद्धमिव द्युसिन्धोः।
दारिद्र्यदग्धमिव साधुगृहस्थवृत्तं
चित्तं समत्सरमिव श्रुतविश्रुतस्य।। ११/९९

विद्याविहीनमिव सत्कुलजस्य रूपं
निर्दानभोगमिव कापुरुषस्य वित्तम्।
मानुष्यमुज्ज्वलकुल-श्रुत-शीलशुद्धं
जातं विपद्विधुरितं मम शोचनीयम्।। ११/१००

(तिलकम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पश्चात्पुरः प्रतिदिशं च विमृश्य पश्य-
न्क्रूरं कृतान्तहतकं फणिपाशपाणिम्।
भूमौ पतामि कृपणं प्रलपामि पाद-
पीठे लुठामि शठवत्कठिनोऽसि कस्मात्।। ११/१०१

आः किं न रक्षसि नयत्ययमन्तको मां
हेलावलेपसमयः किमयं महेश।
मा नाम भूत्करुणया हृदयस्य पीडा
व्रीडापि नास्ति शरणागतमुज्झतस्ते।। ११/१०२

अज्ञोऽसि किं किमबलोऽसि किमाकुलोऽसि
व्यग्रोऽसि किं किमघृणोसि किमक्षमोऽसि।
निद्रालसः किमसि किं मदघूर्णितोऽसि
क्रन्दन्तमन्तकभयार्त्तमुपेक्षसे यत्।। ११/१०३

द्वेषः किमेष कृपणे किमुताऽक्षमेयं
निस्त्रिंशता किमथवा किमशक्तिरेव।
हुङ्कारमात्रकनिराकरणीयगर्वे
सर्वेश कालहतके यदियत्युपेक्षा।। ११/१०४

इत्यादि दूढ्य इव निष्ठुरपुष्टभाषी
यत्किञ्चन ग्रहगृहीत इवाऽस्तशङ्कः।
आर्त्या मुहुर्मुहुरयुक्तमपि ब्रवीमि
तत्रापि निष्कृप भिनत्सि न मौनमुद्राम्।। ११/१०५

भीते भवार्तिविधुरे चरणावलग्ने
भग्नेप्सिते गतिमपश्यति कांचिदन्याम्।
कस्मादनागसि मनागसि विश्वसाक्षि-
न्दाक्षिण्यदिग्धहृदयोपि पराङ्मुखस्त्वम्।। ११/१०६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वामिन्निसर्गमलिनः कुटिलश्चलोऽह-
मेतादृगेव च रिपुर्मम मृत्युपाशः।
भ्रूपल्लवस्तव तथाविध एव तस्य
शान्त्यै विषे हि विषमे विषमेव पथ्यम्॥ ११/१०७

किं कार्यमेभिरनिशं पुनरुक्तशुक्तै-
रुद्वेगकारिभिरलब्धफलैः प्रलापैः।
एवं विदन्नपि मुहुर्मुखरं विरौमि
पश्यामि न त्वदितरं हि परं शरण्यम्॥ ११/१०८

त्वं चेत्प्रसादसुमुखः प्रणयोक्तिभिः किं
त्वं चेदनादरपरः प्रणयोक्तिभिः किम्।
भाग्योदये सति वृथैव गुणेषु यत्न-
स्तस्मिन्नसत्यपि वृथैव गुणेषु यत्नः॥ ११/१०९

जानन्नपीति विरमामि न यत्प्रलापा-
दार्त्तेर्महेश महिमैष दृशस्तवैव।
या रात्रिमेव दिवसं तिमिरं प्रकाश-
मग्निं हिमं गरलमप्यमृतं करोति॥ ११/११०

आर्त्तिः श्रुतैव कृपणात्करुणां तवान्त-
रुत्पादयत्यनिशमग्निशिखां शमीव।
जातैव निर्दहति तामियमित्यमुत्र
किं ब्रूमहे महदनङ्कुशमीश्वरस्य॥ ११/१११

यन्नाम पामरजनोचितमत्र किञ्चि-
दौचित्यमुक्तमसमञ्जसमभ्यधायि।
तत्रापि भर्तुरुचिता रुचिरीश्वराणां
चेतश्चमत्कृतिकरी कपिझम्पिकाऽपि॥ ११/११२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चौरैर्गृहीतमपि दष्टमपि द्विजिह्वै-
ग्रस्तं ग्रहैरपि निरुद्धमपि द्विषद्भिः।
व्याघ्रैरुपद्रुतमपि द्रुतमाक्षिपद्भि-
रन्विष्टमप्यवनिभृत्पुरुषैः सरोषैः॥ ११/११३

भूताऽभिभूतमपि सिन्धुजलेऽपि मग्नं
भग्नं रणेऽपि पतितं दवपावकेऽपि।
किं भूयसा यमभटैरपि कृष्यमाणं
कस्त्रातुमर्हति महेश्वरमन्तरेण॥ ११/११४

(युग्मम्)

तज्ज्ञो बतास्म्यभिलषन् सुखमक्षयं यद्-
दुःखैकधाम वपुरस्थिरमर्थयामि।
यद्वा भवाब्धितरणाय पुराणमुग्र-
शीलं पुमांसमुडुपार्धधरं श्रयामि॥ ११/११५

दृङ्मार्गमात्रपतिताः सहसैव यस्य
पञ्चत्वमिन्दुरविहव्यभुजोऽप्यवापुः।
धीमानहं बत तमेव सदाशिवं य-
द्देवं श्रयामि शरणं मरणार्त्तिभीरुः॥ ११/११६

स्थाणुः स यत्र विभुरस्य वधूरपर्णा
सा यत्र यत्र च तयोस्तनयो विशाखः।
प्रज्ञावतामहमहो प्रवरः प्रवेष्टु-
मिच्छामि धाम तदभीष्टफलाप्तये यत्॥ ११/११७

मार्जारशूकरश्रृगाल-करालवक्त्र-
वेतालभूतशतसङ्कुलमीश्वरस्य।
भीष्मं निशाचरपिशाचरवैः प्रवेष्टु-
मिच्छामि धाम मतिमानतिमात्रभीरुः॥ ११/११८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कर्णेक्षणादचरणात्त्रिफणात्कृतान्त-
पाशात्त्रसन्धृतसहस्त्रफणोरगेन्द्रम्।
प्राज्ञः सहस्त्रशिरसं पुरुषं सहस्त्र-
नेत्रं सहस्त्रचरणं शरणं श्रयामि॥ ११/११९

त्रस्तः समस्त-जनताऽपहृतिप्रगल्भा-
द्दीप्ताऽनलोल्बणदृशः शिव जीवितेशात्।
प्राज्ञाः समस्तजनतापहृतिप्रगल्भं
त्वां जीवितेशमनलोग्रदृशं श्रयामि॥ ११/१२०

निर्भर्त्सितक्रतुमृगं समशिश्रियत्त्वां
संन्यस्तलाञ्छनमृगः कलया मृगाङ्कः।
यत्कामवैरिणमवेत्य सकाम एव
त्वामाश्रितोऽस्मि सुधियामधिकस्ततोऽहम्॥ ११/१२१

पद्माश्रितः शतधृतिश्चतुराननोऽपि
यस्मात्पराभवमवापदवाच्यमेव।
त्यक्तः श्रिया गतधृतिर्मृदुमन्दवक्त्रः
प्राज्ञस्तमीश्वरमनुग्रहमर्थयेऽहम्॥ ११/१२२

आजन्म कर्म विरचय्य फलं यदाप्तं
हृत्त्वा क्षणात्तदखिलं चिरकालभोग्यम्।
यः स्वीकरोत्यपुनरागमनाय भक्तं
सेवे तमीश्वरमहो मतिमत्तमोऽहम्॥ ११/१२३

श्मशानैकस्थानव्यसनमनलोत्तालनयनं
विषज्ज्योतिर्ज्वालाजटिलकुटिलव्यालवलयम्।
विभुं मुण्डश्रेणी-विकटमुकुटं भीरुहृदयः
श्रयन् भीमं धीमानहमहसनीयः कृतधियाम्॥ ११/१२४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अहो तत्त्वज्ञोहं करतलविलीनैकफणिनः
समुत्रस्यन्कालात्क्रमकवलितैकैकभविनः।
महाकालं सर्वावयवसुलभानल्पभुजगं
सकृद्विश्वग्रासप्रवणमतिमभ्येमि शरणम्॥ ११/१२५

शृङ्गी यत्र स्फटिकशिखरी यत्र शृङ्गी पिनाकः
शृङ्गी सोऽपि स्फुरति वृषभो वल्लभो यत्र भर्तुः।
तत्र त्रस्तः प्रकृतिसरलः स्वल्पवागप्रगल्भः
प्राज्ञः सेवासमयमुचितं स्वामिनः प्रार्थयेऽहम्॥ ११/१२६

विश्रान्तिर्न क्वचिदपि विपद्ग्रीष्मभीष्मोष्मतप्ते
चित्ते वित्ते गलति फलति प्राक्प्रवृत्ते कुवृत्ते।
तेनात्यन्धं सपदि पतितं दीर्घदुःखान्धकूपे
मामुद्धर्त्तुं प्रभवति भव त्वां दयाब्धिं विना कः॥ ११/१२७

येषामेषा तनुधनलवप्रार्थनाऽनर्थकन्था
पन्थानं न प्रदिशति परं स्थानमानन्दि लब्धुम्।
तेषामेषामकृपण कृपाभाजनानां जनाना-
माशापाशाकुलितमनसां दृष्टिमिष्टां निधेहि॥ ११/१२८

उदञ्चय मुखं मनागभयघोषमुद्घोषय
प्रयच्छ विशदां दृशं गतिविहीनमाश्वासय।
किमन्यदयमागतः कुपितदृष्टिरुत्कन्धरः
कृतान्त इति मा स्म भूरविरलावलेपालसः॥ ११/१२९

मुहुः किमपरं ब्रुवे भुजगपाशपाणिं पुरः
स्फुरन्तमिव रोषणं रविजकिङ्करं पश्यतः।
धृतिश्चलति मे गतिः स्खलति मूर्तिरुद्वेल्लति
स्थितिर्ज्वलति निर्वृतिर्विगलति स्मृतिर्मीलति॥ ११/१३०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दुर्गं यत्सुगमत्वमेति भजते दूरं यदभ्यर्णतां
यत्क्रीडोपवनत्वमेति मरुभूर्मित्रायते यद्रिपुः।
यस्याः सा भुवि शक्तिरप्रतिहता सार्त्तिस्त्वदाक्रन्दने
स्वामिन्मामनुदत्कृपाऽपि नुदतु त्वां मत्समाश्वासने॥ ११/१३१

द्वारि श्रीश्च सरस्वती च वसतः स्वामिंस्तवाऽस्तक्रुधौ
मां तु श्रीर्भवदङ्घ्रिविष्टरतले नित्यप्ररूढस्थितिम्।
यावन्मात्रसरस्वती- परिचय- द्वेषादहासीदतो
वह्निं दुर्वहमुद्वहामि हृदये ग्लायन्नुदन्वानिव॥ ११/१३२

नाथ प्राथमिकं विवेकरहितं तिर्यग्वदस्तं वय-
स्तारुण्यं विहतं विराधितवधूविस्त्रम्भणारम्भणैः।
स्वामिन्संप्रति जर्जरस्य जरसा यावन्न धावन्नयं
मृत्युः कर्णमुपैति तावदवशं पादाश्रितं पाहि माम्। ११/१३३

आसीद्यावदखर्वगर्वकरण- ग्रामाभिरामाकृति-
स्तावन्मोहतमोहतेन न मया श्वभ्रं पुरः प्रेक्षितम्।
अद्याऽकस्मिकपातकातरमतिः कं प्रार्थये कं श्रये
किं शक्नोमि करोमि किं कुरु कृपामात्मद्रुहं पाहि माम्॥११/१३४

जात्यन्धः पथि सङ्कटे प्रविचरन्हस्ताऽवलम्बं विना
यातश्चेदवटे निपत्य विपदं तत्राऽपराधोऽस्य कः।
धिग्धिङ्मां सति शास्त्रचक्षुषि सति प्रज्ञाप्रदीपे सति
स्निग्धे स्वामिनि मार्गदर्शिनि शठः श्वभ्रे पतत्येव यः॥११/१३५

त्राता यत्र न कश्चिदस्ति विषमे तत्र प्रहर्तुं पथि
द्रोग्धारो यदि जाग्रति प्रतिविधिः कस्तत्र शक्यक्रियः।
यत्र त्वं करुणार्णवस्त्रिभुवनत्राणप्रवीणः प्रभु-
स्तत्रापि प्रहरन्ति चेत्परिभवः कस्यैष गर्हावहः॥ ११/१३६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

किं शक्तेन न यस्य पूर्णकरुणा-पीयूषसिक्तं मनः
किं वा तेन कृपावता परहितं कर्तुं समर्थो न यः।
शक्तिश्चास्ति कृपा च ते यमभयाद्भीतोऽपि दीनो जनः
प्राप्तो निःशरणः पुरः परमतः स्वामी स्वयं ज्ञास्यति॥ ११/१३७

भृङ्गारे करपुष्करप्रणयिनि स्वर्निम्नगानिर्झरे
सम्पूर्णे करुणारसे परिणतस्फारे तुषारत्विषि।
अस्ति स्वादु च शीतलं च सुलभं पीयूषमोषच्छिदे
प्राप्तश्च प्रणयी पुरः परमतः स्वामी स्वयं ज्ञास्यति॥ ११/१३८

आर्त्तिः शल्यनिभा दुनोति हृदयं नो यावदाविष्कृता
सूते लाघवमेव केवलमियं व्यक्ता खलस्याऽग्रतः।
तस्मात्सर्वविदः कृपाऽमृतनिधेरावेदिता सा विभो-
र्यद्युक्तं कृतमेव तत्परमतः स्वामी स्वयं ज्ञास्यति॥ ११/१३९

लेखाः सन्तु प्रसन्ना बुधसदसि शुचेरागमस्यास्तु लब्धि-
र्मिथ्यादृष्टिश्च माभूदनुपधिरहतो दीर्घकालोऽस्तु भोगः।
सभ्याः सर्वेऽनुवृत्तिं विदधतु तदपि न्यायतो नास्ति मुक्तिः
संम्यग्दर्शी प्रमाता रचयति न भवानीश्वरश्चेद्विचारम्॥ ११/१४०

जानुभ्यामुपसृत्य रुग्णचरणः को मेरुमारोहति
श्यामाकामुकबिम्बमम्बरतलादुत्प्लुत्य गृह्णाति कः।
को वा बालिशभाषितैः प्रभवति प्राप्तुं प्रसादं प्रभो-
रित्यन्तर्विमृशन्नपीश्वर बलादार्त्याास्मि वाचालितः॥ ११/१४१

धत्ते पौण्ड्रकशर्कराऽपि कटुतां कण्ठे चिरं चर्विता
वैरस्यं वरनायिकाऽपि कुरुते सक्त्या भृशं सेविता।
उद्वेगंगगनापगाऽपि जनयत्यन्तर्मुहुर्मज्जनाद्
विश्रद्धां मधुराऽपि पुष्यति कथा दीर्घेति विश्रम्यते॥ ११/१४२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इत्थं तत्तदनन्तसन्ततलसच्चिन्ताशतव्यायत-
व्यामोहव्यसनावसन्नमनसा दीनं यदाक्रन्दितम्।
तत्कारुण्यनिधे निधेहि हृदये त्वं ह्यन्तरात्माऽखिलं
वेत्स्यन्तःस्थमतोऽर्हसि प्रणयिनः क्षन्तुं ममाऽतिक्रमम्।। ११/१४३

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'दीनाक्रन्दनं' नामैकादशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ द्वादशं स्तोत्रम्

तमः शमनस्तोत्रम्

❀❀❀

मखैरुपास्योऽपि नयज्ञसेव्यो
निरामयोऽपि प्रथितोग्रशूलः।
वेदप्रियोऽप्यश्रुतिवल्लभो यः
श्रयामि तं देवमचिन्त्यशक्तिम्॥ १२/१

स्तुत्यस्त्वमेव स्तुतिकृत्त्वमेव
स्तुतिस्त्वमेव त्वदृतेऽस्ति नान्यत्।
इयं त्वविद्या यदहं स्तुवे त्वां
स्तुत्येति मिथ्या पृथगर्थबुद्धिः॥ १२/२

स्तौम्येव तत्राऽपि पुनः पुनस्त्वां
नश्यत्यविद्या यदविद्ययैव।
रजः प्ररूढं मुकुरे प्रमार्ष्टुं
रजो विना न ह्यपरोऽस्त्युपायः॥ १२/३

विजृम्भमाणे तमसि प्रगल्भे
यथा भवासक्तमतिः स्थितोऽहम्।
हतेऽपि तस्मिन्नुदितावबोध-
स्तथा भवासक्तमतिर्भवेयम्॥ १२/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जगद्विधेयं ससुरासुरं ते
भवान् विधेयो भगवन् कृपायाः।
सा दीनताया नमतां विधेया
ममाऽस्त्ययत्नोपनतैव सेति॥ १२/५

जाने न शैथिल्यमुपैष्यवश्यं
ममार्तिभङ्गे भगवँस्तथापि।
विज्ञप्यसे कर्म ममैव माभू-
न्मयि प्रसादप्रतिघस्तवेति॥ १२/६

पथ्यं च तथ्यं च भरक्षमं च
स्निग्धं च मुग्धं च मनोहरं च।
सलीलमुन्मील्य वचः प्रसन्नं
प्रपन्नमाश्वासय चन्द्रमौले॥ १२/७

मधुद्रवार्द्रं विषमाहरामः
पिण्डीनिगूढं बडिशं गिलामः।
अन्तर्निविष्टोत्कटकण्टकौघं
ग्रसामहे पौण्ड्रकपिण्डखण्डम्॥ १२/८

यदा मुखे कामधुरानजस्त्रं
विपाकरूक्षान् विषयान् भजामः।
विभो विदन्तोऽपि किमत्र कुर्मो
जहाति सक्तिं न मतिर्वराकी॥ १२/९ (युग्मम्)

मुक्तामया दीर्घगुणाः सुवृत्ता
नैर्मल्यभाजो दधतः फलर्द्धिम्।
कथं न हारा इव भक्तिमन्तः
पदं हृदीशस्य भजन्ति सन्तः॥ १२/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

गुहाश्रितो धर्मरतिर्गिरीश-
प्रथां दधानो भवतः प्रसादात्।
सत्याहितप्रीतिरहीनभक्ति-
र्भवानिवाहं भगवन् भवेयम्॥ १२/११

यमेकमाराध्य महारिसङ्गमा-
दसंशयं भक्तजनः प्रमुच्यते।
उपस्थितस्तय भवत्प्रसादतः
कथं हरेरुग्र महारिसङ्गमः॥ १२/१२

सुर्दुर्लभोऽयं भवति ग्रहः पुन-
र्मुखेऽप्यसौ सन्निहिता सरस्वती।
इदं कुरुक्षेत्रमतीवपावनं
किमर्थमर्थिन्युचिते विलम्बसे॥ १२/१३

न कस्य सौभाग्यवती चमत्कृतिं
दिशत्यसौ भाग्यवती सरस्वती।
विभुं जितक्लेशमपि स्थिराजिनं
करोति यत्सम्मुखमस्थिराजिनम्॥ १२/१४

अनुज्झितानुत्तमदानसंपदः
सदाखिलज्ञानविहीनचेतसः।
अकालभीतिग्लपितान्करोति यः
प्रभुः प्रसन्नः कुपितश्च देहिनः॥ १२/१५

पुरा चिरं यो विदधे वनान्तरे
विधुः पदं रूढकुरङ्गसौहृदः।
सदा परस्वापहरोऽपि यो रवि-
स्तयोः समत्वं दृशि यस्य भासते॥ १२/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कथं विभो तस्य तव प्रवर्ततां
सतामसेव्ये पथि पातितात्मसु।
दयाविधेयस्य सदाऽस्मदादिषु
प्रसादपात्रेषु मनागनादरः॥ १२/१७ (तिलकम्)

विभो भवद्भालविलोचनाऽनल-
प्रसूतधूमैरिव साश्रुलोचनः।
सघर्मलेशस्तव दक्षिणेक्षण-
प्ररूढचण्डद्युतिभाभरैरिव॥ १२/१८

घनप्ररोहत्पुलकाङ्कुरो भव-
च्छिखण्डखण्डेन्दुकरोत्करैरिव।
सदन्तवीणस्तुहिनौघशीतल-
त्वदुत्तमाङ्गद्युनदीजलैरिव॥ १२/१९

तरङ्गिताङ्गो भवदङ्गदस्फुर-
त्फणीन्द्रफूत्कारसमीरणैरिव।
भवेयमानन्दसुधापरिप्लुतः
प्रसन्नमालोक्य भवन्तमग्रतः॥ १२/२० (तिलकम्)

यदेष सेहे परशुक्षतव्यथां
प्रभोः प्रियः स्यामिति चन्दनद्रुमः।
भुजङ्गमालिङ्गितकन्धरो ध्रुवं
बिभर्ति साम्यं गिरिजापतेरतः॥ १२/२१

यच्चक्रिरे धृतनखान्तनिपातपीडाः
प्रीतिं प्रभोः सुमनसां सुमनस्त्वमेतत्।
यत्स्वामिनो न दहनेऽपि निपत्य सेवा-
हेवाकमौज्झदगुरोरपि गौरवं तत्॥ १२/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आदौ प्रदर्श्य परमामृजुतामथान्त-
राविश्य मर्मणि न यन्निशितास्तुदन्ति।
स्वामिन् शरा इव खलाः कृतिनो वनेषु
स त्वत्पदाम्बुजरजःकणजः प्रसादः॥ १२/२३

त्वन्नाम पामरजनैरपि गीयमान-
मानन्दमर्पयति यं हृदि भक्तिभाजाम्।
स्वामिन्नमानवयवेष्वखिलेषु नून-
मुद्भिद्यते बहिरसौ पुलकच्छलेन॥ १२/२४

घर्मः प्रकम्पपुलकौ गिरि गद्गदत्व-
मित्यादयोऽन्त्यसमये प्रभवन्त्यवस्थाः।
त्वद्दर्शनात्कृतधियां दधताममन्द-
मानन्दमन्तकभयाद्भगवन् परेषाम्॥ १२/२५

अन्त्यक्षणे भव भवच्चरणाब्जसेवा-
हेवाकिनो दधति केचन कण्ठपीठे।
भोगीन्द्रभोगमधिगम्य भवद्गणत्व-
मन्ये कृतान्तकरकोटरकोटिकृष्टम्॥ १२/२६

भीताभयार्पणविधौ किल कालनाशं
कर्तुं न यः क्षणमपि क्षमते कदापि।
श्वेताभयार्पणपरस्य कथं नु काल-
नाशक्षमत्वमभवत्तव तस्य देव॥ १२/२७

भङ्क्तुं न पारयति यः क्वचिदेव देव
कामं कृपामृतमृदुस्तव दृष्टिपातः।
उद्दामरोषपरुषः किल कामभङ्ग-
मङ्गीचकार कथमेष महेश पूर्वम्॥ १२/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

किं मेरुमन्दरमुखा गिरयः शिरोभि-
रत्युन्नतैर्दधति गर्वमखर्वमेते।
एतत्तुषारकिरणाभरणप्रणाम-
प्रह्वं जगज्जयति मामकमुत्तमाङ्गम्॥ १२/२९

गात्रान्तरातिशयशंसि यदेतदुच्चै-
र्नामोत्तमाङ्गमिति नाथ शिरो बिभर्ति।
तद्युज्यते भव भवच्चरणारविन्द-
पीठप्रणामपरमस्य नमस्यमस्य॥ १२/३०

किं श्रीघनोऽप्यसुगतः किमुमाधवोऽपि
न त्वं कदाचन जनार्दनतां बिभर्षि।
स्वामिन् गजारिरपि किं नगजा-प्रियस्त्वं
स्वातन्त्र्यमस्ति यदि वा भवतः किमन्यत्॥ १२/३१

अरुणद्युतिग्लपितशीतदीधिति-
प्रकटीकृतालिकमलं विलोक्य मे।
भवतः प्रभातमिव भाललोचनं
भजते कदा नु विषमं शमं तमः॥ १२/३२

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'तमःशमनं' नाम द्वादशं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ त्रयोदशं स्तोत्रम्

प्रभुप्रसादनस्तोत्रम्

❀❀❀

अथ नुतिभिरमन्थराक्षराभिः
सुजनमनोमृगवागुराभिराभिः।
विभुमभयदमादरादराति-
क्षपणपणप्रवणं प्रसादयामः॥ १३/१

सुरमुकुटविटङ्करत्नरोचिः
खचितनखांकुरकेसराभिरामम्।
पुरहरचरणारविन्दयुग्मं
शिरसि विधत्त किरीटवाञ्छया किम्॥ १३/२

कलयतु भवतामभग्नवृत्ति-
र्हरहरशङ्करशङ्करेति सूक्तिः।
अविरलगलमण्डनप्रतिष्ठां
किममलमौक्तिकदामकामनाभिः॥ १३/३

कलयत मणिकुण्डलेऽवलेपं
श्लथयत निर्म्मलमल्लिकाभिलाषम्।
हरचरितनुतिक्रमैरजस्रं
कुरुत नवश्रवणावतंसलीलाम्॥ १३/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इह विहतभवोपतापमाप-
त्प्रशमसमर्थमनर्थनाशहेतुम्।
नमति न मतिमानमानवीय-
प्रमदविधानपरं परं हरं कः॥ १३/५

त्रिजगति भजति स्थितिं बुधानां
धुरि दुरितक्षतिशिक्षितः स एकः।
शशिशकलशिखामणिप्रणाम-
प्रणयि बिभर्त्ति शिरश्चिरस्थिरं यः॥ १३/६

स जयति जगदीशशक्तिपात-
स्तव कवितुर्यदसक्तमुक्तिदेवी।
रसमसमचमत्कृतिप्रसूतिं
वितरति काञ्चनसिद्धिमेति येन॥ १३/७

इह विदधतु नाम पामराणां
प्रणतिकृतामपरे प्रभुप्रतीतिम्।
प्रभवति न तु मृत्युभीतिभङ्गे
जगति भवन्तमृतेऽमृतेश कश्चित्॥ १३/८

वियदियति महस्विमण्डले कः
श्रितवति कर्तुमनष्टचेष्टमीष्टे।
विषमतमतमः प्रबन्धमन्धं
जगदगदं घृणिमन्तमन्तरेण॥ १३/९

शकलितकलितर्ष सप्रकर्ष
प्रकटितहर्ष महर्षभाधिरूढ।
दिश विशदमदभ्रमभ्रसिन्धु-
द्रवधवलं भवलङ्घनं प्रसादम्॥ १३/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्रभवति भवति प्रसादरम्यां
दिशति दृशं न विभा विभावरीणाम्।
सवितरि वितरिष्यति प्रकाशं
नहि महिमप्रभवो विभावरीणाम्॥ १३/११
(युग्मम्)

समुचितसदसद्विचारचर्या-
चतुरतरः कतरः कलौ मदन्यः।
इह परमशिवं भवं विजेतुं
परमशिवं भवमेव सेवते यः॥ १३/१२

शमयितुमलमग्निमग्निरेव
ग्लयपति हन्त हिमं हिमं विवृद्धम्।
जरयति च पयः पयः किमन्य-
द्धरति भवं भव एव भक्तिभाजाम्॥ १३/१३

वरमजिनजटाभृतः कपाल-
प्रणयिकरस्य नरस्य भैक्ष्यवृत्तिः।
स्मरहरचरणारविन्दसेवा-
विरहवती न तु चक्रवर्तिमूर्तिः॥ १३/१४

मरुभुवि वरमुष्णरश्मिरश्मि-
प्रकरकदर्थितमूर्तिरेकभेकः।
न तु भवदनुरागभागधेय-
ग्लपनविपद्विकलीकृतो मनुष्यः॥ १३/१५

कलिमलपटली मलीमसत्वं
नयति मतिं हतदर्प दर्पणाभाम्।
इति शितिगल शीतरश्मिरश्मि-
प्रसरसितं रसितं तवाऽर्थयामः॥ १३/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नुतिमुखरमुखः प्रसादपात्रं
भवति ममेति यदैष ते कृतान्तः।
अपि कवलितसप्तलोकलोकः
प्रभवति नैव तदैष मे कृतान्तः॥ १३/१७

तव रविजपुरान्धकप्रमाथे
दृशि विशिखे त्रिशिखे च यः कृतास्थः।
परिचरणपरः पुराविरासीत्
स जयति दैवतमुत्तमं कृशानुः॥ १३/१८

समजनि जनितस्पृहः स एक-
स्त्रिजगति चन्द्रकिरीट कृष्णसारः।
उपकरणपदं जगाम कृत्ति-
स्तव चरणास्तरणक्रमेण यस्य॥ १३/१९

जनिरपि जयिनी विनीतरीति-
र्जगति भुजङ्गमपुंगवस्य तस्य।
मणिकटकमुदस्य यस्य शस्यं
भव भवदङ्गदभङ्गिमेति भोगः॥ १३/२०

अलभत भगवन्नबन्ध्यमेक-
स्त्रिभुवनसीमनि जन्म पुङ्गवेन्द्रः।
तव भव शवभस्मरूषितोऽङ्घ्रिः
शिरसि धृतो विनयानतेन येन॥ १३/२१

जनयति जगति स्पृहां न केषां
जनिरपि कुञ्जरशेखरस्य तस्य।
त्रिभुवनमहितस्य यस्य कृत्ति-
र्भव भवदम्बरडम्बरं बिभर्ति॥ १३/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

य जयति जितकाल कालकूटः
स्वजनिपवित्रितमुग्धदुग्धसिन्धुः।
तव कवलभुवं जवादवाप्तः
कलयति यः शितिकण्ठ कण्ठपीठम्॥ १३/२३

परिणतशरदिन्दुसुन्दराभं
वदनमनभ्रनभोनिभश्च कण्ठः।
इति शुभमुभयं विभोरभिन्न-
त्रिदशधुनीयमुनाविडम्बि वन्दे॥ १३/२४

हिमहिमकरहारि वारि गाङ्गं
कुवलयकान्तिकलिन्दकन्यकाम्भः।
इति शुभमुभयं प्रभुप्रसादा-
द्वपुरिव हारिहरं वरं प्रपद्ये॥ १३/२५

धृतकुटिलकलः किलान्धकारी
रुचितमलीमसभोगिभोगयोगः।
त्वयि सपदि पराङ्मुखे यथाऽहं
त्वमिव महाकलिकालभग्नशक्तिः॥ १३/२६

कवलितविषमक्लमं दधानः
सततसमाश्रितततारकारिरूपम्।
द्विजपतिमुकुटस्तथैव जातु
त्वमिव शिव त्वयि सम्मुखे भवेयम्॥ १३/२७
(युग्मम्)

जय जयद वचो विमुञ्च मुञ्च-
न्मधु मधुरं जनरञ्जनप्रगल्भम्।
हर हर दुरितं ममाऽद्य माद्य-
द्भव भव भीमदभीमदर्शनस्त्वम्॥ १३/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

निजवृजिनविजृम्भितं ममैत-
त्रिजगदनुग्रहनित्यदीक्षितस्त्वम्।
क्वचिदपि भगवन्नदृष्टपूर्वं
प्रथयसि यन्मयि विह्वलेऽवलेपम्॥ १३/२९

प्रणमति विधुरे पुरोऽवलग्ने
दधति मयि प्रसभं गदाभियोगम्।
किमिति परिजने दयामृतार्द्रां
दृशमपकारवतीव नो दधासि॥ १३/३०

स्फुटविकटविकस्वरप्रदीप्त-
ज्वलनमहीनमहीन्द्रहार चक्षुः।
बलवदलवदर्पकालकाम-
क्षयकरमाकरमाशु मुञ्च सिद्धेः॥ १३/३१

हिमकरमकरध्वजौ न रूपं
कविधिषणौ धिषणौचितीं न तीव्राम्।
रणमरुणमरुत्सखौ जिगीषो-
रनुहरतो हरतोषिणो न तेजः॥ १३/३२

रविकरविकसत्सिताब्जशुभ्र-
प्रसृमरचामरचारुहासिनी श्रीः।
भव न भवनमुज्झति क्षणं यत्-
सुकृतवतां तव तां प्रणौमि शक्तिम्॥ १३/३३

यदभयद भवत्यवस्थितेऽन्तः
समहिम नो हि मनो विशोकमासीत्।
विशदविशदकर्मकर्दमे तत्-
सपदि विषादि विषाद केन जातम्॥ १३/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नयविनयविशुद्धमन्तरुद्य-
दहनसमानसमाप्तरोषदोषम्।
यमनियमनियन्त्रितं मनो मे
कुरु सविलासविलासिनीविरक्तम्।। १३/३५

अवसर-सरसालसालघूद्य-
न्मधुर-वधूरवधूतचित्तचिन्तः।
स सकलकलधौतधौतमूर्ति-
स्तव नतिमानतिमात्रचित्रचिद्यः।। १३/३६

मलमलमलघुं विहन्तुमाप्तुं
मुदमुदयं समयं समर्थ्य चान्तः।
महमहमहहेश्वरप्रशंसा-
मयमयमाश्रयमाश्रयं सुखानाम्।। १३/३७

गुणिभिर्विबुधैर्हरीन्द्रमुख्यै-
र्भव संसाररिपोर्द्विषः स्तुतस्य।
हितमातनुते तव प्रसादा-
दसुहृत्प्राणहरोऽपि पुण्यभाजाम्।। १३/३८

अपि नाथ जनार्दनस्य विष्णो-
रपि वैकुण्ठ इति प्रसिद्धिभाजः।
अधिकं सरुषोऽपि चेद्भवत्तो
झगिति प्रागभवत्सुदर्शनाप्तिः।। १३/३९

अपि सर्वजनाऽविरुद्धबुद्धे-
रपि तीक्ष्णस्य परं जितक्रुधोऽपि।
न कथं मम साधुनाऽपि यद्वा
जगदीशोऽसि विभुः किमुच्यते ते।। १३/४०
(युग्मम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुमनःसुलभे तथा न नाके
सुमनःसुन्दरसौरभे न चास्थाम्।
सुमनःसु च नाश्नुते सुधार्द्रा-
सु मनः सुष्ठु यथा भवत्कथासु॥ १३/४१

श्रीर्देवी जयति यया कटाक्षितानां
हस्तस्था सकलसमीहितार्थसिद्धिः।
सा यस्मादजनि तमब्धिमर्भकाय
प्रादाद्यः कथमिव वर्ण्यते स देवः॥ १३/४२

नार्हत्यमन्दरयमन्दरयत्नलब्धा
स्पर्धां सुधा न वसुधाऽनवधिश्च यस्य।
सोऽयं नवः शिवनवः शिवतातयेऽस्तु
विद्वत्सभाजनसभाजनभाजनं वः॥ १३/४३

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'प्रभुप्रसादनं' नाम त्रयोदशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ चतुर्दशं स्तोत्रम्

हितस्तोत्रम्

❀❀❀

येन नेत्रकरशेखरस्पृशा
हन्ति सन्तमसमन्तरीश्वरः।
ऐन्दवं दवथुहारि हारि त-
द्धाम कामदमदभ्रमस्तु वः॥ १४/१

भक्तिनिर्भरगभीरभारती-
वैभवो भव भवन्नवेषु यः।
शुष्कशष्पमिव तस्य भासते
वासवासनपरिग्रहग्रहः॥ १४/२

उल्लसत्पुलकलाञ्छितं वपु-
र्बाष्पपूरितपुटे विलोचने।
गद्गदा हरहरेति भारती
संभवन्ति भवभक्तिशालिनाम्॥ १४/३

नीलकण्ठ तरुणेन्दुशेखर
त्र्यम्बक त्रिनयनेति भक्तितः।
गद्गदं निगदतस्तृणोपमं
हेमपूर्णमखिलं महीतलम्॥ १४/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अन्तकभ्रुकुटिभीतिविह्वल-
श्वेतसान्त्वनविधौ बभूव यत्।
मां प्रति प्रतिपदं कदर्थितं
तत्क्व संप्रति कृपामृतं तव॥ १४/५

वह्निशीतकरघर्मरश्मयो
लोचनत्रितयवर्तिनस्तव।
शीततापतिमिरार्दितस्य मे
नाथ चित्रलिखिता इव स्थिताः॥ १४/६

सम्भ्रमभ्रमदमन्दमन्दर-
क्षीरनीरधिगभीरया गिरा।
त्रातुमर्हसि कृतान्तकिङ्करै-
र्मामशर्मभिरभिद्रुतं द्रुतम्॥ १४/७

कालकिङ्करकरान्तरफुर-
द्भोगभोगिपरिणद्धकन्धरम्।
अन्तरेण भवदीयहुंकृतिं
नाथ मोचयितुमुत्सहेत कः॥ १४/८

उत्कटभ्रुकुटिभीमदर्शन-
द्वाःस्थहुङ्कृतिखलीकृतात्मभिः।
द्वारि यः क्षितिभुजां पराभवः
सह्यते द्रविणलेशतृष्णया॥ १४/९

स त्वदायतनदेहलीतले
पुष्पपात्रकरपत्रिकाकरम्।
कंचिदेव भवदर्चनोत्सुकं
चन्द्रशेखर करोति कातरम्॥ १४/१० (युग्मम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अन्तरेण भवदंघ्रिसेवनं
देव केवलमियं विडम्बना।
यन्नृणां कमलिनीदलस्खल-
न्नीरशीकरचला विभूतयः॥ १४/११

यत्तु निर्जरतरङ्गिणीतटे
सौहृदं हरिणबालकैः समम्।
भूभृतां च तृणवद्विलोकनं
श्रीरियं भव भवत्प्रसादतः॥ १४/१२

त्वामुपेत्य शरणं महेश्वरं
देव निःशरण एव चेदहम्।
दोष एष मम जाह्नवीजले
तर्षुलो हि शफरः स्वदुष्कृतैः॥ १४/१३

गद्गदोद्गतगिरश्चिरस्थिर-
प्रेमहेमनिकषोपलोपमम्।
शंसतः शिव शिवेति शाम्भवं
नाम कामपि दशां प्रशास्ति मे॥ १४/१४

वारि वारितभवार्ति मूर्ध्नि ते
भाति भाऽतिधवले हिमत्विषः।
तेन ते नतिमिमो दवच्छिदे
देहि देहिषु करावलम्बनम्॥ १४/१५

मूढमूढविपदं पदं शुचा-
मन्धमन्धकरिपोऽरिपोथितम्।
मोघमोघमितमेतमेनसां
मां तमान्तकरतार तारय॥ १४/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यं स्वयं स्वरसभैरवे रवै-
रक्षर क्षपितराक्षसेक्षसे।
मारमार भुवि भासते स ते
भानु-भानु-भर-भासुरः सुरः॥ १४/१७

बाणबाणकृतपूजनैर्जनै-
रादरादघटि यैस्तव स्तवः।
वास्तवास्तव त एव तावता
बन्दिवन्दितयशोगणा गणाः॥ १४/१८

त्वां सतामरसवासवाऽऽसवाः
ज्ञातदुर्गमगमागमाऽऽगमाः।
अर्चयन्ति सदिनं दिनंदिनं
गीर्भिरम्बरसदःसदः सदः॥ १४/१९

न मे तथा प्रीतिमनेकपाली
करोति नो वा दयिताऽङ्कपाली।
यथोक्तिदेवी स विभुः कपाली
ययाऽर्च्यते सेवकलोकपाली॥ १४/२०

भवन्तमाराध्य परार्ध्यवैभवं
भवं विधाय द्विषतां पराभवम्।
भवं च जित्वा जहतः पुनर्भवं
भवन्ति मुक्ताः पदमाप्य शाम्भवम्॥ १४/२१

न वंशवृत्तेर्गणयामि तानवं
न बन्धुरं कञ्चन नौमि मानवम्।
नवं तवानन्दितदेवदानवं
न वञ्चितोऽहं रचयन्सदा नवम्॥ १४/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धनञ्जयाक्षं सकलार्थसाधनं
धनञ्जयाराधितमाधिबाधनम्।
धनं विदित्वा विपदां विशोधनं
धनन्ति धन्या विभुमृद्धिवर्धनम्॥ १४/२३

कलापिनः प्रावृषि यद्वदम्बुद-
ध्वनिर्घनानन्दविशङ्कलापिनः।
कलापिनद्धस्फुटजूटधारिण-
स्तथाऽमृतं वर्षतु गीः कलापि नः॥ १४/२४

नृजन्म तस्यैव भवानवद्यं
भवानवद्यन्दवमीक्षते यम्।
त्यजत्यजातोपरमा समानं
रमाऽसमानन्दकरी न चैनम्॥ १४/२५

अतः परं जगति किमस्ति नीरसं
यदुक्तमप्यसकृदुदीर्यते वचः।
सहस्रशश्चिरमपि चर्विता पुन-
र्नवंनवं स्रवति रसं शिवस्तुतिः॥ १४/२६

मृत्युं मृत्युञ्जय जय जगद्घस्मरं भस्मभावं
कामं कामं नय नयनजोद्धामधामच्छटाभिः।
भव्याभ व्याकुलकुलवधूरुत्कयेत्याचरन्तं
सत्रासत्राणचण चरितान्यद्भुतानि स्तुमस्त्वाम्॥ १४/२७

यत्तत्सर्ग-निसर्गनिर्मितिकरं यद्रावणद्रावण-
व्यापाराऽवसरावसक्तमथ यत्संवर्तसंवर्तकम्।
स्वाभासं भवसंभवस्थितिलयस्फारोचितं रोचितं
भासा कारणकारणं दिशतु तद्धामेहितं मे हितम्॥ १४/२८

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'हितं' नाम चतुर्दशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ पञ्चदशं स्तोत्रम्

करुणाराधनस्तोत्रम्

❀❀❀

अधुना तपसेव देवता-
मभि योगेन सरस्वतीमिव।
सुहृदेव समीहितां श्रियं
प्रगुणेनेव गुणेन संसदम्॥ १५/१

प्रतिभामिव काव्यकर्म्मणा
वसुना कीर्तिमिवार्थिगामिना।
मनसीव शमेन निर्वृतिं
सुकृतेनेव परत्र सद्गतिम्॥ १५/२

करुणां हरिणाङ्कलक्ष्मणः
सकलार्थाऽर्पणकल्पवल्लरीम्।
विपदन्तकरीमुपासितुं
स्तुति-लेशेन मनः प्रवर्तते॥ १५/३ (तिलकम्)

करुणां भवतो विकासिनी-
ममलैरीश गुणैरलंकृताम्।
नलिनीमलिनीव भारती
भजतीयं मम वल्गुवादिनी॥ १५/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उपलक्ष्य तवान्धकारितां
मयि धत्ते पदमन्धकारिता।
विषमामवलोक्य ते दृशं
मम दृष्टिर्विषमत्वमश्नुते।। १५/५

तव वीक्ष्य वृषाधरीकृतिं
घटते मेऽपि वृषाधरीकृतिः।
धृतवक्रकलत्वमीक्ष्य ते
प्रथते वक्रकलत्वमेव मे।। १५/६

तव वीक्ष्य च भग्नकामता-
मुदितेयं मम भग्नकामता।
करुणामपि ते समीक्ष्य मे
करुणा गीर्न कथं प्रवर्तताम्।। १५/७

ससुरासुरमानुषं जग-
द्यदधीनं स भवानपीश्वरः।
वशवर्तिपदे ययाऽर्पितो
जयतीयं करुणैव तावकी।। १५/८

करुणा तव जीवितेश्वरी-
मतिशेते भगवन्नुमामपि।
उमया हृतमर्धमेव यत्-
सकलस्त्वं पुनरेतया हृतः।। १५/९

करुणा तव शस्यते यया
जितकामोऽपि भवान् वशीकृतः।
इदमन्यदियं यदम्बिका-
मपि देवीमनयद्विधेयताम्।। १५/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जगदम्बुभुवा भुवाम्भसा
सितभासा नभसा नभस्वता।
धृतमुष्णरुचात्मना च यत्-
करुणाया महिमा तवेश सः॥ १५/११

अहतप्रसरां प्रसादिनीं
सहसाऽपोहिततापसंपदम्।
शरणं करुणातरङ्गिणीं
प्रतिपद्ये तव देव पावनीम्॥ १५/१२

प्रणयेन चिरं प्रसादिता
मदनाशाकुलितेन चेतसा।
तरुणी करुणा करोति ते
न कथं नाथ हृदि स्थिरं पदम्॥ १५/१३

भुजगा इव चन्दनद्रुमं
ग्लपयन्तो विषमा नयन्ति माम्।
परिहार्यदशामरातयो
मदमानप्रमुखा धृतिच्छिदः॥ १५/१४

करुणामरुणाऽनुजन्मन-
स्तनुमुच्चैरिव पक्षपातिनीम्।
समुपैमि धृताच्युतश्रियं
शरणं भूधरपुत्रिकापतेः॥ १५/१५

स्फुरितारुणचारुचक्षुषा
वपुषा निर्भरघर्मविप्रुषा।
परुषाशयतामुपेयुषा
सरुषा यत्प्रहरन्ति योषितः॥ १५/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भगवन् दृढबद्धमूलयो-
द्विषतोरेष सहस्रशाखयोः।
अविषह्य निपातपीडयो-
रनुभावः कुसुमेषु-रोषयोः॥ १५/१७

अनयोः करुणैव तावकी
नियतं मूलनिकृन्तनक्षमा।
यमलाऽर्जुनयोरिवोर्जिता
शिशुलीला नरकान्तकारिणः॥ १५/१८
(तिलकम्)

न विधिर्निधिलाभसंभृतो
न विनोदो मृगनाभिसम्भवः।
न च शारदचन्द्रचन्द्रिका
न कलं कोकिलकण्ठकूजितम्॥ १५/१९

न शिशोरसमञ्जसं वचो
न मृगाक्षीपरिरम्भविभ्रमः।
मधुरा न कवीन्द्रभारती
न च साम्राज्यविभूतिजृम्भितम्॥ १५/२०

न रसायनपानकौतुकं
न च शक्रासनवासवासना।
परिपूरयितुं क्षमेत ते
करुणाया हर षोडशीं कलाम्॥ १५/२१
(तिलकम्)

सुरभिर्न मम स्पृहास्पदं
सुरभिर्दक्षिणमारुतोऽपि वा।
सुरभिक्षुवितीर्णवाञ्छिता
सुरभिर्नो करुणा यथा तव॥ १५/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

समुदेति यदश्रु शोकजं
रुचिरानन्दमयं विभाति तत्।
पुलकः प्रथते भयेन यः
स चमत्कारकृतः प्रवर्तते।। १५/२३

क्लमजं दृशि यन्निमीलनं
परमार्थानुभवादुदेति तत्।
शरणं करुणामुपेयुषां
कृतिनां चन्द्रकिरीट तावकीम्।। १५/२४ (युग्मम्)

भजतः सरलेव भारती
नरकङ्कालकृतग्रहस्य मे।
करुणा प्रथतामुमापते
कलिकालाञ्छितविग्रहस्य ते।। १५/२५

भगवन् मदिरामदोन्मद-
प्रमदापाङ्गतरङ्गभङ्गुरम्।
जरसा तरसावसादितं
वपुरायाति न यावदापदम्।। १५/२६

कुपितान्तककिङ्करेरितः
कुटिलां तद्भ्रुकुटिं विडम्बयन्।
न घनाञ्जनपुञ्जसन्निभो
भुजगो यावदुपैति कन्धराम्।। १५/२७

न कुकर्मविपाककल्पिता
नरके यावदुदेति वेदना।
गदिता शमनानुगामिभिः
परुषा गीरिव मर्मभेदिनी।। १५/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यदि तावदियं न गाहते
हृदयं ते करुणातरङ्गिणी।
बत दुःसहताप-संपदा-
मितरा का शरणार्थिनां गतिः॥ १५/२९ (कलापम्)

न समानसमागमा तथा
प्रमदाय प्रमदा यतात्मनाम्।
शिवदा शिवदास्यकृद्यथा
स्वदमान-स्वदमाऽनघा मतिः॥ १५/३०

एकः पुरन्दरपुरं दरवेल्लितभ्रूः
किं स्विज्जनङ्गमजनं गमयेन्महर्षिः।
किं तामसं पदमसम्पदमिन्द्रमन्यो
धन्योदया भव दया भवतो न चेत्स्यात्॥ १५/३१

आर्द्रे मनस्युदितमार्तजनोपताप-
संपर्कतोऽथ दृषि कन्दलितं शुभायाम्।
वाचि क्षणात्कुसुमितं फलितं च कृत्ये
कारुण्यबीजमजरं जयतीन्दुमौलेः॥ १५/३२

रोगैरुग्रैरखिलविगलत्सौष्ठवो नष्टचेष्टः
पर्यस्ताङ्गोऽशुचिनि शयने भग्नसर्वाभ्युपायः।
यावज्जीवं विहितमहितं कर्म कर्तव्यमूढः
स्मृत्वा स्मृत्वा दलितहृदयः कातरः कान्दिशीकः॥ १५/३३

तर्षोत्कर्षात्कलुषपरुषैः कर्मभिः शर्महृद्भि-
र्यत्सम्प्राप्तं कथमपि भृशं क्लेशयित्वा शरीरम्।
रिक्थग्राहैर्द्रविणमखिलं लुण्ठ्यमानं तदग्रे
पश्यन्नश्यत्सकलकरणो दह्यमानः शुचान्तः॥ १५/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शोकोद्रेकादविरल- गलद्बाष्पपूर्णेक्षणाभिः
सत्पत्नीभिश्चकितचकितं लोचनैरीक्ष्यमाणः।
पुत्रैर्मित्रैः सहजसचिवैर्बन्धुभिर्भृत्यवर्गै-
राक्रन्दद्भिः करुणकरुणैः पीड्यमानः प्रलापैः॥ १५/३५

स्वस्थावस्थैर्भृशमशुचिताशङ्किभिर्वेश्मगर्भा-
दन्तर्लीनस्मृतिरपि हठान्निष्ठुरैः कृष्यमाणः।
यस्मिन्काले कवलितवपुर्मृत्युनाऽभ्येति भीतिं
तत्र त्राता क इव करुणामैश्वरीमन्तरेण॥ १५/३६

(संदानितकम्)

वपुःखण्डे खण्डः प्रतिवसति शैलेन्द्रदुहितुः
शिखण्डे खण्डेन्दुः स्वयमपि विभुः खण्डपरशुः।
तथापि प्रत्यग्रं शरणमुपयातं प्रति विभो-
रखण्डो व्यापारो जगति करुणाया विजयते॥ १५/३७

जय जितामय जय सुधामय जय धृतामृतदीधिते
जय हतान्धक जय पुरान्तक जय कृतान्तकसंहृते।
जय परापर जय दयापर जय नताऽर्पितसद्गते
जय जितस्मर जय महेश्वर जय जय त्रिजगत्पते॥ १५/३८

स्थानाऽस्थाननियन्त्रणाविरहितो निर्हेतुरप्रार्थितः
सत्यं सत्त्वहितार्थ एव तरणेरम्भोभृतश्चोद्यमः।
तृष्णातापशमक्षमस्तु न रविर्न ध्वान्तशीतान्तकृ-
न्मेघः स त्वखिलार्तिहृद्विजयते माहेश्वरोऽनुग्रहः॥ १५/३९

बहुना किमत्रकरुणामुमापतेः
सुदशावतारकृतमूर्जितश्रियम्।
भजताऽनिरुद्धहृदयेप्सितागम-
प्रवणां विभूतिमिव कैटभद्विषः॥ १५/४०

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'करुणाराधनं' नाम पञ्चदशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ षोडशं स्तोत्रम्

उपदेशनस्तोत्रम्

❀❀❀

वृषलक्ष्मणः प्रणतलोकबन्धवः
कलितालिकस्खलितसिद्धसिन्धवः।
द्युतिभिर्जयन्ति तुलितोदितेन्दव-
श्चरणारविन्दमकरन्दबिन्दवः।। १६/१

अमलैः फलैरविरलैरलङ्कृता
हरिताऽरुणप्रणतशालिशालिनी।
प्रतिभाति जीर्णतृणवत्तव स्तवं
वसुधा सुधाद्युतिवतंस शंसतः।। १६/२

तिमिरं चिरन्तनमनन्त सन्तत-
ग्लपितावलोकमवलोकनार्थिनः।
सृजताऽमृतं दशसु दिक्षु चक्षुषा
कलिकालकल्मषमुषा मुषाण मे।। १६/३

वहता हतान्धतमसामसादितां
द्युतिभिः कलामविकलां कलावतः।
दिशता प्रकाशविशदाशमाशयं
वपुषा शिवं शिवपुषा पुषाण मे।। १६/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

घनघर्मलङ्घितकपोलभित्तयः
श्वसितानुबन्धविधुरीकृताधराः।
धनिनां पुरः प्रकटयन्ति दुर्गतिं
द्युतिहीनदीनवदना धनार्थिनः॥ १६/५

तदनन्तरं तरलिताक्षरां गिरं
चिरसम्भृतप्रमदसादगद्गदाम्।
विहितावहेलजगतीपतीक्षिता-
स्त्रपयापयापितमुखाः प्रयुञ्जते॥ १६/६

अवधीर्यमाणमथ दीर्घमत्सरै-
रवबोधवन्ध्यहृदयैरनादृतम्।
गुणकौशलं शलभजृम्भितोपमं
प्रथयन्ति यान्ति च परं पराभवम्॥ १६/७

इति दीर्घदुर्भरकुटुम्बडम्बरा
धनसंग्रहग्रहगृहीतचेतसः।
सुधियोऽपि यान्ति निबिडं विडम्बनं
वनवासिभिः प्रहसितप्रवृत्तयः॥ १६/८
(चक्कलकम्)

कृतिनः पुनर्मृदुमृदङ्गमङ्गल-
स्वनसन्निभध्वनितनिर्झरोर्मिषु।
कृतवृत्तयः सुलभशाद्वलावली-
वलितस्थलेषु तुहिनाद्रिसानुषु॥ १६/९

सुरसिन्धुरोधसि गृहीतकेतकी-
चलिताङ्गुलीकिसलयेन पाणिना।
विविधां विधाय विधिना पिनाकिनः
करुणार्णवस्य चरणाब्जसत्क्रियाम्॥ १६/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हरिणैः कुशाग्रकवलाभिलाषिभि-
र्भरणार्थिभिश्च कलविङ्कशावकैः।
अतिथीभवद्भिरहताह्नितक्रियाः
फलमूलकल्पितशरीरवृत्तयः॥ १६/११

दिवसावसानसमये सरन्मरु-
त्परिकीर्णजीर्णतृणपर्णमर्मराः।
तनुजाह्नवीसलिलशीकरोत्करैः
शिशिराः शिवाय चरिता वनस्थलीः॥ १६/१२

धवलीकृतास्वमलभानुभानुभि-
र्ज्वलितौषधीषु रजनीष्वनन्तरम्।
कलकण्ठ-कण्ठकुहरोद्गतस्वर-
स्वरसार्पितश्रुतिसुखासु शेरते॥ १६/१३

इति बिभ्रतः परिकरं प्रियङ्करं
हरपादपङ्कजरजः प्रसादजम्।
विहसन्ति मूढमनसां महीभुजां
गजकर्णतालतरलाश्रयाः श्रियः॥ १६/१४
(षड्भिः कुलकम्)

दधदुद्धतं हर पुरः पुरंध्रिभिः
प्रबलं बलं गलदपाङ्गभङ्गिभिः।
हृदयं भिनत्ति मम घस्मरः स्मरः
शरपातकातरदृशोभृशं कृशम्॥ १६/१५

जनयन्नयं नयनयोरधीरतां
भ्रमयन्भ्रुवं भृशमदभ्रसंभ्रमाम्।
श्लथयन्प्रयत्नकृतसंगमं शमं
हसनीयतां नयति रोष ईश माम्॥ १६/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धनलाभसंभृतविलासवासना-
व्यथमानमानसमसत्यसङ्गरम्।
न विशोभिलोभविवशं स्पृशन्ति मां
सुहृदोऽपि कोपितकदर्थितार्थिनम्॥ १६/१७

उचितत्रिवर्गरहितं तिरोहितं
घनमोहमूढमनसं हसन्ति माम्।
कृतमेधसामधिसदः सदः सदः
सदसद्विवेकविकलं कलङ्कितम्॥ १६/१८

इति तर्जयन्ति रिपवः सुदुर्जयाः
परिवर्जयन्ति च विशुद्धबुद्धयः।
न पुनर्जयन्ति विधुरं यथा तथा
कुरु हे महेश दृशमेहि देहि नः॥ १६/१९
(पञ्चभिः कुलकम्)

क्व महेश्वरस्मरणसम्भवं भव-
भ्रमभीमघर्मशमसंमुखं सुखम्।
विपदां पदं मृदुमृणालिनीदल-
स्खलदम्बुबिन्दुतरलाः क्व सम्पदः॥ १६/२०

क्व शिवेश्वरेति कृतगण्डमण्डली
पुलकोद्गमप्रमदमन्थरा गिरः।
क्व यथार्थपार्थिवनिरर्थकाऽनृत-
स्तुतिविस्तरैरपथपातपातकम्॥ १६/२१

क्व समाधिबाधितदुराधिसाधिमा
भव-सम्भवश्रमदमक्षमः शमः।
क्व मदः प्रदर्शितसमग्रविग्रहः
प्रहसन्मनस्विजनगर्हित-स्थितिः॥ १६/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इति मामनर्गलममार्गमार्गण-
प्रवणाविवेकविकलीकृताशयम्।
करुणानिधान परिबोधय क्षणं
क्षणदाविशेषकशिखाशिखामणे।। १६/२३
(चक्कलकम्)

प्रमदा मदारुणदृशः कृशोदरा-
स्तनया नयानतसमस्तमस्तकाः।
सुहृदो हृदन्तरगतेङ्गितस्पृशः
प्रणयार्द्रनिर्भरगिरश्च बन्धवः।। १६/२४

दधतः प्रसादमधुरां धुरामपि
प्रभवोऽमृतद्रवसमानमानसाः।
मुखवीक्षणप्रणयिनः प्रतिक्षणं
परिचारकाश्च जयजीववादिनः।। १६/२५

न भयं भयङ्करकृतान्तकिङ्कर-
भ्रुकुटीभवं झटिति हन्तुमीशते।
भजतामतः क्षपयदापदं पदं
हृदये दयामृतनिधे निधेहि नः।। १६/२६
(तिलकम्)

हन्ताऽहन्ता प्रथयति मतिह्रासमासञ्जयन्ती
मायामायासित-सितशमा यामिनी यामिनीव।
तस्मादस्मान् रविशशशिखिप्रेङ्खितोद्दामधाम
क्षिप्त्वा चक्षुर्मुदितमुदिताऽवन्ध्यबोधान्विधेहि।। १६/२७

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'उपदेशनं' नाम षोडशं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ सप्तदशं स्तोत्रम्

भक्तिस्तोत्रम्

❀❀❀

मन्दस्पन्दे मनसि रसिकीभावमासाद्य सद्यो
हृद्योद्योगा विहर वरदे भारति स्वारतिस्ते।
मातर्जातस्पृहमिह महामोहनिद्रावसाने
जानीहीमं जनमनलसं शंसितुं शम्भुभक्तिम्॥ १७/१

द्राक्षा साक्षादमृतलहरी कर्कशात्काष्ठकोषा-
द्धूरिच्छिद्रात्प्रकृतिमधुरा मूर्च्छना वंशगर्भात्।
सूक्तिव्याजान्मम च वदनात्कर्णपेया सुधेयं
निर्गच्छन्ती जनयति न कं विस्मयस्मेरवक्त्रम्॥ १७/२

ध्यात्वा देव प्रमयसमयत्रासमासन्नकल्पं
स्वल्पं ज्ञात्वा सुलभशलभच्छायसच्छायमायुः।
मत्त्वा च त्वा सदयहृदयं भक्तिवाल्लभ्यलभ्यं
सभ्यंमन्यास्तव नवविधौ धौतचित्ता यतन्ते॥ १७/३

कण्ठे कण्ठीरवरवसदृग्दृक्समुद्गोद्गताश्रो-
र्हेलोन्मीलद्विपुलपुलकोद्भूतभूतेशशक्तेः।
यस्योदेति ध्वनिरनिभृतः शर्वशर्वेत्यखर्वं
गर्वं बिभ्रूद्धसति वसतिं वासवीयां स एकः॥ १७/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तन्मानुष्यं प्रभवति सतामुत्तमा यत्र जातिः
सैका जातिः प्रसरति यशो यत्र पाण्डित्यहेतु।
तत्पाण्डित्यं सरसमधुरा जृम्भते यत्र वाणी
वाणी सापि प्रथयति रतिं शाङ्करी यत्र भक्तिः।। १७/५

येषां वक्त्रे समदमुदितत्वच्चरित्राः पवित्रा
द्वित्रा वित्रासितरविसुतभ्रूविभङ्गप्रसङ्गाः।
नोज्जृम्भन्ते मधुकणमुचः सूक्तयो भक्तिसिक्ता
धिक्तान्रिक्तान्भुवि भव भवत्पादसेवारसेन।। १७/६

नाथ ज्योत्स्ना बहुलरजनौ कार्तिकीयेव कान्ता
कान्तारान्तर्मथितपथिकप्रौढतापा प्रपेव।
मा मा भैषीरिति यमभये तावकीनेव वाणी
भावत्की मे सततममृतस्यन्दिनी भाति भक्तिः।। १७/७

येषामन्तः सुकृतसरणिः स्थाणवीया न भक्ति-
र्व्यक्तिं धत्ते रसकृदसकृन्नास्मि तेषु स्मितेषु।
लोकः शोकं त्यजति सहसा यत्र तद्भक्तियुक्तं
युक्तं मन्ये रुदितमुदितश्लाघमुल्लाघहेतुम्।। १७/८

ध्वान्तं शान्तप्रशममहरद्यन्न सद्यः समुद्य-
न्नुद्योतश्रीकलितकमलोल्लासभानुः स भानुः।
तद्विध्वस्तप्रमदमदमोद्दीपितोद्दामदोष-
प्लोषं नेतुं प्रभवति भवे शांभवी भक्तिरेव।। १७/९

ये सन्तोषप्रशमपिशुने क्लेशराशौ निमग्ना
भग्नाशाभिर्विषम- विषयोपासनावासनाभिः।
तेषामेषा भवभयभिदारम्भसंभावनाभू-
र्भूत्यै भूयस्त्रिजगति गतिः शाम्भवी भक्तिरेव।। १७/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दम्भस्तम्भस्थगितगतयः सावहेला-महेला-
हेलालापभ्रमितमतयः सन्त्यसंख्याः पुंमांसः।
भार्गीं भक्तिं दधति हृदये निस्तरङ्गामभङ्गां
गङ्गातीरे विहितरतयो दुर्लभाः पूरुषास्ते॥ १७/११

शम्भो दम्भो दहति कुहकारम्भसंभावनाभिः
साभिद्वेषस्त्विषमपकषत्येष रोषप्रदोषः।
सावष्टम्भं भ्रमयति बृहन्मामहङ्कारभारः
पारं नेतुं प्रभवति भवद्भक्तिरेका भवाब्धेः॥ १७/१२

द्राक्संधत्ते युधमधिधनुर्बद्धबाणाभिरामैः
सभ्रूभङ्गैर्ललटभलललनापाङ्गभङ्गैरनङ्गः।
दोषप्लोषक्षमशंमपथापातमातन्वती मे
भीमे भक्तिर्भगवति गतिश्चक्षुषश्चन्द्रिकेव॥ १७/१३

कामः कामं धनुरनुनिशं कौसुमं संवृणोतु
व्यालं कालः स्वकरकुहरे भग्नभोगं विधत्ताम्।
भार्गी भक्तिः सपदि सकलप्रार्थनाकल्पवल्ली
लब्धा दृब्धा जगति कति न क्लेशपाशा हताशाः॥ १७/१४

राज्ञामाज्ञाविहति- विहितानीकिनीनीरसश्रीः
स श्रीलेशस्तनुरनुचितप्रार्थनस्तावदास्ताम्।
ऐन्द्रं यत्र त्रिभुवनजयप्राज्यसाम्राज्यलक्ष्मी-
लक्ष्मावज्ञास्पदमपि पदं तां स्तुमः शम्भुभक्तिम्॥ १७/१५

कान्तैकान्तव्यसनमनसां वल्कलालङ्कृतानां
ज्ञानाम्भोभिः क्षपितरजसां जाह्नवीतीरभाजाम्।
गाढोत्सेकप्रकटित- जटामण्डलीमण्डनानां
नानाकारा भवति कृतिनां मुक्तये भर्गभक्तिः॥ १७/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मूर्तिर्धूर्तिं प्रथयति यथा मञ्जरी जीर्णपर्णा
कर्णाभ्यर्णं प्रसरति जरा सत्यतो मृत्युदूती।
भोगा भोगा इव विदधतश्चेष्टितं वेष्टयन्ते
हन्तेदानीं शरणमपरं नास्ति नः शम्भुभक्तेः॥ १७/१७

यत्र ध्वान्तक्षपणनिपुणं दुर्बलं धाम चान्द्रं
सांद्रं यत्र ग्लपयति तमस्तापनो यन्न तापः।
यत्र प्रेङ्खन्न कचति शिखी तेजसाऽन्येन सत्रा
तत्रालोकं दिशति विषमे शांभवी भक्तिरेका॥ १७/१८

मा भूद्भूयोऽभ्यसनसुलभान्वीक्षिकी नाम विद्या
हृद्या दूरे विहरतु विपत्खण्डिनी दण्डनीतिः।
क्वापि स्थेम्ना लसतु कलितोल्लाघवार्तापि वार्ता
नार्तावर्हं किमपि शरणं शम्भुभक्तिं विनाऽन्यत्॥ १७/१९

संसाराब्धेः प्रथमलहरी पातकापातकामा
रामा नाम स्थगयति गतिं मज्जतां सज्जनानाम्।
मोहावर्त्तभ्रमसमुदयत्खेदविच्छेदहेतुः
सेतुर्दूरीभवति च भृशं शेमुषी शेमुषीयम्॥ १७/२०

तस्मादस्माज्जननमरणक्लेशवेशन्तपङ्का-
च्छङ्कातङ्काकुलितमतयो ये तितीर्षन्ति तेषाम्।
आशापाशग्रथितवपुषां क्रन्दतामातुराणां
प्राणापाते वितरति करालम्बनं शम्भुभक्तिः॥ १७/२१
(युगलकम्)

एणाक्षीणां स्मरशरशिखाकोटिशौटीर्यभीमाः
प्रेमाकृष्टा झगिति कुटिला ये कटाक्षाः पतन्ति।
कालेनैते कुलिशनिशितास्तुण्डदण्डा जडानां
भिन्दन्त्यन्तर्हृदयमदयं पत्रिणां नारकाणाम्॥ १७/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बाहुद्वन्द्वं तुलित-विवलद्बालमार्णालनालं
सालङ्कारं रणितवलयं वेष्टितं कण्ठपीठे।
मोहान्धानां महति पततां यातनातङ्कपङ्के
शङ्के पङ्केरुहदलदृशः पाशतामेतदेति॥ १७/२३

यत्साकूतं मुकुलितदृशः केतकामोदहृद्यं
सद्यः स्विद्यद्वदनममृतस्यन्दि पीतं नताङ्ग्याः।
रागान्धानां निरयनिलये तद्दुरापावसाने
जाने भूयः पतनशपथाक्रोशकोषत्वमेति॥ १७/२४

रागोद्रेकात्कनकलशाकारमालम्बि हारं
सारङ्गाक्ष्याः पृथुकुचयुगं गाढमालिङ्गितं यत्।
तन्मूढानां नरककलिले मज्जतामन्तकाले
नाले लग्नस्थिरतरगुरुग्रावभावं बिभर्ति॥ १७/२५

किं भूयोभिर्वचनरचनाडम्बरैर्दीर्घशोका
लोका युक्तं शृणुत सुतरां पश्चिमं वाक्यमेतत्।
दुःखोदर्कं प्रमुखसुखदं सङ्गमुत्सृज्य साङ्गं
गाङ्गं लब्ध्वा सलिलममलं शम्भुभक्तिं भजध्वम्॥ १७/२६
(पञ्चभिः कुलकम्)

त्रैलोक्यं लम्भयन्तस्तृणगणगणनां रोहिणीकान्तलेखा-
रेखालङ्कारभक्तिप्रमुदितमनसो निर्मलं धाम लब्धुम्।
धन्याः संन्यासिनोऽन्तः कलिमलपटलं भूरि भिन्दन्त्यमन्दा
मन्दाकिन्याः पयोभिः शशिमुकुटजटावैजयन्तीदुकूलैः॥ १७/२७

एवं देव प्रभेव स्मरहर सकलद्वीपदीपस्य भर्त्तु-
र्भासामासादयन्ती विषमतमतमःखण्डने चण्डिमानम्।
कारागारानुकारे परिभवति भवे बद्धमोहान्धकारे
भावत्की भक्तिरेका शरणमशरणत्राणविश्राणिनी नः॥ १७/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ये विश्वस्थितिसर्गसंहृतिकृतो देवास्त्रयस्तेऽपि यं
सेवन्ते मुखवीक्षणप्रणयिनो दृक्पातमात्रार्थिनः।
यस्याः स प्रभुरप्रमेयमहिमा क्रीडाशकुन्तायते
तां भक्तिं भुवनत्रयाद्भुतमहामाहात्म्यशक्तिं स्तुमः॥ १७/२९

गावस्तावद्दुहाना रसमसमसुधासोदरास्वादबन्धुं
भक्तिर्भर्गे निसर्गक्लमशमनचमत्कारभोगैकभूमिः।
तृप्तिः स्वात्मावभासादनुपमपरमानन्दनिःस्यन्दसंवि-
द्विश्रान्त्येकान्तहेतोरिति सपदि विपत्किङ्करी किङ्करोतु॥ १७/३०

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'भक्तिस्तोत्रं' नाम सप्तदशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ अष्टादशं स्तोत्रम्

सिद्धिस्तोत्रम्

❀❀❀

जयति जितविकारः क्लृप्तलोकोपकारः
कृतविपदपकारः शान्तमोहान्धकारः।
अतुलपुरुषकारः प्राप्तविश्वाधिकारः
स्मररचितनिकारः पार्वतीचाटुकारः॥ १८/१

अतनुमतनुतामुं प्राणिनां पूर्णशक्ति-
स्तनुभुवनगणं यः शर्मदः कर्मभुक्त्यै।
दिशमदिशदशङ्कां शास्त्ररूपां च मुक्त्यै
स भवतु भवदोषप्लोषकृद्वो महेशः॥ १८/२

अनलसहितवृत्तौ सत्कलाभासशुद्धे
बुधवरमुखपद्मे भारती निर्मलोर्मिः।
वरद परमतापक्लेशजित्त्वत्प्रसादात्
प्रभवति भवदीये मूर्धनि स्वर्धुनीव॥ १८/३

भव भवमरुचारश्रान्तसन्तापतान्ति-
प्रशमनघनवर्षावारिवाहं तवाहम्।
नमदमरकिरीटप्रोतरत्नांशुपूर-
स्फुरदुरुसुरचापं पादपीठं प्रपद्ये॥ १८/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करकलितकपोला बालशैवालशय्या-
तललुलितमृणालीपेलवम्लानमूर्तिः।
चिरविरहविनिद्रा रुद्रदृक्पातपात्रं
दिशि दिशि निशि पश्यत्यङ्गनानङ्गभीरुः॥ १८/५

हरचरणसरोजद्वन्द्वभक्तिप्रसादा-
दुपरि करिवराणां संचरन्तः सहेलम्।
घनमदभरनिर्यन्निर्भरामोदलोभ-
स्खलदलिकुलगीतं स्फीतमाकर्णयन्ति॥ १८/६

चरणकमलयुग्मं देव निर्दम्भभक्ति-
ग्रहपुलकितदेहस्तावकं यो ननाम।
अधिवसति स सेवानम्रसामन्तमौलि-
स्खलितबकुलमालालालितं पादपीठम्॥ १८/७

शशिशकलशिखण्ड त्वत्प्रसादेन धन्याः
सितकरधवलाभ्यां चामराभ्यां विभान्ति।
उभयत इव वक्त्रं भाविरुद्रत्वलाभ-
प्रकटनपिशुनाभ्यां स्वर्णदीनिर्झराभ्याम्॥ १८/८

क्षितिधरपतिपुत्रीवल्लभ त्वत्प्रसादा-
द्दधति जगति धन्या मूर्ध्नि धौतातपत्रम्।
घटयितुमधिकत्वं स्वात्मनोऽपि त्वयैत-
त्सकलमिव वितीर्णं मण्डलं शीतरश्मेः॥ १८/९

अयि हृदय दयार्द्रः स्वर्धुनीनीरधारी
त्वयि विहरति हस्तन्यस्तपीयूषकुम्भः।
यदि हिमकरलेखाशेखरः कोऽपरस्ते
भवदवविनिवृत्तौ शंस शीतोपचारः॥ १८/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुरवरनुतधैर्या वैरिदुर्वारवीर्या
जगति विविधशास्त्रप्रस्तुताचार्यचर्याः।
दधति भुवनतन्त्रं कोटिशो रुद्रवर्याः
कृतसततसपर्या ये पुरा शङ्करस्य॥ १८/११

गिरि गिरिवरकन्याकान्त शान्तप्रथायां
करचरणगणेऽपि क्षामतामश्नुवाने।
गलगलदवकाशे वापि कीनाशपाशे
भव भवति विना त्वां प्राणिनां त्राणकृत्कः॥१८/१२

शयशयननिविष्टं वक्त्रमापाण्डुगण्डं
मतिमतिविरहेण ग्लानिभाजं वहन्ती।
तनुतनुलतिकार्तिं मानिनी व्याहरन्ती
हर हरति न धैर्यं त्वत्समाधौ बुधानाम्॥ १८/१३

दलदलघुविवेकं व्यक्तशोकातिरेकं
विश विशदमनन्त स्वान्तमन्तः प्रशान्तम्।
भव भव भवदाहध्वंसवर्षाम्बुवाहः
कलिकलितरुजानां सप्रजानां प्रजानाम्॥ १८/१४

दहदहतममोघं पाप्मनां दीर्घमोघं
रुचिरुचिरममन्दं सुन्दरानन्दकन्दम्।
दिश दिशदुपदेशं नाशितक्लेशलेशं
मधुमधुरमुदारं वाक्यपीयूषसारम्॥ १८/१५

सरति सरतिरन्तर्घस्मरो मारवीर-
श्चलति च लतिकेव स्फीतभीतिर्मनीषा।
तमहित-महिमानं नाथ निक्षिप्य चक्षुः
शमय शमयमेति प्रीतिमान्येन लोकः॥ १८/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जघनजघनशोभा स्पर्धमाना सभृङ्गं
कमलकमलकान्तक्रान्तभासा मुखेन।
मुदितमुदितरागा सेवते देव रामा
मदनमदनवीनैस्त्वत्प्रपन्नं विलासैः॥ १८/१७

जनित-जनितरङ्गं जृम्भयन्ती भवाब्धिं
कलित-कलितमिस्रा नाथ कादम्बिनीव।
हरति हर तितिक्षोन्माथिनी मोहमूर्च्छा
महितमहितवृद्धिः शुद्धबोधप्रकाशम्॥ १८/१८

भजति भज तिरश्चीं दृष्टिमिष्टप्रसादां
कृतसुकृतसुमेधः प्रैधिताभीष्टसिद्धिम्।
तिरयति रयमीश व्यापदां दुःसहानाम्
शमनशमनदक्षं त्वां विना नाथ कोऽन्यः॥ १८/१९

समरसमरजोभिः स्वान्तमन्तर्वहद्भि-
र्हितविहितवियोगं मोहमाहन्तुकामैः॥
भव-विभवविमुक्तैर्योगिभिर्योऽभ्युपेत-
स्तमहतमहनीयश्लाघमीशं प्रपद्ये॥ १८/२०

अकलितमहिमानं ध्वस्तमिथ्याभिमानं
ददमृतसमानं बोधमाभासमानम्।
प्रकटितलघिमानं दुर्वहं वर्धमानं
भवभवमवमानं भिन्द्धि मे बाधमानम्॥ १८/२१

किमिव मणिभिः किं वा मन्त्रैः किमौषधिसंग्रहै-
रिह बहुविधैः किं वा कार्यं परैरपि भेषजैः।
अमृतमपि न प्रायः पापोपतापशमक्षमं
व्रजत शरणं तस्मादेकं हरं करुणापरम्॥ १८/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इह हि गिरिषु प्रालेयाद्रिर्महःसु विभावसु-
र्गुरुषु जननी मन्त्रेष्वेकाक्षरं परमं पदम्।
सखिषु सुकृतं वैरिष्वंहो नदीषु नभोनदी
प्रभुषु च परः स्वामी देवः शशाङ्कशिखामणिः॥ १८/२३

न यावदवहीयते धृतिधुरा जराविप्लवै-
र्न जीर्यति सरस्वती न च विशीर्यते शेमुषी।
न चामयभुजङ्गमैरवशमङ्गमालिङ्ग्यते
भजध्वमजरं विभुं भवजयाय तावद्बुधाः॥ १८/२४

अराणि करुणं मुहुर्मुहुरकारि चाटु प्रभो-
रभावि भवभावनामुदितचेतसान्तर्मुहुः।
अलोठि मुकुटं मुहुश्चरणपीठिकाविष्टरे
किमन्यदखिलं जितं करतले कृताः सिद्धयः॥ १८/२५

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'सिद्धिस्तोत्रं' नाम अष्टादशं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ एकोनविंशं स्तोत्रम्

भगवद्रूपवर्णनस्तोत्रम्

❀❀❀

यत्ते परं वरद रूपमतीतमेव
मार्गं गिरां तदिह कः क्षमते गृणातुम्।
अग्राहि यत्तु नतलोकमनुग्रहीतुं
बालेन्दुलक्ष्म भवता तदिदं गृणामि॥ १९/१

आस्तां परं यदपरं तदपि स्वकीयं
दिव्यं वपुर्नहि महेश विमर्शयोग्यम्।
यत्किञ्चिदेव तु विकल्पविकल्प्यमान-
मानन्दधाम तदपीह भवार्तिभाजाम्॥ १९/२

मूर्त्तिर्ध्रुवं तव शिवामृतवर्तिरेना-
मासाद्य यत्कतिचिदश्रुलवाः पतन्ति।
नश्यत्यघौघपटलं तिमिरं व्यपैति
रागः प्रशाम्यति दृशः प्रथते प्रसादः॥ १९/३

सत्यं महार्घगुणरत्न निधानमेत-
दालम्बनं तव वपुर्विपदर्दितानाम्।
नो चेन्नखांशुभरकेसरितं किमत्र
पादाभिधं युगपदुद्गतमब्जयुग्मम्॥ १९/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पादद्वयं तव भव प्रणतिप्रकर्ष-
हर्षाश्रुबिन्दुभरदन्तुरिताङ्गुलीकम्।
नीहार-शीकर-परिष्कृत-पत्रपङ्क्ति-
पङ्केरुहद्वितयकान्ति भजन्ति धन्याः॥१९/५

भस्मोज्ज्वलं त्रिदशशेखरपद्मराग-
दीप्रप्रभारुणितमङ्घ्रिसरोजयुग्मम्।
वन्दामहे घुसृणरेणुपरागगर्भ-
कर्पूरपांसुभिरिव च्छुरितं स्मरारेः॥ १९/६

जङ्घालतायुगलमाश्रितगुल्फमूल-
भोगीन्द्रभोगसुभगाभिनवालवालम्।
शंभोरभीष्टफलदं भवतापतान्ति-
शान्तिक्षमं शमयितुं विपदं श्रयामि॥ १९/७

वन्दे युगान्तसमयोषितसप्तलोकं
लोकोत्तरं जठरमीश्वरभैरवस्य।
यत्रैति नाभिकुहरं जगदादिसर्ग-
निर्यज्जनौघनव-निर्गम-मार्ग-भङ्गिम्॥१९/८

सिन्दूरिताऽमरमतङ्गजकुम्भशोभि
सन्ध्याभिताम्रशरदम्बुधरानुकारि।
वन्दे फणीन्द्रफणरत्नरुचारुणाभं
भस्मौघभास्वरमुरः पुरशासनस्य॥ १९/९

स्वामिन्नमी तव भुजा भुजगाधिराज-
भोगोपगूढवपुषो हृदयं मदीयम्॥
आनन्दयन्ति बत भीमभवोपताप-
निर्वापणेन विटपा इव चन्दनस्य॥ १९/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मध्यस्थितेरुभयपार्श्वगता चकास्ति
हस्तस्य मेरुपरिमर्शविनाकृतेयम्।
अव्याहतग्रहवशाहितयोगसिद्धि-
र्नक्षत्रपंक्तिरिव देव तवाऽक्षमाला॥ १९/११

त्वं कालभैरववपुर्ज्वलिताऽनलाश्रि
लोलाङ्गुलीवलनमण्डलितं दधानः।
संहाररात्रिषु निनर्तिषुरीश शूलं
बालार्कचुम्बित-नवाम्बुदभङ्गिमेषि॥१९/१२

शाणोपलोत्कषणशुद्धनवेन्द्रनील-
नीलद्युतिर्जयति ते शितिकण्ठ कण्ठः।
यस्मिन्घनाञ्जनरुचिर्भुजगः कलिन्द-
कन्याह्रदान्तरितकालियभङ्गिमेति॥ १९/१३

कण्ठो वहन्नपि विषं विषमं तवैषः
सद्यः श्रियं सृजति यद्वचसाश्रितेषु।
स्वामिन्नतस्त्रिभुवनप्रथितप्रतिष्ठं
श्रीकण्ठ इत्युचितमेव तवाभिधानम्॥१९/१४

अन्तर्विमृश्य गरलेन गले सलील-
मालिङ्गितं विमलमाननमिन्दुमौलेः।
हृष्यामि हन्त मुहुरम्बुरुहभ्रमाप्त-
रोलम्बडम्बरविडम्बनपण्डितेन॥ १९/१५

यद्वद्विषं सदमृतं शिरसि प्रसिद्ध-
मम्भस्तवेश विशदं सुमनःस्रवन्त्याः।
मन्ये तथैव भगवन् भवतो गलस्थं
Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi
संपद्यतेऽमृतमिदं नतसान्त्वनेषु॥ १९/१६

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तद्युक्तमीश वदनाद्भवतः सुधाच्छ-
कान्तेर्यदग्निरपतद्वपुषि स्मरस्य।
यो लङ्घनं त्रिभुवनैकगुरोर्विधित्सु-
रुल्का न किं पतति चन्द्रमसोऽपि तस्य॥ १९/१७

दिष्ट्या विरुद्धजनता दमयन्त्यपीयं
दृष्टिस्तवेश्वर बिभर्त्यनलाश्रिततत्वम्।
दिष्ट्या वनैकरतिरप्यवनैकसक्ति-
रेकस्त्वमद्भुतनिधे भगवन्नमस्ते॥ १९/१८

धन्यस्य यस्य वपुषि ग्लपिते तपोभिः
स्वामिन् पतन्ति विषमाणि तवेक्षणानि।
मुष्णन्ति मुग्धमृगशावदृशां न धैर्य-
सर्वस्वमस्य विषमाणि विलोचनानि॥ १९/१९

सत्येव दृग्विलसिते करुणामृतौघ-
शीते जरामरणहारिणि तावकीने।
नाथ व्यधायि विबुधैरबुधैर्मुधैव
दुग्धोदधिप्रमथनेऽनवधिः प्रयासः॥ १९/२०

श्वेतेऽमृतं यदसृजद्रविजे च वह्नि-
मेकैव दृक्तव तयोः स निजः प्रभावः।
इक्षौ सुधा विषमुषाणफले च सार्धं
यद्वर्धते किमपराध्यति तत्र वृष्टिः॥ १९/२१

नूनं पयोधिमथनावसरे परेश
पीतं त्वया तदमृतं न तु कालकूटम्।
अद्यापि यद्वसति ते वचनक्रमे च
दृग्विभ्रमे च तरुणे करुणारसे च॥ १९/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सत्यं प्रसादसमये चपलत्वमेति
धत्तेऽधिकं च कुटिलत्वमियं तव भ्रूः।
एतां विना पुनरनर्गलकालपाश-
पाते परास्ति न गतिर्भयविह्वलानाम्।। १९/२३

आपूरितः सुरसरित्पयसाऽमृताय
जूटः प्रतप्ततपनीयपिशङ्गकान्तिः।
स्वामिन्नसौ तव नवातपताम्रवेला-
शैलोपगूढ इव दुग्धनिधिर्न कस्य।। १९/२४

स्वामिन्सुधावदवदातरुचिस्तवेय-
माभाति हन्त मुकुटे नृकपालमाला।
जूटान्तरालविलसत्सुरसिन्धुतीर-
लीलाविहाररसिकेव मरालमाला।। १९/२५

ब्रह्मादिभिस्तव जगद्गुरुभिः शिरांसि
यान्यर्पितानि परमेश्वर पादपीठे।
तान्येव मूर्धनि यदाभरणीकरोषि
स प्रौढिमा जयति कोऽपि कृतज्ञतायाः।। १९/२६

निर्वाणमेति न जलैरपि यत्र वह्नि-
र्यैत्रैष नो पचति तानि महाशिखोऽपि।
मान्द्यं न विन्दति तमीरमणः कृशोऽपि
ताभ्यामसौ विजयते शितिकण्ठ जूटः।। १९/२७

भालस्थले हुतवहं वहतो जलं च
चन्द्रं च मूर्ध्नि विकटं च कपालखण्डम्।
एकत्र मुण्डमपरत्र सुधाघटं च
हस्ते चकास्ति भवतोऽद्भुत एष वेषः।। १९/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दाने नदीनमुपकल्पयतः सहर्ष-
माक्रम्य गामनुपमां गतिमास्थितस्य।
नागेन्द्र-संभृतमहाकटकस्य कस्य
शस्यं विना त्वदिह राजशिरोमणित्वम्॥ १९/२९

कण्ठे विषं विषभृतोऽपि विभूषणानि
गात्रेषु मूर्धनि विषं विबुधस्त्रवन्त्याः।
इत्थं विषैकवसतेरपि ते चकास्ति
कर्णामृतं सुकृतिनाममृतेशनाम॥ १९/३०

क्षतविभवविशेषाः प्राणमात्रावशेषा
विपदमनुभवामः कर्मपाको हि वामः।
तदिह भुजगहारः क्लृप्तमोहापहारः
स भवति गतिरेकः कृत्तशोकातिरेकः॥ १९/३१

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'भगवद्रूपवर्णनं' नामैकोनविंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ विंशं स्तोत्रम्

हसितवर्णनस्तोत्रम्

❀❀❀

यत्सौभगेन घनमोघममोघमेघ-
संघातसंभवमवन्ध्यमधः करोति।
तच्छाम्भवं भवमरुभ्रम-खेद-भेद-
दक्षं 'विलास-हसितं' नुतिभिर्भजामः॥२०/१

यद्वाङ्मयं सकलवाङ्मनसातिवृत्त-
सीमानमीश महिमानममानमेयम्।
अस्मादृशं कृशदृशं भृशमामृशन्त-
मन्तर्विमृष्य भवतो भगवन्नुदेति॥ २०/२

येनोपमन्युमपमन्युमनन्यभाज-
माजन्मतृष्णजमजस्रमज श्रमार्तम्।
आनन्दयः स्वयमदीननदीनदान-
भास्वन्महाफललसत्कुसुमोपमेन॥ २०/३

येनापि तापविपदं प्रथमं जहर्थ
नाथ प्रसादसुभगेन भगीरथस्य।
मूर्ध्ना धृतत्रिदशसिन्धुमहाप्रवाह-
निर्वापणेन पुनरस्य पितामहानाम्॥ २०/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उत्प्रासनाय शमनस्य मनस्यनल्प-
दर्पोद्गमप्रशम-विक्लव-विक्रमस्य।
आश्वासनाय च समं समभावि येन
कीनाशपाशविवशस्य नरेश्वरस्य।। २०/५

भावत्कभक्तिभरसंभृतभूरिभूति-
संभाररूढगुरुगर्वगलद्विवेकम्।
मोहान्धमन्धकमुपाहित-साहसिक्य-
हेवाकमाकलयतो भवतो यदासीत्।। २०/६

लंकेशकम्पितकुबेरगिरिप्ररूढ-
संरम्भभीरुगिरिजापरिरम्भभाजः।
यत्ते रुषामवसरेऽप्युदितानवद्य-
हृद्यप्रसादसुमुखस्य समुज्जगाम।। २०/७

पूजार्थमम्बुजसहस्रमुपाहितं य-
देकं ततो हृतवतस्तव कैतवेन।
विष्णुं विलोक्य निजलोचनमुत्खनन्त-
मन्तः प्रसन्नमनसो यदमन्दमासीत्।। २०/८

दृष्ट्वा वधूजनमनुत्तमरूपसंप-
त्संदर्शनोद्भवमनोभवभग्नवृत्तम्।
आषाढपाणिषु रुषा मुनिषु प्रहर्त्तु-
मभ्युद्यतेषु तव यद्भृशमुद्बभूव।। २०/९

अभ्यर्णवर्तिकरगोचरकालकूट-
कूटप्रभानिचयमेचकितेऽधरोष्ठे।
यत्पूर्वपर्वतशिखाश्रितशीतरश्मि-
रश्मिच्छटाच्छविविडम्बि पुराविरासीत्।। २०/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यत्कर्णतालवलनानिलधूत-कुम्भ-
सिन्दूर-रेणु-कण-कूणितलोचनस्य।
बालस्य नागवदनस्य मनस्यभीष्टां
दृष्ट्वैव नाट्यघटनां तव संबभूव॥ २०/११

शैलादिवादितमृदङ्गलयानुयात-
नृत्तप्रवृत्तगुहवाहविलोकनेन।
स्वामिन् महाप्रलयभैरवरूपिणो य-
दाविर्बभूव तव ताण्डवडम्बरेषु॥ २०/१२

व्योम प्रचण्डभुजदण्डविघट्यमान-
तारावली-विरह-बन्धुरितान्धकारम्॥
स्वामिन् युगान्तसमयाभिनयेषु येन
संभाव्यते पुनरपि प्रचुरप्रकाशम्॥ २०/१३

दिक्चक्रवाल-मुखरीकरणप्रगल्भ-
प्रावृट्पयोधरगभीररवानुकारि।
स्वामिन् कठोरहृदयस्य भयं विधातुं
भीरोश्च दातुमभयं युगपत्क्षमं यत्॥ २०/१४

यत्कालकूटकवलीकरणप्ररूढ-
नीलिम्नि कण्ठपुलिने विमलं निलीनम्।
नीरन्ध्रनीरभरमेदुर-मेघ-खण्ड-
लग्नेन्दुमण्डलविडम्बनमातनोति॥ २०/१५

ध्यायन्त्यनन्यहृदया हृदयाधिनाथ-
मद्य क्षपामगमयं सखि कल्पकल्पाम्।
प्राणेशसङ्गमनिमित्तमथ प्रभाते
निद्रा सखीव मम सम्मुखमाजगाम॥ २०/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तस्मिन्क्षणे नयनवर्त्मनि जीवितेशः
शंसन् दृशा मधुरयैव मनःप्रसादम्।
चक्रे पदं मम तमोमुकुलीकृतायाः
स्वैरं समेत्य सवितेव सरोरुहिण्याः॥ २०/१७

अस्मत्कृते सितमयूखमुखि त्वयैत-
त्किं प्रस्तुतं मुनिभिरप्यतिदुष्करं यत्।
उद्यानचङ्क्रमणकेलिषु खिद्यते या
सा ते कथं कथय कष्टसहाऽङ्गयष्टिः॥ २०/१८

मूर्तिः क्व बालकदलीदलकोमलेयं
तीव्रं तपः क्व मनसोऽपि न गोचरं यत्।
क्वेषद्विकासि कुसुमं सुमनोलतायाः
क्वोन्मत्तकुञ्जरकठोरकरोपमर्दः॥ २०/१९

एतेन कर्कशकुशग्रहणं करेण
सोढं कथं प्रथम-पल्लवकोमलेन।
पादौ कथं कमलगर्भनिभौ शिलाश्रि-
श्रेणीषु तीर्थगमनक्लममन्वभूताम्॥ २०/२०

हारोपि भार इव यत्र कुचद्वयं त-
त्सेहे कथं कुलिशकर्कशवल्कलोल्काम्।
एतत्कथं मृदुमृणाललताभिजातं
पञ्चाग्नितापविपदः पदमङ्गमासीत्॥ २०/२१

इत्यादिभिर्दशनचन्द्रिकयानुविद्धै-
रन्तर्बहिश्च तिमिरप्रसरं हरद्भिः।
आश्वासयन्निव निवर्तिततीव्रखेदं
गर्भीकृतस्मितसुधामधुरैर्वचोभिः॥ २०/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यावत्त्रपापरवशं क्षितिमीक्षमाणं
मुक्ताफलोपमसमुद्गतघर्मलेशम्।
किञ्चित्करेण मुखमुन्नमयन्नियेष
पीयूषवर्षमिव वर्षितुमेष भूयः॥ २०/२३

तावत्प्रबोधितवता कृकवाकुनादै-
र्दुर्वेधसा सखि तदाचरितं शठेन।
यत्रैष एव शरणं मम जीवितेशो
यद्वाऽपरो हरति योऽखिलजन्तुवर्गम्॥ २०/२४

इत्यादि तीव्रविरहज्वरया जयायै
यत्स्वप्नवृत्तमुदितं गिरिराजपुत्र्या।
तच्छृण्वतो वनलतान्तरितस्य यत्ते
जातं प्रमोदभरनिर्भरमानसस्य॥ २०/२५
(पञ्चविंशत्या कुलकम्)

सञ्जीवनौषधमिदं हरहुंकृताग्नि-
ज्वालावलीढवपुषः कुसुमायुधस्य।
बाले सुधारसमये समये किमर्थ-
मायास्यते त्रिभुवनाभरणं शरीरम्॥ २०/२६

कल्पद्रुमैर्निधिभिरोषधिकामधेनु-
चिन्तामणिप्रभृतिभिश्च परिष्कृतस्य।
किं दुर्लभं तव पितुर्भुवनातिशायि-
श्रीधाम्नि धामनि यदर्थयसे तपोभिः॥२०/२७

त्वं जीवितादपि गुरोरधिका स ताव-
दुत्पादयेत्तव न मन्युमधीतनीतिः।
संभाव्यते तव च नान्यकृतो निकारः
कुर्वीत केसरिसटाहठकर्षणं कः॥ २०/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रद्धानुबन्धविहितव्रतहोमदान-
स्वाध्यायतीर्थगमनादिनिबन्धनानि।
धन्यस्य कस्य फलितानि तुषारहार-
गौराणि गौरि सुकृतानि पुराकृतानि॥ २०/२९

दुर्वार-दुर्गति-निकार-कदर्थ्यमान-
मालोक्य लोकमखिलं विपुलाशयेन।
सद्यः कृतं कनकवर्षणमिन्दुकान्त-
वर्ष्मत्विषा परमकारुणिकेन केन॥ २०/३०

गायन्ति कस्य विषदं विषमोग्रकाल-
संरुद्धशक्तिशरणागतरक्षणोत्थम्।
द्वन्द्वानि नन्दनसदामपदानमिन्दु-
धौतासु कौमुद-महोत्सवयामिनीषु॥ २०/३१

केनेश्वरेण महता वहतात्रिनेत्र-
सञ्जातकान्ति वपुरद्भुतभूतिभूषम्।
उद्दामकामशितमार्गणदौर्मनस्य-
वैरस्यमिद्धमहसा सहसा निरस्तम्॥ २०/३२

धन्याः कमस्खलितपौरुषभग्नभूरि-
दर्पान्धकन्दलितलोकविषादमुच्चैः।
हेलावलीढविषमश्रमवीर्यवह्नि-
भस्मीकृताहितपुरं कवयः स्तुवन्ति॥ २०/३३

कः स्वर्धुनीसवनवह्निनिषेवणादि-
धौतां दधत्तनुमनुज्झितभैक्षवृत्तिः।
कालं द्विजेन्द्रमुकुटः परिशुद्धधर्म-
चर्यारतः क्षपितवानजिनावृताङ्गः॥ २०/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उद्धूलितश्चिचतिरजोभिरखण्डमुण्ड-
मालाकरालशिखरः सुचिरं चचार।
भीष्मश्मशानवसनव्यसनः कपाल-
खट्वाङ्गपाणिरतितीव्रमपि व्रतं कः॥ २०/३५

मन्ये भवान्तर-शतोपचितस्य पुण्य-
पृथ्वीरुहः फलमलभ्यमभाग्यभाजाम्।
यस्या दृगञ्चलविलोकनमात्रमेव
संभावनं तु वचसा वचसामभूमिः॥ २०/३६

सा त्वं महार्घगुणरत्नसमुद्रवेला-
लावण्यसिन्धुरकलङ्कुलप्रसूतिः।
सौभाग्यभाग्यविभवादिभवाऽभिमान-
भूमानमानयसि यं तपसा प्रसादम्॥ २०/३७

इत्थं विदग्धरसदिग्धकथाक्रमेण
देव्या समं समभिभाषणलोलुभस्य।
यद्व्याजवर्णि-तरुणस्य तवाऽवहित्थ-
संरुद्धमप्यतिभरेण समुद्बभूव॥ २०/३८

रूपं प्रदर्श्य विदधद्गिरि सानुकम्पं
दिव्यं धृतामृतरसं गिरिसानुकम्पम्।
येन व्यधा मुखमखण्डसितांशुकान्तं
देव्या वपुश्च पुलकोच्छ्वसितांशुकान्तम्॥ २०/३९

स्वामिन्नुदार-घनसार-तुषार-हार-
कह्लार-शारद-निशारमणोपमेन।
तापं तमश्च विषमं जहि मे सहेल-
मुल्लासितेन हसितेन सितेन तेन॥ २०/४०

(युगलकम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सहस्रचरणं रविं नयनपङ्कजान्तःस्थितं
सहस्रनयनं हरिं चरणपङ्कजान्तःस्थितम्।
विमृश्य धृतविस्मयां भगवतीमवेक्ष्योद्गतं
प्रभोरभिमताप्तये हसितमस्तु शर्वस्य मे॥ २०/४१

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'हसितवर्णनं' नाम विंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ एकविंशं स्तोत्रम्

अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्

❀❀❀

वन्देमह्यमलमयूखमौलिरत्नं
देवस्य प्रकटितसर्वमङ्गलाख्यम्।
अन्योन्यं सदृशमहीनकङ्कणाङ्कं
देहार्धद्वितयमुमार्धरुद्धमूर्तेः॥ २१/१

तद्वन्दे गिरिपतिपुत्रिकार्धमिश्रम्
श्रैकण्ठं वपुरपुनर्भवाय यत्र।
वक्त्रेन्दोर्घटयति खण्डितस्य देव्या
साधर्म्यं मुकुटगतो मृगाङ्कखण्डः॥ २१/२

एकत्र स्फटिकशिलामलं यदर्धे
प्रत्यग्रद्रुतकनकोज्ज्वलं परत्र।
बालार्कद्युतिभरपिञ्जरैकभाग-
प्रालेयक्षितिधरशृङ्गभङ्गिमेति॥ २१/३

यत्रैकं चकितकुरङ्गभङ्गि चक्षुः
प्रोन्मीलत्कुचकलशोपशोभि वक्षः।
मध्यं च क्रशिमसमेतमुत्तमाङ्गं
भृङ्गालीरुचिकचसंचयाञ्चितं च॥ २१/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

साभोगं घननिबिडं नितम्बबिंबं
पादोपि स्फुटमणिनूपुराभिरामः।
आलोक्य क्षणमिति नन्दिनोप्यकस्मा-
दाश्चर्यं परमुदभूदभूतपूर्वम्॥२१/५ (युग्मम्)

यत्रार्धं घटयति भूरिभूतिशुभ्रं
चन्द्रांशुच्छुरितकुबेरशैलशोभाम्।
अर्धं च प्रणिहितकुङ्कुमाङ्गरागं
पर्यस्तारुणरुचिकाञ्चनाद्रिमुद्राम्॥ २१/६

यत्कान्तिं दधदपि काञ्चनाभिरामां
प्रोन्मीलद्भुजगशुभाङ्गदोपगूढम्।
बिभ्राणं मुकुटमुपोढचारुचन्द्रं
सन्धत्ते सपदि परस्परोपमानम्॥ २१/७

आश्चर्यं तव दयिते हितं विधातुं
प्रागल्भ्यं किमपि भवोपतापभाजाम्।
अन्योन्यं गतमिति वाक्यमेकवक्त्र-
प्रोद्भिन्नं घटयति यत्र सामरस्यम्॥ २१/८

प्रत्यङ्गं घनपरिरम्भतः प्रकम्पं
वामार्धं भुजगभयादिवैति यत्र।
यत्रापि स्फुटपुलकं चकास्ति शीत-
स्वःसिन्धुस्नपिततयेव दक्षिणार्धम्॥ २१/९

एकत्र स्फुरति भुजङ्गभोगभङ्गि-
र्नीलेन्दीवरदलमालिका परत्र।
एकत्र प्रथयति भस्मनोऽङ्गरागः
शुभ्रत्वं मलयजरञ्जनं परत्र॥ २१/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एकत्राऽर्पयति विषं गलस्य कार्ष्ण्यं
कस्तूरीकृतमपि पुण्ड्रकं परत्र।
एकत्र द्युतिरमलाऽस्थिमालिकाना-
मन्यत्र प्रसरति मौक्तिकावलीनाम्॥ २१/११

एकत्र स्रुतरुधिरा करीन्द्रकृत्तिः
कौसुम्भं वसनमनश्वरं परत्र।
इत्यादीन्यपि हि परस्परं विरुद्धा-
न्येकत्वं दधति विचित्रधाम्नि यत्र॥ २१/१२
(तिलकम्)

दन्तानां सितिमनि कज्जलप्रयुक्ते
मालिन्येऽप्यलिकविलोचनस्य यत्र।
रक्तत्वे करचरणाधरस्य चान्यो
नाऽन्योन्यं समजनि नूतनो विशेषः॥ २१/१३

कण्ठस्य भ्रमरनिभा विभार्धभागं
मुक्त्वा किं स्थितिमकरोच्छिरोरुहार्धे।
अर्धं वा कनकसदृग्रुचिः कचानां
सन्त्यज्य न्यविशत किं गलैकदेशे॥ २१/१४

सौवर्णः करकमले यथैव वामे
सव्येऽपि ध्रुवमभवत्तथैव कुम्भः।
क्रीडैकप्रसृतमतिर्विभुर्बिभर्ति
स्वाच्छन्द्यादुरसि तमेव नूनमेनम्॥ २१/१५

यत्रासीज्जगदखिलं युगावसाने
पूर्णत्वं यदुचितमत्र मध्यभागे।
संरम्भाद्गलितमदस्तदेव नूनं
विश्रान्तं घनकठिने नितम्बबिम्बे॥ २१/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इत्यादीन्प्रविदधुरेव यत्र ताव-
त्संकल्पान्प्रथमसमागमे गणेन्द्राः।
यावत्स प्रणतिविधौ पदारविन्दं
भृङ्गीशः परिहरति स्म नाऽम्बिकायाः॥ २१/१७
(चक्कलकम्)

किमयं शिवः किमु शिवाऽथ शिवा-
विति यत्र वन्दनविधौ भवति।
अविभाव्यमेव वचनं विदुषा-
मविभाव्यमेव वचनं विदुषाम्॥ २१/१८

एकः स्तनः समुचितोन्नतिरेकमक्षि
लक्ष्याञ्जनं तनुरपि क्रशिमान्वितेति।
लिङ्गैस्त्रिभिर्व्यवसिते सविभक्तिकेऽपि
यत्राऽव्ययत्वमविखण्डितमेव भाति॥ २१/१९

यत्र ध्रुवं हृदय एव यदैक्यमासी-
द्वाक्काययोरपि पुनः पतितं तदेव।
यस्मात्सतां हृदि यदेव तदेव वाचि
यच्चैव वाचि करणेऽप्युचितं तदेव॥२१/२०

कान्ते शिवे त्वयि विरूढमिदं मनश्च
मूर्तिश्च मे हृदयसंमददायिनीति।
अन्योन्यमभ्यभिहितं वितनोति यत्र
साधारणस्मितमनोरमतां मुखस्य॥ २१/२१

उद्यन्निरुत्तरपरस्परसामरस्य-
संभावनव्यसनिनोरनवद्यहृद्यम्।
अद्वैतमुत्तमचमत्कृतिसाधनं त-
द्युष्माकमस्तु शिवयोः 'शिवयोजनाय'॥ २१/२२
(तिलकम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लक्ष्याण्यलक्ष्याण्यपरत्र यत्र
विलक्षणान्येव हि लक्षणानि।
साहित्यमत्यद्भुतमीशयोस्त-
न्न कस्य रोमाञ्चमुदञ्चयेत॥ २१/२३

जूटाहेर्मुकुटेन्द्रनीलरुचिभिः श्यामं दधत्यूर्ध्वगं
भागं वह्निशिखापिशङ्गमधरं मध्ये सुधाच्छच्छविः।
धत्ते शक्रधनुःश्रियं प्रतिमिता यत्रेन्दुलेखानृजु-
र्युष्माकं स पयोधरो भगवतोर्हर्षामृतं वर्षतु॥ २१/२४

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'अर्धनारीश्वरं' नाम एकविंशं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ द्वाविंशं स्तोत्रम्

कादिपदबन्धस्तोत्रम्

❀❀❀

काव्यकौशलकलासु कोविदैः
कीर्तितः कविकुलैः कुतूहलात्।
कौमुदीकुमुदकान्तकीर्तिभिः
कामितः कुशलकार्यकारिभिः॥ २२/१

केरलीकचकलिन्दकन्यका-
कूलकालियकडारकन्धरः।
किल्बिषक्षपणकारणक्रतु-
क्लान्तिकृत्करटिकृत्तिकर्पटः॥ २२/२

केकिकेतनकृशानुकौशिकैः
किन्नरैः कविकुबेरकेशवैः।
कालकूटकवलक्रियाक्रमे
क्रन्दितः कलुषकर्षणक्षमः॥ २२/३

कर्णकीलितकपालकुण्डलः
कुण्ठितक्रकचकल्पकल्मषः।
कालकामकदनः कुमुद्वती-
कान्तकर्बुरकपर्दकन्दरः॥ २२/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कापिशायनकषायकामिनी-
केलिकूजितकलेन कौतुकात्।
क्रीडितः क्वणितकीचकक्वण-
त्कोकिलाकलकलेन कानने॥ २२/५

कुन्दकुड्मलकदम्बकेतकी-
काञ्चनारकलिकाकदम्बकैः।
कर्णिकारकरवीरकोरकैः
कैरवैः कुवलयैः कुशेशयैः॥ २२/६

किंशुकैः कपिकपोलकान्तिभिः
केसरैः कमलकोषकोमलैः।
कोविदारकुटजैः कणेरकैः
केवलैः कचितकीर्णकुन्तलः॥ २२/७
(युग्मम्)

कृष्णकुण्डलिकठोरकञ्चुकैः
क्लृप्तकुब्जकमनीयकङ्कणः।
क्रोधकृत्तकरिकुम्भकोटर-
क्रूरकेसरिकिशोरकण्टकः॥ २२/८

कान्तया कनककाञ्चिकिङ्किणी-
कान्तया कलितकण्ठकन्दलः।
कोपयन्कपटतः किरीटिनं
क्रीडया कृतकिरातकैतवः॥ २२/९

काककङ्ककुररैः कलङ्किते
कश्मले कठिनकृत्यकारिते।
कांक्षितः क्षतकलेवरैः कटुं
कर्षयन्करुणया कदर्थनाम्॥ २२/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कोपकर्कशकृतान्तकिङ्कर-
क्लेशकातरकृपाकृतौ कृती।
कल्पतां कलिकलङ्ककन्दली-
कन्दकर्त्तनकुठारकर्मणे॥ २२/११

(एकादशभिः कुलकम्)

कल्लोलिनीकुटिलकैरविणीकुटुम्ब-
कङ्कालकल्पितकरालकिरीटकोटिः।
कात्यायनीकरकरम्बितकीर्यमाण-
कर्पूरकुङ्कुमकणः करुणां करोतु॥ २२/१२

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'कादिपदबन्धं' नाम द्वाविंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ त्रयोविंशं स्तोत्रम्

शृङ्खलाबन्धस्तोत्रम्

❀❀❀

जगति विबोधितविधुरं
विधुरञ्जितचारुशेखरं गिरिशम्।
गिरि शंसामि ससाध्वस-
साध्वसमानन्ददानपरम्॥ २३/१

न परं शरणं प्रभवति
भवति कृतावज्ञमानसे महताम्।
महतां भजति हि सहसा
सहसा तव भारती मधुरा॥ २३/२

मधुरागारुणनयना
नयनाशविधौ पटीयसी प्रमदा।
प्रमदार्पणार्थमुदिते
मुदिते त्वयि सा तृणं भजताम्॥ २३/३

भजतां सरसाममलां
मम लाञ्छितशेखरेन्दुना करुणाम्।
करुणां गिरं नवतया
बत यार्पयते तव श्रयताम्॥ २३/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रयतां नवनविधौ तव
धौतवती गीरघं रतिं चतुरम्।
चतुरन्तमहीपतिता
पतिता हेयत्व एव यत्र सताम्।। २३/५

त्रसतां न कदा भवता
भवतापहृता विभो शुभाकृतिना।
कृतिनामुपकारचितं
रचितं शुभमेव भाविहितम्।। २३/६

विहितं मयि चारु चिरं
रुचिरं न गते विवेकलयम्।
कलयन्नमलविभासित-
भासित रुचिमेहि मे विपाकमलम्।। २३/७

कमलं रविरपराजित
राजितविकसद्वपुर्यथा कुरुते।
कुरु तेन पथा मा भव
मा भव विमुखो दृशं दिश मे।। २३/८

दिशमेष विचारहितां
रहितां विषयोरगैरहं न लभे।
नलभेकवदतिविलपन्
विलपन्नगवद्वृतः सदा तमसा।। २३/९

तमसावुज्झितकलहं
कलहंसगिरोमया सदा सहितम्।
सहितं गीरुदितरसा
तरसा श्रयतां विभुं सदयम्।। २३/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सदयं यदुदारमते
रमते कुर्वंस्तदेव देव जनः।
वज नः करुणापरतां
परतां मा गा नमो भवते।। २३/११

भव तेजः प्रसर-सितं
रसितं श्रुत्वाऽमृतोपमं भवतः।
भवतस्त्रासं सकलं
सकलङ्कमतिः कदा विमुञ्चामि।। २३/१२

मुञ्चामितभास दृशं
सदृशं शशिनः प्रदर्श्य मे वदनम्।
वद नन्दयितुं जगतीं
जगतीशः कोस्तु नामान्यः।। २३/१३

नामान्यः सुमतिरयं
तिरयन्ति यशांसि तस्य वा विपदम्।
विपदं न विलासमये
समये वपुरस्य यात्ययातवयः।। २३/१४

तव यः स्तुतिषु सदा हर
दाहरजः क्लेशपाशमयम्।
शमयन्तीष्वस्तमना-
स्तमनाहतभाग्यमेव देव नमे।। २३/१५
(युग्मम्)

वनमेव शरणमधुना
मधुनाशिनुत प्रसादनाय तव।
यतवति हृदये शकलित-
कलितमसो मे नमेरुचितम्।। २३/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vahi Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

रुचितं नोरगसदनं
सदनन्तमहर्द्धिं नन्दनं न वनम्।
नवनं धृतदीप्रगुणं
प्रगुणं तव कर्तुमेव देव रमे॥ २३/१७

वरमेनोहरममलं
मम लंघितविघ्न देहि नाम हितम्।
महितं पदमपि मा नय
मानय विधुरं दृशामलया॥ २३/१८

मलयानिलमिव सुरभिं
सुरभिं कुसुमैरिवावदातवनम्।
तव नन्दितहृदनामय
नाम यमत्रासहृत्कलये॥ २३/१९

कलयेन्दोरभिभूषित
भूषितमुकुटैः सुरैर्नतेश न कैः।
शनकैरघशमनाशय
नाशय विपदं पदं नय मा॥ २३/२०

न यमाहितभयशमने
शमनेकविधं प्रसाददक्षमते।
क्षमते मुनिभिरुपासित
पासितरां चेन्न मामदयम्॥ २३/२१

मदयञ्जितविप्रकृतीः
प्रकृतीर्वसुधाधिपो महीवलयम्।
बलयन्त्रितरिपुरक्षति
रक्षति तव यः प्रसादमितः॥ २३/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दमितस्तेन हि शमनः
शमनस्तरुचापि तेन जातमुदा।
तमुदाराहितचरितं
चरितं शुभवर्त्मना स्तुवन्त्यमलम्॥ २३/२३

त्यमलंकृतभूभवनं
भव नन्दितलोकमीश भावपुषा।
वपुषा नौम्यभयस्तव
यस्तव नुतिषु प्रियासु कृती॥ २३/२४

(युग्मम्)

सुकृती तव भववारण-
वारणहरिणेन्द्र सिद्धिभाजनताम्।
जनतां नयदमलसितं
लसितं वपुरर्चये नवैरसकृत्॥ २३/२५

रसकृद्योऽप्रतिघस्मर-
घस्मर भवतः स्तवः सदैव सताम्।
वसतां दिवि भयहृदयं
हृदयं कुरुते घनोत्कलिकम्॥ २३/२६

कलिकम्पनमघशरणं
शरणं चरणद्वयं भजेऽविकलम्।
विकलङ्कमतिरहं तव
हन्त वरद्विरदराजगतिम्॥ २३/२७

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'शृङ्खलाबन्धं' नाम त्रयोविंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

O

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ चतुर्विंशं स्तोत्रम्

द्विपदयमकस्तोत्रम्

❀❀❀

वचसि सरस्वति मे विभवं
प्रकटय जातरसारम्।
नुतिभिरुपस्तुहि देवि भवं
सकलसुरान्तरसारम्॥ २४/१

अविरलभस्मरजोधवलं
विहितमहाशमलाभम्।
भज भगवत्यगजाधवलं
श्रमशमनं विमलाभम्॥ २४/२

दातुमनुत्तमहावपुषं
यः प्रबभूव नदीनम्।
नाथमनुत्तमहावपुषं
तं भज देवि न दीनम्॥ २४/३

भक्तिरसस्तव देव समां
जयति महामृतहृद्यः।
चरणतले भवतो वसतां
कलिमलपल्वलहृद्यः॥ २४/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नयनमुदीर्य तमो हर मे
निहतमहाविषमेषु।
येन पुनर्हतमोह रमे
वैरिषु नो विषमेषु।। २४/५

त्वयि वरदे रुचिरप्रमदाः
प्रचलितचामरहस्ताः।
सदसि भजन्ति जनं प्रमदा
रमयति सोऽपि रहस्ताः।। २४/६

हिमकरकिरणसमूहसितं
सुरसरिदम्बुविडम्बि।
वह भगवन् वदने हसितं
मा भवतात्र विडम्बि।। २४/७

उपमितमन्मथचापलतां
भ्रुवमवधूय सहेलम्।
रविजदृशां घनचापलतां
विघटय ता न सहेऽलम्।। २४/८

रविसुतवर्त्म मम स्मरतः
श्रुतयमकिङ्कर-वाणि।
दलति विभो हृदयं दरतः
पुरहर किं करवाणि।। २४/९

प्रथयति यस्तव हन्त महं
नुतिवचसा रुचिरेण।
शुभशतसिद्धिसहं तमहं
शिरसि वहाम्याचिरेण।। २४/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भवभयभञ्जनभङ्गिविधौ
भक्तिमतां प्रभवन्तम्।
विहितहितं विधुरेऽपि विधौ
भजत जगत्प्रभवं तम्॥ २४/११

मदनमहीरुहदवदहनं
शिरसि धृतामृतभासम्।
भजत दुरन्तविषादहनं
प्रणतसमर्पितभासम्॥ २४/१२

वितर नदीरमणं शमनं
शकलय खण्डय कामम्।
प्रथय धनञ्जयभयशमनं
रचय पुरं हतकामम्॥ २४/१३

इति सदयेन यदाचरितं
भुवनहिताय हरेण।
भजत तदस्य महाचरितं
नुतिवचसार्तिहरेण॥ २४/१४ (युग्मम्)

गतिरशुभं हर का तरतां
भवति विनाश भवन्तम्।
इति चतुरं हर कातरतां
रचय च मां शुभवन्तम्॥ २४/१५

वरद भवन्तमृते धरते
भुवनमिदं सकलं कः।
इति नतिमिन्दुकलाधर ते
भजति न कः सकलाङ्कः॥ २४/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इयमखिलेतरजातिमतां
जयति जनिः प्रथमा नः।
सेव्यभुवं विभुरेति मतां
यत्र हृदि प्रथमानः॥ २४/१७

तुभ्यमयं शितिनाल सतां
वरद करोमि नमोऽहम्।
शमय महेश ममालसतां
येन भजामि न मोहम्॥ २४/१८

भजसि यया किल कामदया
नतजनमीश समस्तम्।
सा मम ते हतकाम दया
गमयतु वैशसमस्तम्॥ २४/१९

येन शुचं हतलोभ जन-
स्त्यजति सुधामधुरेण।
तेन विभो वचसा भज नः
प्रकटितधामधुरेण॥ २४/२०

मदयसि येन जनं सकलं
मधुरगिरा वदनेन।
मयि वचनं परिहासकलं
प्रतिदिश तावदनेन॥ २४/२१

येन सतां विपदानयनं
दुरितमदभ्रमहारि।
दिश विशदं मयि तन्नयनं
मदनमदभ्रमहारि॥ २४/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जगदखिलं यदि नन्दयसे
तिमिरमुषा रसितेन।
इममपि किं न जनं दयसे
तेन तुषाररसितेन॥ २४/२३

दुरितहृतौ विषसाद करः
क्वापि न ते रमणीयः।
अपि स भयं विषसादकरः
शमयतु घोरमणीयः॥ २४/२४

भयहरणे महिताभ यतः
प्रथयसि जातरसत्वम्।
मामपि पाहि महाभयतः
पुरहर कातरसत्त्वम्॥ २४/२५

भजामि मायाशबरं वरं वरं
दिशन्तमन्तं कुनयं नयन्नयम्।
विजित्य कृत्यप्रभवं भवं भवं
विखण्डितक्लेशपरम्परं परम्॥ २४/२६

मलक्षयमलक्षयं भव भवत्प्रसादादहं
शिवस्तव शिव स्तवः प्रविहितस्ततोऽयं मया।
समुद्धर समुद्धर व्यसनसङ्कटादर्कजः
समक्षमसमक्षमः स्पृशति चेन्न जिह्रेषि किम्॥ २४/२७

सन्त्यन्याः कृतिनामनामयगिरः का नाम नामन्थरा
न ज्ञानां हृदि वास्तवास्तव मुदं के वा स्तवास्तन्वते।
वागेषा त्वतिसाध्वसाध्वपतिता यत्साध्वसाध्वभ्यधा-
त्तन्मन्ये महिमानमानयति ते स्थेमानमानन्दकृत्॥ २४/२८

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'द्विपदयमकं' नाम चतुर्विंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ पञ्चविंशं स्तोत्रम्

रुचिरञ्जनस्तोत्रम्

❀❀❀

किल यस्य कल्पितमहोदयया
हृदयं समाश्रितमहो दयया।
विभवं यतश्च परमाप दिवः
प्रभुरेष पातु परमापदि वः।। २५/१

तव सेवकस्य परमेश मनः
कुरुते न हन्तुमपि मे शमनः।
भगवन्नतो वपुरनीरसदृ-
क्तव नौमि सिद्धधुनिनीरसदृक्।। २५/२

स्त्रगिवाऽर्प्यते कलितसारसना
त्वयि गीर्यया जयति सा रसना।
त्वयि यन्महेश वरदेऽवहितं
हृदयं तदेव वरदेव हितम्।। २५/३

तव दृक्सुधाकरकलोपमिता-
पतिता विपत्तदनुलोपमिता।
भगवन् दृशैव कमला भवतः
सहसाऽङ्कमेति शमला भवतः।। २५/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुरु नाथ चेतसि वचो दयिता
तव गीरहं न तव चोदयिता।
अथवा महेश पृथुकामतया
न किमारटन्ति पृथुका मतया।। २५/५

विषयैर्मुखे वरद कामधुरै-
र्विवशीकृतं घटितकामधुरैः।
भज मां महेश्वर मुदा रहितं
दिश भाषितामृतमुदारहितम्।। २५/६

विजितं मया जगदमोहतया
न रुषा क्षतो मम दमो हतया।
तृणवत्सुरक्षितिधरोऽपि तया
विहितो महेश हृदि रोपितया।। २५/७

मरुतायतेव मलयाचलतः
क्षपिता धृतिः कमलया चलतः।
तदिमां प्रसादनपरां करुणां
शृणु मे गिरं कुरु परां करुणाम्।। २५/८

भवतः प्रसादमधुरामहतां
दृशमीयुषां शमधुरा महताम्।
धृतिमेत्यपास्य च रमा लसतां
सुलभत्वमेति चरमालसताम्।। २५/९

समरे विकीर्णगजराजघटे
बत तस्य शक्तिरजरा जघटे।
तव येन सेवनविधौ तरसा
मतिरर्पिताऽन्यभविधौतरसा।। २५/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विषयान्प्रति प्रयतमानमदः
सुजनो मनः प्रयतमानमदः।
तव शासनेन वशमानयते
शरणं ततो नवशमानयते॥ २५/११

रविजं रजोभिरिव मेचकितं
हृदयं विभाव्य शिव मे चकितम्।
वचनं जितामृतरसं भ्रमतः
पथि सङ्कटे वितर संभ्रमतः॥ २५/१२

त्वयि चक्षुरीश कलितापकृति
क्षिपति क्षणं शकलितापकृति।
परशक्तिरिद्धवपुरङ्गमिता
जनता यया तव पुरं गमिता॥ २५/१३

रविजस्य वर्ष्म सहसा रचितं
भवताग्निसादसहसारचितम्।
वपुराप ते मदनघस्मरतां
न तथापि भीमदनघस्मरताम्॥ २५/१४

करुणा क्षतानवधिकोपचया-
धिगता मया त्वदधिकोपचया।
शशिना यथाकुलतरं गलता
द्युसरिन्निरर्गलतरङ्गलता॥ २५/१५

गरुडेन यद्विषमपक्षतिना
कवलीकृतं विषमपक्षतिना।
स तव प्रसादमहिमा न परः
प्रभुरानतं प्रति हि मानपरः॥ २५/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पदमाप्तुमार्तिशमनं गहनं
प्रभुमर्थये भृशमनङ्गहनम्।
वसनं यथार्त्तिहरणं सहिमे
समये तथैव शरणं स हि मे॥ २५/१७

सुरसुन्दरीषु रमणीयतमा
स्ववपुर्गुणेन रमणी यतमा।
तव भक्तमक्षतरसाजर सा
भजते समेत्य तरसा जरसा॥ २५/१८

त्वयि गीर्मया निजगदे बत या
निखिलं जयामि जगदेव तया।
मुदितस्य भक्तिसुधया भवतः
सभयस्य किं वसुधया भवतः॥ २५/१९

शिरसि स्त्रजेव विधुरोचितया
हृदि मद्गिरात्र विधुरोचितया।
क्रियतां पदं शिव धिया सहतेऽ-
विपदं सदानवधि या सहते॥ २५/२०

विभुमाश्रये विगलदङ्गलतः
प्रमये बिभेमि यदमङ्गलतः।
स विमुच्य पाशमशमं गलतः
कुरुते हि मे भयशमं गलतः॥ २५/२१

चरणौ यथा मुरजितः क्षमया-
धिगतौ भरं धरितुमक्षमया।
नमतां तथैव कृतरक्ष मया
भवतो धिया समुचितक्षमया॥ २५/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तिमिरं रवेरिव विभामुदितां
दृशमाप्य ते जहति यां मुदिताम्।
भगवन् रसाद्गिरमिमामुदिता-
मुपकर्णयन्मयि दिशाऽमुदि ताम्॥ २५/२३

करुणा सुरैः प्रतिपदानत या
भवतः स्तुता सदपदानतया।
किमु मां भियाप्तमपदानतया
भजसे निरस्तविपदा न तया॥ २५/२४

तव दृग्जयत्यलसतां लसतां
मदनस्य या व्यतनुताऽतनुताम्।
कुशलाय सा किल सतां लसतां
निबिडं शमप्यतनुता तनुताम्॥ २५/२५

यया भजन्ते भुवि मानवा हितां
विभूतिमन्ते च विमानवाहिताम्।
यमं च याऽधाद्दलशो भयानकं
तया दृशा पास्युरुशोभया न कम्॥ २५/२६

परमया रमया रहितस्य मे
न रुचिरं रुचिरङ्गमिमं व्यधात्।
हर मयाऽरमयाचि भवानतः
कुरु चिरं रुचिरञ्जनमेहि मे॥ २५/२७

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'रुचिरञ्जनं' नाम पञ्चविंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ षड्विंशं स्तोत्रम्

पादादियमकस्तोत्रम्

❀❀❀

हन्तापहन्तापदुपद्रवाणां
यस्याऽक्षयस्याक्षणिकः प्रसादः।
सन्तापसन्तापहरा प्रपेव
कान्तारकान्ता रचना च यस्य॥ २६/१

तादृङ्मता दृङ् महतां समन्ता-
दालोकदा लोकहिता च यस्य।
तं सन्ततं सन्तमसार्त्तलोक-
पालं कृपालङ्कृतमीशमीडे॥ २६/२
(युग्मम्)

हृद्यः सुहृद्यः सुकृतोर्जिताना-
मन्यूनमन्यूनपि यः पृणाति।
योऽनामयो नामगृहीतिमात्रा-
दस्तापदस्तापमपाकरोति॥ २६/३

चेतः प्रचेतःप्रमुखा यदेक-
तानंततानन्तगुणा वहन्ति।
योगीति यो गीतिषु गीयमानः
सिद्धैः प्रसिद्धैः प्रभुरभ्युपेतः॥ २६/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मान्योऽधमान्योऽधरयत्युदग्र-
रंहोभिरंहोभिरपास्तवृत्तान्।
नामापि नामापिदधाति वीता-
लोकस्य लोकस्य तमांसि यस्य॥ २६/५

भूतिर्विभूतिर्विपुला दिशश्च
वासो निवासो निलयः पितृणाम्।
हीनैरहीनैरपि यस्य भूषाऽ-
राला कराला कलिका च मौलौ॥ २६/६

यः खेऽलयः खेलति यः शिखाभिः
सत्यं हसत्यंहतिहारिणीभिः।
भानां शुभानां शुचिरीश्वरो य-
स्तानक्षतानक्षिषु यो बिभर्ति॥ २६/७

संख्येष्वसंख्येष्वपि यो भटानां
वैरस्य वैरस्यभुवो निदानम्।
निन्दावनिं दावहुताशवन्तं
रोषं खरोषं खलु यः प्रमार्ष्टि॥ २६/८

यज्ञे नयज्ञेन वृतो न पूर्वं
दक्षेण दक्षेण शुभे विधौ यः।
तस्याऽऽनतस्याऽनघमुज्झिताव-
सादं प्रसादं प्रददौ दयाब्धिः॥ २६/९

नीतावनीतावचलैरलभ्यः
साध्यैरसाध्यैरपि यस्तपोभिः।
सेवालसे बालमुनौ किलोप-
मन्यावमन्यावकरोत्प्रसादः॥ २६/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नायं विनाऽयं विदधाति लोकः
कर्मण्यकर्मण्यतयाभियोगम्।
सत्त्वानसत्त्वानपि नेतुमास्था-
मर्थः समर्थः स यतोऽभ्युदेति॥ २६/११

धर्मेण धर्मेण निजोचितेन
कामेन कामेन वृताभयेन।
कालेन काले नतिमागतेन
वातेन वा तेन सुखावहेन॥ २६/१२

जीवेन जीवेन तदर्पितेन
काव्येन काव्येन मनोहरेण।
मित्रेण मित्रेण तमोवृतानां
सौम्येन सौम्येन च सेव्यते यः॥ २६/१३
(युग्मम्)

लोकान् सलोकान् सदयोऽसृजद्यो-
धाता विधाता विभुरीप्सितानाम्।
देवः पदे वः परमे नियोक्ता
कामं सकामं सफलीकरोतु॥ २६/१४
(द्वादशभिः कुलकम्)

तं वन्दितं वन्दिभिरर्चयन्ते
सन्तो लसन्तो ललितैर्वचोभिः।
तस्याऽजितस्याजिषु नौति लीला-
मुत्तालमुत्तालरवेण लोकः॥ २६/१५

धीरस्य धीरस्यति तस्य तीक्ष्णा-
बन्धानुबन्धानुगतां प्रवृत्तिम्।
दानं ददानं दयितेव रागा-
दानन्ददा नन्दयते च तं श्रीः॥ २६/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

संपन्नसम्पन्नवसिद्धिहेतुं
धुर्यामधुर्याममरेन्द्रमुख्याः।
भासा शुभा सा शुचिरीशभक्ति-
र्यस्याऽभयस्याभरणत्वमेति॥ २६/१७

(तिलकम्)

शङ्का भृशं का भृतकप्रियश्चे-
दासन्नदासं न जहाति शम्भुः।
नाराधनाराधयितुश्च मिथ्या
किं चित्त किंचित्तरलत्वमेषि॥ २६/१८

सानन्द सा नन्दनभूस्तृणं ते
कल्याण कल्याणगिरिः क्व गण्यः।
सा तेजसा ते जडतामुदस्त-
कम्पाऽनुकम्पा नुदतीन्दुमौलेः॥ २६/१९

जम्बालजं बालरवेरिवाभा-
ऽदीनं नदीनं नवचन्द्रिकेव।
साशङ्क सा शङ्करभक्तिरुच्चै-
रक्षामरक्षा मदयिष्यति त्वाम्॥ २६/२०

नो भोगिनो भोगिभिरर्चितो यः
सातङ्क सातं कलयञ्जहाति।
स त्वाऽलसत्वालयदैन्यहारी
पास्यत्यपास्यत्यशुभं च शंभुः॥ २६/२१

(चक्कलकम्)

दोषप्रदोषप्रसृतापि सक्ता
सेवारसे वारविलासिनीव।
या निर्भया निर्भररागिणी त्वा-
मायाति मायातिमिरेऽभिसर्तुम्॥ २६/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भावानुभावानुगमेन रूढा
बाला नवालानगता वशेव।
साऽनेहसा नेह विहास्यति त्वां
कण्ठोपकण्ठोपगतैव वाणी॥ २६/२३
(युग्मम्)

दिव्या यदि व्यायतकान्तयस्ते
गौरीश गौरी शशिनः कला च।
विघ्नन्ति विघ्नं तिमिराभिधानं
तेनाऽहतेनाऽहमुपद्रुतः किम्॥ २६/२४

मुद्योगमुद्योगभृतो भजन्ते
शंसन्ति शं सन्ति च निर्विकल्पाः।
भक्ता विभक्ता विपदस्त्वदीयाः
कस्मादकस्मादहमेव मग्नः॥ २६/२५

वाचां तवाचान्तशुचां शुभाना-
मोघा न मोघा नमतां कदाचित्।
तैरुद्धतैरुद्धर मामनाथं
लीनं कुलीनं कुदशान्धकारे॥ २६/२६

कल्पान्तकल्पान्तकभीतियुक्तं
रक्षामि रक्षामिह योऽर्हतीति।
यस्ते नयस्तेन दिश प्रसन्ना-
मत्राऽसमत्रासहरां दृशं मे॥ २६/२७

कन्दर्प कं दर्पमुपैषि यात-
मस्तं समस्तं सहसा बलं ते।
भीरो गभीरो गलितः किमुच्चै-
रक्षोभरक्षो भगवत्प्रसादः॥ २६/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विद्यामविद्यामपि तां यया त्वा-
मारांध्यमाराध्य सुखी भवामि।
मायापि मा यापितभीरुपैतु
याता न या तानवमर्चितुं त्वाम्॥ २६/२९

रामाभिरामाभिमता धृतार्धे
भोगोपभोगोपगतेन केन।
कस्यान्तकस्यान्तकरी च लक्ष्मी-
धामानि धामानि बिभर्ति दृष्टिः॥ २६/३०

कः स्तम्भकः स्तम्भनिभस्य जिष्णोः
कस्तापकस्तापकृतः स्मरस्य।
कारानुकारानुभवे भवेऽस्मिन्
को जीवको जीवभृतां विना त्वाम्॥ २६/३१

या शंसया शंसति शंभुभक्तिं
चेष्टासु चेष्टासु रतिं स्मरस्य।
तामक्षतामक्षयपुण्यकोषा-
दन्यो वदन्यो वहते तनुं कः॥ २६/३२

या हन्तया हन्त नृपेऽप्यवज्ञा-
मानञ्ज मानं जनयन्त्यभङ्गम्।
हा निःसहा निःसरणेऽपि भक्त्या
सा वागसावागमदन्तिकं ते॥ २६/३३

देवं यदेवं यमकैर्महेशं
तुष्टाव तुष्टावसरोचितं गीः।
शस्यो यशस्योऽयमुपस्थितोऽस्मा-
दनाभिदं नाऽभिमतः प्रसादः॥ २६/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तरलतरलताग्रस्पर्द्धिनी चञ्चलत्वं
रुचिररुचिरमन्दानन्ददा मुञ्चति श्रीः।
चरति च रतिकान्तध्वंसिशंसारतानां
मधुरमधुरसार्द्रा भारती वक्त्रपद्मे॥ २६/३५

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'पादादियमकं' नाम षड्विंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ सप्तविंशं स्तोत्रम्

पादमध्ययमकस्तोत्रम्

❀❀❀

जयति संयति संगतपाण्डव-
प्रहरणाहरणाहितकैतवः।
तरुणदारुणदाशवपुर्धृत-
स्थिरयशा रयशालिशिरो हरः।। २७/१

भुवनपावनपादमधर्षितं
मघवताऽघवतामपि सस्पृहम्।
मुनिजनीनिजनीतिपरीक्षणे
धवलकेवलकेलिकृतं स्तुमः।। २७/२

स्थिरमगारमगात्मजया श्रितं
स्मरविकारविकासपराङ्मुखम्।
भुजगराजगराग्निशिखावली-
विषमवेषमवेपथुदायिनम्।। २७/३

शमिषु कामिषु कारुणिकेषु वा
वरमघोरमघोपशमक्षमम्।
घनविपन्नविपन्निधने सदा
परमधीरमधीशमुपास्महे।। २७/४ (युग्मम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रुतनयास्तनयास्तनुमध्यमा
युवतयो बत योगिमनोहृतः।
यदघनामघनामयवैशसं
तदमृतेशमृते शमयन्ति किम्॥ २७/५

न हरिणा हरिणाङ्कशिखामणे
न विधिना विधिनाऽपि सपर्यता।
तव पुरा वपुराममृशे वयं
क्व नु भवानुभवावृतचेतसः॥ २७/६

चतुरगास्तुरगा नगजा गजाः
स्थिरमुदारमुदात्तबलं बलम्।
प्रभवता भवता विहिते हिते
प्रतिदिशन्ति दिशं कमलामलाम्॥ २७/७

द्विजसमाजसमाधिकदर्थन-
प्रवणरावणराज्यहृतौ कृती।
चरणयो रणयोग्यबलोऽभव-
न्नवनतो वनतो भरताग्रजः॥ २७/८

शुभरतो भरतोऽप्यभवद्द्विषद्-
गरिमहारिमहाः समवाप्य यम्।
दिश तमीश तमीपतिशेखर
स्थिरमनुग्रमनुग्रहमेहि मे॥ २७/९ (युग्मम्)

भृशमनीशमनीतिपथस्थितं
मदवशादवशाक्षमुपप्लुतम्।
अहरहर्हर हर्षयते न किं
हितवती तव तीव्रशुचं रुचिः॥ २७/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुशलपेशलपेलवदृग्वमन्
रसनया सनयार्त्तिहृतामृतम्।
मदनसादन सान्त्वय संपदा-
मपदमापदमाश्रितमेहि माम्॥ २७/११

कथमनाथमनागसमन्तिके
मदनमर्दन मर्षयसे न माम्।
भुवनभावन भाति विना त्वया
जगति कोऽगतिकोद्धरणक्षमः॥ २७/१२

यदि कृपापर पापरतस्य मे
न कुरुषे परुषे पदमाशये।
हिततमा कतमा कलुषात्मनो
मम हराऽमहरा घटते गतिः॥ २७/१३

स्थिरविभा रविभातिरिवोन्मदं
मदमयं दमयन्त्यसमन्तमः।
तव दया वद यात्युदयं न चेद्
भवतमी बत मीलति मे कथम्॥ २७/१४

रजनिराजनिराकरणक्षमः
क्षतनिशातनिशातिमिरोत्करः।
कृतविभातविभाभरभास्वरो
दिनकरो न करोत्युदयं यदा॥ २७/१५

दिवि यदा वियदाभरणं कृपा-
परमते रमते न सुधाकरः।
न शुचिराशु चिरापतितं यदा
स्थिरमपारमपाकुरुते तमः॥ २७/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तनुकृशानुकृशां ग्रसते यदा
मिहिरजाहिरजातघृणस्तनुम्।
शिव तदा बत दास्यति मे धृतिं
त्वदितरः कतरः करुणापरः।। २७/१७
(तिलकम्)

निधनसाधनसान्द्रलसद्विषा-
नलकरालकरात्तमहोरगः।
नियमनाय मनाङ् मम सस्पृहे
भवति धावति धाम यमः कथम्।। २७/१८

पलितमीलितमीश मम स्मर-
श्चतुरमातुरमारचयन्वपुः।
घनबलेऽनवलेपपरे त्वयि
प्रभविता भवितापकरः कथम्।। २७/१९

किमधुना मधुनापि युतो वहन्
रतिमभीतिमभीष्टतमामपि।
श्रितमवन्तमवन्ध्यबलं विभुं
जयति मां यतिमानहरः स्मरः।। २७/२०

विषमरोषमरोः पथि पातय-
न्मतिमनीतिमनीक्षितसत्पथाम्।
भृशमयं शमयन्नियमं कथं
तव पुरो वपुरोषति मे मदः।। २७/२१

मम निकामनिकारकृतो वृथा
वपुरवापुरवार्यरुषोऽरयः।
न हि तदाहितदाहमदन्त्यमी
तव हितावहिता हि नतेषु धीः।। २७/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यदि विभा दिवि भाति न तावकी
यदि न मे दिनमेति भवन्मयम्।
वद महादमहारि तमः कथं
विषमदोषमदो विनिवर्त्तते।। २७/२३

कमलिनी मलिनीक्रियते यया
विहतसंततसंतमसापि या।
स्मरचिता रचितापि च यत्र तां
वितर कातरकामदुघां दृशम्।। २७/२४

तुहिनवाहिनवानिलजे मनः
सहसि रंहसि रञ्जयति प्रिया।
न रसिकोरसि कोष्णकुचा तथा
तव गुणानुगुणा नुतिगीर्यथा। २७/२५

अयमसौ यमसौष्ठवहृत्पुरः
परुषपौरुषपौष्टिकचेष्टितः।
विधुरबन्धुरवन्ध्यपरिग्रहः
स्फुरति मे रतिमेत्य महेश्वरः।। २७/२६

अनिधनेन धनेन मनस्विना-
मनुगुणेन गुणेन गरीयसा।
अभिजनेन जनेन सुदुष्कृतै-
रशबलेन बलेन च वर्धते।। २७/२७

अभिनवेन नवेन शिवस्य यः
स्तुतिमुदारमुदारभतेऽमुना।
अवहितस्य हि तस्य तनोति शं
विभवदो भवदोषहरो हरः।। २७/२८

(युग्मम्)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स सकलासु कलासु विचक्षणः
स मतिमानतिमानसमुन्नतः।
न शशिखण्डशिखण्डमृते स्तुतिं
सुकृतवान् कृतवानपरस्य यः॥ २७/२९

रविरहो विरहोद्धरणाद्दिश-
न्धृतिमुदेति मुदे रथपक्षिणाम्।
यदविषादविषाभिभवं जग-
त्कृतमसन्तमसं स्तुतिभिः प्रभोः॥ २७/३०

विनयशोभि यशोभिरतं मनः
परहितारहिता विमला मतिः।
विपुलमङ्गलमङ्गमिति प्रभोः
प्रतिफलन्ति फलं स्तुतिवीरुधः॥ २७/३१

जितसुधारसुधारसभारती-
विभवसंभवसंभृतकीर्तयः।
कविबुधा विबुधाधिपवन्दितं
सुकृतिनः कृतिनः स्तुवते शिवम्॥ २७/३२

न महतामहतामलसंविदां
मदयिता दयिताधिगमस्तथा।
मधुरसाधुरसार्द्रपदा यथा
सयमका यमकामरिपुस्तुतिः॥ २७/३३

का नाम नामरवधूरवधूतकान्ता
कान्ता न का नरजनी रजनीपतिश्रीः।
श्रीमन्तमन्तकरिपुं करिपुङ्गवान्त-
हेतुं स्तुवन्तमविराममविरावमेति॥ २७/३४

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'पादमध्ययमकं' नाम सप्तविंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

०

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ अष्टाविंशं स्तोत्रम्

पादान्तयमकस्तोत्रम्

❀❀❀

अन्तश्चेतसि निर्वृतिर्न गमिता नाशं कया शङ्कया
नैषा पुष्यति तेन संहृतगतिः शोभारती भारती।
भक्तिः किं तु विजृम्भते मम यथैवाभा स्वतो भास्वतो
यादृक्तादृगतः किमप्यभिदधे संप्रत्यहं प्रत्यहम्॥ २८/१

वक्त्रं बिभ्रददभ्रदीर्घदहनज्वालं भयं लम्भय-
न्नुद्ग्रीवं घटयन्करे विदधतं व्यालं घनं लङ्घनम्।
प्रत्यासीदति मृत्युरित्युपचितस्फारोचितां रोचितां
श्रुत्वा मां न कथं विभुर्गिरमिमां चित्रायतां त्रायताम्॥ २८/२

मन्ये तां स्पृहणीयगौरवगुणामायामिनीं यामिनीं
तत्सेवारसमादधत्तव सुधा संवादिनं वा दिनम्।
यत्रोपान्तगतं वचोभिरुचितैरानन्दिनं नन्दिनं
कुर्वद्भिश्चरितं सुचारु जगतामीशस्य ते शस्यते॥ २८/३

तस्योदेति सदः सदां विदलितग्लानिर्भरो निर्भरो
वाचां वक्त्रसरोरुहे परिणमत्पाकोऽमलः कोमलः।
लक्ष्मीस्तं न जहाति किं च विभवैराभासिताभासिता
येन त्वं हृदयाम्बुजे भवभयात्त्रातोषितस्तोषितः॥ २८/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सेव्यन्ते भगवन्नपास्य कलितोल्लासं मदं संमदं
बिभ्राणास्तरुणीजनेन मधुरव्याहारिणा हारिणा।
वीज्यन्ते दिवि चन्द्ररश्मिरुचितैः किंचाऽमरैश्चामरै-
राबाल्याद्विदधे त्वदेकविषया यैः शेमुषी शेमुषी॥ २८/५

तूर्णं चूर्णयितुं वपुर्यमभटो झम्पारयं पारय-
न्नुच्चण्डभ्रुकुटीकरालितमुखो यत्रासकृत्त्रासकृत्।
तां भूमिं परिहर्तुमीश्वर भवत्सेवाधनं बाधनं
दुःखानामधिगम्य हन्मि कुमतिप्रादुष्कृतं दुष्कृतम्॥ २८/६

मुञ्चद्भिर्यमकिङ्करैः कृतमहाजृम्भैरवं भैरवं
यावद्दर्शितमाननं न घुसृणक्षोदारुणं दारुणम्।
तावत्सत्त्वरमेहि देहि महसां धामेदृशं मे दृशं
या दूरीकुरुते निरन्तरसुधासंदोहदं दोहदम्॥ २८/७

यावद्दुःसहवह्निहेति-विहित-स्फीतापदं तापदं
जन्तूनां भगवन् भजामि नरकं नाहं सदाहं सदा।
तावन्मुञ्च वचो यथा मरुपथे बाधावतां धावतां
भीष्मग्रीष्मकदर्थ्यमानवपुषां सञ्जीवनं जीवनम्॥ २८/८

न्यस्तं येन मनस्त्वयीदमहतोत्साहं तयाऽहंतया
गाढोद्वेगविधायिनी घटयते सायासतां या सताम्।
तं भोगैरुपसेवते सुमनसामानन्दने नन्दने
दिव्यस्त्रीजनता.विलासविकसच्छोभा सुरं भासुरम्॥ २८/९

यस्या हन्ति धृतिं विवेकविहितह्रासा विलासाविला
मुग्धा दृङ्मदिरामदेन विगलद्व्राचारुणा चारुणा।
रामा काममहास्त्रमर्पयति मे सा हन्त मोहं तमो
येनाऽज्ञानमयं मनस्यपरमत्तापप्रथे पप्रथे॥ २८/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लज्जेऽहं भज दूरमेव रभसादेवं धुता बन्धुता-
संमूढेन मया यया विधृतवानेतामहंतामहम्।
किं किं श्रीमदमोहितेन विभवस्थेनाऽहितं नाहितं
येनैतां न भजे पुनर्मयि वरं बाधे हितं धेहि तम्॥ २८/११

आनीता चरणान्तिकप्रणयितां कामेन का मेनका
कार्यं किं घनभोगसंभृतविधौ सारम्भया रम्भया।
कान्ता मे परमेश्वरे हतविपत्संभावना भावना
चित्ते कापि रतिर्ययाहितहितव्रातायते तायते॥ २८/१२

धत्ते यस्य जटा कपालपटलं भव्या कुलं व्याकुलं
हंसानामिव रुन्धतीं भगवतीं गङ्गां तरङ्गान्तरम्।
तस्याधाय महेशितुर्नुतिगिरां नव्याकृतिं व्याकृतिं
भक्त्या निश्चलया नृजन्म सकलं संमानयामानया॥ २८/१३

कंचिच्छ्रीर्वसतेः करोतु विकसच्छोभा जनं भाजनं
कंचिद्वन्दिजनः प्रशंसतु मुदं प्रीत्या गतस्त्यागतः।
मन्येऽहं तु समग्रशोकशमनं संन्यासमन्यासमं
यस्मिन्मृत्युजितं भजामि मनसा वाचेष्टया चेष्टया॥ २८/१४

रूपं यद्भवतो दधत्परिकरं भौजङ्गमं जङ्गमं
सेवन्ते यदपि श्रिया कृतधियः स्वस्था वरं स्थावरम्।
प्राज्यं ज्योतिरिव प्रसह्य तमसां वैकर्तनं कर्तनं
लब्ध्वा तत्प्रतिभा कथं न जनितस्वाभा सतां भासताम्॥२८/१५

स्तोतुं वाञ्छसि संश्रितं मरकतश्यामं गलं मङ्गलं
लब्धुं मानस तत्परं भगवतः सेवासु किं वासुकिम्।
भक्तिश्चेद्भवति स्थितिं मदमरुद्वेगाहते गाहते
तद्बध्नासि धृतिं त्वमप्यहिपतिप्रावारसेवारसे॥ २८/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दृष्ट्वा यन्मघवा विहाय गतवानैरावणं रावणं
पश्यन्पाण्डुतया भयादनुकृतश्यामाधवं माधवम्।
सर्वोऽयं भवतः प्रसादमहिमा हन्ता नवं तानवं
सेवा कस्य न सिद्धये हतवृथासङ्कल्प ते कल्पते।। २८/१७

तं हत्वा सबलं निशाचरपतिं लङ्कालयं कालय-
न्नार्तिं नाकसदामुपेत्य विभवं वैभीषणं भीषणम्।
वैदेहीमनघां लभेत स कथं रामो हि तां मोहितां
त्वद्भक्तिं यदि न व्यधास्यत नुतो भ्राजिष्णुना जिष्णुना।। २८/१८

लोकं शोकहरं परं प्रति भृशं संदेहिनां देहिनां
माया मोहतमोविमोहितदृशामायासदा या सदा।
तां हन्तुं मम किं करोषि विहितज्ञानोदयां नो दयां
यस्या दास्यमपीह नार्हति घनस्फारा सुधारा सुधा।। २८/१९

दोषाणां सहसा विधातुमुदयं नो सांप्रतं साम्प्रतं
स्वालोकक्षपणं करोतु तिमिरं तन्मादृशां मा दृशाम्।
ख्यातः पौष्ण इव प्रसह्य कमलोल्लासादयं सादय-
न्नार्तिं न प्रकटीकरोति बत कामाशां करः शाङ्करः।। २८/२०

शीतस्निग्धं परिमलसुखं घानसारं न सारं
नापि प्रेम्णा कलितललितोद्दामहेलामहेला।
तस्माज्जित्वा भवमनुदितस्तम्भजेयं भजेयं
भूयो भूयो हर परहितारम्भवन्तं भवन्तम्।। २८/२१

दृष्टिः स्त्रीणां मम निवसतो हानिशान्ते निशान्ते
चित्तं रुन्धे शिशुमिव मृगं वागुरा भङ्गुराभम्।
तत्सम्पर्कादहमिह सहे देव मानाऽवमाना-
वार्त्तः प्राप्तः शरणमधुना त्वामुदारं मुदारम्।। २८/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्राज्यं राज्यं नृपतिमकरीरत्ननिर्यत्न-निर्य-
द्रश्मिस्त्रोतःस्नपितचरणं क्रान्त-सामन्तसाम।
सभ्रूभङ्गं मुनिजनमनःक्षोभिरामाऽभिरामा
वक्त्रं बिभ्रत्युपचितरतिर्धस्मरेण स्मरेण॥ २८/२३

द्वारि क्षोभः क्षितिधरगुहाभोगजानां गजानां
का वा संख्या प्रकटितविपद्बाधनानां धनानाम्।
इत्थं लक्ष्मीः कथमिव भजेद्धामहीनं महीनं
स्याच्चेन्नैकस्तव कृतरिपुक्षिप्रसादः प्रसादः॥ २८/२४ (युग्मम्)

भीमां पंक्तिं पुरुषशिरसां मस्तकेऽशस्तकेश-
प्रोतां धत्से विबुध-सरितो यां तरङ्गान्तरङ्गाम्।
सैव श्रेयः प्रथयति यथा देव राजीवराजी
त्वत्संपर्काद्घटयति न किं मङ्गलाभङ्गलाभम्॥ २८/२५

कृत्वा शय्यामुपान्ते विरचितकलिकादामशेषामशेषां
संपत्तिं मानयन्तः कुसुमबलगलद्बालतानां लतानाम्।
सेव्यन्ते हन्त वृन्दैरविरतरतयः सुन्दरीणां दरीणा-
मन्तस्त्वद्भक्तिभाजः सितकरकिरणैरुत्तमायां तमायाम्॥ २८/२६

हन्ताऽहन्तावृतानां मह इव रजनी भासमानं समानं
ज्ञानं ज्ञानन्दकारि ग्लपयति विलसद्बोधनाशा धनाशा।
वाचा वाचालभावं तव विहितवतां वास्तवेन स्तवेन
श्रेयः श्रेयस्करस्त्वं भव भवसि विपद्भाजनानां जनानाम्॥ २८/२७

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'पादान्तयमकं' नाम अष्टाविंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ एकोनत्रिंशं स्तोत्रम्

एकान्तरयमकस्तोत्रम्

❀❀❀

उदारवर्णैरथ सङ्गतैरहं
मुदाभिधावद्भिरुपोढलक्षणैः।
पदैरमन्दध्वनिभिर्महेश्वरं
प्रभुं प्रपद्ये तुरगोत्तमैरिव॥ २९/१

शिवेन देव्या जगृहे करोहित-
स्त्रसन्यदा कुङ्कुमपङ्करोहितः।
तदास्य योऽर्काग्निनिशाकरोहितः
स्तवः स वः स्यादभयंकरो हितः॥ २९/२

अनञ्जनं नेत्रविकासकारणं
निरङ्कुशं कर्णकरेणुवारणम्।
अचन्द्रिकं चित्तचकोरपारणं
क्रियाद्व ईशार्चनमार्तिदारणम्॥ २९/३

सुखाकरोति क्लमहन्न माधव-
स्तथामरौ वोपवनेऽपि माधवः।
यथा शरीरार्धनिरुद्धमाधवः
प्रशस्यमानो भगवानुमाधवः॥ २९/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दिनान्तरात्र्यागमयोरिवाथवा
सुरस्त्रवन्तीयमुनौघयोरिव।
उमारमाकामुकयोः समागमः
सिताऽसितस्तापमघं च हन्तु वः॥ २९/५

उमाख्यमासाद्य महानियोऽगतः
प्रियं निधिं सौख्यमहानि यो गतः।
करोतु युष्माकमहानि योगतः
शुभान्यसाविद्धमहा नियोगतः॥ २९/६

द्विजाधिपाधिष्ठितशेखरं महा-
भुजं गविन्यस्तभरं समुद्वहन्।
वपुः सदाभङ्गदयासमाश्रितं
तनोतु वः संपदमच्युतः शिवः॥ २९/७

अघद्रुमध्वंसमहाकरेणवः
सुधासिताः पावककल्करेणवः।
वसन्ति यस्मिन्नभयङ्करेऽणवः
करोतु शं तेन हरः करेण वः॥ २९/८

धृतिस्त्वदीयेन सुदर्शनेन मे
भवत्यभेदस्तु हरे किमुच्यते।
परस्परं शङ्करकृष्णयोरिदं
वचः सुखायैकमुखोत्थमस्तु वः॥ २९/९

न जन्म यस्याद्रिनिवास दारुणः
स ते ज्वलत्यक्षिण शिखी सदारुणः।
यमं न किं तेन शिरः सदाऽरुण-
स्त्वदाश्रितं किं ग्रसतां स दारुणः॥ २९/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सदा नगोपाहितबन्धुरस्थितिं
स्तुवे पिनाकेन समेधितश्रियम्।
महर्द्धिकं सोपशमे कृतादरं
हरं हरिं वा तरसा रसादहम्॥ २९/११

मनो भृशं भ्राम्यति बालिशं भवे
जहाति भक्तिं च दिवानिशं भवे।
अतः परं नाम किमस्य शं भवे-
न्निवेदयेत्स्वं यदि कर्म शंभवे॥ २९/१२

समुद्रजन्मानमुपादधत्करे
सितद्युतिं वक्त्रनिवेशनोचितम्।
रतः सदास्कन्दकदर्थनाहतौ
हरौ हरिर्वा दुरितं धुनोतु वः॥ २९/१३

जिगीषवः क्लेशपरम्पराभवं
वनेषु भिक्षाधृतकर्परा भवम्।
असोढवन्तः कुनृपात्पराभवं
भजन्ति सन्तः स्तुतितत्परा भवम्॥ २९/१४

कदा दधानो घनशान्तिशोभिनीं
शुभाम्बरालङ्करणोचितां तनुम्।
भजाम्यहं दृष्टिनिवेशनौचितीं
शशीव तिग्मांशुरिवाऽच्युतस्य ते॥ २९/१५

किमाम्रवन्या सृमरालवालया
प्रियाकबर्या किमरालबालया।
सरःश्रिया किं स-मरालबालया
धृतेशभक्तिर्ह्यमराऽलवाऽलया॥ २९/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कदाऽनवद्यामतिनिर्मलामहं
महानदीनां सलिलैः प्रसादिभिः।
वहामि हंसैरुपशोभिताम्बरां
प्रभुप्रसादाच्छरदं यथा तनुम्॥ २९/१७

प्रभुं प्रपत्तुं स्थलमेहि मालयं
महीधरं मानस वा हिमालयम्।
रसातले वौपयिकाहिमालयं
श्रयन्तमन्वेषय याहि मा लयम्॥ २९/१८

निधाय चक्षुर्दहतो मनोभवं
न कामहानिं प्रवितन्वतो दृशा।
अनष्टमूर्तेर्दधतोऽष्टमूर्तितां
जयन्ति शंभोर्विविधा विभूतयः॥ २९/१९

समाश्रितस्त्वां करुणापराऽज यः
क्वचिन्न तस्यास्ति रणे पराजयः।
परे तमारब्धपरस्पराजयः
श्रयन्ति नाथं धृतचापराजयः॥ २९/२०

ध्रुवं स कृष्णास्तमधश्चकार य-
श्चिराय पक्षद्वयकल्पितस्थितिम्।
द्विजाधिराजं विनतार्तिहारिणं
बिभर्ति यो मूर्ध्नि स तु त्वमीश्वरः॥ २९/२१

विभुं विरिञ्चोऽपि न वेद नाम यं
नतस्य दुःखं घनवेदनामयम्।
निहन्ति तस्यापि भवेदनामयं
पुनं भजेनाप्यनिवेदनामयम्॥ २९/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

समुद्रजालिङ्गितकण्ठमण्डलं
सदैव सत्याहितसक्तिमच्युतम्।
अनन्यगा यस्य नवोक्तिमौक्तिकै-
रलङ्करोति प्रचुरा सरस्वती॥ २९/२३
(युगमम्)

अभीष्टदायी यमधामहोदयाद्-
ध्वनिर्यया श्वेतनृपे महोदया।
धृतिं दिशन्ती नमतामहो दया
क्व सा तवास्मास्वधुना महोदया॥ २९/२४

अयमहं पुरुषोत्तममच्युतं
बलिजितं कृतसत्यपरिग्रहम्।
अचलितश्रियमाश्रितनन्दकं
धृतसुदर्शनमीश्वरमाश्रये॥ २९/२५

वितन्वती भक्तिमतां समानतां
बिभर्ति या कल्पलतासमानताम्।
कथं दधन्मूर्तिमिमां समानतां
तव स्तुतिं वच्मि शतं समा न ताम्॥ २९/२६

इह परशुचितोर्जिताकृति-
द्विजपतिशेखरतां बिभर्ति यः।
त्रिजगति गिरिशं सतां हितं
प्रणमतरामतनुं तमच्युतम्॥ २९/२७

यमं ययारब्धमहामहाऽनयः
क्षयं दृशा यस्य स शर्महाऽनयः।
ददासि चेत्तामुदितो महानयः
क्षताश्च विघ्नाः कृतकामहानयः॥ २९/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अनल-संभृतकान्ति दधत्सदा
रुचिरमारचितास्पदमीक्षणम्।
सुमतये विधुरोपकृतिप्रियो
भवतु वो भगवान् भगवानिव॥ २९/२९

न जातु तज्ज्ञाः कृतिनोऽवहन्त या-
मधोगतौ कारणमेव हन्त या।
त्वयि प्रसन्ने सुमतावहंतया
न यामि दुःखं नरकावहं तया॥ २९/३०

प्रियां मुखे यो धृतपञ्चमस्वरां
गिरं वहन्तीममृतस्य सोदराम्।
विशेषविश्रान्तरुचिर्बिभर्ति मां
वपुष्यसौ पुष्यतु वः शिवोऽच्युतः॥ २९/३१

नुतिर्मयेयं भजतां हिताय ते
कृताऽनया शर्म सतां हि तायते।
मनस्यपि ग्लानिरपोहिता यते
धृता यदेषा श्रुतिसंहितायते॥ २९/३२

अमेयमहिमा हिमाद्रितनया-
नयात्तहृदयो दयोर्जितमतिः।
विभुर्भवरुजं रुजन्नविकलं
कलङ्करहितं हितं दिशतु वः॥ २९/३३

उदारकरुणोऽरुणोर्जितमहा
महाहिवलयो लयोज्झितवपुः।
अघौघशमनो मनोधृतमुदा-
मुदात्तविभवो भवो भवतु वः॥ २९/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एकः पादोदकमधिशिरः श्लाघ्यमन्यस्य धत्ते
चक्रे पूजां नयनकमलेनाऽपरस्य द्वितीयः।
इत्यन्योन्यं प्रकृतिमहतामन्तरज्ञौ गुणानां
हर्षोत्कर्षं कमपि कुरुतां कामकंसद्विषौ वः॥ २९/३५

यस्मिन्नद्रिसमुद्रजावहनयोरुत्सृज्य नैसर्गिकं
वैरं केसरि-कुञ्जरप्रवरयोः सौहार्दहृद्या स्थितिः।
यस्मिन्नप्यहिराजपन्नगभुजौ निर्व्याजमैत्रीयुजौ
निष्प्रत्यूहमसौ महापुरुषयोः संधिर्निबध्नातु वः॥ २९/३६

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'एकान्तरयमकं' नाम एकोनत्रिंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ त्रिंशं स्तोत्रम्

महायमकस्तोत्रम्

❀❀❀

शारदीमिव नदीं प्रसादिनी-
मुच्चकैरवसरोजराजिताम्।
स्तोतुमेष मम मूर्तिमैश्वरी-
मुच्चकैरवसरोऽजराजिताम्॥ ३०/१

रोहिणीरमणखण्डमण्डनं
नन्दिनन्दिनमनं दिनं दिनम्।
नौमि बिभ्रतमुपोढकालिका-
सङ्गमं गलमसङ्गमङ्गलम्॥ ३०/२

नौमि भक्तजनकण्ठनिःसर-
न्नादरञ्जितमकालकामदम्।
कालकामदमनादरं जित-
क्लेशमीशममृतांशेखरम्॥ ३०/३

भ्राम्यतु द्रविणतृष्णया भृशं
मानसं सदिनमानसंसदि।
त्वत्स्तवामृतमृते तु दुस्तरे
बन्धुरध्वनि न बन्धुरध्वनि॥ ३०/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

साधु नाथ नुतिरीप्सया मया
या मयार्चित कृतात्र साधुना।
सा धुनातु विपदं भवामया-
यामयापनलसद्रसाऽधुना॥ ३०/५

न मेऽभिभूतस्य पिता न माता
न वा सनाभिर्धनवासनाभिः।
अरिस्तु रुन्धे सुहृदा वियुक्तं
समाधिना मानसमाधिनामा॥ ३०/६

दर्पकान्तक विराजमानयाऽ-
दर्पकान्त-कविराजमानया।
त्वत्प्रसादविधिलब्धया धिया
साधवो दधति वैबुधीं धुरम्॥ ३०/७

येन शीतकरखण्डशेखर
त्वत्प्रसादवशतः करोत्करः।
कोऽपि तामरसभासनोऽर्जितः
कोपिताऽमरसभासनोर्जितः॥ ३०/८

रविरलङ्कुरुते नवरञ्जनं
स किल यत्तव दक्षिणमीक्षणम्।
इममपास्य तमः सहजं शनै-
रविरलं कुरु तेन वरं जनम्॥ ३०/९ (युग्मम्)

महतामतामसमहावपुषं
तव भक्तिमर्थितवतां भगवन्।
महतामतामसमहावपुषं
प्रथयन्ति कीर्तिमिह सिद्धगणाः॥ ३०/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अध्यास्यते शमजुषा भवतः प्रसादा-
दामोदराजितरुचारु चिरं जनेन।
दामोदराजितरुचा रुचिरञ्जनेन
कीर्णं तृणेन मृदुना वनमार्तवेन॥ ३०/११

तव सवहरिणं घ्नती महर्षिं
यमकृत चापलता नवासमाधिम्।
पुनरपि दृगलम्भयत्तवैनं
यमकृतचापलतानवा समाधिम्॥ ३०/१२

सभाजनेऽनल्परतेर्नृपस्य
त्वद्भक्तिभाजः प्रसभाजनेन।
सभा जनेन प्रगुणेन पूर्णा
विभाति निःश्रेयसभाजनेन॥ ३०/१३

अनन्तराऽयन्त्रितवाग्भवस्त्वां
गृणाति यो नित्यमनन्तरायम्।
अनन्तरायं स्वयमेत्य लक्ष्मी-
र्निषेवते तं समनन्तरायम्॥ ३०/१४

सहो मयाद्यैरपि यस्य दुर्धरं
यमः स धर्तुं हृदि दुःसहो मया।
सहोमयाऽभ्येत्य भज प्रसन्नया
दृशा कृतानङ्गभुजांसहोमया॥ ३०/१५

कले वरं दातुमुदीरितेऽस्ति या
सुधा सुवाक्ये तव निष्कले वरम्।
कलेव रङ्क्वङ्कतनोरसौ कदा
ममेदमाप्याययते कलेवरम्॥ ३०/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar, New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सदानवारिद्विरदा वरूथिनी
हरेरिव ध्वस्तसहिंसदानवा।
सदा नवाराद्धशिवा शिवाप्तये
न कस्य गीर्भक्तिविकासदा नवा॥ ३०/१७

घनैरहंताकृतलङ्घनैरहं
महारिभिर्निर्मलशर्महारिभिः।
निराकृतौजा धृतहानिराकृतौ
न तेऽवलेपावसरो नतेऽबले॥ ३०/१८

मनस्यदोषेऽप्यतिदौर्मनस्यदो
महारयः पन्नगभीमहार यः।
तमन्तकम्पैकनिमित्तमन्तकं
नयाशु भङ्गं हतदुर्नयाशुभम्॥ ३०/१९

न वारबाणा न हया नवारवा
न दन्तिनः सद्मनि वा नदन्ति नः।
क्षतापदाज्ञा तु विपक्षतापदा
जितो भवः साधु हि पूजितो भवः॥ ३०/२०

जलाशया यान्ति मृगा जलाशया
मरावलङ्घ्ये घ्नति पामरा बलम्।
परं हसन्तो जितकोपरंहसं
जना भवेऽप्युज्झितपूजना भवे॥ ३०/२१

अमन्दरागाश्रितमन्दरागा-
स्ते देवजाताविह देव जाताः।
ये सिद्धसाध्यार्चित सिद्धसाध्या
रता नवं तेनुरतानवं ते॥ ३०/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सदय मोदय मोदयमोक्षदं
कृशमदः शमदः शमदः कुरु।
न हि तता हितताऽऽहिततायनैः
कृतनुते तनु ते तनुते शुभम्।। ३०/२३

रसमये समयेऽसमयेहया
धनमहीनमहीनमहीष्वपि।
कृतमुदात्तमुदात्तमुदाहृतं
तदिदमापदमाप दमापहम्।। ३०/२४

मदनवादनवादनवासना-
यतनयातनया तनयाऽम्बुधेः।
अकृत वै कृतवैकृतवैशसा
सकमला कमला कमलाघवम्।। ३०/२५

कमलयाऽमलया मलयाद्रिव-
त्त्रसदयासदया सदयाप्ययया।
प्रवरधीवर धीवर धीरया
कलय माऽलयमालयमापदाम्।। ३०/२६

वितरणाभरणा भरणाभय-
क्षममना मम नाम मनागपि।
शुभवने भवने भव नेप्सित-
प्रद रमाऽदरमादरमादधे।। ३०/२७

अनयतो नयतो न यतो धृति-
प्रद यमादयमादयमाश्रितः।
त्रसति शंसति शंसति शं च यो
धृतमुदं तमुदन्तमुदञ्चय।। ३०/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शुभवता भवता भवतारिणा
शकलिताऽकलिता कलितापभूः।
हर कृतान्त-कृतान्त-कृतान्त नो
किममता ममता मम तादृशी॥ ३०/२९

विशदशोभयशोभय शोभय
त्रिजगदक्षम-दक्ष-मदक्षम।
स्वपदमानय मानय मा नय-
क्षत-समक्ष-यमक्षयमक्षय॥ ३०/३०

घनाऽघनाशनैः शनै-
र्नवैर्नवैरिहाऽरिहा।
भवान्भवाऽन्वहं वह-
न्नहीनहीनदानदाः॥ ३०/३१

दयोदयोर्जितोऽर्जितो
मयोमयोचितश्चितः।
यतेय ते हितेहिते
रवैरवैरधीरधीः॥ ३०/३२ (युगलकम्)

तवात्तबाधने धने
गदं गदन्ति केऽन्तिके।
मयाऽऽमयाविना विना
विभो विभोजना जनाः॥ ३०/३३

स्तवास्तवाऽऽहिता हिता
न केन केवलं बलम्।
शुभाऽऽशु भारती रती-
शनाशनाऽऽपदापदा॥ ३०/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

नतानतानवानवा-
रितारितापदं पदम्।
हराहरामि तेऽमिते
शमे शमेवमेव मे॥ ३०/३५

पराऽपराधबान्धवाः
सवासवाः सुरासुराः।
सदा सदानमानमा-
श्रयं श्रयन्ति यन्ति यम्॥ ३०/३६

स मा समाहितं हितं
बताऽवतादमन्दमम्।
कलङ्क-लङ्घने घने
ह्यबाह्यवासनः स नः॥ ३०/३७ (युगलकम्)

अलं घना अलङ्घना-
स्तपस्यतस्तपस्यतः।
तनुर्हि मेऽतनुर्हिमेऽ-
ङ्गतानवं गता नवम्॥ ३०/३८

मलमलक्षवलक्षबलस्मर-
स्मरणकारणकार कदङ्कदम्।
हर हरस्व भजस्व भजन् दिशं
दिश विभासविभासदृशं दृशम्॥ ३०/३९

भव-संभव-संहत-मोहतमो-
दमनेदमनेकमशङ्कमशम्।
सविकास-विकार-चितं रचितं
हर मे हर मेदुरितं दुरितम्॥ ३०/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कृपणं भगवन् बहुशोऽभिहितं
बहुशोभि हितं दिश मे वचनम्।
दिशमेव च नन्दितमानस तां
दितमान सतां न पतामि यतः॥ ३०/४१

मन्यामहे गतिमृते त्वयि भक्तिमन्या-
मन्यायगां तव दशैव तमःशमन्या।
मन्याभिधाभृति नतिं सहते धमन्या-
मन्याभिधेषु नहि धीरभिमानिमन्या॥ ३०/४२

माऽनारतं निजपरैरुपभुज्यमाना
मानातिवृत्तविभवाऽन्वहमेधमाना।
मा नाथ भूद्भवतु धीरभिनन्द्यमाना
मानाऽलसैः सुहृदरातिषु मे समाना॥ ३०/४३

दोषारयस्तरलयन्ति महामदोषा
दोषा धृतिं हरति मोहमयप्रदोषा।
दोषाकराङ्कवपुरेष्यति मां कदोषा
दोषात्तकण्ठमनिरुद्धमिवोन्मदोषा॥ ३०/४४

का रामणीयककृतेन्दुकरानुकारा-
कारा विना तव कृपां प्रथितोपकारा।
कारागृहेऽत्र भवनामनि मोचिका रा-
काराजखण्डशिखर क्षपितान्धकारा॥ ३०/४५

काशान्तचित्तधृतमुक्तिपथाऽवकाशा-
काशान्तवर्तिरविवत् प्रचुरप्रकाशा।
काशावकीर्णखिलतुल्यकृतान्तकाशा
का शाम्भवीं दृशमृते भृतसेवकाशा॥ ३०/४६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कां तापतान्तिमुपयान्ति शुचौ न कान्ताः
कान्तावलम्बितकराः स्खलितांशुकान्ताः।
कान्ता हठाद्वनचरैर्मृदितालकान्ताः
कान्तारगास्त्वदनुरक्तनृपारिकान्ताः॥ ३०/४७

मायाऽर्करश्मिपटलीव मरुक्षमाया-
मायासमर्पयति मे दुरितक्रमा या।
मायाः पदं तव कृपाऽत्र महातमाया-
मायात्युषेव हि कदा कलितोत्तमाऽऽयाः॥ ३०/४८

रामादिसेव्यभवभक्तिभृतोऽभिरामा-
रामाश्रितौषधिरिव क्षतदुस्तरामा।
रामा सतीव कृतसाधुविपद्विरामा
रा मान्यमुज्झति न सद्म न चाऽस्थिरा मा॥ ३०/४९

वारांनिधेरिव सुधा तव दुर्निवारा
वाराणसीव दृगघक्षयकृद्ध्रुवारा।
वाराङ्गनेव पृतनेव च साश्ववारा
वारानुवारमुदयत्युरुकूर्चवारा॥ ३०/५०

भद्राभिधे गज इवेशमक्लृप्तभद्रा
भद्रासनेऽर्चितवतः कृतभालभद्रा।
भद्रा सिता तिथिरिवेप्सितदा विभद्रा
भद्रा तनुर्गुणविडम्बितरामभद्रा॥ ३०/५१

नाऽगाधमाप तव हृन्मम धीरनागा
नागालयं सुरपुरीव सकाञ्चनागा।
नाऽगात् परत्र च सृजन्त्यकदर्थना गा
नागाश्रितेन्द्रदिगिवोन्नतनन्दनागा॥ ३०/५२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सारासहाऽपि मम धीस्त्वयि मन्दसारा
सारांधना विहितमोहतमोऽभिसारा।
साराव-कोकिलवचःसमसूक्तिसारा
सारावलीव गुरुतापकृतापसारा॥ ३०/५३

सामात्यभूपसदसीक्षितसूक्तिसामा
सामाजिकाहितनुतिः कृतसेर्ष्यसामा।
सामान्यवर्त्म न ययाश्रयमोजसा मा
सा मान्यता त्वयि विभो मुचदञ्जसा मा॥ ३०/५४

धारा गिरेरिव तरीव सकर्णधारा-
धाराऽर्पणी तव दृगूषरवर्षधारा।
धारापुरीव सुखदा दुरितासिधारा
धारा परार्तिहरणे हतषड्विधारा॥ ३०/५५

कालायसोपमरुचिर्गलभूः सुकाला
कालाग्निवद्दृगपि ते क्षणदग्धकाला।
काला यथोक्तिरमृदुः क्षतसेवकाला
का लाभकृन्मम विनाऽऽभिरनन्तकाला॥ ३०/५६

मुक्तार्पितस्वपदपूर्णकृपाऽविमुक्ता
मुक्तार्चनादिरतिनाऽऽर्किभयाद्विमुक्ता।
मुक्तावलीव विमला त्वयि गीरमुक्ता
मुक्तान्यमार्गगमनेन मयेयमुक्ता॥ ३०/५७

कल्पाह्ववल्लिरिव धौतविपद्विकल्पा
कल्पाञ्चिता कृतनुतिर्भवतीन्दुकल्पा।
कल्पाख्यसूत्रविदुरागमदृष्टकल्पाऽऽ-
कल्पाक्षयाऽस्तु मम गीरमृतानुकल्पा॥ ३०/५८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सहसाऽर्क इवाऽस्मि कृतः सहसा-
ऽसहसारभृदात्मभुवा सहसा।
स ह सायकमस्यति या सहसा
सहसाध्वसमेत्यपि दुःसहसा॥ ३०/५९

जनयाऽशुचमार्तमभाजनया-
जनयाचनरञ्जनवेजनया।
जनयामलखिन्नमखञ्जनया-
ऽजनयाऽमृतमात्मनियोजनया॥ ३०/६०

शमनाय शुचां त्वमुमेश मनाक्
शमनार्तिकरः कृतभीशम ना।
शमनामय देहि विपाशमना-
शमनाथजनप्रथिताशमनाः॥ ३०/६१

मधुनाशिनाऽर्चित समं मधुना
मधुनामपुष्पजनुषा मधुना।
मधुनाऽलसामिव वधूमधुना-
मधुनाप्लुतां त्वयि गिरं मधुना॥ ३०/६२

वसु धान्यमुज्झितुमपीवसु धा-
व सुधासितच्छवियशोवसुधा।
वसुधातृवन्द्य यदसावसुधा
वसुधाम दृक्तव नवेव सुधा॥ ३०/६३

समयासिषुः क्व न विकासमयाः
समयापतिं जगति यं समया।
समया भवन्ति च विलासमयाः
स मया गिराऽर्च्यत सुधासमया॥ ३०/६४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कलिकालताम्यदमृतोत्कलिका
कलिकातरे हृदि नवोत्कलिका।
कलिका स्त्रजीव जितशाकलिका-
ऽकलि कान्तिभृच्च मुकुटे कलिका॥ ३०/६५

कलयाऽऽश्रितं विरुजमेकलया
कलया विधोर्दलितपाकलया।
कलया गिरा च सकलाऽकल या
कलया विना विहितशोकलया॥ ३०/६६

परमारकाऽन्तककृतोपरमा-
ऽपरमानतं तव दृशाऽऽप रमा।
परमार्थसद्गुणपरम्पर मा
परमार्त्तमुज्झ करुणापर मा॥ ३०/६७

कल-कलकल-कलकण्ठ-वदस्मा-
नव नवनवनवरोचितवाचः।
भव भव भव-भवभीतिभिदस्य-
न्मदमदमदमदनाऽन्तक दूरम्॥ ३०/६८

अविकल-कल कलकल-कल-कण्ठं
दिश नवनव-नवनवन वरवचः।
सविभव भव भव भवभवभयभि-
द्धर मदमदमदमदमदयमिमम्॥ ३०/६९

देव्यां भ्रमद्भ्रुवि जयाविजयार्चितायां
सक्ता तवाऽस्तविजया विजयाय दृष्टिः।
वृष्ट्येव भूर्दिविजया विजयाख्यया ते
मूर्त्या त्रसद्रविजयाऽऽवि जयाह्वया च॥ ३०/७०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हरमुपेत रसादमलं घनं
दमलङ्घनं तनुत मा कृतिनः।
तनुतमाकृति नः श्रयताऽऽदृतं
श्रयतादृतं भवत इत्युदितम्।। ३०/७१

शमितसङ्गमसज्जनतापदं
शमितसङ्मसज्जनतापदम्।
नमतकाममहीनविभासितं
नमत काममहीनविभासितम्।। ३०/७२

कलि-तमो-हन-मारवराजितं
स्मर हरं शिखिचन्द्रकलाञ्छितम्।
कलित-मोहन-मारवराजितं
स्मरहरं शिखि-चन्द्रक-लाञ्छितम्।। ३०/७३

असौ हृदन्तर्हितमोहरोधने
सदा यते रक्ष यशो भियो जय।
असौहृदं तर्हि तमोहरो धने
सदायतेरक्षयशोभि योजय।। ३०/७४

सकलशं सकपालमलङ्कृत-
प्रमदमस्थिरसं मदनाशनम्।
भवमदभ्रमहानिधने हितं
शमनमज्जनमानमताऽलयम्।। ३०/७५

सकलशंसकपालमलं कृत-
प्रमदमस्थिरसंमदनाशनम्।
भवमदभ्रमहानिधनेहितं
शमनमज्जनमानमतालयम्।। ३०/७६(युग्मम्

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तनुशङ्करवैरसमाऽयतया-
ऽतनु शङ्कर वै रस माऽयतया।
तनु शं करवै रसमायतया-
ऽतनुशं कर वैरसमायतया॥ ३०/७७

प्रकाशकलितापदं शकलितापदं शंसता-
मसारसमये हितं रसमयेहितं शङ्करम्।
हृदि स्मरत रङ्गितं स्मरमरङ्गितं शान्ततां
नयन्तमसमानसंतमसमानसं चान्तकम्॥ ३०/७८

इयं विचित्रताविराजिता मया मनोहरा
जितामया मनो हराऽऽहिता नुतिर्धिनोतु ते।
त्वयि प्रसन्नमानसेऽसमस्तमोहराशये
समस्तमोहराशये करोमि न स्पृहां पुनः॥ ३०/७९

कान्ता कान्तारमध्ये सरिदिव सकुलक्ष्माधरायां धरायां
याता या तारतम्यं क्व न विमलमतिप्रेक्षणेन क्षणेन।
साभासा भारतीयं तनुरिव तरणेरन्धकारेऽन्धकारेः
स्तुत्या स्तुत्या बुधानां मदयतु हृदयं ग्लानितान्तं नितान्तम्॥ ३०/८०

वर्षावर्षायमाणा सहृदय-शिखिनां संहितानां हितानां
दात्री दात्री तृणानामिव लवनपटुर्दुष्कृतानां कृतानाम्।
कल्या कल्याणदाने नुतिरियमशुभं तर्जयन्ती जयन्ती
विश्वं विश्वम्भरान्तं प्रसरतु सुरभीनन्दनस्यन्दनस्य॥ ३०/८१

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'महायमकं' नाम त्रिंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ एकत्रिंशं स्तोत्रम्

नतोपदेशस्तोत्रम्

❀❀❀

मनः समाधौ परमान्तरङ्गं
विधाय निःस्पन्दमनुत्तरङ्गम्।
बुधा विधातुं भवभीतिभङ्गं
विभुं भजध्वं गिरिजाभुजङ्गम्॥ ३१/१

पाश्यावशेनेव महाविहङ्गं
वल्गाबलेनेव महातुरङ्गम्।
निरुध्य योगेन मनःप्लवङ्गं
विभुं भजध्वं गिरिजाभुजङ्गम्॥ ३१/२

मन्त्रौषधादिक्रियया भुजङ्गं
यथा यथा वागुरया कुरङ्गम्।
मनस्तथाऽऽयम्य धियाऽस्तसङ्गं
विभुं भजध्वं गिरिजाभुजङ्गम्॥ ३१/३

भित्त्वाऽलिकं सभ्रुकुटीविभङ्गं
यस्याऽग्निरुद्यन्नभसादनङ्गम्।
ददाह तं मोहतमःपतङ्गं
विभुं भजध्वं गिरिजाभुजङ्गम्॥ ३१/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वहन्तमुद्दामभुजङ्गमङ्गं
जटाभरं निर्भरनाकगङ्गम्।
विलोचनं चाग्निशिखापिशङ्गं
विभुं भजध्वं गिरिजाभुजङ्गम्॥ ३१/५

भवबन्धबद्धविधुरोद्धरणं
फणिमण्डलज्वलदलङ्करणम्।
व्रजत क्षमाधरदरीशरणं
शरणं तुषारकिरणाभरणम्॥ ३१/६

कृतघस्मरस्मरनिराकरणं
कटुकालकूटकवलीकरणम्।
व्रजत प्रपन्नजनताशरणं
शरणं तुषारकिरणाभरणम्॥ ३१/७

मरुमेदिनीरचितसंचरणं
त्रिदशेन्द्रशेखरसरच्चरणम्।
व्रजत त्रिदुःखहरणस्मरणं
शरणं तुषारकिरणाभरणम्॥ ३१/८

प्रणतं जनं जितजरामरणं
रचयन्तमाप्तभवनिस्तरणम्।
व्रजताऽऽहितत्रिपुरसंहरणं
शरणं तुषारकिरणाभरणम्॥ ३१/९

अवधूत-मोह-तिमिरावरणं
करिकृत्तिकल्पितपरावरणम्।
व्रजत प्रकल्पितपुरेशरणं
शरणं तुषारकिरणाभरणम्॥ ३१/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तरुणतमालमलीमसनालं
ज्वलनशिखापटलोज्ज्वलभालम्।
शिरसि लयत्परमेष्ठिकपालं
श्रयत विभुं हतकल्मषजालम्॥ ३१/११

नरमुखकल्पितशेखरमालं
नतजनजम्भितमोहतमालम्।
नयनशिखाशतशातितकालं
श्रयत विभुं हतकिल्बिषजालम्॥ ३१/१२

विषमविषाग्निशिखाविकरालं
फणिपतिहारमतीवविशालम्।
गलभुवि बिभ्रतमुग्रसिरालं
श्रयत विभुं हतकल्मषजालम्॥ ३१/१३

विदलयितुं यमृते भवतालं
त्रिभुवनसीमनि कश्चन नाऽलम्।
तममलमानसवासमरालं
श्रयत विभुं हतकिल्बिषजालम्॥ ३१/१४

कमलपरागपिशङ्गजटालं
जलधि-समर्पण-तर्पितबालम्।
भवभटभङ्गमहाकरवालं
श्रयत विभुं हतकल्मषजालम्॥ ३१/१५

अतिघस्मर-भस्मरजोधवलं
नतलोकसमर्पितबोधबलम्।
ध्वजधामविराजिमहाधवलं
भजत प्रभुमद्रिसुताधवलम्॥ ३१/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

प्रभया परिभूतदलद्गवलं
गलमङ्गदरत्नशिखाशबलम्।
दधतं विषक्लृप्तमहाकवलं
भजत प्रभुमद्रिसुताधवलम्॥ ३१/१७

शिखरं द्युनदीलहरीतरलं
गलमूलमुपोढमहागरलम्।
दधतं हृदयं च सुधासरलं
भजत प्रभुमद्रिसुताधवलम्॥ ३१/१८

अपनीतकुकर्मकलङ्कमलं
नतलोकवितीर्णमहाकमलम्।
ददतं शुभसिद्धिविपाकमलं
भजत प्रभुमद्रिसुताधवलम्॥ ३१/१९

ददतं वचनं घनहासकलं
नमतां दलयन्तमघं सकलम्।
भजतां च दिशन्तमभीष्टफलं
भजत प्रभुमद्रिसुताधवलम्॥ ३१/२०

अविरतनतिपरसुरवरशिखर-
प्रणिहितमणिगणमसृणितचरणम्।
सितकरकरभरधवलितमुकुटं
प्रणमत पुरहरमशरणशरणम्॥ ३१/२१

भवभवपरिभवधुतविधुरधिया-
मधिगतशम-दम-नियमितमनसाम्।
अभिमतवितरणपरिणतकरुणं
प्रणमत पुरहरमशरणशरणम्॥ ३१/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तनुतृणगणनिभमनसिजशमन-
प्रशमनपरिचितहुतवहमहितम्।
परहितकृतमतिमतिमृदुहृदयं
प्रणमत पुरहरमशरणशरणम्।। ३१/२३

दिनकर-हिमकर-हुतवहनयनं
पदकरकचभरधृतसितकिरणम्।
विघटित-नतजन-घनतम-तमसं
प्रणमत पुरहरमशरणशरणम्।। ३१/२४

अविरलजलभरसुरसरिदुदय-
त्सरसिजभरनिभधृतनरशिरसम्।
भवदवहुतवहविदलनजलदं
प्रणमत पुरहरमशरणशरणम्।। ३१/२५

जहत कल्पितकलुषलोचनतिमिरभञ्जनमञ्जनं
त्यजत दुःस्थितहृदयनन्दनमलयचन्दनरञ्जनम्।
भजत निर्जितविषमवैभव-भवमहार्णवमज्जनं
क्षितिधराधिपदुहितृवल्लभचरणपङ्कजपूजनम्।। ३१/२६

सकलकलिमलपटलपन्नगनिगडखण्डनपण्डितं
विशदशशधरशकलशोभितमुकुटमण्डनमण्डितम्।
हृदयमीहितुमभयमुन्मदमदनदुर्नृपदण्डितं
भजत दुस्तरदुरितवारिधितरतरण्डमखण्डितम्।। ३१/२७

जितसुधाकरगिरिसुताकरसरसिजादरलालितं
नतपुरंदररुचिरशेखरकुसुमकेसररञ्जितम्।
द्रुहिण-माधव-कुमुदबान्धव-कमलिनीधव-सेवितं
वितर मूर्धनि चरणपङ्कजममृतशीकरशीतलम्।। ३१/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अवटमज्जनजनिततर्जनवृजिनभञ्जनसाधनं
कृतनमज्जनहृदयरञ्जनचिरनिरञ्जनपूजनम्।
त्रिपुरमारणदुरितदारणदरनिवारणकारणं
वितर मूर्धनि चरणपङ्कजममृतशीकरशीतलम्॥ ३१/२९

इदमकृत्रिमरसमसंभृतबहुविधौषधसाधनं
स्तुतिरसायनमयमुपायनमनुगृहाण गृहाण मे।
वरमुदाहर वरमुदा हर परमदाहरुजाहरं
वितर मूर्धनि चरणपङ्कजममृतशीकरशीतलम्॥ ३१/३०

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'नतोपदेशं' नाम एकत्रिंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ द्वात्रिंशं स्तोत्रम्

शरणागतोद्धरणस्तोत्रम्

❀❀❀

भवमरुभ्रमविषमसंभ्रमसमुदितक्लमविक्लवं
कुलिशकर्कशहृदयदुर्जनकृतपराभवविप्लवम्।
अतिभयंकररविजकिङ्करविकृतहुङ्कृतिकातरं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्।। ३२/१

कृतनिकेतनमकरकेतनदलितचेतनवेतनं
ललितलोचनवरवधूजनवचनतर्जनभाजनम्।
गुणलवोद्गतगुरुमदज्वरजनिततीव्ररुजातुरं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्।। ३२/२

प्रमुखपेशलविषमवैशसविषयपाशवशीकृतं
प्रकृतिदुर्ग्रहगुरुपरिग्रहनिबिडपीडितविग्रहम्।
ज्वलदनर्गलभवदवानल-कवलिताकुलचेतसं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्।। ३२/३

पवनवेल्लितकमलिनीदलतलचलज्जलचञ्चलं
विभवयौवनसुतसुखादिकमितिविवेकविसंस्थुलम्।
बलवदिन्द्रियकपटतस्करहठविलुण्ठनविह्वलं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्।। ३२/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

समदनन्दनमदनमर्दन दुरिततर्दनलोलुभं
भुवनभावन परमपावन सुदृढभावनमानतम्।
शशिकलाञ्छितमुकुटलाञ्छित विफलवाञ्छितमाकुलं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्॥ ३२/५

जगदनुग्रहमहितविग्रह कृतपरिग्रहसद्ग्रहं
त्रिपुरशासन शबलवासनमसदुपासनलालसम्।
घनचमत्कृतिकृतनमस्कृतिमुचितसत्कृतिसस्पृहं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्॥ ३२/६

वरद नन्दय विपदमर्दय किमिति निर्दयतेदृशी
कृतनिवेदनमतुलवेदनमुदितखेदनवापदम्।
दिश यशोधन हृदयशोधन-विमलबोधनदीं दृशं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्॥ ३२/७

अभयमर्पय कपटमल्पय शिरसि कल्पय मे पदं
मुखमुदञ्चय वचनमञ्चय वरद वञ्चय मा नतम्।
भृशमविश्रमकृतपरिश्रमशतमतिश्रमनिःसहं
चतुरमुद्धर हर जगद्धरमशरणं शरणागतम्॥ ३२/८

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'शरणागतोद्धरणं' नाम द्वात्रिंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ त्रयस्त्रिंशं स्तोत्रम्

कर्णपूरस्तोत्रम्

❀❀❀

काञ्चीकाञ्चनकिङ्किणीकलकलः शिञ्जानमञ्जीरजो
झाङ्कारः सकलाङ्गभूषणमणिश्रेणीझणाडम्बरः।
वाग्देव्याः प्रचलस्खलद्भुजलताक्षेपक्वणत्कङ्कण-
क्वाणश्चङ्कमणक्रमे विजयते चन्द्रार्धमौलेः स्तवः॥ ३३/१

स्वामिन् वाङ्मयदेवता भगवती स्वेच्छाविहारक्रिया-
क्रीडाकाननमाननं भव भवद्भक्तस्य नूनं व्यधात्।
नोचेन्नूतननूतनः प्रतिदिनं हृद्यः समुद्यन्क्रमा-
दस्मिन्नुज्ज्वलवर्णकोमलपदन्यासः कथं लक्ष्यते॥ ३३/२

स्वैरं कैरविणीकुटुम्बकलिकालङ्कार सारस्वत-
स्फारस्वारसिकप्रसाद- विशदस्वाधीनवाग्देवताः।
धन्याः सत्कवयस्तव स्तवनिभात्त्वद्भक्तिभाजां विप-
त्तापाऽपाकृतये दिशन्ति शिशिरस्निग्धाः सुधाविप्रुषः॥ ३३/३

यस्य त्वन्नमनैः शिरोदशशती सौन्दर्यसंदर्शनै-
श्चारित्रश्रवणोत्सवैश्च भवतश्चक्षुःसहस्त्रद्वयम्।
साफल्यं रसनासहस्त्रयुगलं त्वत्कीर्तनैश्चाश्नुते
त्रैलोक्याद्भुतमूर्तये भगवते शेषाय तस्मै नमः॥ ३३/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

राकेन्दोरपि माधवादपि संतां सङ्गादपि स्वामिनः
सम्मानादपि कामिनीकुचयुगाभोगोपभोगादपि।
शम्भो शर्व शशाङ्कशेखर शिव श्रीकण्ठ विश्वेश्वर
त्रायस्वेति सतां हरन्ति हृदयं सान्द्रामृतार्द्रा गिरः॥ ३३/५

श्यामाकामुकमाधवादिविरसं नासीरकस्तूरिका-
काश्मीरादिनिरादरं मलयजालेपावलेपावहम्।
कुर्वन्ति प्रविधूतनूतनवधूगाढाङ्गसङ्गस्पृहं
चेतः कस्य न शाम्भवस्तवसुधासिक्ताः सतां सूक्तयः॥ ३३/६

यस्यैताः स्तवसूक्तयस्तव मुखे खेलन्ति हेलाजित-
ज्वालाजालजटालकाल- रसनासंरम्भसंभावनाः।
वल्गन्त्यस्य पुरः पुरन्दरपुरीकान्ताकटाक्षच्छटा-
बाणश्रेणि-शरव्य-दिव्य-वपुषः स्वर्वन्दिवृन्दोक्तयः॥ ३३/७

हर्षोत्कर्षविवर्द्धिनीः परिणतक्षौद्रद्रवस्पर्धिनी-
र्धन्यानां मधुरास्तव स्तवगिरः कर्णे चिरं कुर्वताम्।
मान्द्यं विन्दति नन्दनेन्दुवदनासंदिग्धमुग्धाधर-
प्रोन्मीलन्मधुबिन्दुसुन्दरसुधासंदोहदो दोहदः॥ ३३/८

सद्विद्याभ्यसनः सभानिवसनः सौधासनाध्यासनः
शुद्धान्नग्रसनः सुधौतवसनः सत्साध्वसध्वंसनः।
सह्लादोल्लसनः प्रसन्नहसनः संपन्नसद्वासनः
सत्काव्यव्यसनः सुधार्द्ररसनः शंभोः कृतोपासनः॥ ३३/९

राकाकान्तरुचः क्षताखिलशुचः पीयूषधारामुचः
स्वान्तक्लान्तिहृतश्चमत्कृतिकृतः सङ्गीतभङ्गीभृतः।
शंभोरम्बुदनादविह्वलवलद्बालाङ्गनालिङ्गन-
ह्लादस्वादसुखस्पृहामिह जहत्यन्तर्मशन्तः स्तुतीः॥ ३३/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सारासारविदः सतां भयभिदः प्रह्वोपतापच्छिदः
कारुण्यार्द्रहृदः प्रसन्नसुहृदः स्फारीभवत्संविदः।
त्राताशेषविशः प्रकाशितदिशः कीर्त्या महीनिर्विशः
कर्षन्तीश निशः प्रसक्तसुदृशस्त्वत्पादपीठस्पृशः॥ ३३/११

दुर्धर्षर्द्धिपुषः सहर्षवपुषस्तर्षप्रकर्षप्लुषः
सर्वोत्कर्षजुषः क्षणक्षतरुषः कल्याणपूर्णायुषः।
उत्सर्पत्सहसः समिद्धमहसः क्षिप्तोर्जितानेहस-
श्चित्तान्तप्रहसः सुखाप्तरहसस्त्वद्ध्यानधौतांहसः॥ ३३/१२

कालं बालकुरङ्गकेतनकृतोत्तंसप्रशंसामृत-
स्यन्दास्वादविनोदनैर्यदनयन्निःस्पन्द-मन्दं मनः।
तस्यान्यत्र कविक्रमे कमलिनीकिञ्जल्कपानोत्सव-
व्यग्रस्येव मधुव्रतस्य कुसुमेऽन्यस्मिन्कथं स्याद्रतिः॥ ३३/१३

खट्वाङ्गे मुकुटे करे श्रवणयोः प्रायेण यो भूषणं
ब्रह्मोपेन्द्रपुरःसरामरशिरःश्रेणिं बिभर्ति प्रभुः।
तत्पादाम्बुजभक्तिभावितमतिर्धन्यः शिरोभूषण-
ख्यातिं निश्चितमश्नुते त्रिभुवनप्रष्ठप्रतिष्ठाजुषाम्॥ ३३/१४

रोहन्मोहमहीरुहोरुपरशुर्दुर्वारमारज्वर-
प्लोषोल्लाघभिषग्विषौघ-विषम-क्लेशोग्रशापावधिः।
ताम्यल्लोचनचक्रवाकमिथुनब्रध्नोदयश्चन्द्रिका-
पूरश्चित्तचकोरकस्य जयति श्रीकण्ठपूजाविधिः॥ ३३/१५

अर्चां वीक्ष्य विचित्रचारुरचनां चन्द्रार्धचूडामणे-
र्व्यक्तिं भक्तिचमत्कृतिः कृतधियो यस्यैति चित्ते मुहुः।
तस्मिन्सस्पृहमर्पिताः सचकिताः साचीकृताः सस्मिताः
साकूताश्च पतन्ति पक्ष्मलदृशां प्रेमामृतार्द्रा दृशः॥ ३३/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वामिन् सौमनसं निबध्य वपुषि स्त्रग्दाम दृग्दामभि-
र्भस्मीभावितमन्मथस्य भवतो भिन्दन्ति भक्तिस्पृशः।
दोलान्दोलनविह्वलेन्दुवदनादोःकन्दलीचन्दन-
स्यन्दानन्दनिमीलितार्धनयनास्तापव्यथां मान्मथीम्॥ ३३/१७

स्वामिन् यस्तव पादपङ्कजयुगं भक्त्याऽभ्यषिञ्चन्मुहुः
पूजान्तेषु नमन्नमन्दमुदितानन्दाश्रुलेशोत्करैः।
तस्यांघ्री ललिताक्षिपक्ष्मपटलप्रान्तस्त्रुतार्णः कण-
श्रेणीभिः स्नपयन्त्यनङ्गविगलन्माना: कुरङ्गीदृशः॥ ३३/१८

त्वामक्षामशुभानुभावविभवं भालाग्निकीलावली-
संरम्भादभियोक्तुमक्षमतया साक्षादुपेक्ष्य स्मरः।
नूनं हन्ति निरन्तरं भव भवत्सेवैकहेवाकिनं
कर्णाभ्यर्णवलत्कटाक्षविशिखश्रेणीभिरेणीदृशाम्॥ ३३/१९

आदौ भक्तिवयस्यया परिचयान्नीतोन्मुखत्वं शनै-
रारूढा विषमेषुवर्त्मसु चिरं भ्रान्ताऽथ तान्तेः पदम्।
दूतीकृत्य नवानवद्यवचसं देवीं पुरो भारती-
मेषा त्वामुपगन्तुमिच्छति पतिं प्रोद्दामकामा मतिः॥ ३३/२०

धूमोद्गारगभीरघस्मरवपुर्निर्भर्त्सितार्कप्रभं
स्फूर्जत्फूत्कृतकर्बुरीकृतसितश्रीकान्तदेहद्युति।
ग्रासीकर्त्तुमुदग्र-विग्रहगलद्वह्निस्फुलिङ्गं विषं
को जग्राह करेऽमरेश्वरनुतस्त्वामन्तरेणाऽपरः॥ ३३/२१

क्रोधोद्भ्रान्तकृतान्तकिङ्करकरद्रोणीमुखप्रेङ्खित-
व्यालालिङ्गितकन्धरः प्रकटयन्नाक्रन्ददीनां गिरम्।
चक्षुर्दिक्षु विदिक्षु च क्षतधृतिर्निक्षिप्य रक्षाक्षमं
कांक्षन्कं शरणं वृणोति मरणे त्वामन्तरेणातुरः॥ ३३/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वर्षन्तीभवदोषपोष- परुषप्लोषप्रमोषक्षमं
पीयूषं विशदांशुभिर्दश दिशत्काशप्रकाशा दिशः।
कर्षन्ती विषमं तमः प्रमथितालोकस्य लोकस्य गी-
श्चान्द्री मूर्ध्नि कलेव देव भवतो वक्त्रे विधत्तां पदम्॥३३/२३

यत्पर्याप्तकृपाविपाकविकसन्माधुर्यधुर्यं तव
स्वान्तं भीमभवोपतापविपदि स्फीताऽवहेलं मयि।
स्वामिन्नेष विधिर्ममैव विधुरो दूराध्वखिन्नो जन-
स्तीराद्रत्ननिधेर्व्यपैति विफलः स्वैरेव दुष्कर्मभिः॥ ३३/२४

यत्सौन्दर्यसमुद्रसान्द्र- लहरीहेलाचलच्चामर-
व्यग्राङ्गाङ्गुलिबालमालववधूदृक्पातपात्रं वपुः।
सेवासन्निधिशंसिसंभ्रम- नमत्सामन्तमौलिस्थली-
लीढाङ्घ्रिद्वयमुद्वहन्ति कृतिनः सौभाग्यभाग्यास्पदम्॥ ३३/२५

यच्च प्रेङ्खदखर्वगर्वघटितभ्रूभङ्गभीमाकृति-
क्ष्माभृत्पाशमुखावलोकनघन- प्रोल्लङ्घनाभीरुभिः।
उन्मीलन्मृदुशाद्वले तरुतले स्वर्ल्लोककल्लोलिनी-
कूले मूलफलाशनैः शमसुधास्वादार्थिभिः स्थीयते॥ ३३/२६

यच्चाऽस्मिन्भवडम्बरे परिणमन्मन्दानिलान्दोलन-
व्यालोलन्नलिनीदलाञ्चल- चलप्रालेयलेशोपमे।
दुष्कालव्यसनावसन्न- जनतासन्तापनिर्वापण-
व्यापारैकसुकर्मनिर्मलफलारम्भैः सुखं जीव्यते॥ ३३/२७

निःशङ्कं विकलङ्कमङ्कविकसल्लक्ष्मीकटाक्षेक्षितं
यन्मानुष्यमुपेत्य नित्यमुदिता नन्दन्ति दन्तिव्रजैः।
यच्चान्ते पुरुहूतवारवनितागीतामृताकर्णन-
प्रोन्मीलत्पुलकाविकीर्ण-वपुषः स्वर्मध्यमध्यासते॥ ३३/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सोऽयं सर्वजगत्प्रभोरशरणत्राणैकहेवाकिनः
कारुण्यामृतसागरस्य गिरिजाभर्तुः परोऽनुग्रहः।
कस्त्वं न स्तुतिभिर्विमर्शरसिकः प्रौढार्पितप्रीतिभिः
प्राप्तुं शर्मदकर्मनिर्मलफलं नन्दत्यमन्दादरः।। ३३/२९

(पञ्चभिः कुलकम्)

दृष्टिः पीयूषवृष्टिर्मधुरमधुरसस्यन्दिनी देव वाणी
पाणी त्वत्पादपीठीपरिमलनरजोराजिमैत्रीपवित्रौ।
चेतः स्वच्छन्दचर्यापरिणतकरुणारामविश्रामधाम
त्वामक्षामप्रसादामृतजलधिमहो भेजुषामेष पाकः।। ३३/३०

तस्यैकस्यांघ्रिपीठं स्फुटमुकुटमणिप्रौढरोचिःप्रतानैः
क्षोणीपालाः शिरोभिः करपुटघटितैरञ्जसा रञ्जयन्ति।
धत्ते धन्यः स चैकः सितरुचिरुचिरच्छत्रशुभ्रोत्तरीयां
लक्ष्मीमुद्दामरामाकरकमलचलच्चामरोदारहाराम्।। ३३/३१

तं वाणीभिर्गृणन्ति श्रवणपुटसुधास्यन्दिनीभिर्मुनीन्द्रा
गीतैर्गायन्ति विद्याधरवरवनितास्तस्य चित्रं चरित्रम्।
विद्वद्गोष्ठीषु तस्य प्रसरति कृतिनो दानदाक्षिण्यवार्ता
कीर्तिर्जागर्ति तस्य प्रवरकविवचोभङ्गिसन्मङ्गलेषु।। ३३/३२

किं वाऽन्यन्नैष पश्यत्यलमनलशिखापिङ्गजिह्वास्फुलिङ्ग-
स्फूर्जद्दंष्ट्राकरालं भ्रुकुटिकुटिलितं भीषणं कालवक्त्रम्।
स्वामिन्मन्दानिलान्दोलितललितलतानृत्तकान्ते वनान्ते
शान्तेर्ष्यस्त्वामविद्या-जडजगदगदंकारमाराधयेद्यः।। ३३/३३

(तिलकम्)

आकर्णाकृष्टचापः प्रहरति निभृतं निर्निमित्तापकारी
नारीनेत्रान्ततिर्यग्विवलनविशिखश्रेणिभिः पुष्पचापः।
फूत्कारस्फारफालः स्फुरदुरुगरलज्वालजिह्वाजटालः
कालव्यालः करालः कवलयति वपुर्दन्तकामः क्व यामः।। ३३/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तस्मादस्माकमाकस्मिकविकसदसत्कर्मपाकोपताप-
व्यापत्तापातुराणामविरलकरुणासिन्धुरापन्नबन्धुः।
भक्तिश्रद्धाप्रबन्धानमदमरशिरः श्रेणिमाणिक्यमाला-
ज्वालालीढांघ्रिपीठः शरणमशरणत्राणशीलस्त्वमेकः॥ ३३/३५
(युग्मम्)

या निःशेषौषधीनां जनिरजनि पुनर्न क्वचित्कम्पसम्प-
त्सम्पर्कों यत्र यत्र स्थितिरुपरि परिभ्रंशभाजां जनानाम्।
एषा शेषाहिपीठप्रकटितवसतिः संपदां भूतधात्री
पात्रीकुर्वत्यजस्त्रं जनमनघमघः प्रक्रमस्ते नमस्ते॥ ३३/३६

संसारेऽस्मिन्नसारे परमिह कुशलं कर्म धर्मप्रधानं
धर्मः शर्मप्रदोऽपि प्रभवति सुधियां सिद्धये शुद्धिहेतोः।
शुद्धौ बद्धस्पृहाणां न भवति कृतिनां यद्विनाऽऽपद्विनाश-
स्त्रैलोक्याप्यायकं तज्जलमपि भगवन् विभ्रमस्ते नमस्ते॥ ३३/३७

यं मुक्त्वा जीवयन्तं जगदगदमदः सन्ततं सन्तमन्त-
र्जन्तूनां शीतभीतिप्रकटितविपदामस्ति न स्वस्तिहेतुः।
गीर्वाणानां हविर्भिर्ग्लपयति विपदं यज्वनामप्यनल्पैः
संकल्पैः कल्पितैर्यः स भवति विभवः पावकस्ते नमस्ते॥ ३३/३८

अन्तः सन्तिष्ठमानः स्थगयति जगतां पञ्चतां पञ्चधा यः
संधाय स्थायिभावं प्रसरति सततं यत्र तेजस्विचक्रम्।
यत्र स्थैर्यं बिभर्ति त्रिभुवनभवनं बिभ्रदाधारभूतां
भूतानां मूर्तिमेष प्रथयति विभुतां मारुतस्ते नमस्ते॥ ३३/३९

यत्र ब्रह्माण्डपिण्डः प्रसरति सरलालाबुतुम्बीविडम्बी
स्थैर्यं झाङ्कारि वारि प्रथयति तदपि स्कन्धबन्धेषु यस्य।
सोऽपि स्फारेण भर्तुं प्रभवति पवनो यस्य नोद्देशलेशं
धाम्नामाधारभूतं भव भवति वपुस्तन्नमस्ते नमस्ते॥ ३३/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धातुश्चातुर्यभाजो जनजननविधौ या मुखेभ्यश्चतुर्भ्यः
साकं नाकस्थितानामजनिषत कृतप्रीतयः स्फीतभासाम्।
तासामासां श्रुतीनां जनयति नियतं कर्मभिः शर्मकृद्भिः
साफल्यं यः स यज्वा वपुरधृत-विपत्संगमस्ते नमस्ते॥ ३३/४१

प्रेङ्खद्भिर्यन्मयूखैर्विदधति धवले निर्जराः प्राणयात्रां
प्रोद्दामानन्दधाम प्रथयति बहुले पारणं यः पितॄणाम्।
कुर्वन्नुर्वन्तरिक्षं प्रशमिततिमिरं यः समस्तौषधीनां
पीनां पुष्णाति भातिं तनुरतनुरसौ चन्द्रमास्ते नमस्ते॥ ३३/४२

प्रातः प्राभञ्जनेऽस्मिन्पथि पथिकमिव ध्वान्तकान्तारताम्य-
ल्लोकालोकार्पणार्थं प्रमुदितमुदितं यं समर्चन्ति सन्तः।
सायं ध्यायन्ति संध्याविधिमधि सुधियो बाधिताधिं समाधिं
साधिम्नाऽधिष्ठितायं त्वमिह स मिहिरः सद्गभस्ते नमस्ते॥ ३३/४३

दिग्देशाकारकालैरकलितविभवं यन्महद्बीजभूतं
भूतग्रामस्य यस्य त्रिभुवनविषयं वस्तुजातं विवर्त्तः।
यस्मिन्हेम्नीव नानाभरणपरिकरो लीयते विश्वमन्ते
तद्भिन्नेष्वप्यभिन्नं भव भवसि परं ब्रह्म तस्मै नमस्ते॥ ३३/४४

इत्थं मत्सूक्तयस्ते शशधरशिखर स्फारसारस्वतौघ-
प्रोन्मीलद्वक्त्रशुक्तिस्खलदमलमिलन्मौक्तिकव्यक्तिभाजः।
तीव्रापत्तापताम्यत्सहृदयहृदय- क्लान्तिशान्तिप्रगल्भा
दर्भाग्रस्पर्द्धिबुद्धिग्रथितदृढगुणाः कर्णपूरीभवन्तु॥ ३३/४५

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'कर्णपूरं' नाम त्रयस्त्रिंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ चतुस्त्रिंशं स्तोत्रम्

अग्र्यवर्णस्तोत्रम्

❀❀❀

सर्पत्कन्दर्पदर्पज्वरभरहरणव्यग्रवर्चः प्रपञ्च-
प्रत्यग्रब्रध्नचन्द्रज्वलदनलवलत्पक्ष्मलत्र्यक्षवक्त्रः।
शर्वस्तर्षप्रकर्षश्रमशमनमनस्तर्पणस्वर्णवर्ष-
स्वस्थं तन्वन्सहर्षं जनमनघमघः कल्पयत्वक्षयं वः।। ३४/१

यद्द्वन्द्वं प्रसन्नं लसदसमरसस्पन्दसन्दर्भगर्भं
मङ्गल्यं नर्मनद्धं तव वचनमदः शस्यमस्यत्कलङ्कम्।
तद्वद्धर्गस्य वर्यं शशधरशकलं द्युत्ववद्यं कपर्द-
न्यस्तं वक्त्रं प्रशस्तं प्रबलतमतमःखण्डनं मण्डनं वः।। ३४/२

षट्चक्रस्थः षडध्वप्रसरसरभसः सर्गबन्धप्रगल्भः
प्रत्यग्रप्रह्वनव्यस्तवपठनपर- ब्रह्मसच्चक्रशक्रः।
दक्षक्रत्वन्तकत्वं दधदधममदध्वंसलक्ष्यप्रशंसः
संसर्गध्वस्तपङ्को गणगणमचलं कल्पयन् हन्त्वशं वः।। ३४/३

वक्षः सद्मस्थपद्मं करकमलतलप्रज्वलच्छङ्खचक्रं
कंसघ्नं सर्पतल्पं खगवरवहनं नन्दयत्यर्धगं यः।
धर्मं बध्नन्ध्वजस्थं करगतकलशं वर्ष्म यश्च व्रतस्थं
शंसन्तं संस्मरन्तं नतमनवरतं सोऽव्ययः स्यत्वघं वः।। ३४/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

संरक्षन्भक्तवर्गं यमभटभयतः सभ्यमभ्यर्णलभ्यं
धन्यंमन्यं वदन्यं प्रणयपरवशं पर्षदग्र्यव्यवस्थम्।
वर्षत्वच्छिन्नचञ्चद्गरगवलगलः कस्थरङ्गत्तरङ्ग-
स्वर्गङ्गः शश्वदङ्कस्थलगतनगजस्त्र्यम्बकः सम्पदं वः।। ३४/५

अम्भः कम्प्रं कटप्रं सबहलगरलं पन्नगं कण्ठलग्नं
ग्रथ्नन्मह्यम्नभस्वत्खरकर- दहनस्वर्क्षपत्यम्बरत्वम्।
स्कन्धस्थं चर्म भर्मप्रभमलकचयं चन्दनत्वं प्रपन्नं
प्रत्यङ्गं भस्म सप्तच्छददलधवलं स्यत्वजः कल्मषं वः।। ३४/६

सद्यः संन्यस्तगर्वग्रहमहतमहस्त्यक्तसङ्गप्रसङ्गं
सत्त्वस्थं लब्धतत्त्वं मलशबलगलत्सर्वसम्बन्धबन्धम्।
यत्सम्पर्कप्रयत्नक्षममलयदयं तथ्यपथ्यप्रसक्तं
यच्छत्वच्छं मनस्तत्स्मरहरचरणद्वन्द्वनम्रस्य शं वः।। ३४/७

सत्यं नश्यत्यवश्यं घनमघपटलं यत्पदस्पर्शबद्ध-
श्रद्धस्य स्पष्टकष्टप्रशमनमनसः कस्य न व्यक्तकल्कम्।
तस्य व्यस्यत्वशं वः सितकरशरणं मस्तकं ध्वस्तकम्पं
सम्पत्सम्पर्करम्यप्रभमभयकरस्यर्षभस्यन्दनस्य।। ३४/८

अत्यन्तस्वच्छमन्तःकरणमशरणप्रत्तरक्षं समक्षं
व्यञ्जन्भञ्जन्नजस्त्रं नयनतवदनस्तम्भसंरम्भदम्भम्।
सर्वज्ञः सत्त्वसंघक्लमकरणचणं जन्मकर्मप्रबन्धं
मथ्नन्नत्यर्थमर्थं क्षतसकलमलं वर्धयत्वव्ययं वः।। ३४/९

गल्वर्कप्रस्थपस्त्यं धरमथमलयं मन्दरं सह्यमन्त-
र्नन्दद्गन्धर्वयक्षं सकनककटकं कल्पतर्वन्तरङ्गम्।
भद्रं सङ्क्रन्दनस्य प्रहसनसदनं नन्दनं स्वर्गरङ्गं
गच्छन्स्वच्छन्दचर्यः परबलदलनस्तर्पयत्वन्वहं वः।। ३४/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पद्मस्थं पद्महस्तं गजवरवदनं नन्दनं स्कन्दसंज्ञं
पर्जन्यं हंसमब्जं दशशतनयनं हव्यभक्षं सदण्डम्।
रक्षःप्रख्यं जलस्थप्रथमथ पवनं मर्त्यपत्त्रं मखघ्नं
संपश्यत्यत्यजन्तं चरणतलमलं यः स कर्षत्त्वघं वः॥ ३४/११

अव्यक्तं यः समग्रं जगदगनगरं व्यञ्जयत्यब्जजः स-
न्यः संरक्षत्यनन्तः स्मरयमदमनः संहरत्यक्रमं यः।
स त्र्यक्षस्तन्त्रमन्त्रप्रणयनसफलग्रन्थकर्मण्यखर्व-
ज्ञत्वः सद्गम्यवर्त्मप्रकटनपरमः स्पर्शयत्वद्वयं वः॥ ३४/१२

द्रष्टव्यं सम्यगर्थप्रवचनपरमं शर्मदं पद्यबद्धं
प्रष्ठप्रज्ञप्रशस्यं नमदमरवरः शङ्करः सङ्करघ्नः।
वर्षन्तं भग्नघर्मं प्रमदमयपयः सत्यसङ्कल्पजल्प-
श्रव्यं भव्यं वसव्यं नवमवगमयत्वग्र्यवर्णस्तवं वः॥ ३४/१३

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'अग्र्यवर्णं' नाम चतुस्त्रिंशं स्तोत्रम्।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ पञ्चत्रिंशं स्तोत्रम्

ईश्वरप्रशंसास्तोत्रम्

❀❀❀

अनाथानां नाथो गतिरगतिकानां व्यसनिनां
विनेता भीतानां शरणमधृतीनां भरवशः।
सुहृद्बन्धुः स्वामी शरणमुपकारी वरगुरुः
पिता माता भ्राता त्रिजगति जयत्यन्तकरिपुः॥ ३५/१

उदारैर्मन्दारैरचितशिखरं चन्द्रशिखरं
समभ्यर्च्य प्रेम्णा विपुलपुलकालङ्कृततनुः।
कदा गन्धाबन्धप्रमदमुदितोद्दाममधुप-
स्फुरद्गुञ्जागर्भैर्विभुमभिभजेयं नुतिपदैः॥ ३५/२

इतो द्वन्द्वक्लेशा विषयमृगतृष्णास्थितिरितो
जरामृत्युव्याधिप्रतिभयमितः सर्वसुलभम्।
महामोहैर्घोरैरुपहतमितो बोधलसितं
कथं कुर्यादार्यः कृतमतिरपि स्वात्मनि हितम्॥ ३५/३

अशेषक्लेशौघग्लपनपरिपन्थी प्रकटय-
न्नयं विघ्नव्रातः प्रबलविपदापादनविधिम्।
विवेकाख्यं चक्षुस्तिरयति सतां येन सहसा
भवश्वभ्रे पातः प्रतिपदमदभ्रः प्रभवति॥ ३५/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भवद्भक्तिं तस्य व्युपशमसमर्थामथ दृशः
प्रसादं तन्वानां घनमहसमासाद्य सुधियः।
प्रकाशात्मानं त्वामतिविमलया हंसमुदितं
दृशा साक्षात्कृत्य प्रतिजहति मोहान्धतमसम्।। ३५/५

अनित्ये नित्याशामशुचिनि शुचित्वव्यसनिता-
मनात्मन्यात्मास्थामथ महति दुःखे सुखमतिम्।
चतुर्धा दुर्भेद्यामविरतमविद्यां परिणतां
हताशेषस्वाभाममभिदधति मूलं भवतरोः।। ३५/६

नरास्तत्त्वालोके नियतमनया दूषितदृशो
विवेकप्रध्वंसाद्विदधति भवे कन्दुकगतिम्।
उपासाभिर्लब्ध्वा भवभयभिदं निर्मलधियः
समाधिं साधिम्ना दधति न पुनर्जन्मविपदम्।। ३५/७

चकाशे नाकाशे रविरविरलैरंशुपटलै-
रमन्दाभैरिन्दुस्तिमिरमहरन्नापि किरणैः।
न चान्यन्नक्षत्रग्रहदहनरत्नौषधितडि-
त्प्रदीपादिज्योतिः क्वचिदपि पुरा नाथ ददृशे।। ३५/८

तमोभूतं विश्वं किमपि गहनं धाम तदभू-
दथ स्वेच्छाशक्तिप्रकटितमहावैभवभरम्।
विभज्यात्मानं क्ष्मावनपवनवह्नीन्दुतपन-
स्वखैरंशैरीश त्रिजगदसृजत्कस्त्वदपरः।। ३५/९ (युग्मम्)

अनादौ संसारे विदधति रजोबाधितधियः
शुभं वा घोरं वा शबलमथ वा कृत्यमणवः।
ततस्तद्भोगार्थं तरुणकरुणापूर्णहृदयो
विधत्से यत्तेषां तनुभुवननिर्माणमखिलम्।। ३५/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तदेतत्सङ्कल्पप्रकटितसमस्तत्रिजगतः
प्रभोर्लीलामात्रं भुवन-महनीयस्य भवतः।
तवैकस्य स्वामिन्यदिह सहजे सर्वविषये
क्रियाज्ञाने नित्ये करण-निरपेक्षे प्रभवतः॥ ३५/११

(युग्मम्)

प्रसिद्धोऽयं पन्था न भवति विचित्रा विरचना
विना यत्कर्तारं स च न भवति ज्ञानरहितः।
अतोऽवश्यं कर्ता त्रिजगति विचित्रे ज्ञ उचितः
स च त्वं त्वय्यन्ये किमिव विवदन्ते हतधियः॥ ३५/१२

अथैवं चेद्ब्रूयुः किमयमपरप्रेरितमतिः
स्वतन्त्रो वा देवस्त्रिभुवनविधाने प्रयतते।
अमुष्याद्ये पक्षे नहि परविधेयस्य विभुता
परस्मिन्पक्षे वा फलमपि किमुद्दिश्य यतते॥ ३५/१३

अथास्येयं वाञ्छा प्रभवति न कर्मक्षयमृते
नृणां मुक्तिः सोऽपि क्वचन न विना भोगमुचितः।
विनाधारं भोगो न भवति वपुर्नापि भुवनं
ततोऽर्हं जन्तूनां तनुभुवननिष्पादनमिति॥ ३५/१४

इदं युक्तं सान्द्रामृतमधुरयाऽन्तः करुणया
प्रयुक्तस्याऽजस्त्रं परहितविधानव्यसनिनः।
दयालुश्चेल्लोकं सृजति सकलं किं न सुखिनं
कुतो वाऽऽधिव्याधिक्षत इह जनोऽनेन जनितः॥ ३५/१५

अथोपादानं यद्भवति परमाण्वादि जगत-
स्तथा कर्माऽनेहःप्रभृति सहकार्येतदुभयम्।
विना सृष्टौ नैष प्रभवति यदीशः किममुना
तदेवाऽस्तु व्यक्तं तनुभुवननिर्माणनिपुणम्॥ ३५/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इतीत्थं मुग्धानामिह मतिविमोहाय कुधियः
कुतर्कप्रागल्भीमुखरितमुखा मूढमनसः।
अधिष्ठातारं त्वां वरद जडवर्गस्य सदयं
न जानन्ति स्वामिन् परमपुरुषं चेतनममी।। ३५/१७

यथोपादानं मृत्तदनु सहकारीह लगुडो
जलं चक्रं सूत्रं वरद जडवर्गोऽयमखिलः।
न यत्नं कौलालं प्रभवति विना कुम्भघटने
तथाधिष्ठातारं न भवति विना त्वां भवविधिः।। ३५/१८

अविज्ञायैवाऽज्ञः परुषविषमं कर्म कुरुते
विपाके तस्यासौ निपतति भवक्लेशकलिले।
अतो ज्ञानालोकः प्रकटितसमस्तार्थगहनो
महामोहध्वान्तव्यवहितदृशोऽवश्यमुचितः।। ३५/१९

उपायस्तत्प्राप्तौ भवति न विना शास्त्रमपरो
न शास्त्रं तत्स्वामिन्निह यदुपदिष्टं न भवता।
विविञ्चन्तः सन्तो हितमहितमेते विदधते
हिते सक्तिं मुञ्चन्त्यहितमिति नार्हन्ति पतनम्।। ३५/२०

भवान्धर्मं साक्षादकृत सहजज्ञानमहसा
तमोध्वंसं पुंसामथ तदुपदेशेन विदधे।
प्रमाणं चोक्तिस्ते नहि घनघृणानिघ्नमनसो
जगद्धर्त्तुर्युक्तं वितथमभिधातुं भगवतः।। ३५/२१

तदेतत्कारुण्यं घनतमतमःपङ्कपटली-
विलीनोऽयं लोकस्तव वरद संभाव्य सहजम्।
दधच्छ्रद्धाबन्धं त्वदुदितमनुष्ठातुमसकृत्
प्रवृत्तो दुष्पारं हर तरति संसारजलधिम्।। ३५/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इत्येवं भगवन्नबन्ध्यमहिमा निर्माय निर्मानुषं
विश्वं विश्वसितं वितत्य तदनु स्फीतैर्विभूतिक्रमैः।
संहृत्याथ निजे महिम्नि निखिलं तत्कन्दुकान्दोलन-
क्लेशावेशविरामसंभृतसुखं कैवल्यमाकाङ्क्षसि॥ ३५/२३

इत्थं कि बहुना त्वदङ्घ्रिकमलद्वन्द्वप्रसादादिदं
भूयान्मे भवभीतिभञ्जन विभो भक्तानुकम्पापर।
यत्त्वत्पादसरोजपूजनविधौ भक्तिर्विरोगं वपु-
र्यावज्जीवमथ त्वदेकमनसो मुक्तिस्तवैवाग्रतः॥ ३५/२४

एवं देव तव स्तुतिप्रवचनप्राप्तप्रसादस्य मे
भूयो जन्म भविष्यतीति भगवन् मन्ये खपुष्पोपमम्।
स्याच्चेत्प्राक्तनकर्मशेषजनितं तन्नाथ किं भूयसा
भूयासं भवदीयपादकमलस्तुत्या पुनर्निर्वृतः॥ ३५/२५

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'ईश्वरप्रशंसा' नाम पञ्चत्रिंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ षट्त्रिंशं स्तोत्रम्

स्तुतिफलप्राप्तिस्तोत्रम्

❀❀❀

ते नाथ जन्म सकलं न कलङ्कयन्ति
न द्रोहकर्मरसिकानपि शङ्कयन्ति।
तान्सस्पृहं मृगदृशः प्रविलोकयन्ति
ये त्वत्पदाब्जरजसाऽलिकमङ्कयन्ति॥ ३६/१

ते विद्विषामभिमतं हृदि मोघयन्ति
ज्ञानामृतं च कृपणेषु समर्पयन्ति।
तेषां वचः क्षितिभुजोऽपि न लङ्घयन्ति
ये त्वां स्तवोक्तिकुसुमर्द्धिभिरर्चयन्ति॥ ३६/२

ते जन्मनः फलमनल्पमुदञ्चयन्ति
क्लेशापदः स्वमपरं च विमोचयन्ति।
तान्वैरिणः सहभुवोऽपि न वञ्चयन्ति
ये त्वामनाथजनबान्धवमर्चयन्ति॥ ३६/३

ते धर्ममिन्दुकरसुन्दरमर्जयन्ति
गीर्भिर्विदग्धहृदयान्यपि रञ्जयन्ति।
तानन्तकभ्रुकुटयोऽपि न तर्जयन्ति
ये त्वां भवामयहरं हर पूजयन्ति॥ ३६/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते त्वत्स्तुतिं हृदयधाम्नि कवाटयन्ति
दुःखद्रुमं च दृढमापदि पाटयन्ति।
भावं तवैव भुवि बालमिवाटयन्ति
ये वाङ्नटीमभिमुखं तव नाटयन्ति॥ ३६/५

ते कर्मरज्जुनिगडं ह्यतिखण्डयन्ति
सूक्तैः श्रुतीर्बुधजनस्य च मण्डयन्ति।
त्वद्भक्तिमप्यधिभवाब्धि तरण्डयन्ति
ये त्वन्मनः स्तुतिधनस्य करण्डयन्ति॥ ३६/६

पापानि तेऽश्मशकलानि व चूर्णयन्ति
गीर्भिर्भ्रुवः सुमनसामपि घूर्णयन्ति।
लोके निजानि च यशांस्युपकर्णयन्ति
ये धीमतां नुतिकथास्तव वर्णयन्ति॥ ३६/७

ते मारकानपि न संयति घातयन्ति
कारुण्यतः कृतरुषोपि न यातयन्ति।
लोकस्य शोकमभयेन च शातयन्ति
ये शेखरं चरणयोस्तव पातयन्ति॥ ३६/८

ते पापपाशमधिकं हृदि कर्तयन्ति
भोगस्पृहां च विषयेषु निवर्तयन्ति।
सूक्तैः सचेतनमनांस्यपि नर्तयन्ति
ये चन्द्रचूडचरितं तव कीर्तयन्ति॥ ३६/९

ते जान्मिकानि दुरितान्यवसादयन्ति
सूक्तानि निर्मलमतीननुवादयन्ति।
गीतानि वैणिकनटानपि नादयन्ति
ये भक्तितस्तव नुतीः प्रतिपादयन्ति॥ ३६/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते सत्सु कर्मसु रिपूनपि चोदयन्ति
गीर्भिः सतां च हृदयानि विनोदयन्ति।
तेषां शुचः क्वचन चेतसि नोदयन्ति
ये तावकानि चरितान्यनुमोदयन्ति।। ३६/११

ते विग्रहोग्रमनसोपि न खेदयन्ति
मोहं दृढार्गलनिभं हृदि भेदयन्ति।
स्वं कौशलं मृदुमतीनपि वेदयन्ति
सूक्तानि ये तव निजानि निवेदयन्ति।। ३६/१२

ते भेजुषां भवति भक्तिममन्दयन्ति
वाग्वीरुधस्त्वयि रतिं हृदि कन्दयन्ति।
त्वामन्यदर्शनगतानपि वन्दयन्ति
ये वाग्भरेण हृदयं तव नन्दयन्ति।। ३६/१३

ते भुक्तिमुक्तिसफलर्द्धिं विवर्द्धयन्ति
सत्कर्म शर्म शमिताधि च साधयन्ति।
ये त्वां नवैरभिनवैरभिराधयन्ति
यानिक्षुसारमधुरान् सुधियो धयन्ति।। ३६/१४

ते संगरे गुरुरुषोऽपि न योधयन्ति
ज्ञानामृतेन हृदयं च विशोधयन्ति।
रोषोद्भवं हृदि रिपोरपि रोधयन्ति
ये त्वां निजा नुतिकथाः प्रतिबोधयन्ति।। ३६/१५

ते दुर्मदान्बुधसदस्यवमानयन्ति
प्रौढान्प्रणम्य विनयेन च मानयन्ति।
तान्भूतयः स्वयमनन्यसमानयन्ति
ये वासरांस्तव नवैः सशमा नयन्ति।। ३६/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते निर्भये नतिमतः पथि यापयन्ति
नोत्कम्पदानपि रिपूनुपतापयन्ति।
क्लेशापदं पशुसमानपि हापयन्ति
ये त्वां प्रसाद्य दृशमीश्वर दापयन्ति॥ ३६/१७

ते दुर्मदं शमनमुग्रमदर्पयन्ति
गर्धं च साधुसदनादपसर्पयन्ति।
दानादिनार्थिनिवहानपि तर्पयन्ति
ये तावके मुकुटमङ्घ्रितलेऽर्पयन्ति॥ ३६/१८

ते सद्गृहेषु गुरुमापदमल्पयन्ति
स्वं चाशयं शिशयिषोस्तव तल्पयन्ति।
आर्तिस्पृशामुपकृतीरपि कल्पयन्ति
ये बालकानपि नवं तव जल्पयन्ति॥ ३६/१९

ते सापराधमनसोऽपि न कोपयन्ति
तापं ह्रिया विपुलमापदि गोपयन्ति।
त्वद्धाम चामलमतीनधि रोपयन्ति
ये नार्चनं तव कदाचन लोपयन्ति॥ ३६/२०

ते शक्तिमप्रतिहतां भुवि जृम्भयन्ति
प्रीतिं परां कृतमतीनुपलम्भयन्ति।
वंशत्रयीमपि निजामभिशोभयन्ति
ये त्वां निजासु नूतिसूक्तिषु लोभयन्ति॥ ३६/२१

ते मग्नमार्त्तजनमापदि तारयन्ति
बुद्ध्या विमृश्य सदसच्च विचारयन्ति।
अज्ञानमानतिमतां च निवारयन्ति
त्वद्भक्तिमिन्दुधर ये हृदि धारयन्ति॥ ३६/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते विद्विषः स्थिररुषोऽप्यनुकूलयन्ति
मोहं महीरुहमिव प्रविमूलयन्ति।
आज्ञां च मूर्ध्नि महतामवचूलयन्ति
ये भालमङ्घ्रिरजसा तव धूलयन्ति॥ ३६/२३

ते पङ्कमङ्कगतमात्मनि धावयन्ति
दिङ्मण्डलं च परितः परिपावयन्ति।
क्लेशान् क्षणात्तृणगणानिव लावयन्ति
ये त्वां प्रकाशवपुषं हृदि भावयन्ति॥ ३६/२४

ते पीवरीं विपदमोकसि कर्शयन्ति
स्वं कौशलं सुमनसश्च विमर्शयन्ति।
प्रीतिं सतां च हृदयेषु निवेशयन्ति
ये त्वस्तुतीर्विबुधसद्मसु दर्शयन्ति॥ ३६/२५

ते निर्मलं सुकृतमात्मनि पोषयन्ति
दुष्कर्मकर्दममलं हृदि शोषयन्ति।
क्रूरान् विरोधविधुरानपि तोषयन्ति
ये नाम ते शिवशिवेत्यभिघोषयन्ति॥ ३६/२६

ते विश्वमेव चरितैरभिभूषयन्ति
क्रुद्धान् विरुद्धहृदयाँश्च न दूषयन्ति।
नात्युद्भटान्यमभटानपि रोषयन्ति
रागेण ये शिव मनस्तव तोषयन्ति॥ ३६/२७

ते त्वां कृपाम्बुतृषिते हृदि वर्षयन्ति
स्वान्तौकसोऽघभुजगानपि कर्षयन्ति।
कम्पं विधाय च यमं भ्रुवि धर्षयन्ति
ये त्वां निजैर्नुतिपदैर्हर हर्षयन्ति॥ ३६/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते मौनमुद्रितगिरोऽप्युपहासयन्ति
गीर्भिर्मुखानि सुधियामधिवासयन्ति।
विश्वं यशोभिरमलैरभिभासयन्ति
ये मानसं तव नवैः प्रविकासयन्ति॥ ३६/२९

ते चित्तभित्तिमसतामपि चित्रयन्ति
रोषोद्धतानरिजनानपि मित्रयन्ति।
सूक्तामृतैश्च भुवमेव पवित्रयन्ति
वाङ्नावि ये तव चरित्रमरित्रयन्ति॥ ३६/३०

चेतांसि ते सुकृतिनामुपबृंहयन्ति
बाह्यान्तरानसुहृदश्च निबर्हयन्ति।
नात्मानमानतमरीनपि गर्हयन्ति
ये त्वां नवस्तवविभूतिभिरर्हयन्ति॥ ३६/३१

आत्मानं ते कलुषकलिले मग्नमुच्चालयन्ति
ज्ञानाम्भोभिर्मलमलिकुलश्यामलं क्षालयन्ति।
स्मृत्वा च त्वां प्रमदरभसादंसमास्फालयन्ति
त्वद्भक्त्या ये सकलमलसं चित्तमुत्तालयन्ति॥ ३६/३२

ते रामाणां मनसि मदनं सुप्तमुन्निद्रयन्ति
श्लाघां लब्धुं सदसि च सतां चत्तमुन्मुद्रयन्ति।
तानुद्वृत्ताः कुटिलमतयो न क्वचिच्छिद्रयन्ति
त्वच्चित्तं ये वरद करुणाक्रन्दितैरार्द्रयन्ति॥ ३६/३३

ते सभ्यानां सदसि नयनान्यश्रु विस्रावयन्ति
क्रोधोत्कर्षं गुरुमुरुरुषां दूरमुत्प्रावयन्ति।
चेतः सूक्तैर्मणिमिव सतामैन्दवं द्रावयन्ति
स्वामिन्ये त्वामभिनवनवव्याहृतीः श्रावयन्ति॥ ३६/३४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तेषां सूक्तीरमलमतयः पूगवच्चर्वयन्ति
क्रूराणां ते मदमभिमुखं प्रेङ्खितं खर्वयन्ति।
तान्विद्वांसस्तव नवसुधास्वादनायाह्वयन्ति
त्वत्पादाग्रे मुदितमनसो ये शिरः प्रह्वयन्ति॥ ३६/३५

ते दुर्वृत्तानपि न कृपया पेशलाः क्लेशयन्ति
ग्लानिं ज्ञानां व्यसनजनितामाशये नाशयन्ति।
तृष्णार्त्तानप्यमृतमधुराः स्वा गिरः प्राशयन्ति
त्वामन्तर्ये शकलितकलिक्लेशमावेशयन्ति॥ ३६/३६

ते रागादीन्मनसि मिलितानाशु विश्लेषयन्ति
क्रोधान्धानप्यतनुविनया न क्वचिद्द्वेषयन्ति।
मोहध्वान्तं घनमधिमतिव्योम निःशेषयन्ति
त्वत्पार्श्वं ये गिरमभिमतप्राप्तये प्रेषयन्ति॥ ३६/३७

ते निर्वेदं मनसि शमिनामद्भुतं ह्रासयन्ति
त्रस्तानस्तंगमितविपदः शश्वदाश्वासयन्ति।
त्वद्भावैकप्रवणभणितैरन्तकं त्रासयन्ति
स्तुत्या ये त्वां नतजनहृतत्रासमुल्लासयन्ति॥ ३६/३८

ते तज्ज्ञानां परिषदि गुणानात्मनः शंसयन्ति
स्वान्ते चान्तर्यमभुजगजं साध्वसं ध्वंसयन्ति।
क्लेशान्पाशानिव च निबडानाशु विस्त्रंसयन्ति
प्रौढानां ये तव नुतिमधिश्रोत्रमुत्तंसयन्ति॥ ३६/३९

ते त्वद्भक्तिव्यसनमनघं कर्म निर्वाहयन्ति
त्वत्सेवासु स्थिरमविरतं चित्तमुत्साहयन्ति।
स्वं चाघौघं यममदनवत्त्वद्दृशा दाहयन्ति
त्वां विज्ञप्तिं स्वयमवहितं येऽन्वहं ग्राहयन्ति॥ ३६/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते तक्षाणं तरुमिव गुरुं त्वामघं तक्षयन्ति
प्राप्तुं तृप्तिं शुभफलभरं निर्भरं भक्षयन्ति।
प्रत्यासन्नां श्रियमपि धिया तीक्ष्णया लक्षयन्ति
त्वद्भक्तान्ये श्रुतिमिव नुतिं तावकीं शिक्षयन्ति॥ ३६/४१

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'स्तुतिफलप्राप्तिस्तोत्रं' नाम षट्त्रिंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ सप्तत्रिंशं स्तोत्रम्

स्तुतिप्रशंसास्तोत्रम्

❀❀❀

इह हि स्वात्ममहेश्वर-
परिभावनशुद्धसंविदः सुधियः।
कमलदलानि जलैरिव
बहिरावरणैर्न लिप्यन्ते।। ३७/१

कविमुखकमलोपवने
कृतवसतिर्जयति सूक्तिकल्पलता।
या फलति भुक्तिमुक्ती
शिवभक्तिसुधारसासेकैः।। ३७/२

जय जय हर रक्ष भया-
देवं देवं शिवं शिवं लब्धुम्।
यः स्तौति तस्य सफलः
सारः सारस्वतः स्वतः स्फारः।। ३७/३

शिव शिव शङ्कर शङ्कर
भव गतिरिति यः प्रलापमुखरमुखः।
तस्य हि सफला दिवसाः
शिवसायुज्यं च हस्तगतम्।। ३७/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

इह खलु पशुपतिनुतिभिः
कतिपयमपि यः कृतार्थयति कालम्।
सकलकलिकलुषमुक्तो
जीवन्मुक्तः स किं बहुना॥ ३७/५

उपचितकुशलश्रेणिः
परमपदारोहणैकनिश्रेणिः।
जयति महामृतवेणि-
र्विबुधजनाह्लादिनी नुतिः शम्भोः॥ ३७/६

किमियं सद्गुरुदृष्टि-
र्ह्लादैकमयी नु किं जगत्सृष्टिः।
किं वा निरभ्रवृष्टिः
श्रवणामृतवर्षिणी नुतिः शम्भोः॥ ३७/७

अक्षयसुखोपभुक्तिः
परमशिवावाप्तये नवा युक्तिः।
यदि वा जीवन्मुक्तिः
श्रवणामृतवर्षिणी नुतिः शम्भोः॥ ३७/८

क्षेत्रं तदिह पवित्रं
तत्तीर्थं पावनं तदायतनम्।
तदिह तपोवनमनघं
यत्र नुतिः शांभवी श्रुतिं विशति॥ ३७/९

सा क्रीडा सा गोष्ठी
सा विश्रान्तिः स भूमिकालाभः।
साऽखिलदुःखनिवृत्ति-
र्यत्र नुतिः शांभवी श्रुतिं विशति॥ ३७/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तद्ध्यानं स समाधिः
स महायागस्तदर्चनं सकलम्।
सा खलु परमा दीक्षा
यत्र नुतिः शांभवी श्रुतिं विशति॥ ३७/११

यदि पारिजातकुसुम-
स्तवकस्तव कर्णयोरलङ्करणम्।
भवितुं भवति न सुलभः
श्रुतिपथमेता नय स्तुतीः शम्भोः॥ ३७/१२

अभिलषसि यदि निरोद्धुं
पवनादपि दुर्ग्रहं मनोहरिणम्।
तदिमा गृहाण निभृतं
दृढगुणगुणगुम्फिताः स्तुतीः शंभोः॥ ३७/१३

यदमृतमम्बुधिमन्थन-
समुत्थितं तस्य कः स्विदास्वादः।
इति यदि हृदि तव कौतुक-
माकर्णय तत्स्तुतीरिमाः शंभोः॥ ३७/१४

विषयोपभोगरहितः
सहजो ह्लादः सतां मतो मोक्षः।
तमपि यदीच्छसि वेदितु-
मवहितहृदयः शृणु स्तुतीः शम्भोः॥ ३७/१५

अशुचि शुचामायतनं
मलकलिलमिदं कलेवरं सत्यम्।
भगवदुपासनसाधन-
मिति भवति न कस्य कमनीयम्॥ ३७/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यदि मनुषे यमनियम-
प्राणायामादि दुर्घटं कर्त्तुम्।
तदिमं सुगममुपायं
श्रय परमपदाप्तये नुतिं शम्भोः॥ ३७/१७

सिद्धं सम्यगभीष्टं
सत्यगिरामाशिषः सतां फलिताः।
लब्धं सुकृतस्य फलं
निर्व्यूढेयं यतः स्तुतिः शम्भोः॥ ३७/१८

मम सारः संसारः
सकलमिदं मर्त्यजन्म मम सफलम्।
मम सदृशोऽस्ति न कश्चन
यदहं स्तोता शिवस्य संवृत्तः॥ ३७/१९

प्रणमामि प्रणमामि
स्तौमि स्तौमि प्रभुं जगन्नाथम्।
ध्यायामि ध्यायामि च
यामि च विमलं परं धाम॥ ३७/२०

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'स्तुतिप्रशंसा' नामकं सप्तत्रिंशं स्तोत्रम्।

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ अष्टात्रिंशं स्तोत्रम्

पुण्यपरिणामस्तोत्रम्

❀❀❀

सहस्रशीर्षा पुरुषः पुनातु वः
सहस्रचक्षुर्भगवान् सहस्रपात्।
गलेऽङ्घ्रिमूले नयने च निश्चला-
स्त्रयोऽप्यमी यं पुरुषा उपासते॥ ३८/१

सरस्वतीवेन्दुकलोद्गता करैः
सरस्वतीव श्रवणामृतैः स्वरैः।
सरस्वतीवोर्मिभिरीश्वरस्तवैः
सरस्वती वर्षतु वः सुधामियम्॥ ३८/२

विमर्शशून्येन मया निरर्थकः
खलेन कालः सकलोऽतिवाहितः।
इदं त्वसारादतिसारमुद्धृतं
धृतं यदीशस्तुतिवेतनं मनः॥ ३८/३

न हृद्यतामेति परस्य दुर्मुखः
शिशुः स्रवत्पीनसदिग्धनासिकः।
पितुः स्वकीयस्य तु जीविताधिक-
स्तथोपहास्योऽपि ममाऽयमुद्यमः॥ ३८/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अवैमि भाग्योपचयः स पुष्कलः
स शक्तिपातः खलु पारमेश्वरः।
स वा महार्हो महतामनुग्रहो
यदीश्वराराधनसाधनं मनः।। ३८/५

अहो कृतार्थोऽस्मि मनोभिरामया
गिरा गुणालङ्कृतयेह रामया।
तनुः स्थिरेयं ध्रियते निरामया
भवे च यद्भक्तिरभङ्गुरा मया।। ३८/६

न विद्यया प्रीतिरनर्घमानया
तथा श्रिया वाऽन्वहमेधमानया।
शिवस्तवैकव्रतयाऽसमानया
यथा गिरा सान्द्रसुधासमानया।।। ३८/७

पुरः स्फुरन्तं विमृशन्महेश्वरं
विलीनवेद्यान्तरवेदनो दशाम्।
नवस्तवोल्लेखविधौ स्पृशामि यां
ममान्तरात्मा विभुरेव वेत्ति ताम्।। ३८/८

मनुष्यता पूरुषताऽग्र्यवर्णता
मनीषिता सत्कविता शिवैकता।
इयं मम क्षेमपरम्परा विभोः
स्तुतिप्रसङ्गेन गता कृतार्थताम्।। ३८/९

ध्रुवं नवानां रसगर्भनिर्भर-
ध्वनिर्घनानामनघेयमावलिः।
पृथुप्रभावं शशिखण्डमण्डितं
प्रहर्षिणं नीलगलं करिष्यति।। ३८/१०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यदि ह्ययोग्याश्चरणान्तिके वयं
तथापि नः प्राङ्गणसीमसेविनाम्।
चमत्करिष्यन्ति गिरः प्रभोरिमा
जनङ्गमानामिव गीतरीतयः।। ३८/११

परोपकारैरिव राजसेवनं
दरिद्रगार्हस्थ्यमिवार्थितर्पणैः।
इदं बहुक्लेशमपीश्वरस्तवै-
रवैमि वर्ष्म स्पृहणीयमात्मनः।। ३८/१२

सहस्रपत्रैरिव पल्वलोदकं
शिरः फणीन्द्रस्य मणिव्रजैरिव।
सदोषमप्येतदवैमि मानुषं
मनोरमं जन्म महेश्वरस्तवैः।। ३८/१३

मृगेन्द्रशावा इव कन्दरोदरा-
त्करीन्द्रकुम्भादिव मौक्तिकोत्कराः।
विनिःसरन्तः कवितुर्मुखादमी
मनोज्ञतां बिभ्रति कस्य न स्तवाः।। ३८/१४

मरालमाला सरसीव निर्मले
कुचस्थले हारलतेव सुभ्रुवाम्।
इयं भवत्वाभरणं महेश्वर-
स्तवावली वक्त्रसरोरुहे सताम्।। ३८/१५

इमां घनश्रेणिमिवोन्मुखः शिखी
चकोरकः कार्तिकचन्द्रिकामिव।
रथाङ्गनामा तरणेरिव त्विषं
स्तवावलीं वीक्ष्य न कः प्रमोदते।। ३८/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मधुव्रतः सौमनसीमिव स्रजं
सितच्छदः पङ्कजकर्णिकामिव।
पिको विकोषामिव चूतमञ्जरी-
मिमां न कश्चर्वयति स्तवावलीम्॥ ३८/१७

मनस्विनीनामिव साचि वीक्षितं
स्तनन्धयानामिव मुग्धजल्पितम्।
अवश्यमासां मधु सूक्तिवीरुधां
मनीषिणां मानसमार्द्रयिष्यति॥ ३८/१८

इयं मधुश्रीरिव केलिकाननं
सरोवरं प्रावृडिवातपक्षतम्।
स्तवावली काव्यकुतूहलं सता-
मकालजीर्णं तरुणीकरिष्यति॥ ३८/१९

विमत्सराणां सदसद्विवेकिनां
महात्मनां मूर्ध्नि धृतोऽयमञ्जलिः।
विलोकयन्तु प्रभुगौरवादिमां
प्रसादबुद्ध्या मयि वा स्तवावलीम्॥ ३८/२०

स्तवावलीढौकनकार्पणच्छला-
दलभ्यमभ्यर्णचरैः सुरैरपि।
प्रभोः पदस्पर्शमशङ्कमीप्सतो
विकत्थनत्वेपि न मे विडम्बना॥ ३८/२१

कलिमलमषीकल्माषोऽयं मनोमुकुरः पुरः
स्फुरितमपि न व्यक्तं वस्तु ग्रहीतुमभूक्षमः।
सपदि विशदैः शब्दब्रह्मोर्मिभिर्विमलीकृते
करबदरवत्पश्यामोऽस्मिन् समस्तमिदं जगत्॥ ३८/२२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आनन्दिनि स्तुवति नन्दिनि गूढमर्थं
देवश्चमत्कृतिकृताङ्गुलिभङ्गभङ्गिः।
अङ्गस्थितां भगवतीमधिरूढहासा-
मासामवश्यमवबोधयति स्तुतीनाम्॥ ३८/२३

मन्ये मनोवचनकर्मभिरद्भुतानि
यान्यूर्जितानि सुकृतानि पुराकृतानि।
एतानि तानि शिवभक्तिपवित्रितानि
कर्णामृतानि फलितानि सुभाषितानि॥ ३८/२४

एते प्रभोः प्रमथभर्त्तुरभीष्टमष्टा-
त्रिंशत्स्तवा विमृशतां विदुषां दिशन्तु।
तेनैव दृक्षु धृतघर्मकरामृतांशु-
सप्तार्चिषामिव कलाः सकलार्थलाभम्॥ ३८/२५

अयमिह किङ्करेण रचितश्चरणाम्बुजयोः
'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' - र्भगवतस्तरुणेन्दुभृतः।
अविरलभक्तिसिक्तनवसूक्तिलताऽवचितः
कलयतु सौरभेण सुकृतां स्पृहयालु मनः॥ ३८/२६

अयि प्रमथनायक त्रिजगतामधिष्ठायक
प्रसन्नमुख षणमुख त्रिदशवन्द्य नन्दीश्वर।
निवेदयत भक्तितश्चरणकिङ्करेणाऽर्पितं
पुरः पुररिपोरिमं विकचवाक्यपुष्पाञ्जलिम्॥ ३८/२७

इति परिषदि सिंहस्यन्दन-स्कन्द-नन्दि-
प्रभृतिभिरभिराद्धैर्वन्द्यमावेद्यमानम्।
स्तुतिकुसुमसमूहं प्राभृतीकृत्य शंभो-
र्यदमलमुपलब्धं शर्म तेनेदमस्तु॥ ३८/२८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भुवि भुवि कुविकल्पः स्वल्पतामेतु जेतुं
धुरि धुरि दुरितौघं वर्द्धतां शुद्धबोधः।
पथि पथि मथितोग्रव्यापदापन्नतापा
नरि नरि परिपूर्णा जृम्भतां शम्भुभक्तिः॥ ३८/२९

इति शुभं भगवच्चरितस्तुति-
व्यतिकरेण यदर्जितमूर्जितम्।
भवतु तेन मनस्यनपायिनी
सुकृतिनां शिवभक्तिचमत्कृतिः॥ ३८/३०

इति काश्मीरक-महाकवि 'श्रीमज्जगद्धरभट्ट' विरचिते
भगवतो महेश्वरस्य 'स्तुति-कुसुमाञ्जलौ'
'पुण्यपरिणामस्तोत्रं' नाम अष्टात्रिंशं स्तोत्रम्।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अथ ग्रन्थकर्तुर्वंशवर्णनम्

❀❀❀

पुरा पुरारेः पदधूलिधूसरः
सरस्वतीस्वैरविहारभूरभूत्।
विशालवंशश्रुतवृत्तविश्रुतो
विपश्चितां 'गौरधरः' किलाऽग्रणीः॥ ३९/१

भ्रमादनिर्माय पुरातनः कवि-
र्यमग्रिमश्लोकमवश्यमग्रतः।
विमृश्य पङ्क्तेरुपरि द्विजन्मनां
न्यवीविशत्काकपदाङ्कितं पुनः॥ ३९/२

अनन्तसिद्धान्तपथान्तगामिनः
समस्तशास्त्रार्णवपारदृश्वनः।
ऋजुर्यजुर्वेदपदार्थवर्णना
व्यनक्ति यस्याऽद्भुतविश्रुतं श्रुतम्॥ ३९/३

सुतोऽभवद्रत्नधरः शिरोमणि-
र्मनीषिणामस्य गुणौघसागरः।
यमाश्रिताह्वास्त सरस्वती हरे-
रुरःस्थलं रत्नधरं श्रितां श्रियम्॥ ३९/४

उदारसत्त्वं विपुलं सुनिर्मलं
प्ररूढमर्यादमगाधमाशयम्।
प्रविश्य यस्य स्ववशा सरस्वती
पदं बबन्ध स्थिरमम्बुधेरिव॥ ३९/५

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कपोलदोलायितकर्णभूषणं
तरङ्गितभ्रूयुगभंगुरालिकम्।
सचेतसामर्धनिमीलितेक्षणं
क्षणं वितन्वन्ति मुखं यदुक्तयः॥ ३९/६

अथाऽस्य धीमानुपदपादि वादिनां
वितीर्णमुद्रो वदनेष्वनेकशः।
उदारसंस्कारसुसारभारती-
पवित्रवक्त्राम्बुरुहो 'जगद्धरः'॥ ३९/७

अपि स्थवीयःस्वकृतस्थिरस्थितिः
कुशाग्रतीक्ष्णामधिरुह्य यन्मतिम्।
अहो बत स्वैरविहारलीलया
पदं न्यधादस्खलितं सरस्वती॥ ३९/८

निर्मत्सरः सहृदयः श्रुतपारदृश्वा
विश्वातिशायिविनयः प्रियवाक् सुशीलः।
किं वाऽपरं कविगिरां सदसद्विचार-
चातुर्यधुर्यधिषणः शरणं य एकः॥ ३९/९

तेनादृतेन शिशुनैव निवेद्यमान-
मानन्दकन्दलितभक्तिकुतूहलेन।
एतं मृगाङ्ककलिकाकलितावतंस-
शंसारसायनरसं रसयन्तु सन्तः॥ ३९/१०

गृह्णन्तु कंचन विशेषमशेषमस्मा-
दस्माकमात्तवचनाः क्वचनाऽन्तरज्ञाः।
चिन्वन्ति पल्वलजलात्कुशला विशाल-
शेवालजालकलिलात्कमलौघमेव॥ ३९/११

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यद्यप्यासामनलसरसस्फारसारं न किंचि-
द्वाचामन्तर्विरचितचमत्कारमस्त्यर्थतत्त्वम्।
तत्राऽप्येतास्त्रिभुवनगुरुस्तोत्रमैत्रीपवित्राः
कर्णाभ्यर्णाभरणसरणिं नेतुमर्हन्ति सन्तः॥ ३९/१२

प्रेमाणं मणिकर्णिकां प्रति बुधा मन्दीकुरुध्वं मतिं
मुक्तादामनि माकृत स्पृशत मा ताम्बूलहेवाकिताम्।
भूषार्थं प्रभवन्ति कर्णपुलिने कण्ठे मुखाम्भोरुहे
देवस्य स्मरशासनस्य यदिमाः स्तोत्रावलीसूक्तयः॥ ३९/१३

निक्षिप्तं शतसप्तकेन सहितं पादायुतार्धं मया
निर्हिंसे गुणिनि द्विजेन्द्रमुकुटे धर्मैकधाम्नीश्वरे।
प्रायेण क्लिशितस्य दीनवचसः क्ष्माक्षिप्तमूर्ध्नोऽपि मे
पादं नैकमयं प्रयच्छति विधौ वक्रे करोम्यत्र किम्॥ ३९/१४

कारंकारमकारि वारितशमैरक्षैररक्षैरिदं
निघ्नं विघ्नितशम्भुसेवनसुखाभोगोपभोगं मनः।
किन्तु क्वापि कदापि काऽपि पतिता सा साधुदृष्टिर्यतः
प्राप्तः सूक्तिवपुर्जितोर्जितसुधास्वादः प्रसादः प्रभोः॥ ३९/१५

यत्सत्यं सदसद्विवेकविकलग्रामीणकग्रामणी-
मिथ्यास्तोत्रपरा पराभवभुवं नीतासि भीतास्यतः।
मातः कातरतां विमुञ्च यदसौ सौभाग्यभाग्यावधिः
सञ्जातो जगदेकनाथनुतिभिर्वाग्देवि ते विभ्रमः॥ ३९/१६

इति श्रीमज्जगद्धरभट्टकविवंशावलीविवरणम्।

॥ समाप्तश्चायं काश्मीरक-महाकवि-श्रीमज्जगद्धरभट्ट-विरचितः स्तुति-कुसुमाञ्जलिः ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्तुति-कुसुमाञ्जलि-पद्यानाम् अकारादिक्रमसूची

❀❀❀

ॐ नमः परमार्थैक- २/१
अंघ्रियुग्ममरेशमस्तक- १/१७
अकलितमहिमानं ध्वस्तमिथ्याभिमानं १८/२१
अक्लेशपेशलमलङ्घ्यकृतान्तदूत- ७/३४
अक्षयसुखोपभुक्तिः ३७/८
अघद्रुमध्वंसमहाकरेणवः २९/८
अङ्गं भुजङ्गरचिताङ्गदभङ्गि तुङ्गं ३/८
अङ्गे धृताङ्गनमनङ्गकृताङ्गभङ्गं ८/४१
अचेतनो यः किल कुस्थितिप्रियः, ७/१६
अज्ञस्तावदहं न मन्दधिषणः कर्तुं - ९/८२
अज्ञानान्धमबान्धवं कवलितं १०/८०
अज्ञोऽसि किं किमबलोऽसि ११/१०३
अतनुमतनुतामुं प्राणिनां पूर्णशक्ति- १८/२
अतः परं जगति किमस्ति नीरसं १४/२६
अतः प्रतनुवैभवोद्भवदखर्वगर्व- ७/४०
अतः स्वतः प्रार्थित-संपदां पदं ७/३३
अतिघस्मर-भस्मरजोधवलं ३१/१६
अत्यन्ततीक्ष्णमतिकर्कशमार्जवेन ११/५७
अत्यन्तदुर्भगमयोग्यमभाग्यभाज- ११/७२
अत्यन्तस्वच्छमन्तःकरणमशरणप्रत्तरक्षं ३४/९
अत्युन्नतान्निजपदाच्चपलश्च्युतोऽयं ११/३९
अत्यूष्मलं मलिनमार्गमनेकजिह्वं ११/४६
अत्राऽपराध्यति गिरो हर धृष्टतेय- ९/२
अथ कथञ्चन रूढमपि क्षणं १०/६
अथ गता परिणामदशामिति १०/५६
अथ नुतिभिरमन्थराक्षराभिः १३/१
अथवाऽमृतबिन्दुवर्षिणीन्दु १/३१
अथाऽस्य धीमानुपदपादि वादिनां ३९/७
अथास्येयं वाञ्छा प्रभवति न ३५/१४
अथैवं चेद्ब्रूयुः किमयमपरप्रेरितमतिः ३५/१३
अथोपादानं यद्भवति परमाण्वादि ३५/१६
अदभ्रश्वभ्रेयं भवसरणिरातङ्कबहुला १०/८३
अदूरबहिरङ्गनोपवनजातचूतावली- १०/८७
अधुना तपसेव देवता- १५/१
अध्यास्यते शमजुषा भवतः प्रसादा- ३०/११
अनञ्जनं नेत्रविकासकारणं २९/३
अनन्तराऽयन्त्रितवाग्भवस्त्वां ३०/१४
अनन्तसिद्धान्तपथान्तगामिनः ३९/३
अनभ्रवर्षप्रतिमं विमत्सरा ७/८
अनयतो नयतो न यतो धृति- ३०/२८
अनयोः करुणैव तावकी १५/१८
अनल-संभृतकान्ति दधत्सदा २९/२९
अनलसहितवृत्तौ सत्कलाभासशुद्धे १८/३
अनाथानां नाथो गतिरगतिकानां ३५/१
अनादौ संसारे विदधति रजोबाधितधियः ३५/१०
अनित्ये नित्याशामशुचिनि ३५/६
अनिधनेन धनेन मनस्विना- २७/२७
अनुगृहाण गृहाण घृणार्णव १०/५०
अनुज्झितानुत्तमदानसंपदः १२/१५
अन्तकभ्रुकुटिभीतिविह्वल- १४/५
अन्तरेण भवदंघ्रिसेवनं १४/११
अन्तर्धृताहिमकरज्वलनोदितेन्दुः ३/३६
अन्तर्विमृश्य गरलेन गले सलील- १९/१५
अन्तश्चेतसि निर्वृतिर्न गमिता नाशं २८/१
अन्तः सन्तिष्ठमानः स्थगयति जगतां ३३/३९
अन्तःशून्यं गुणविरहितं नीरसं सर्गहीनं १/३०
अन्त्यक्षणे भव भवच्चरणाब्जसेवा- १२/२६
अन्यत्र दर्शय निरङ्कुश हुङ्कृतानि ९/६३
अन्यार्थमप्युपहिता शितिकण्ठसेवा ८/४५
अन्वग्रहीरमलदृष्टिसमर्पणेन ११/५०
अपनीतकुकर्मकलङ्कमलं ३१/१९
अपि जगद्विदितः करुणापरः १०/७
अपि नाथ जनार्दनस्य विष्णो- १३/३९
अपि सर्वजनाऽविरुद्धबुद्धे- १३/४०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अपि स्थवीयःस्वकृतस्थिरस्थितिः ३९/८
अभयघोषमिषोन्मिषिताऽमृत- १०/६१
अभयङ्करमाश्रितं स्वरूपं, १/२३
अभयमर्पय कपटमल्पय शिरसि ३२/८
अभिजनगुणख्यातिप्रज्ञाभिमानभरोद्धुरां १०/७५
अभिनवस्तवक-स्तन-सन्नताः १०/१७
अभिनवेन नवेन शिवस्य यः २७/२८
अभिमताधिकसिद्धिविधायिनीं १०/६४
अभिलषसि यदि निरोद्धुं ३७/१३
अभिलषेयुरनर्गलदुर्गति- १०/११
अभीष्टदायी यमधामहोदयाद्- २९/२४
अभ्यर्णवर्तिकरगोचरकालकूट- २०/१०
अभ्युद्गमोऽयमशनेरमृतांशुबिम्बा- ११/६६
अभ्येति मृत्युभटसंहतिरस्तकम्पा ९/३९
अभ्रान्तवृत्ति भवतान्तरधिष्ठितं मे ११/८८
अमन्दमानन्दसुधारसद्रवं ७/२२
अमन्दरागाश्रितमन्दरागा- ३०/२२
अमन्दसन्दर्भगभीरविभ्रमः ७/११
अमन्दानन्दानां दलदलघुसन्तापविपदां १०/७३
अमल-शीलकुल-श्रुत-विश्रुतं १०/४८
अमलैः फलैरविरलैरलङ्कृता १६/२
अमेयमहिमा हिमाद्रितनया- २९/३३
अम्बरेण गगनेन संवृतं, १/२१
अम्भः कम्प्रं कटप्रं सबहलगरलं ३४/६
अयमसौ यमसौष्ठवहृत्पुरः २७/२६
अयमहं पुरुषोत्तममच्युतं २९/२५
अयमिह किङ्करेण रचितश्चरणा- ३८/२६
अयि प्रमथनायक त्रिजगतामधिष्ठायक ३८/२७
अयि हृदय दयार्द्रः स्वर्धुनीनीरधारी १८/१०
अराणि करुणं मुहुर्मुहुरकारि चाटु प्रभो- १८/२५
अरुणद्युतिग्लपितशीतदीधिति- १२/३२
अर्कस्य नोदगयनं शिशिरेऽपि यत्र ३/३८
अर्केन्दुभौमबुधवाक्पतिकाव्यमन्दा ३/४९
अर्चां वीक्ष्य विचित्रचारुरचनां ३३/१६
अर्धं यदुत्पलदलैरुमयेन्दुगौर- ४/३
अलं घना अलङ्घ्ना- ३०/३८
अलभत भगवन्नबन्ध्यमेक- १३/२१
अलौकिकाह्लादनिबन्धनं मनः- ७/२
अवटमज्जनजनिततर्जनवृजिनभञ्जनसाधनं ३१/२१
अवधीर्यमाणमथ दीर्घमत्सरै- १६/७
अवधूत-मोह-तिमिरावरणं ३१/१०
अवसर-सरसालसालघूद्य- १३/३६
अवाप्य गुरुभिर्गुणैर्जगति गौरवं १/२८
अविकल-कल कलकल-कल ३०/६१
अविज्ञायैवाऽज्ञः परुषविषमं कर्म कुरुते ३५/११
अविरतनतिपरसुरवरशिखर- ३१/२१
अविरलजलभरसुरसरिदुदय- ३१/२५
अविरलभस्मरजोधवलं २४/२
अवैमि भाग्योपचयः स पुष्कलः ३८/५
अव्यक्तं यः समग्रं जगदगनगरं ३४/१२
अव्यात्स वः शिरसि यस्य ३/२१
अव्यात्सः वः सुकृतिनामलिकेषु धूली- ३/२२
अशुचि शुचामायतनं ३७/१६
अशेषक्लेशौघग्लपनपरिपन्थी प्रकटय- ३५/४
अश्रान्तमान्तरमशान्तरजोविकारं ९/१८
असौ हृदन्तर्हितमोहरोधने ३०/७४
अस्थाने गमिता लयं हतधियां वाग्देवता ५/३५
अस्मत्कृते सितमयूखमुखि त्वयैत- २०/१८
अस्मादृशस्य रसना तु सहस्रधेयं ११/४१
अस्मादृशैरशुचिभिश्चटुचापलानि ११/११
अस्मिन्भवाध्वनि महाविषमेऽसमेषु- ८/४२
अस्यामसह्यविरहज्वरकातरायां ११/२०
अहं तु प्रत्यग्रप्रभुचरणराजीव- १०/७१
अहतप्रसरां प्रसादिनीं १५/१२
अहमहर्निशमेकमना मना- १०/३६
अहो कृतार्थोऽस्मि मनोभिरामया ३८/६
अहो तत्त्वज्ञोहं करतलविलीनैकफणिनः ११/१२५
आकर्णाकृष्टचापः प्रहरति निभृतं ३३/३४
आकर्ण्य यः कृपणमार्त्तवचः ८/२३
आक्रन्दमिन्दुधर धारय देव कर्णे ११/१०
आक्षिप्तसिन्धुमथनोत्थमहामृतौघ- ९/२५
आजन्म कर्म विरचय्य फलं यदाप्तं ११/१२३
आत्मानं ते कलुषकलिले ३६/३२
आदौ पादतले कृत[illegible]शो प्राप्तः ३/५६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आदौ प्रदर्श्य परमामृजुतामथान्त- १२/२३
आदौ भक्तिवयस्यया परिचयान्नीतोन्मुखत्वं ३३/२०
आनन्दिनि स्तुवति नन्दिनि गूढमर्थं ३८/२३
आनीता चरणान्तिकप्रणयितां २८/१२
आपतन्तमयमं यमं पुरो, १/२०
आपन्नतापहरणप्रवणा घृणेव ५/१
आपन्नबान्धवमवन्ध्य- ८/३३
आपीडबन्धनविधौ शयने च वर्ष्म ४/२
आपूरितः सुरसरित्पयसाऽमृताय १९/२४
आप्यायनं सुमनसामनिशं विधातु- ११/४८
आभाति शक्रनगरी न गरीयसी मे ९/७
आराधिताः प्रचपलाश्चपलावदेव ११/७४
आरूढरीढमपि येन समर्पितेन ८/१९
आर्त्तिः शल्यनिभा दुनोति हृदयं ११/१३९
आर्त्तिः श्रुतैव कृपणात्करुणां ११/१११
आर्द्रे मनस्युदितमार्तजनोपताप- १५/३२
आवर्जनं क्रतुभुजां गजवाजिरत्न- ११/८५
आवर्जयन्ति मठराञ्जठरार्थमात्र- ५/८
आश्चर्यं तव दयिते हितं विधातुं २१/८
आश्वासनं यमभयाकुलतामृतानां ९/११
आसीद्यावदखर्वगर्वकरण- ११/१३४
आस्तां परं यदपरं तदपि स्वकीयं १९/२
आः किं न रक्षसि नयत्ययमन्तको ११/१०२
इच्छयैव भुवनानि भावयन्, १/१५
इति तर्जयन्ति रिपवः सुदुर्जयाः १६/१९
इति दीर्घदुर्भरकुटुम्बडम्बरा १६/८
इति परिषदि सिंहस्यन्दन-स्कन्द-३८/२८
इति बिभ्रतः परिकरं प्रियङ्करं १६/१४
इति मामनर्गलममार्गमार्गण- १६/२३
इति यदन्तरनन्त तिरोदधन्- १०/२६
इति शुभं भगवच्चरितस्तुति- ३८/३०
इति सदयेन यदाचरितं २४/१४
इतीत्थं मुग्धानामिह मतिविमोहाय ३५/१७
इतो द्वन्द्वक्लेशा विषयमृगतृष्णा-३५/३
इत्थं कि बहुना त्वदङ्घ्रिकमलद्वन्द्व- ३५/२४
इत्थं तत्तदनन्तसन्ततलसच्चिन्ता- ११/१४३
इत्थं मत्सूक्तयस्ते शशधरशिखर ३३/४५
इत्थं विदग्धरसदिग्धकथाक्रमेण २०/३८
इत्यादि तीव्रविरहज्वरया जयायै २०/२५
इत्यादि दूढ्य इव निष्ठुरपुष्टभाषी ११/१०५
इत्यादिभिर्दशनचन्द्रिकयानुविद्धै- २०/२२
इत्यादीन्प्रविदधुरेव यत्र ताव- २१/१७
इत्येवं भगवन्नबन्ध्यमहिमा निर्माय ३५/२३
इदं मधुमुखं विषं हरति जीवितं- ७/३९
इदं युक्तं सान्द्रामृतमधुरयाऽन्तः ३५/१५
इदं विदन्तः सुधियो ७/२९
इदमकृत्रिमरसमसंभृतबहुविधौषधसाधनं ३१/३०
इदमनङ्गजनङ्गमसङ्गम- १०/५७
इदमसाधितमेव रसायनं १०/३३
इदमहं करुणामृतसागरं १०/३७
इदमुदञ्चति मेघमयं महत् १०/२५
इमा हिमानीविमला हविर्भुजां ७/३१
इमां घनश्रेणिमिवोन्मुखः शिखी ३८/१६
इयं मधुश्रीरिव केलिकाननं ३८/१९
इयं विचित्रताविराजिता मया मनोहरा ३०/७९
इयमखिलेतरजातिमतां २४/१७
इह खलु पशुपतिनुतिभिः ३७/५
इह परशुचितोर्जिताकृति- २९/२७
इह बृहद्भिरुदग्रपरिग्रह- १०/९
इह विदधतु नाम पामराणां १३/८
इह विहतभवोपतापमाप- १३/५
इह हि गिरिषु प्रालेयाद्रिर्महःसु १८/२३
इह हि महिमा मायामोहप्ररोहतिरोहित- ५/२४
इह हि स्वात्ममहेश्वर- ३७/१
उचितत्रिवर्गरहितं तिरोहितं १६/१८
उच्छृङ्खलं खलमलङ्घ्यबलं - ९/६१
उत्कटभ्रुकुटिभीमदर्शन- १४/९
उत्तप्तहेमरुचि चन्द्रकला कलापे ३/३०
उत्प्रासनाय शमनस्य मनस्यनल्प- २०/५
उदञ्चय मुखं मनागभयघोषमुद्घोषय ११/१२९
उदारकरुणोऽरुणोर्जितमहा २९/३४
उदारवर्णैरथ सङ्गतैरहं २९/१
उदारसत्वं विपुलं सुनिर्मलं ३९/५
उदारैर्मन्दारैरचितशिखरं चन्द्रशिखरं ३५/२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उद्गाढभक्तिविधुरव्यपनीततीव्र- ८/२४
उद्दामदोषमपि दीर्घगुणं भुजङ्ग- ८/४०
उद्धूलितश्चितिरजोभिरखण्डमुण्ड- २०/३५
उद्यन्निरुत्तरपरस्परसामरस्य- २१/२२
उद्वृत्तमन्तक नृशंस भृशं सगर्व ९/७८
उपचितकुशलश्रेणिः ३७/६
उपचितोऽभिनवाम्रदलावली- १०/१५
उपमितमन्मथचापलतां २४/८
उपलक्ष्य तवान्धकारितां १५/५
उपवने पवनेरितमाधवी- १०/४१
उपायस्तत्प्राप्तौ भवति न विना ३५/२०
उमाख्यमासाद्य महानियोऽगतः २९/६
उर्वीनीरसमीरणारुणशिखिव्योमात्म- ८/५२
उल्लंघ्य शासनमनन्यजशासनस्य ८/४४
उल्लसत्पुलकलाञ्छितं वपु- १४/३
उष्णं निःश्वसिति क्षितिं विलिखति ५/३४
एकत्र स्फटिकशिलामलं यदर्धे २१/३
एकत्र स्फुरति भुजङ्गभोगभङ्ग- २१/१०
एकत्र स्नुतरुधिरा करीन्द्रकृत्तिः २१/१२
एकत्राऽर्पयति विषं गलस्य कार्ष्ण्यं २१/११
एकस्त्वमेव भविनामनिमित्तबन्धु- ११/७१
एकस्य यस्य सकलः करणानपेक्ष- ३/५
एकः पादोदकमधिशिरः श्लाघ्यमन्यस्य २९/३५
एकः पुरन्दरपुरं दरवेल्लितभ्रूः १५/३१
एकः स्तनः समुचितोन्नतिरेकमक्षि २१/१९
एका त्वमेव भवितासि मम प्रियेति ११/१७
एणाक्षीणां स्मरशरशिखाकोटिशौटीर्यभीमाः १७/२२
एतां निसर्गसरलामभिजातमुग्धा- ११/१८
एताः पूर्वकविप्रणीतविविधग्रन्थाऽमृता-५/३६
एते प्रभोः प्रमशभर्त्तुरभीष्टमष्टा- ३८/२५
एतेन कर्कशकुशग्रहणं करेण २०/२०
एतेन किं निविडबन्धभृतो ९/५७
एवं देव तव स्तुतिप्रवचनप्राप्तप्रसादस्य ३५/२५
एवं देव प्रभेव स्मरहर सकलद्वीप- १७/२८
एषः स्तवस्तव नवप्रमदोपदेश- ९/५
एषा निसर्गकुटिला यदि चन्द्रलेखा ११/२५
ओजस्वी मधुरः प्रसादविशदः ५/३१
ओमिति स्फुरदुरस्यनाहतं, १/६
कंचिच्छ्रीर्वसतेः करोतु विकसच्छोभा २८/१४
कण्ठस्य भ्रमरनिभा विभार्धभागं २१/१४
कण्ठे कण्ठीरववरवसदृग्दृक्समुद्गोद्र १७/४
कण्ठे विषं वसति मे विषमं तवेव ११/९७
कण्ठे विषं विषभृतोऽपि विभूषणानि १९/३०
कण्ठो वहन्नपि विषं विषमं तवैषः १९/१४
कति न बुद्बुदवद्भववारिधा- १०/२९
कथं विभो तस्य तव प्रवर्तताां १२/१७
कथमनाथमनागसमन्तिके २७/१२
कदर्याणामग्रे तरलनलिनीपल्लवतल- १०/७०
कदा दधानो घनशान्तिशोभिनीं २९/१५
कदाऽनवद्यामतिनिर्मलामहं २९/१७
कन्दर्प कं दर्पमुपैषि यात- २६/२८
कपोलदोलायितकर्णभूषणं ३९/६
कमपि नाम निकाममनोहरं १०/३८
कमलं रविरपराजित २३/८
कमलपरागपिशङ्गजटालं ३१/१५
कमलयाऽमलया मलयाद्रिव- ३०/२६
कमलिनी मलिनीक्रियते यया २७/२४
करकलितकपोला बालशैवालशय्या- १८/५
करुणा क्षतानवधिकोपचया- २५/१५
करुणा तव जीवितेश्वरी- १५/९
करुणा तव शस्यते यया १५/१०
करुणा सुरैः प्रतिपदानत या २५/२४
करुणां भवतो विकासिनी- १५/४
करुणां हरिणाङ्कलक्ष्मणः १५/३
करुणामरुणाऽनुजन्मन- १५/१५
कर्णकीलितकपालकुण्डलः २२/४
कर्णिकादिष्विव स्वर्ण- २/२४
कर्णेक्षणादचरणात्त्रिफणात्कृतान्त- ११/१११
कर्त्तुमुत्सहत एव सेवको, १/१९
कल-कलकल-कलकण्ठ-वदस्मा-३०/६८
कलयत मणिकुण्डलेऽवलेपं १३/४
कलयतु भवतामभग्नवृत्ति- १३/३
कलयाऽऽश्रितं विरुजमेकलया ३०/६६
कलयेन्दोरभिभूति- २३/२०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कलापिनः प्रावृषि यद्वदम्बुद- १४/२४
कलिकम्पनमघशरणं २३/२७
कलिकालताम्यदमृतोत्कलिका ३०/६५
कलि-तमो-हन-मारवराजितं ३०/७३
कलिमलपटली मलीमसत्वं १३/१६
कलिमलमषीकल्माषोऽयं मनोमुकुरः ३८/२२
कले वरं दातुमुदीरितेऽस्ति या ३०/१६
कल्पद्रुमैर्निधिभिरोषधिकामधेनु- २०/२७
कल्पान्तकल्पान्तकभीतियुक्तं २६/२७
कल्पाह्ववल्लिरिव धौतविपद्विकल्पा ३०/५८
कल्याणिनः सुरगिरेरिव संश्रितस्य ८/१
कल्लोलिनीकुटिलकैरविणीकुटुम्ब- २२/१२
कवलितविषमक्लमं दधानः १३/२७
कविमुखकमलोपवने ३७/२
कः स्तम्भकः स्तम्भनिभस्य जिष्णोः २६/३१
कः स्वर्धुनीसवनवह्निनिषेवणादि- २०/३४
का नाम नामरवधूरवधूतकान्ता २७/३४
का रामणीयककृतेन्दुकरानुकारा- ३०/४५
कां तापतान्तिमुपयान्ति शुचौ न ३०/४७
काककङ्ककुररैः कलङ्किते २२/१०
काञ्चीकाञ्चनकिङ्किणीकलकलः ३३/१
कान्तया कनककाञ्चिकिङ्किणी- २२/९
कान्ता कान्तारमध्ये सरिदिव ३०/८०
कान्ते शिवे त्वयि विरूढमिदं मनश्च २१/२१
कान्तैकान्तव्यसनमनसां वल्कलाल-१७/१६
कापिशायनकषायकामिनी- २२/५
कामं भवेऽत्र बहवः सुभगस्वभावा ९/४८
कामस्त्वयीव मयि निष्फलतामवाप ११/९४
कामः कामं धनुरनुनिशं कौसुमं १७/१४
कारंकारमकारि वारितशमैरक्षैररक्षैरिदं ३९/१५
कालं दृशैव शमयन् सफलप्रयासं ३/१९
कालं बालकुरङ्गकेतनकृतोत्तंस-३३/१३
कालकिङ्करकरान्तरफुर- १४/८
कालायसोपमरुचिर्गलभूः सुकाला ३०/५६
काव्यं विभाव्य निजमर्धनिमीलितानि ५/१४
काव्यकौशलकलासु कोविदैः २२/१
काशान्तचित्तधृतमुक्तिपथाऽवकाशा- ३०/४६
किं कार्यमेभिरनिशं पुनरुक्तशुक्तै- ११/१०८
किं निर्मिता मुकुटचन्द्रकलां निपीड्य ९/९
किं भूयसा यदि न ते हृदयङ्गमेय- ११/२३
किं भूयोभिर्वचनरचनाडम्बरैर्दीर्घशोका १७/२६
किं भूयोभिः परुषविषयैः ७/४१
किं मेरुमन्दरमुखा गिरयः शिरोभि- १२/२९
किं मेरुमन्दरमुखैर्गिरिभिर्गरीयान् ८/४३
किं वर्णयामि गुरुतां विपदः पदे मां ११/८२
किं वा परं कुपितनिर्घृणपञ्चबाण- ९/२४
किं वाऽन्यदर्कज ९/७९
किं वाऽन्यन्नैष पश्यत्यलमनलशिखा- ३३/३३
किं वाऽपरं द्रुहिणकृष्णहरत्वमेत्य ८/८
किं शक्तेन न यस्य पूर्णकरुणा- ११/१३७
किं श्रीघनोऽप्यसुगतः किमुमाधवोऽपि १२/३१
किंशुकैः कपिकपोलकान्तिभिः २२/७
किमङ्ग मङ्गल्यमनङ्गभङ्गद- ७/३०
किमधुना मधुनापि युतो वहन् २७/२०
किमफलैरपरैर्भवशम्बरैः १०/३४
किमयं शिवः किमु शिवाऽथ शिवा- २१/१८
किमाम्रवन्या सृमरालवालया २९/१६
किमियं सद्गुरुदृष्टि- ३७/७
किमिव मणिभिः किं वा मन्त्रैः १८/२२
किल यस्य कल्पितमहोदयया २५/१
कीचकादिकुहरेष्विवाऽम्बरं, १/८
कीनाश बालिश निरङ्कुश निर्विमर्श ९/६८
कुटिलतां न जगाम निकामतो १०/५५
कुन्दकुड्मलकदम्बकेतकी- २२/६
कुपितान्तककिङ्करेरितः १५/२७
कुरु नाथ चेतसि वचो दयिता २५/५
कुर्वन् विरोधमनिरोधमबान्धवेषु ९/६९
कुर्वन्ति भक्तिमपरैरपि ये नियुक्ता ८/४७
कुलशैलदलं पूर्ण- २/१९
कुशलपेशलपेलवदृग्वमन् २७/११
कृतघस्मरस्मरनिराकरणं ३१/७
कृतधियोऽपि भवाध्वनि १०/१४
कृतनिकेतनमकरकेतनदलितचेतनवेतनं ३२/२
कृतिनः पुनर्मृदुमृदङ्गमङ्गल- १६/९

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कृत्वा शय्यामुपान्ते विरचित-२८/२६
कृपणं भगवन् बहुशोऽभिहितं ३०/४१
कृपाविपाकेन विना ७/१४
कृष्णाकुण्डलिकठोरकञ्चुकैः २२/८
कृष्णेन त्रिजगत्प्रसिद्धविजयप्रख्यातिना ३/५२
कृष्णोपदर्शितपथः पृथुलोष्मभीष्म- ८/२०
केकिकेतनकृशानुकौशिकैः २२/३
केचिद्वरस्य भगवन्नभयस्य केचि- ११/८७
केनेश्वरेण महता वहतात्रिनेत्र- २०/३२
केरलीकचकलिन्दकन्यका- २२/२
केशाश्रिता नयनवह्निशिखाभ्रसिन्धु- ४/४
कोटिं परामुपगतेऽपि गुणे नितान्तं ११/५६
कोपं विधाय तव येन कृतः ९/७५
कोपकर्कशकृतान्तकिङ्कर- २२/११
कौटिल्यमिन्दुदलतो न सुधामयत्व- ११/८१
क्रन्दाम्यतः किमपि नाम पिनाकपाणे ११/९
सा क्रीडा सा गोष्ठी ३७/१०
क्रूरः पराङ्मुखमसावनृजुर्जहाति ११/५५
क्रोधोद्भ्रान्तकृतान्तकिङ्करकरद्रोणीमुख-३३/२२
क्लमजं दृशि यन्निमीलनं १५/२४
क्लिश्यन्त्यवश्यमपमार्जनभूतयाग- ९/७३
क्व दृक्चिरं पारितचन्द्रशेखर- ७/२७
क्व नाम नामग्रहणोत्सवं विभो- ७/२६
क्व निर्धुताऽनल्पविकल्पविप्लव- ७/२८
क्व नीलकण्ठायतनोपसर्पण- ७/२५
क्व महेश्वरस्मरणसम्भवं भव- १६/२०
क्व शिवेश्वरेति कृतगण्डमण्डली १६/२१
क्व समाधिबाधितदुराधिसाधिमा १६/२२
क्वापि प्रसीदसि दिशन्विशदं प्रकाशं ९/१५
क्वाप्यन्यजन्मनि विधाय ११/३१
क्वाप्युद्धृतक्रतुविधातृमृगोत्तमाङ्ग- ८/३९
क्षतविभवविशेषाः प्राणमात्रावशेषा १९/३१
क्षामो निकामजडिमा कुटिलः ११/४२
क्षितिधरपतिपुत्रीवल्लभ त्वत्प्रसादा- १८/९
क्षीणः क्षताऽखिलकलः ११/९०
क्षीराब्धेरवहेलया वितरणं निर्यन्त्रणं ८/५०
क्षीरा[illegible] निवास ३/२८
क्षेत्रं तदिह पवित्रं ३७/९
खट्वाङ्गे मुकुटे करे श्रवणयोः ३३/१४
खुरक्षतवसुन्धरोद्धुर- १०/९१
गतिरशुभं हर का तरतां २४/१५
गद्गदोद्गतगिरश्चिरस्थिर- १४/१४
गरुडेन यद्विषमपक्षतिना २५/१६
गल्वर्कप्रस्थपस्त्यं धरमथमलयं मन्दरं ३४/१०
गात्रान्तरातिशयशंसि यदेतदुच्चै- १२/३०
गाम्भीर्यशालिनि शुचावमृतौघशीते ५/२१
गायन्ति कस्य विषदं विषमोग्रकाल- २०/३१
गावस्तावद्दुहाना रसमसमसुधा- १७/३०
गिरि गिरिवरकन्याकान्त शान्तप्रथायां १८/१२
गुणिभिर्विबुधैर्हरीन्द्रमुख्यै- १३/३८
गुहाश्रितो धर्मरतिर्गिरीश- १२/११
गृह्णन्तु कंचन विशेषमशेषमस्मा- ३९/११
गृह्णासि मूर्धनि जलैर्धवलैर्विलोलै- ११/२२
गौरीं गजास्यजननीं हिमवत्प्रसूतिं ८/३८
घनघर्मलङ्घित्तकपोलभित्तयः १६/५
घनप्ररोहत्पुलकाङ्कुरो भव- १२/१९
घनाऽघनाशनैः शनै- ३०/३१
घनानन्दस्यन्दोद्ग त-विपुलवाष्पार्द्रनयनं ५/२७
घनैरहंताकृतलङ्घनैरहं ३०/१८
घर्मः प्रकम्पपुलकौ गिरि गद्गदत्व- १२/२५
घोरान्धकारविधुरं विविधोपताप- ११/९१
चकाशे नाकाशे रविरविरलैरंशुपटलै- ३५/८
चक्रायुधं विशिखतामुडुचक्रवर्ति- ८/१८
चक्री मुखाग्रविलसज्ज्वलनोग्रजिह्वा- ८/१७
चतुरगास्तुरगा नगजा गजाः २७/७
चन्द्रः करे शिरसि चक्षुषि पादमूले ११/८०
चन्द्रावचूडचरणस्मरणप्रसाद- ५/१३
चमत्कारोत्कर्षं कमपि कमनीयं ५/२५
चमूर्जयन्भीजनकानका न काः ७/६
चरणकमलयुग्मं देव निर्दम्भभक्ति- १८/७
चरणौ यथा मुरजितः क्षमया- २५/२२
चान्द्रं च धाम सुरनिर्झरिणी जलं च ३/२८
चारुचन्द्रकलयोपशोभितं, १/१४
चिन्तां [illegible]प्रवृत्तिं ९/१६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चित्तं विषादमगमन्न परं प्रसाद- ९/१७
चिन्तामणिः स्फटिकजातिरचेतनोऽपि १०/६५
चिरं द्वारोपान्ते स्थितमवसरोद्वीक्षणधिया १०/६७
चेतः प्रचेतःप्रमुखा यदेक- २६/४
चेतांसि ते सुकृतिनामुपबृंहयन्ति ३६/३१
चौरैर्गृहीतमपि दष्टमपि द्विजिह्वै- ११/११३
जगति विबोधितविधुरं २३/१
जगदखिलं यदि नन्दयसे २४/२३
जगदनुग्रहमहितविग्रह कृतपरिग्रहसद्ग्रहं ३२/६
जगदम्बुभुवा भुवाम्भसा १५/११
जगद्विधेयं ससुरासुरं ते १२/५
जघनजघनशोभा स्पर्धमाना सभृङ्गं १८/१७
जङ्घालतायुगलमाश्रितगुल्फमूल- १९/७
जनयति जगति स्पृहां न केषां १३/२२
जनयन्नयं नयनयोरधीरतां १६/१६
जनयाऽशुचमार्तमभाजनया- ३०/६०
जनित-जनितरङ्गं जृम्भयन्ती भवाब्धिं १८/१८
जनिरपि जयिनी विनीतरीति- १३/२०
जम्बालजं बालरवेरिवाभा- २६/२०
जय जय हर रक्ष भया- ३७/३
जय जयद वचो विमुञ्च मुञ्च- १३/२८
जय जितामय जय सुधामय १५/३८
जयति चित्तचकोरकचन्द्रिका १०/१
जयति जन्मजरामरणव्यथा- १०/३२
जयति जितविकारः क्लृप्तलोकोपकारः १८/१
जयति भक्तिलतानवमाधवः १०/२
जयति संयति संगतपाण्डव- २७/१
जयत्यकलितोल्लसन्मदभरोद्धरान्धासुर- ६/७
जयत्यखिलखेचरप्रवरमौलिरत्नप्रभा- ६/१
जयत्यघवनाशनिः सुमतिमाधवीमाधवः ६/८
जयत्यचलकन्यकाललितदोर्लता- ६/३
जयत्यतुलविक्रमोन्मिषदखर्वगर्वज्वर- ६/६
जयत्यमरदीर्घिकासलिलसेकसंवर्धित- ६/२
जयत्यविरलोच्छलद्गरलवह्निहेतिच्छटा ६/४
जयत्युदधिनिःसरद्गरनिगारलब्धाऽभय- ६/५
जयन्ति कृतिनः कवरेमृतसारसिक्ताक्षरा १०/८५
जलाशया यान्ति मृगा जलाशया ३०/२१
जहत कल्पितकलुषलोचनतिमिर-३१/२६
जहिहि मोहमुपेहि निजां स्थितिं १०/४३
जातस्य मृत्युरिति चेतस न लंघितः ९/५५
जात्यन्धः पथि सङ्कटे ११/१३५
जानन्नपीति विरमामि न यत्प्रलापा- ११/११०
जानामि नाऽमृतमयं हृदयं प्रवेष्टु- ११/८९
जानुभ्यामुपसृत्य रुग्णचरणः को ११/१४१
जाने कथञ्चिदुदिता मम शोकवह्नि- ११/५
जाने न शैथिल्यमुपैष्यवश्यं १२/६
जिगीषवः क्लेशपरम्पराभवं २९/१४
जितसुधाकरगिरिसुताकर- ३१/२८
जितसुधारसुधारसभारती- २७/३२
जिष्णुना जिष्णुना लोकान् २/१८
जिह्वाग्ररङ्गभुवि सत्कवितुर्विलास- ५/७
जिह्वासहस्त्रयुगलेन पुरा स्तुतस्त्व- ११/५२
जीवेन जीवेन तदर्पितेन २६/१३
जूटाहेर्मुकुटेन्द्रनीलरुचिभिः श्यामं २१/२४
जूटे कपालशकलानि कलानिधिश्च ३/४१
ज्ञात्वाऽथ चेत्समरसंहितकर्मयोग्यं ११/५८
ज्योत्स्नाछटाभिरिव देव चकोरकस्य ९/४९
तं वन्दितं वन्दिभिरर्चयन्ते २६/१५
तं वाणीभिर्गृणन्ति श्रवणपुटसुधा- ३३/३२
तं हत्वा सबलं निशाचरपतिं २८/१८
तज्ज्ञो बतास्म्यभिलषन् सुखमक्षयं ११/११५
तत्तथ्यमेव किमकारणकण्टकं त्वां ९/७१
तत्साम्प्रतं भुवनविश्रुतहस्तसिद्धिं ११/७७
तदखिलापदुपोद्धरणक्षमं १०/२३
तदनन्तरं तरलिताक्षरां गिरं १६/६
तदसमञ्जसमङ्ग यदङ्गना- १०/४४
तदेतत्कारुण्यं घनतमतमः३५/२२
तदेतत्सङ्कल्पप्रकटित-३५/११
तदेवं दुर्वारव्यसनशतसंपातविषमं १०/६९
तद्ध्यानं स समाधिः ३७/११
तद्युक्तमीश वदनाद्भवतः सुधाच्छ- १९/१७
तद्वन्दे गिरिपतिपुत्रिकार्धमिश्रम् २१/२
तनुकृशानुकृशां ग्रसते यदा २७/१७
तनुतृणगणनिभमनसिजशमन- ३१/२३

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तनुशङ्करवैरसमाऽयतया- ३०/७७
तन्मानुष्यं प्रभवति सतामुत्तमा यत्र १७/५
तमसावुज्झितकलहं २३/१०
तमोभूतं विश्वं किमपि गहनं धाम ५/९
तरङ्गिताङ्गो भवदङ्गदस्फुर- १२/२०
तरलतरलताग्रस्पर्द्धिनी चञ्चलत्वं २६/३५
तरुणतमालमलीमसनालं ३१/११
तर्ककर्कशगिरामगोचरं, १/९
तर्षोत्कर्षात्कलुषपरुषैः कर्मभिः १५/३४
तर्ह्यर्चनान्तसमये तव ९/५६
तव दृक्सुधाकरकलोपमिता- २५/४
तव दृग्जयत्यलसतां लसतां २५/२५
तव यः स्तुतिषु सदा हर २३/१५
तव रविजपुरान्धकप्रमाथे १३/१८
तव वीक्ष्य च भग्नकामता- १५/७
तव वीक्ष्य वृषाधरीकृतिं १५/६
तव सवहरिणं घ्नती महर्षिं ३०/१२
तव सेवकस्य परमेश मनः २५/२
तवात्तबाधने धने ३०/३३
तस्मात्समाप्तसकलाऽभ्युदयाभ्युपाय- ११/३४
तस्मादवश्यमवशानविशङ्कमेव ९/५३
तस्मादस्माकमाकस्मिकविकसदसत्कर्म- ३३/३५
तस्मादस्माज्जननमरणक्लेशवेशन्तपङ्का- १७/२१
तस्मादुपेत विभुमेव यथातथापि ८/४९
तस्मादुपैति न तनुस्तरसाऽवसायं ९/३८
तस्माद्भयङ्करमदः फणिकर्णपूर- ९/५८
तस्मिन्क्षणे नयनवर्त्मनि जीवितेशः २०/१७
तस्यैकस्यांघ्रिपीठं स्फुटमुकुटमणि- ३३/३१
तस्योदेति सदः सदां विदलितग्लानिर्भरो २८/४
तादृङ्मता दृङ् महतां समन्ता- २६/२
तापत्रयाऽपहतये त्रिशिखं त्रिवर्ग- ३/१७
तावत्प्रबोधितवता कृकवाकुनादै- २०/२४
तावत्प्रसीद कुरु नः ९/५४
तिमिरं चिरन्तनमनन्त सन्तत- १६/३
तिमिरं रवेरिव विभामुदितां २५/२३
तुभ्यमयं क्षितिजाल सतां २४/१८
तुहिनवाहिनवानिलजे मनः २७/२५
तूर्णं चूर्णयितुं वपुर्यमभटो झम्पारयं २८/६
तृष्णा दिनादिदनमबृंहत बंहिमान- ११/७५
ते कर्मरज्जुनिगडं ह्यतिखण्डयन्ति ३६/६
ते केचिदस्खलितबन्धनवप्रबन्ध- ५/५
ते चित्तभित्तिमसतामपि चित्रयन्ति ३६/३०
ते जन्मनः फलमनल्पमुदञ्चयन्ति ३६/३
ते जान्मिकानि दुरितान्यवसादयन्ति ३६/१०
ते तक्षाणं तरुमिव गुरुं त्वामघं ३६/४१
ते तज्ज्ञानां परिषदि गुणानात्मनः ३६/३९
ते त्वत्स्तुतिं हृदयधाम्नि कवाटयन्ति ३६/५
ते त्वद्भक्तिव्यसनमनघं कर्म ३६/४०
ते त्वां कृपाम्बुतृषिते हृदि वर्षयन्ति ३६/२८
ते दुर्मदं शमनमुग्रमदर्पयन्ति ३६/१८
ते दुर्मदान्बुधसदस्यवमानयन्ति ३६/१६
ते दुर्वृत्तानपि न कृपया पेशलाः ३६/३६
ते धर्ममिन्दुकरसुन्दरमर्जयन्ति ३६/४
ते नाथ जन्म सकलं न कलङ्कयन्ति ३६/१
ते निर्भये नतिमतः पथि यापयन्ति ३६/१७
ते निर्मलं सुकृतमात्मनि पोषयन्ति ३६/२६
ते निर्वेदं मनसि शमिनामह्नुतं ३६/३८
ते पङ्कमङ्कगतमात्मनि धावयन्ति ३६/२४
ते पापपाशमधिकं हृदि कर्तयन्ति ३६/९
ते पीवरीं विपदमोकसि कर्शयन्ति ३६/२५
ते भुक्तिमुक्तिसफलर्द्धि विवर्द्धयन्ति ३६/१४
ते भेजुषां भवति भक्तिममन्दयन्ति ३६/१३
ते मग्नमार्त्तजनमापदि तारयन्ति ३६/२२
ते मारकानपि न संयति घातयन्ति ३६/८
ते मौनमुद्रितगिरोऽप्युपहासयन्ति ३६/२९
ते रागादीन्मनसि मिलितानाशु ३६/३७
ते रामाणां मनसि मदनं ३६/३३
ते विग्रहोग्रमनसोपि न खेदयन्ति ३६/१२
ते विद्विषः स्थिररुषोऽप्यनुकूलयन्ति ३६/२३
ते विद्विषामभिमतं हृदि मोघयन्ति ३६/२
ते विश्वमेव चरितैरभिभूषयन्ति ३६/२७
ते शक्तिमप्रतिहतां भुवि जृम्भयन्ति ३६/२१
ते संगरे गुरुरुषोऽपि न योधयन्ति ३६/१५
ते सत्सु कर्मसु रिपूनपि चोदयन्ति ३६/११

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ते सद्गृहेषु गुरुमापदमल्पयन्ति ३६/१९
ते सभ्यानां सदसि नयनान्यश्रु ३६/३४
ते सापराधमनसोऽपि न कोपयन्ति ३६/२०
तेऽनन्तवाङ्मयमहार्णवदृष्टपाराः ५/६
तेनाऽत्र मां निरपराधमवेहि देहि ११/४९
तेनादृतेन शिशुनैव निवेद्यमान- ३९/१०
तेषां सूक्तीरमलमतयः पूगवच्चर्वयन्ति ३६/३५
त्यक्तसर्वदशमक्षयोदयं, १/१२
त्यमलंकृतभूभवनं २३/२४
त्रसतां न कदा भवता २३/६
त्रस्तः समस्त-जनताऽपहृतिप्रगल्भा- ११/१२०
त्राता भीतिभृतां पतिश्चिदचितां क्लेशं ३/५१
त्राता यत्र न कश्चिदस्ति विषमे ११/१३६
त्रिजगति भजति स्थितिं बुधानां १३/६
त्रैलोक्यं लम्भयन्तस्तृणगणगणनां १७/२७
त्रैलोक्यभूषणमणिर्गुणिवर्गबन्धु- ५/१०
त्वं कालभैरववपुर्ज्वलिताऽनलाश्रि १९/१२
त्वं चेत्प्रसादसुमुखः प्रणयोक्तिभिः ११/१०९
त्वं जीवितादपि गुरोरधिका स ताव- २०/२८
त्वं तु प्रभो त्रिभुवनैकमहेश्वरोऽपि १०/६६
त्वं निर्गुणः शिव तथाहमथ त्वदीयं ११/९३
त्वत्पादपङ्कजरजश्छुरितौ च पाणी ९/२९
त्वदनुरागभरेण कदर्थिता १०/५२
त्वन्नाम पामरजनैरपि गीयमान- १२/२४
त्वयि गीर्मया निजगदे बत या २५/१९
त्वयि चक्षुरीश कलितापकृति २५/१३
त्वयि वरदे रुचिरप्रमदाः २४/६
त्वां जीवितेश इति यत्स्तुवते रुदत्यः ९/७२
त्वां नीतिमान् भजति यः स ११/३५
त्वां वामदेवमपि दक्षिणमाश्रितेषु ९/१४
त्वां सतामरसवासवाऽऽसवाः १४/१९
त्वामक्षामशुभानुभावविभवं ३३/१९
त्वामुपेत्य शरणं महेश्वरं १४/१३
त्वामेव देवि शरणीकरवाणि वाणि ११/२६
दंष्ट्राकरालमपि घोरमघोरवक्त्रं ८/१०
दग्धोस्मि तावदमुना दमुना ममाऽन्त- ११/८
ददतं वचनं घनहासकलं ३१/२०
दधतः प्रसादमधुरां धुरामपि १६/२५
दधदुद्धतं हर पुरः पुरंध्रिभिः १६/१५
दन्तानां सितिमनि कज्जलप्रयुक्ते २१/१३
दमितस्तेन हि शमनः २३/२३
दम्भस्तम्भस्थगितगतयः सावहेला-१७/११
दम्भादपि ध्रुवमनङ्गजितः प्रयुक्तः ८/४८
दयोदयोर्जितोऽर्जितो ३०/३२
दर्पकान्तक विराजमानयाऽ- ३०/७
दलदलघुविवेकं व्यक्तशोकातिरेकं १८/१४
दहदहतममोघं पाप्मनां दीर्घमोघं १८/१५
दातुमनुत्तमहावपुषं २४/३
दानं तरङ्गतरलः किल दुग्धसिन्धु- ९/१२
दानाम्बुनिर्भरकरस्तनयः स यस्य ३/१४
दाने नदीनमुपकल्पयतः सहर्ष- १९/२९
दिक्चक्रवाल-मुखरीकरणप्रगल्भ- २०/१४
दिग्देशाकारकालैरकलितविभवं ३३/४४
दिनकर-हिमकर-हुतवहनयनं ३१/२४
दिनान्तरार्त्यागमयोरिवाथवा २९/५
दिवसावसानसमये सरन्मरु- १६/१२
दिवि यदा वियदाभरणं कृपा- २७/१६
दिव्या यदि व्यायतकान्तयस्ते २६/२४
दिव्यापगाप्लवनपावकसेवनाभ्यां ३/१३
दिशमेष विचारहितां २३/९
दिष्ट्या विरुद्धजनता दमयन्त्यपीयं १९/१८
दीनैर्विमुग्धवचनैरसमञ्जसार्थै- ११/१३
दीपोत्करैरविरुचां परिपूरणेयं ९/१
दीर्घाण्यघान्यधिशुचीव भवन्त्यहानि ९/३६
दुग्धाब्धिदोऽपि पयसः पृषतं वृणोषि ११/१४
दुरितहृतौ विषसाद करः २४/२४
दुर्गं यत्सुगमत्वमेति भजते दूरं ११/१३१
दुर्धर्षर्द्धिपुषः सहर्षवपुषस्तर्षप्रकर्षप्लुषः ३३/१२
दुर्वार-दुर्गति-निकार-कदर्थ्यमान- २०/३०
दुर्वृत्तदर्पशमनाच्छमनोऽसि यत्त्वं ९/७७
दुष्कालसङ्कटकदाहकदर्थितानां ८/३०
दूरोदञ्चच्चटुललहरीहारिहस्त- ७/४२
दृग्वर्तिनौ रवितमीरमणावखण्ड- ४/६
दृङ्मार्गमात्रपतिताः सहसैव यस्य ११/११६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दृष्टिः पीयूषवृष्टिर्मधुरमधुरसस्यन्दिनी ३३/३०
दृष्टिः स्त्रीणां मम निवसतो हानिशान्ते २८/२२
दृष्ट्वा यन्मघवा विहाय गतवानैरावणं २८/१७
दृष्ट्वा वधूजनमनुत्तमरूपसंप- २०/९
दृप्तेषु ते मदनदक्षयमाऽन्धकेषु ११/८६
दृष्ट्वा पाटलगण्डलेखमरुणोद्वाष्पेक्षणं - १०/७८
देवं यदेवं यमकैर्महेशं २६/३४
देवं श्रयामि तमहं मुकुटोरगेन्द्र- ८/३४
देवालये वसतिमर्थयते कपोतः ९/४२
देवि प्रपन्नवरदे गुणगौरि गौरि ११/२७
देव्यां भ्रमद्भ्रुवि जयाविजयार्चितायां ३०/७०
देव्यास्तदस्तु कुचचूचुकमिन्दुमौलि- ३/२४
देशं न यत्त्यजति सन्तमसन्तमन्तं ९/७४
दोषप्रदोषप्रसृतापि सक्ता २६/२२
दोषाकरस्य शिरसि स्थितिमुत्तमाङ्ग- ८/४
दोषाणां सहसा विधातुमुदयं नो २८/२०
दोषारयस्तरलयन्ति महामदोषा ३०/४४
द्रष्टव्यं सम्यगर्थप्रवचनपरमं शर्मदं ३४/१३
द्राक्षा साक्षादमृतलहरी १७/२
द्राक्संधत्ते युधमधिधनुर्बद्धबाणा-१७/१३
द्वारि क्षोभः क्षितिधरगुहाभोगजानां २८/२४
द्वारि श्रीश्च सरस्वती च वसतः ११/१३२
द्विजसमाजसमाधिकदर्थन- २७/८
द्विजाधिपाधिष्ठितशेखरं महा- २९/७
द्वेषः किमेष कृपणे किमुताऽक्षमेयं ११/१०४
धत्ते पौण्ड्रकशर्कराऽपि कटुतां ११/१४२
धत्ते यस्य जटा कपालपटलं भव्या २८/१३
धनञ्जयाक्षं सकलार्थसाधनं १४/२३
धनलाभसंभृतविलासवासना- १६/१७
धन्यस्य यस्य वपुषि ग्लपिते तपोभिः १९/१९
धन्यः स कोऽपि सुकविः ५/९
धन्या भजन्ति नृपवेश्मसु वेत्रिवक्त्र- ७/३७
धन्यानां भणितिच्छलेन वदनेषूद्यन्ति ५/२९
धन्यानाममृतं द्रवन्ति हृदये कर्णे ५/२८
धन्याः कमस्खलितपौरुषभग्नभूरि- २०/३३
धन्याः शुचीनि सुरभीणि गुणोम्भितानि ५/३
धन्याः समाधिमवधानधना- ७/३६
धन्योऽस्मि दुःसहविपत्पतितस्य यस्य ११/२
धन्योऽस्मि मोहतिमिरान्धदृशोऽपि यस्य ११/३
धन्योऽस्मि सम्यगमृतं किमपि स्रवन्ती ११/१
धर्मेण धर्मेण निजोचितेन २६/१२
धवलीकृतास्वमलभानुभानुभि- १६/१३
धातुश्चातुर्यभाजो जनजननविधौ या ३३/४१
धारा गिरेरिव तरीव सकर्णधारा- ३०/५५
धीरस्य धीरस्यति तस्य तीक्ष्णा- २६/१६
धूमोद्ग ारगभीरघस्मरवपुर्निर्भर्त्सितार्कप्रभं ३३/२१
धृतकुटिलकलः किलान्धकारी १३/२६
धृतिस्त्वदीयेन सुदर्शनेन मे २९/९
ध्यात्वा देव प्रमयसमयत्रासमासन्नकल्पं १७/३
ध्यायन्त्यनन्यहृदया हृदयाधिनाथ- २०/१६
ध्रुवं नवानां रसगर्भनिर्भर- ३८/१०
ध्रुवं स कृष्णस्तमधश्चकार य- २९/२१
ध्वान्तं शान्तप्रशममहरद्यन्न सद्यः १७/९
न कस्य सौभाग्यवती चमत्कृतिं १२/१४
न कुकर्मविपाककल्पिता १५/२८
न जन्म यस्याद्रिनिवास दारुणः २९/१०
न जातु तज्ज्ञाः कृतिनोऽवहन्त या- २९/३०
न परं शरणं प्रभवति २३/२
न भयं भयङ्करकृतान्तकिङ्कर- १६/२६
न महतामहतामलसंविदां २७/३३
न मे तथा प्रीतिमनेकपाली १४/२०
न मेऽभिभूतस्य पिता न माता ३०/६
न यमाहितभयशमने २३/२१
न यावदवहीयते धृतिधुरा १८/२४
न रसायनपानकौतुकं १५/२१
न वंशवृत्तेर्गणयामि तानवं १४/२२
न वारबाणा न हया नवारवा ३०/२०
न विद्यया प्रीतिरनर्घमानया ३८/७
न विधिर्निधिलाभसंभृतो १५/१९
न शिशोरसमञ्जसं वचो १५/२०
न समानसमागमा तथा १५/३०
न हरिणा हरिणाङ्कशिखामणे २७/६
न हि महेश मनस्त्वदधिष्ठितं १०/२७
न हृद्यतामेति परस्य दुर्मुखः ३८/४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नतानतानवानवा- ३०/३५
नमस्तमस्वतीकान्त- २/४
नमस्तमः पारपरार्ध्यवृत्तये २/२९
नमस्तमःपराभूत- २/६
नमः शमनहुङ्कार- २/७
नमः शिवाय निःशेष- २/२
नमः संहृतकालाय २/१७
नमः समदकन्दर्प- २/८
नमः समस्तगीर्वाण- २/३
नमः समस्तसंकल्प- २/५
नमः समुत्पादिततारकद्विषे २/२७
नमः सान्द्राऽमृतस्यन्दि- २/११
नमः सोमार्धदेहाय २/२१
नमो जन्मजरामृत्यु- २/९
नमो नमस्तेऽमृतभानुमौलये २/२८
नमो निसर्ग-निर्विघ्न- २/१०
नमो ब्रह्म-हरि-त्र्यक्ष- २/२३
नमो वाङ्मनसातीत- २/१२
नयनमुदीर्य तमो हर मे २४/५
नयविनयविशुद्धमन्तरुद्य- १३/३५
नरमुखकल्पितशेखरमालं ३१/१२
नरास्तत्त्वालोके नियतमनया दूषितदृशो ३५/७
नवनवभ्रमरस्वनशोभिनी १०/५
नाऽगाधमाप तव हृन्मम धीरनागा ३०/५२
नाथ ज्योत्स्ना बहुलरजनौ कार्तिकीयेव १७/७
नाथ प्राथमिकं विवेकरहितं - ११/१३३
नाथेति जीवितहरेति दयापरेति ९/२३
नानुग्रहस्तव विना त्वयि भक्तियोगं ९/३३
नामान्यः सुमतिरयं २३/१४
नायं विनाऽयं विदधाति लोकः २६/११
नार्हत्यमन्दरयमन्दरयत्नलब्धा १३/४३
नास्य स्पृहाऽस्ति सरसाय रसायनाय ९/६
निक्षिप्तं शतसप्तकेन सहितं ३९/१४
निगूढतिमिघट्टनस्फुरितदीर्घिकासंभ्रम- १०/८८
निजवृजिनविजृम्भितं ममैत- १३/२९
निजाङ्गभङ्गभङ्ग्यापि २/१५
नित्यं निरावृति निजानुभवैकमान- ३/१
निदाघनिर्दग्धमहामरुभ्रम- ७/२०
निधनसाधनसान्द्रलसद्विषा- २७/१८
निधाय चक्षुर्दहतो मनोभवं २९/१९
निपततां विषमे विपदम्बुधौ १०/३१
निमित्तमन्तरेणापि २/२०
निर्भर्त्सितक्रतुमृगं समशिश्रियत्त्वां ११/१२१
निर्भर्त्सितो विपदि बन्धुरिवाऽभिमानी ९/३७
निर्मत्सरः सहृदयः श्रुतपारदृश्वा ३९/९
निर्मत्सरौ निवसतः सममर्कचन्द्रौ ३/१५
निर्वाणमेति न जलैरपि यत्र वह्नि- १९/२७
निशान्तनिद्रेव दशेव शैशवी ७/१
निष्कर्ण एष कुसृतिव्यसनी द्विजिह्वो ११/५१
निसर्गतः सत्पथगर्हितस्थिति- ७/१७
निःशङ्कं विकलङ्कमङ्कवि-३३/२८
निःसामान्याय मान्याय २/१६
नीतावनीतावचलैरलभ्यः २६/१०
नीलकण्ठ तरुणेन्दुशेखर १४/४
नीहारहारधवलस्य जयत्यपूर्वः ५/१५
नुतिमुखरमुखः प्रसादपात्रं १३/१७
नुतिर्मयेयं भजतां हिताय ते २९/३२
नूनं पयोधिमथनावसरे परेश १९/२२
नृजन्म तस्यैव भवानवद्यं १४/२५
नेत्रत्वमीश तव मूर्तिविलोकनेषु ९/२७
नो भोगिनो भोगिभिरर्चितो यः २६/२१
नौमि भक्तजनकण्ठनिःसर- ३०/३
न्यग्भावितद्विजमखर्वितपूर्वदेव- ११/५९
न्यस्तं येन मनस्त्वयीदमहतोत्साहं २८/९
पथ्यं च तथ्यं च भरक्षमं च १२/७
पदमाप्तुमार्तिशमनं गहनं २५/१७
पद्मसद्म-करमर्दलालितं, १/१६
पद्मस्थं पद्महस्तं गजवरवदनं नन्दनं ३४/११
पद्माश्रितः शतधृतिश्चतुराननोऽपि ११/१२२
परमया रमया रहितस्य मे २५/२७
परमारकाऽन्तककृतोपरमा- ३०/६७
पराऽपराधबान्धवाः ३०/३६
परिणतशरदिन्दुसुन्दराभं १३/२४
परिम्लानो मानस्तनुरपि १०/६८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

परोपकारैरिव राजसेवनं ३८/१२
पलितमीलितमीश मम स्मर- २७/१९
पवनवेल्लितकमलिनीदलतलचलज्जल- ३२/४
पश्चात्पुरः प्रतिदिशं च विमृश्य ११/१०१
पश्यन्तमन्धमभिमानिनमस्तमानं ९/६०
पाणौ निधेहि पवनाशनपाशमाशु ९/६६
पात्रीभवन्ति न यदङ्घ्रिसरोजरेणु- ८/२५
पादद्वयं तव भव प्रणतिप्रकर्ष- १९/५
पादाग्रनिर्गतमवारितमेव वारि ४/८
पापग्रहो धृतिमुपैति विना परेषां ११/४४
पापः खलोऽहमिति नार्ऽर्हसि मां ११/३७
पापानि तेऽश्मशकलानि व चूर्णयन्ति ३६/७
पायाद्वस्त्रिजगद्गुरुः स्मरहरः ३/४८
पावकेन शिखिनोपशोभितं, १/२२
पाश्यावशेनेव महाविहङ्गं ३१/२
पुरः स्फुरन्तं विमृशन्महेश्वरं ३८/८
पुरा चिरं यो विदधे वनान्तरे १२/१६
पुरा पुरारेः पदधूलिधूसरः ३९/१
पुष्णातु वः प्रथमसङ्गमभीरुगौरी- ३/४०
पुष्पेषु दोहदवशादवशा भृशं या ९/८
पूजार्थमम्बुजसहस्रमुपाहितं य- २०/८
पृथुलसज्जघनोरुपयोधरा १०/१९
पृथुशिरस्त्रिदशापगया श्रितं १०/५१
पृष्ठे भवन्तमयमुद्वहते कदाचि- ११/५४
प्रकाशकलितापदं शकलितापदं ३०/७८
प्रणतं जनं जितजरामरणं ३१/९
प्रणततापविपत्क्षपणक्षमां १०/६३
प्रणमति विधुरे पुरोऽवलग्ने १३/३०
प्रणमामि प्रणमामि ३७/२०
प्रणयेन चिरं प्रसादिता १५/१३
प्रतिभामिव काव्यकर्म्मणा १५/२
प्रत्यग्रकर्कशमशल्कमुदर्कपथ्यं ९/६२
प्रत्यङ्गं घनपरिरम्भतः प्रकम्पं २१/९
प्रथयति यस्तव हन्त महं २४/१०
प्रबलतापकदर्थितविग्रहं १०/६२
प्रभया परिभूतदलद्गवलं ३१/१७
प्रभवति भवति प्रसादरम्यां १३/११
प्रभातगुणवर्णनप्रवणबन्दिवृन्दस्तुति- १०/१०
प्रभुं प्रपत्तुं स्थलमेहि मालयं २९/१८
प्रमदा मदारुणदृशः कृशोदरा- १६/२४
प्रमुखपेशलविषमवैशसविषयपाश- ३२/३
प्रसिद्धोऽयं पन्था न भवति विचित्रा ३५/१२
प्रस्तौति निस्त्रपतयार्त्तिकदर्थितेयं ११/११
प्राक्चेन्मया विहितमाविलमेव कर्म ११/३०
प्राज्यं राज्यं नृपतिमकरीरत्ननिर्यत्न २८/२३
प्रातः प्राभञ्जनेऽस्मिन्पथि ३३/४३
प्राप्ता कल्पलतेव चेद्भगवती ५/३२
प्रियतमोऽसि मतेर्मम सा पुन- १०/५३
प्रियां मुखे यो धृतपञ्चमस्वरां २९/३१
प्रेङ्खद्भिर्भर्यन्मयूखैर्विदधति धवले ३३/४२
प्रेमाणं मणिकर्णिकां प्रति बुधा ३९/१३
फुल्लारविन्दमकरन्दधृतप्रसङ्ग- ८/३१
फुल्लारविन्दवदना विकसच्छिरीष- ९/२२
बभ्रुर्बिभर्त्यलिकपावकसौहृदं यो ३/२०
बलवदिन्द्रियतस्करसङ्कुले १०/१३
बहुना किमत्रकरुणामुमापतेः १५/४०
बाणबाणकृतपूजनैर्जनै- १४/१८
बालावुभौ द्विजपती तव नाथ भक्ता- ११/६४
बाहुद्वन्द्वं तुलित-विवलद्बाल-१७/२३
ब्रह्मादिभिस्तव जगद्गुरुभिः शिरांसि ११/२६
भक्तप्रियः स्वयमपि क्षुधयाऽन्वितस्य ११/६८
भक्तितः सपदि सर्वमङ्ला १/५
भक्तिनिर्भरगभीरभारती- १४/२
भक्तिरसस्तव देव समां २४/४
भगवन् दृढबद्धमूलयो- १५/१७
भगवन् मदिरामदोन्मद- १५/२६
भङ्क्तुं न पारयति यः क्वचिदेव देव ११/२८
भजतः सरलेव भारती १५/२५
भजतां सरसाममलां २३/४
भजति भज तिरश्चीं दृष्टिमिष्टप्रसादां १८/११
भजसि यया किल कामदया २४/११
भजामि मायाशबरं वरं वरं २४/२६
भद्राभिधे गज इवेशमक्लृप्तभद्रा ३०/५१
भयहरणे महिताभ यतः २४/२५
Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भव तेजः प्रसर-सितं २३/१२
भव भवत्पदपङ्कज- १०/२४
भव भवत्परिरम्भसुखोऽस्तु मा १०/५४
भव भवमरुचारश्रान्तसन्तापतान्ति- १८/४
भवतः प्रसादमधुरामहतां २५/९
भवति पश्यति नश्यति दुर्गतिः १०/२८
भवद्भक्तिं तस्य व्युपशमसमर्थामथ ३५/५
भवन्तमाराध्य परार्ध्यवैभवं १४/२१
भवबन्धबद्धविधुरोद्धरणं ३१/६
भवभयभञ्जनभङ्गिविधौ २४/११
भवभवपरिभवधुतविधुरधिया- ३१/२२
भवमरुभ्रमखेदकदर्थितं १०/५८
भवमरुभ्रमविषमसंभ्रमसमुदितक्लम-३२/१
भव-महार्णव-निस्तरणप्लवः १०/३
भवरसं प्रति सम्प्रति तृष्णया १०/४०
भव-संभव-संहत-मोहतमो- ३०/४०
भवान्धर्मं साक्षादकृत सहजज्ञानमहसा ३५/२१
भस्मोज्ज्वलं त्रिदशशेखरपद्मराग- १९/६
भस्मोद्धूलितमूर्तिरिन्दुधवलज्योतीर- ३/५०
भानुना तुहिनभानुना बृहद्- १/७
भालस्थलानि कलयस्यमलेन्दुमौलि- ९/७६
भालस्थलीव तिलकेन वधूकटाक्ष- ९/८०
भालस्थले हुतवहं वहतो जलं च १९/२८
भालाग्निकीलकलिताखिलरन्ध्रभागं ३/२७
भालानलं तव यथा मुकुटस्थितैव ११/२९
भालेऽनलं तव गले गरलं करे च ११/७०
भावत्कभक्तिभरसंभृतभूरिभूति- २०/६
भावानुभावानुगमेन रूढा २६/२३
भिक्षाशनोऽपि भगवंस्त्वमकिञ्चनोऽपि ९/३०
भित्त्वाऽलिकं सभ्रुकुटीविभङ्गं ३१/४
भिन्द्धि क्ष्माधरसन्धिबन्धमुदधेरम्भोभरं ३/५४
भीताभयार्पणविधौ किल कालनाशं १२/२७
भीते भवार्तिविधुरे चरणावलग्ने ११/१०६
भीमां पंक्तिं पुरुषशिरसां २८/२५
भीष्मो विषादपि विषादपिनद्धमेत- ९/४
भुक्तं विकल्पकवलैः सुरलोकसौख्य- ९/३५
भुजगा इव चन्दनद्रुमं १५/१४
भुवनपावनपादमधर्षितं २७/२
भुवि भुवि कुविकल्पः स्वल्पतामेतु ३८/२९
भूताऽभिभूतमपि सिन्धुजलेऽपि ११/११४
भूतिर्विभूतिर्विपुला दिशश्च २६/६
भूत्यै वोऽस्तु विडम्बित,स्मितरुतं ३/५५
भृङ्गारे करपुष्करप्रणयिनि ११/१३८
भृशमनीशमनीतिपथस्थितं २७/१०
भ्रमदमन्थरमन्थरयाहति- १०/४९
भ्रमादनिर्माय पुरातनः कवि- ३९/२
भ्रान्तोऽस्मि वैशसमये समयेऽहमत्र १/२५
भ्राम्यतु द्रविणतृष्णया भृशं ३०/४
मखैरुपास्योऽपि नयज्ञसेव्यो १२/१
मणिः सुसूक्ष्मोऽपि यथोल्बणं विषं ७/९
मत्वा सद्यः सुकृतसुलभं दुर्लभं १/२९
मत्वाऽथ नाथ शुचिजातिममुं ११/६०
मदनमहीरुहदवदहनं २४/१२
मदनवादनवादनवासना- ३०/२५
मदयञ्जितविप्रकृतीः २३/२२
मदयसि येन जनं सकलं २४/२१
मधुद्रवार्द्रं विषमाहरामः १२/८
मधुनाशिनाऽर्चित समं मधुना ३०/६२
मधुरमिन्दुमुखीवदनादपि १०/४
मधुरागारुणनयना २३/३
मधुव्रतः सौमनसीमिव स्रजं ३८/१७
मधुस्यन्दी मन्दीकृतविपदुपाधिर्भवमरु- ५/२६
मध्यस्थितेरुभयपार्श्वगता चकास्ति १९/११
मनस्यदोषेऽप्यतिदौर्मनस्यदो ३०/१९
मनस्विनीनामिव साचि वीक्षितं ३८/१८
मनः समाधौ परमान्तरङ्गं ३१/१
मनुष्यता पूरुषताऽग्र्यवर्णता ३८/९
मनो भृशं भ्राम्यति बालिशं भवे २९/१२
मन्त्रौषधादिक्रियया भुजङ्गं ३१/३
मन्दस्पन्दे मनसि रसिकीभावमासाद्य १७/१
मन्यामहे गतिमृते त्वयि भक्तिमन्या- ३०/४२
मन्ये तां स्पृहणीयगौरवगुणामायामिनीं २८/३
मन्ये भवान्तर-शतोपचितस्य पुण्य- २०/३६
मन्ये मनोवचनकर्मभिरद्भुतानि ३८/२४

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मम निकामनिकारकृतो वृथा २७/२२
मम सारः संसारः ३७/१९
मयि ध्रुवं दृग्भवता बताऽवता ७/७
मरालमाला सरसीव निर्मले ३८/१५
मरुतायतेव मलयाचलतः २५/८
मरुभुवि वरमुष्णरश्मिरश्मि- १३/१५
मरुमेदिनीरचितसंचरणं ३१/८
मलक्षयमलक्षयं भव भवत्प्रसादादहं २४/२७
मलमलक्षवलक्षबलस्मर- ३०/३९
मलमलमलघुं विहन्तुमाप्तुं १३/३७
मलयानिलमिव सुरभिं २३/१९
महतामतामसमहावपुषं ३०/१०
मा भूद्भूयोऽभ्यसनसुलभान्वीक्षिकी १७/१९
मातः सरस्वति बधान धृतिं त्वदीयां ११/२४
मानः कस्य न वल्लभः १०/७६
माऽनारतं निजपरैरुपभुज्यमाना ३०/४३
मानुष्यनावमधिगम्य चिरादवाप्य ११/३२
मान्योऽधमान्योऽधरयत्युदग्र- २६/५
मायाऽर्करश्मिपटलीव मरुक्ष्माया- ३०/४८
मार्जारशूकरशृगाल-करालवक्त्र- ११/११८
मित्रत्वमेष भवतो गुणिबन्धुतां च ११/४५
मीलद्विलोचन-समुद्ग -समुद्ग ताऽश्रु- १/२४
मुक्तामया दीर्घगुणाः सुवृत्ता १२/१०
मुक्तार्पितस्वपदपूर्णकृपाऽविमुक्ता ३०/५७
मुक्तावलीव रहिता शिव नायकेन ९/४६
मुक्तिर्हि नाम परमः पुरुषार्थ एक- ३/४४
मुक्त्वा समाधिमसमाधिहरं परं च ११/७३
मुञ्चद्भिर्यमकिङ्करैः कृतमहाजृम्भैरवं२८/७
मुञ्चामितभास दृशं २३/१३
मुद्योगमुद्योगभृतो भजन्ते २६/२५
मुहुः किमपरं ब्रुवे भुजगपाशपाणिं ११/१३०
मूढमूढविपदं पदं शुचा- १४/१६
मूर्तिर्धूतिं प्रथयति यथा मञ्जरी १७/१७
मूर्तिः कृमेः शतपदी श्रवणं प्रविष्टा ८/२२
मूर्तिः क्व बालकदलीदलकोमलेयं २०/१९
मूर्त्तिर्ध्रुवं तव शिवामृतवर्तिरेना- १९/३
मूर्त्तिस्तवेव शिव मे विधुरोचितेयं ११/९६
मूर्ध्नि चन्द्रकर-सुन्दरत्विषं, १/१८
मूर्ध्नि द्युसिन्धुधवले धवलेन्दुलेखा ३/२१
मूलोज्झितेन कलिकाकलितेन ताप- ३/१२
मृगेन्द्रशावा इव कन्दरोदरा- ३८/१४
मृत्युं मृत्युञ्जय जय जगद्घस्मरं १४/२७
य जयति जितकाल कालकूटः १३/२३
यं देवमस्तशिरसं सुरभर्त्तुरङ्के ८/१४
यं भूषयन्ति कमनीयमहीनभोगाः १/२७
यं मुक्त्वा जीवयन्तं जगदगदमदः ३३/३८
यं वीक्षसे क्षतमहाकलिकाल सन्तं ९/४५
यं स्वयं स्वरसभैरवे रवै- १४/१७
यच्च प्रेङ्खदखर्वगर्वघटितभ्रूभङ्ग- ३३/२६
यच्चक्रिरे धृतनखान्तनिपातपीडाः १२/२२
यच्चाटुचापलमलङ्घ्यभवभ्रमोऽहं ११/६
यच्चाऽस्मिन्भवडम्बरे परिणमन्मन्दा- ३३/२७
यच्छत्रचामरसिता कृतिनां विभूतिः ९/२८
यज्ञे नयज्ञेन वृतो न पूर्वं २६/९
यत्कर्णतालवलनानिलधूत-कुम्भ- २०/११
यत्कान्तिं दधदपि काञ्चनाभिरामां २१/७
यत्कालकूटकवलीकरणप्ररूढ- २०/१५
यत्खर्वीक्रियते सुखं विषयजं १०/७९
यत्तत्सर्ग-निसर्गनिर्मितिकरं १४/२८
यत्तु निर्जरतरङ्गिणीतटे १४/१२
यत्ते परं वरद रूपमतीतमेव १९/१
यत्पर्याप्तकृपाविपाकविकसन्माधुर्य-३३/२४
यत्पादपांसुपरिमर्शशुचि श्मशानं ८/१३
यत्पार्वणेन्दुकर-सुन्दरवाह-हंसं- १/२६
यत्प्राणिषु प्रभवसि प्रसभं प्रहर्तुं ९/७०
यत्र ध्रुवं हृदय एव यदैक्यमासी- २१/२०
यत्र ध्वान्तक्षपणनिपुणं दुर्बलं धाम १७/१८
यत्र ब्रह्माण्डपिण्डः प्रसरति ३३/४०
यत्राग्निरीप्सति कणं न विवृत्य जिह्वां ३/३७
यत्रार्धं घटयति भूरिभूतिशुभ्रं २१/६
यत्रासीज्जगदखिलं युगावसाने २१/१६
यत्रैकं चकितकुरङ्गभङ्गि चक्षुः २१/४
यत्सत्यं सदसद्विवेकविकलग्रामीणक-३९/१६
यत्सत्यवत्यपि जगद्विदिताऽनसूया ११/१५

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यत्सर्गाभरणायमानवपुषः ३/६०
यत्साकूतं मुकुलितदृशः १७/२४
यत्सेवकस्य मदनोल्बणबाणपूग- ८/२७
यत्सौन्दर्यसमुद्रसान्द्र- लहरीहेलाचल-३३/२५
यत्सौभगेन घनमोघममोघमेघ- २०/१
यथा विना द्यौररविन्दबन्धुना ७/१३
यथा हि शीलेन विना कुलाङ्गना ७/१२
यथाल्पमप्यौषधमुन्मदं गदं ७/१०
यथोपादानं मृत्तदनु सहकारीह लगुडो ३५/१८
यदप्यजस्त्रं जडसङ्गमोचितः ७/१८
यदभयद भवत्यवस्थितेऽन्तः १३/३४
यदमृतमम्बुधिमन्थन- ३७/१४
यदा मुखे कामधुरानजस्त्रं १२/९
यदि भवेन्न घनावरणोद्गम- १०/२२
यदि कृपापर पापरतस्य मे २७/१३
यदि चिकीर्षसि सौहृदमात्मनः १०/४६
यदि तावदियं न गाहते १५/२९
यदि न दीर्घतमाः समवाप्नुयुः १०/२१
यदि न पीनघनस्तनभङ्गुर- १०/१२
यदि पारिजातकुसुम- ३७/१२
यदि भजेत न सज्जनसङ्गम- १०/१०
यदि भवान् विदधीत हृदि स्थितिं १०/८
यदि मधौ मधुपान-मदोन्मद- १०/१६
यदि मनुषे यमनियम- ३७/१७
यदि वराक सुकर्मविपाकतः १०/४७
यदि विभा दिवि भाति न तावकी २७/२३
यदि शुचौ मनसीव न मानिनां १०/१८
यदि समर्थयसे दुरतिक्रमं १०/४५
यदि ह्ययोग्याश्चरणान्तिके वयं ३८/११
यदेष सेहे परशुक्षतव्यथां १२/२१
यद्दर्शनाऽमृतसुखानुभवेन धन्या ३/१८
यद्बन्धुजीवदलसद्रुचिरर्थिभाव- ११/४७
यद्यप्यासामनलसरसस्फारसारं न ३९/१२
यद्यर्चितः स भगवानपि जीविकार्थं ८/४६
यद्द्वन्द्वं प्रसन्नं लसदसमरसस्पन्दसन्दर्भ- ३४/२
यद्द्विभो तव हृदि प्रविभाति नाग- ११/९५
यद्द्विषं सदमृतं शिरसि प्रसिद्ध- १९/१६
यद्वा न मुग्धचरितान्यपि न प्रसाद- ११/१२
यद्वा भवत्यसुलभो भवदाश्रितस्य ९/३
यद्वाङ्मयं सकलवाङ्मनसातिवृत्त- २०/२
यद्विश्वोद्धरणक्षमाऽप्यशरणत्राणै- १०/८१
यन्नाम पामरजनोचितमत्र किञ्चि- ११/११२
यन्निःस्पृहोप्यजनयस्तनयं कुमारं ९/४०
यमं ययारब्धमहामहाऽनयः २९/२८
यमभटैर्ह्रियमाणमयन्त्रणै- १०/६०
यमेकमाराध्य महारिसङ्गमा- १२/१२
यमेकमेव श्रयतो न जायते २/२५
यया भजन्ते भुवि मानवा हितां २५/२६
यस्ते ददाति रवमस्य वरं ददासि ११/७९
यस्मिञ्जातस्त्रिभुवनजयी भग्नकामः स ३/४६
यस्मिन् गुणी सहृदयः सफलः समूलः ४/७
यस्मिन्नखिन्नमनसो व्यसनावसन्न- ८/२८
यस्मिन्नद्रिसमुद्रजावहनयोरुत्सृज्य २९/३६
यस्य क्षितिः शिरसि सौमनसीव शेषा ३/४२
यस्य त्वन्नमनैः शिरोदशशती ३३/४
यस्य द्युसिन्धुलहरीशुचयो न कस्य ५/२२
यस्य शस्यमहसो निरर्गलं १/१३
यस्य स्त्रवन्त्यमृतमेव मुखे तुषार- ५/११
यस्या हन्ति धृतिं विवेकविहितह्रासा २८/१०
यस्याऽतिघोरगरलादपि कण्ठपीठा- ८/९
यस्यापगा स्त्रगिव सौमनसी जटासु ८/३७
यस्यापि कृष्णभुजगा भुजगा भजन्त- ८/११
यस्येभचर्मघनशोणितपङ्कलिप्त- ८/१२
यस्यैकस्य सुवर्णसंभृतपदन्यासान- ३/५७
यस्यैताः स्तवसूक्तयस्तव मुखे खेलन्ति ३३/७
यस्योचितः प्रथितमान समाधिनान्त- ९/४७
यः कन्दुकैरिव पुरन्दर-पद्म-सद्म- ३/६
यः कुण्डमण्डलकमण्डलुमन्त्रमुद्रा- ३/९
यः क्रोधाग्नेः समिधमकरोद्दर्पकं ३/४७
यः क्षीरनीरनिधिमङ्क्तिले सुधाम्भः- ८/३६
यः खेऽलयः खेलति यः शिखाभिः २६/७
यः सुवर्णेन चन्द्रेण २/१४
या दुर्लभा दिवि महर्षभयान कस्य ९/४४
या निःशेषौषधीनां जनिरजनि ३३/३६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

या राजहंसशिखिसंभृतकान्तिरेति ३/३५
या शंसया शंसति शंभुभक्तिं २६/३२
या हन्तया हन्त नृपेऽप्यवज्ञा- २६/३३
याचे न किञ्चिदपरं वसतिर्गिरीन्द्रे ९/३१
याता गुणैरुपचयं विमला प्रकृत्या ५/१२
यामाश्रितोऽम्बरमणी रमणीयधामा ३/३९
यावत्त्रपापरवशं क्षितिमीक्षमाणं २०/२३
यावद्दुःसहवह्निहेति-विहित- २८/८
याः क्षीरसिन्धुलहरीवृतमन्दराद्रि- ३/२५
याः पङ्किलेन कलिलेन वियोजयन्ति ८/२
युक्तं रिपौ सुहृदि वा समदर्शनस्य ११/६५
युक्तं सुधाकरसुधाकरकद्युसिन्धु- ८/२१
युष्माकमस्तु नवनीलसरोजदाम- ३/३३
ये विश्वस्थितिसर्गसंहृतिकृतो १७/२९
ये सन्तोषप्रशमपिशुने क्लेशराशौ १७/१०
येन नेत्रकरशेखरस्पृशा १४/१
येन शीतकरखण्डशेखर ३०/८
येन शुचं हतलोभ जन- २४/२०
येन सतां विपदानयनं २४/२२
येनापि तापविपदं प्रथमं जहर्थ २०/४
येनेश्वरेण महता विहितागसस्ते ९/६४
येनोपदिष्टमनपायमुपायमाप्य ३/११
येनोपमन्युमपमन्युमनन्यभाज- २०/३
येषां वक्त्रे समदमुदितत्वच्चरित्राः १७/६
येषामन्तः सुकृतसरणिः स्थाणवीया १७/८
येषामेषा तनुधनलवप्रार्थनाऽनर्थकन्था ११/१२८
यो मूर्धनि ध्वनदनर्गलनिर्झरौघ- ११/७
यो मूर्धनि स्त्रजमिवोद्वहते धरित्री- ५/२
रजनिराजनिराकरणक्षमः २७/१५
रमापि देवी मम नो मनोरमा ७/१५
रम्यरीतिरनघा गुणोज्ज्वला १/३
रविकरविकसत्सिताब्जशुभ्र- १३/३३
रविजं रजोभिरिव मेचकितं २५/१२
रविजस्य वर्ष्म सहसा रचितं २५/१४
रविरलङ्कुरुते नवरञ्जनं ३०/९
रविरहो विरहोद्धरणाद्दिश- २७/३०
रविसुतवर्ण मम स्मरतः २४/९
रसकृद्योऽप्रतिघस्मर- २३/२६
रसमये समयेऽसमयेहया ३०/२४
राकाकान्तरुचः क्षताखिलशुचः ३३/११
राकेन्दोरपि माधवादपि संतां ३३/५
राकेन्दोरपि सुन्दराणि हृदयग्राहीणि ३/५८
रागोद्रेकात्कनकलशाकारमालम्बि १७/२५
राज्ञामाज्ञाविहति-विहितानीकिनीनीरसश्रीः १७/१५
रामादिसेव्यभवभक्तिभृतोऽभिरामा- ३०/४१
रामाभिरामाभिमता धृतार्धे २६/३०
रुचितं नोरगसदनं २३/१७
रूपं प्रदर्श्य विदधद्गिरि सानुकम्पं २०/३१
रूपं यद्भवतो दधत्परिकरं २८/१५
रे दुर्विनीत खल काल पुरा पुरारे- ९/६५
रोगैरुग्रैरखिलविगलत्सौष्ठवो नष्टचेष्टः १५/३३
रोमन्थमन्थरकुरङ्गशताश्रितेषु ७/३५
रोहन्मोहमहीरुहोरुपरशुर्दुर्वारमारज्वर- ३३/१५
रोहिणीरमणखण्डमण्डनं ३०/२
लंकेशकम्पितकुबेरगिरिप्ररूढ- २०/७
लक्ष्याण्यलक्ष्याण्यपरत्र यत्र २१/२३
लज्जेऽहं भज दूरमेव रभसादेवं धुता २८/११
लब्धं चिरेण सुकृतैरचिरस्थिरं च ९/५२
लब्ध्वा धृतिर्दिवि कदाचन वासवेन ९/४३
लभ्यः स कुत्र सुजनः स्वकृतीः प्रदर्श्य ५/१८
लीलाविलोलललनानयनान्तवास- ९/११
लेखाः सन्तु प्रसन्ना बुधसदसि - ११/१४०
लोकं शोकहरं परं प्रति भृशं २८/१९
लोकत्रयस्थितिलयोदयकेलिकारः ३/३
लोकत्रयाऽभ्युदयजन्ममही महीयः ३/२६
लोकान् सलोकान् सदयोऽसृजद्यो- २६/१४
वक्ता च यः सुखयिता च विभुः ३/१६
वक्त्रं बिभ्रददभ्रदीर्घदहनज्वालं भयं २८/२
वक्षः सद्मस्थपद्मं करकमलतल-३४/४
वचसि सरस्वति मे विभवं २४/१
वनमेव शरणमधुना २३/१६
वन्दामहे च विविधं विजदामहे च ९/५१
वन्दे युगान्तसमयोषितसप्तलोकं १९/८
वन्देमहामलमयूखमौलिरत्नं २१/१
Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वपुःखण्डे खण्डः प्रतिवसति १५/३७
वरं भवेदप्यवरं कलेवरं ७/२४
वरद नन्दय विपदमर्दय किमिति ३२/७
वरद भवन्तमृते धरते २४/१६
वरमजिनजटाभृतः कपाल- १३/१४
वरमरण्यसरित्पुलिनस्थली- १०/२७अ
वरमेनोहरममलं २३/१८
वर्षन्तीभवदोषपोष-परुषप्लोषप्रमोषक्षमं ३३/२३
वर्षावर्षायमाणा सहृदय-शिखिनां ३०/८१
वसु धान्यमुज्झितुमपीवसु धा- ३०/६३
वहता हतान्धतमसामसादितां १६/४
वहतु सा रमणी रमणीयता- १०/३५
वहन्तमुद्दामभुजङ्गमङ्गं ३१/५
वह्निशीतकरघर्मरश्मयो १४/६
वाचां तवाचान्तशुचां शुभाना- २६/२६
वाचाममी न विषये विषयेषु येषु ९/३२
वारांनिधेरिव सुधा तव दुर्निवारा ३०/५०
वारि वारितभवार्ति मूर्ध्नि ते १४/१५
वासः क्षीणदशं वयश्च करणग्रामं ९/८१
विचिन्तयञ्जीवनमेव जीवनं ७/२३
विजयजयप्रदाय शबराय वराय नमः २/३०
विजितं मया जगदमोहतया २५/७
विजृम्भमाणे तमसि प्रगल्भे १२/४
वितन्वती भक्तिमतां समानतां २९/२६
वितर नदीरमणं शमनं २४/१३
वितरणाभरणा भरणाभय- ३०/२७
विदलयितुं यमृते भवतालं ३१/१४
विद्यामविद्यामपि तां यया त्वा- २६/२९
विद्याविहीनमिव सत्कुलजस्य ११/१००
विधौ जगत्सर्गविधौ यदाहितं २/२६
विनतानन्दनं नाग- २/२२
विनयशोभि यशोभिरतं मनः २७/३१
विभुं विरिञ्चोऽपि न वेद नाम यं २९/२२
विभुमाश्रये विगलदङ्गलतः २५/२१
विभो भवद्भालविलोचनाऽनल- १२/१८
विमत्सराणां सदसद्विवेकिनां ३८/२०
विमर्शशून्येन मया निरर्थकः ३८/३
वियदियति महस्विमण्डले कः १३/९
विशदशोभयशोभय शोभय ३०/३०
विश्रान्तिर्न क्वचिदपि विपद्ग्रीष्म- ११/१२७
विषमरोषमरोः पथि पातय- २७/२१
विषमविषाग्निशिखाविकरालं ३१/१३
विषयपन्नगपाशवशीकृतं १०/५९
विषयान्प्रति प्रयतमानमदः २५/११
विषयैर्मुखे वरद कामधुरै- २५/६
विषयोपभोगरहितः ३७/१५
विस्रब्धं विलसन्त्युपस्कृतपदन्यासा ५/३३
विस्रम्भमम्भसि भजे भगवन्नगाधे ११/७८
वहितं मयि चारु चिरं २३/७
वृषलक्ष्मणः प्रणतलोकबन्धवः १६/१
वृत्तं क्व ते सकलवाङ्मनसातिवृत्तं ९/५०
व्यक्तिर्न यस्य न मतिर्न गतिर्न शक्ति- ११/९२
व्यक्तोज्ज्वलालिकचितं मुखमायताक्षं ८/३२
व्यापारय स्वपुरुषं पुरुषं परेषु ९/६७
व्योम प्रचण्डभुजदण्डविघट्यमान- २०/१३
व्योम्नीव नीरदभरः सरसीव वीचि- ३/२
शंभोरदभ्रशरदभ्रतुषारशुभ्रं ३/१०
शकलितकलितर्ष सप्रकर्ष १३/१०
शङ्का भृशं का भृतकप्रियश्चे- २६/१८
शब्दार्थमात्रमपि ये न विदन्ति तेऽपि ५/१७
शमनाय शुचां त्वमुमेश मनाक् ३०/६१
शमयितुमलमग्निमग्निरेव १३/१३
शमितसङ्गमसज्जनतापदं ३०/७२
शमिषु कामिषु कारुणिकेषु वा २७/४
शम्भो दम्भो दहति कुहकारम्भ-१७/१२
शयशयननिविष्टं वक्त्रमापाण्डुगण्डं १८/१३
शरीरं नीरोगं नवमपि वयः १०/८४
शशिशकलशिखण्ड त्वत्प्रसादेन धन्याः १८/८
शाणोपलोत्कषणशुद्धनवेन्द्रनील- १९/१३
शाणोल्लीढनवेन्द्रनीलमहसि- ३/५९
शान्तं मनो यदि यमैर्नियमैः किमन्यै- ९/३४
शान्ताकृतिर्द्विजपतिर्विमलः ११/४३
शारदीमिव नदीं प्रसादिनी- ३०/१
शिखरं द्युनदीलहरीतरलं ३१/१८

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शिरसि स्रजेव विधुरोचितया २५/२०
शिव शिव शङ्कर शङ्कर ३७/४
शिवस्तवकृतो मधौ मलयवायुवेल्लल्लता- १०/८६
शिवेन देव्या जगृहे करोहित- २९/२
शीतस्निग्धं परिमलसुखं घानसारं २८/२१
शुभरतो भरतोऽप्यभवद्द्विषद्- २७/९
शुभवता भवता भवतारिणा ३०/२९
शुभ्रं बिभ्रत्तरुणकरुणाऽऽक्रान्तम१०/८२
शूलाधिरोहणपराभवमन्धकस्य ८/७
शृङ्गी यत्र स्फटिकशिखरी यत्र ११/१२६
शृङ्गी विवेकरहितः पशुरुन्मदोऽयं ११/५३
शैलादिवादितमृदङ्गलयानुयात- २०/१२
शैवी शिवं दिशतु शीतमरीचिलेखा ३/२३
शोकोद्रेकादविरल- गलद्बाष्पपूर्णे- १५/३५
शौर्यानलस्य परशुव्यजनेन दीप्तिं ८/५
श्मशानैकस्थानव्यसनमनलोत्तालनयनं ११/१२४
श्यामाकामुकमाधवादिविरसं ३३/६
श्रद्धानुबन्धविहितव्रतहोमदान- २०/२९
श्रयतां नवनविधौ तव २३/५
श्रीकण्ठस्य सकृत्तिकार्तभरणी मूर्तिः ३/५३
श्रीकम्बुकौस्तुभसुधांशुविषामृतानां ४/१
श्रीखण्डचन्दननिघृष्टकुरङ्गनाभि- ९/२१
श्रीमानकल्पत न कल्पतरुर्यदाप्त्यै ३/४३
श्रीर्देवी जयति यया कटाक्षितानां १३/४२
श्रुतनयास्तनयास्तनुमध्यमा २७/५
श्रेयः प्रयच्छतु परं सुविशुद्धवर्णा ३/३१
श्रोत्राण्यनर्गलगलन्मधुबिन्दुगर्भ- ५/४
श्वेतं विधोरुदयहेतुमवेत्य पक्षं ८/१६
श्वेतस्य कण्ठपुलिनात्समवर्तिपाश- ८/६
श्वेते सुदर्शनसमर्पणतत्परस्य ११/८४
श्वेतेऽमृतं यदसृजद्रविजे च वह्नि- १९/२१
षट्चक्रस्थः षडध्वप्रसरसरभसः ३४/३
संख्येष्वसंख्येष्वपि यो भटानां २६/८
संपन्नसम्पन्नवसिद्धिहेतुं २६/१७
संयोगमेत्य परमर्थपरिष्कृतस्य ५/२३
संरक्षन्भक्तवर्गं यमभटभयतः ३४/५
संसारदारुणदवानलदह्यमान- ८/३
संसारमारवपथप्रथमानखेद- ५/२०
संसाराब्धेः प्रथमलहरी १७/२०
संसारेऽस्मिन्नसारे परमिह कुशलं कर्म ३२/३७
स एष गौरीश्वर- ७/११
स जयति जगदीशशक्तिपात- १३/७
स त्वदायतनदेहलीतले १४/१०
स मा समाहितं हितं ३०/३७
स यत्र गुहबर्हिणो भवभुजङ्ग- ३/४५
स यस्य चापात्सपदि च्युतोऽच्युतः ७/३
स यस्य पादद्वयमिद्धशासनः ७/५
स यस्य पृष्ठे चरणार्पणं वृषा ७/४
स सकलासु कलासु विचक्षणः २७/२१
सकलकलिमलपटलपन्नगनिगडखण्डन-३१/२७
सकलशं सकपालमलङ्कृत- ३०/७५
सकलशंसकपालमलं कृत- ३०/७६
सखे! सखेदस्य धनार्जनं प्रति ७/३२
सञ्जीवनौषधमिदं हरहुंकृताग्नि- २०/२६
सञ्जीवनौषधिरवैमि नवा भवाग्नि- ११/४
सत्त्वधाम वरलाभयाचित १/४
सत्यं कलां वहसि बिभ्रदुमां यदर्धे ११/२१
सत्यं नश्यत्यवश्यं घनमघपटलं ३४/८
सत्यं प्रसादसमये चपलत्वमेति १९/२३
सत्यं महार्घगुणरत्न निधानमेत- १९/४
सत्येव दृग्विलसिते करुणामृतौघ- १९/२०
सदय मोदय मोदयमोक्षदं ३०/२३
सदयं यदुदारमते २३/११
सदा नगोपाहितबन्धुरस्थितिं २९/११
सदानवारिद्विरदा वरूथिनी ३०/१७
सद्यः संन्यस्तगर्वग्रहमहतमहस्त्यक्त- ३४/७
सद्विद्याभ्यसनः सभानिवसनः ३३/९
सन्तः स्मरन्ति शशिखण्ड- ७/३८
सन्तापसंपदपहारपटूनि सिद्ध- ८/२९
सन्त्यन्याः कृतिनामनामयगिरः का २४/२८
सपदि पीठविलोठितमूर्तिभि- १०/३०
सभाजनेऽनल्परतेर्नृपस्य ३०/१३
समजनि जनितस्पृहः स एक- १३/११
[illegible]मर्दन दुरिततर्दनलोलुभं ३२/५

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

समदने मदनेन वशीकृता १०/४२
समयासिषुः क्व न विकासमयाः ३०/६४
समरसमरजोभिः स्वान्तमन्तर्वहद्भि- १८/२०
समरे विकीर्णगजराजघटे २५/१०
समाश्रितस्त्वां करुणापराऽज यः २९/२०
समुचितसदसद्विचारचर्या- १३/१२
समुदेति यदश्रु शोकजं १५/२३
समुद्रजन्मानमुपादधत्करे २९/१३
समुद्रजालिङ्गितकण्ठपीठं २९/२३
सम्भ्रमभ्रमदमन्दमन्दर- १४/७
सरति सरतिरन्तर्घस्मरो मारवीर- १८/१६
सरस्वतीवेन्दुकलोद्गता करैः ३८/२
सरस्वतीसौभगसारसम्भृत- ७/२१
सर्पत्कन्दर्पदर्पज्वरभरहरणव्यग्रवर्चः ३४/१
सर्वज्ञ सर्वमवगच्छसि भूतभावि ११/६९
सर्वज्ञशम्भुशिवशङ्करविश्वनाथ- १/८३
सर्वस्वमेव मम दत्तमहाप्रहारा ९/४१
सर्वः किलायमवशः पुरुषाणुकर्म- ३/४
सर्वापहाररतिरुन्मदवक्रवक्त्र- ११/६१
ससुरासुरमानुषं जग- १५/८
सहसाऽर्क इवाऽस्मि कृतः सहसा- ३०/५९
सहस्रचरणं रविं नयनपङ्कजान्तः२०/४१
सहस्रपत्रैरिव पल्वलोदकं ३८/१३
सहस्रशीर्षा पुरुषः पुनातु वः ३८/१
सहो मयाद्यैरपि यस्य दुर्धरं ३०/१५
सा त्वं महार्घगुणरत्नसमुद्रवेला- २०/३७
साधु नाथ नुतिरीप्सया मया ३०/५
सानन्द सा नन्दनभूस्तृणं ते २६/१९
सानुग्रहोत्तमगणाश्रितपादमूलं ८/३५
सान्द्रानन्दकरे धृतामृतकरे नास्त्येष ५/३०
सान्द्रानन्दस्तिमितकरणः पुण्यनैपुण्यभागी १०/७४
साभोगं घननिबिडं नितम्बबिंबं २१/५
सामात्यभूपसदसीक्षितसूक्तिसामा ३०/५४
सारासहाऽपि मम धीस्त्वयि मन्दसारा ३०/५३
सारासारविदः सतां भयभिदः ३३/११
सिद्धं सम्यगभीष्टं ३७/१८
सिन्दूरिताऽमरमतङ्गजकुम्भशोभि १९/९
सुकृती तव भववारण- २३/२५
सुखाकरोति क्लमहन्न माधव- २९/४
सुतोऽभवद्रत्नधरः शिरोमणि- ३९/४
सुधामधुरवारुणीरसकषायकण्ठोद्भव- १०/८९
सुमनःसुलभे तथा न नाके १३/४१
सुरभिगन्धि-सहास-मुखाम्बुजा १०/२०
सुरभिर्न मम स्पृहास्पदं १५/२२
सुरमुकुटविटङ्करत्नरोचिः १३/२
सुरवरनुतधैर्या वैरिदुर्वारवीर्या १८/११
सुरसिन्धुरोधसि गृहीतकेतकी- १६/१०
सुरसुन्दरीषु रमणीयतमा २५/१८
सुरस्रोतःस्वत्यास्तटविटपिपुष्पौघ-१०/७२
सुर्दुर्लभोऽयं भवति ग्रहः पुन- १२/१३
सूक्तिं शुचिं श्रवणयोरमृतं स्रवन्तीं ८/२६
सूक्ष्मार्थदर्शनविमर्शवशप्ररूढ- ५/१६
सेवानमन्निखिलखेचरमौलिरत्न- ३/७
सेव्यन्ते भगवन्नपास्य कलितोल्लासं २८/५
सोऽयं सर्वजगत्प्रभोरशरण-३३/२९
सौवर्णः करकमले यथैव वामे २१/१५
स्तब्धा द्वारि यदास्महे क्षितिभुजां - १०/७७
स्तम्भं विजृम्भयति दम्भमयं भ्रमं च ११/७६
स्तवावलीढौकनकार्पणच्छला- ३८/२१
स्तवास्तवाऽऽहिता हिता ३०/३४
स्तुत्यस्त्वमेव स्तुतिकृत्त्वमेव १२/२
स्तोतुं वाञ्छसि संश्रितं मरकतश्यामं २८/१६
स्तौम्येव तत्राऽपि पुनः पुनस्त्वां १२/३
स्थाणुः स यत्र विभुरस्य वधूरपर्णा ११/११७
स्थानाऽस्थाननियन्त्रणाविरहितो १५/३९
स्थिरमगारमगात्मजया श्रितं २७/३
स्थिरविभा रविभातिरिवोन्मदं २७/१४
स्फारेण सौरभभरेण किमेणनाभे- ५/१९
स्फुटविकटविकस्वरप्रदीप्त- १३/३१
स्फुरितारुणचारुचक्षुषा १५/१६
स्रगिवाऽर्प्यते कलितसारसना २५/३
स्वच्छन्दस्य यदृच्छया गमयतः- ८/५१
स्वर्भानुगीर्णमिव पूर्णशशाङ्कबिम्बं ११/९८
स्वस्थावस्थैर्भृशमशुचिताशङ्किभि- १५/३६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्वापः सचिन्तमनसो निशि मे दुरापो ११/३६
स्वामिनः स्थिरगुणा सवक्रिमा १/२
स्वामिन् मृडस्त्वमुरुदुःखभरार्दितोऽहं ११/६७
स्वामिन् यस्तव पादपङ्कजयुगं ३३/१८
स्वामिन् रजःपरिचितं चपलस्वभावं ९/१३
स्वामिन् वाङ्मयदेवता भगवती ३३/२
स्वामिन् सौमनसं निबध्य वपुषि ३३/१७
स्वामिन्नबान्धवतया बत या तवेयं ९/५९
स्वामिन्नमी तव भुजा भुजगाधिराज- १९/१०
स्वामिन्नसन्तमिव तत्र ९/२०
स्वामिन्निसर्गमलिनः ११/१०७
स्वामिन्नुदार-घनसार- २०/४०
स्वामिन्विचित्रचरितस्य तवाऽपदान- ९/१०
स्वामिन्सुधावदवदातरुचिस्तवेय- १९/२५
स्वामी प्रसादमुपकारिषु सेवकेषु ११/३३
स्वावभासमयमेव मायया, १/१०
स्वे धाम्नि मे हृदि कृतस्थितिमुक्तिदेवीं ११/१६
स्वेच्छाविकल्पितमदृष्टविशिष्टपाकं ११/२८
स्वैरं कैरविणीकुटुम्बकलिकालङ्कार ३३/३
स्वैरेव यद्यपि गतोऽहमधः कुकृत्यै- ११/३८
हंसाय दीर्घदोषान्त- २/१३
हन्तापहन्तापदुपद्रवाणां २६/१
हन्ताऽयमार्तिमपि नारकिणां ११/४०
हन्ताऽहन्ता प्रथयति १६/२७
हन्ताऽहन्तावृतानां मह इव रजनी २८/२७
हरचरणसरोजद्वन्द्वभक्तिप्रसादा- १८/६
हरमुपेत रसादमलं घनं ३०/७१
हरिणैः कुशाग्रकवलाभिलाषिभि- १६/११
हर्षोत्कर्षविविर्द्धिनीः परिणतक्षौद्रद्रव- ३३/८
हस्तं सदा वहति दानजलावसिक्तं ११/६२
हारीकृतोल्बणफणीन्द्रफणेन्द्रनील- ३/३२
हारोपि भार इव यत्र कुचद्वयं त- २०/२१
हालाहलाक्तमिव दुग्धमहाब्धिनीरं ११/९१
हिमकरकिरणसमूहसितं २४/७
हिमकरमकरध्वजौ न रूपं १३/३२
हिमहिमकरहारि वारि गाङ्गं १३/२५
हीनार्धनाभिनलिनालयसङ्कटत्व- ४/५
हृदय भावय भावमनाविलं १०/३९
हृद्गुहागहनगेहगूहितं, १/११
हृद्यः सुहृद्यः सुकृतोर्जिताना- २६/३
हेयोऽस्म्यसेवकतया तव चेद् ग्रहेषु ११/६३
हेलावलन्मलयमारुतकम्पितानां ९/२६
हेलावलीढभुवनत्रितयेन येन ८/१५
ह्लादवद्भिरमलैरनर्गलै १/१

○

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्तुतिकुसुमाञ्जलि के स्तोत्रों में प्रयुक्त छन्दों का क्रम

१. रथोद्धता १-२२, औपच्छन्दसक २३, वसन्ततिलका २४-२७, पृथ्वी २८, मन्दाक्रान्ता २९-३०, औपच्छन्दसक ३१

२. अनुष्टुप् १-२४, वंशस्थ २५-२९, नर्कुटक/नर्दटक तथा कोकिलक (न ज भ ज ज ल गा) ३०

३. वसन्ततिलका १-४४, पृथ्वी ४५, मन्दाक्रान्ता ४६-४७, शार्दूलविक्रीडित ४८, वसन्ततिलका ४९, शार्दूलविक्रीडित ५०-६०

४. वसन्ततिलका १-८

५. वसन्ततिलका १-२३, हरिणी २४, शिखरिणी २५-२७, शार्दूलविक्रीडित २८-३६

६. पृथ्वी १-८

७. वंशस्थ १-३३, वसन्ततिलका ३४-३८, पृथ्वी ३९-४०, मन्दाक्रान्ता ४१-४२

८. वसन्ततिलका १-४९, शार्दूलविक्रीडित ५०-५२

९. वसन्ततिलका १-८०, शार्दूलविक्रीडित ८१-८२

१०. द्रुतविलम्बित १-६४*, वसन्ततिलका ६५-६६, शिखरिणी ६७-७३, मन्दाक्रान्ता ७४, हरिणी ७५, शार्दूलविक्रीडित ७६-८१, मन्दाक्रान्ता ८२, शिखरिणी ८३-८४, पृथ्वी ८५-९१

११. वसन्ततिलका १-१२३, शिखरिणी १२४-१२५, मन्दाक्रान्ता १२६-१२८, पृथ्वी १२९-१३०, शार्दूलविक्रीडित १३१-१४३

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

१२. उपजाति (इन्द्रवज्रा+उपेन्द्रवज्रा) १-११, वंशस्थ १२-२१, वसन्ततिलका २२-३१, मञ्जुभाषिणी ३२

१३. पुष्पिताग्रा १-३७, औपच्छन्दसक ३८-४१, प्रहर्षिणी ४२, वसन्ततिलका ४३

१४. रथोद्धता १-१९, उपेन्द्रवज्रा २०-२२, वंशस्थ २३-२५,

अतिरुचिरा (ज भ स ज गा ४, ९=१३) २६, मन्दाक्रान्ता २७, शार्दूलविक्रीडित २८

१५. वियोगिनी १-३०, वसन्ततिलका ३१-३२, मन्दाक्रान्ता ३३-३६, शिखरिणी ३७, गीतिका (१४+१२=२६ मात्रा) ३८, शार्दूलविक्रीडित ३९, मञ्जुभाषिणी ४०

१६. मञ्जुभाषिणी १-२६, मन्दाक्रान्ता २७

१७. मन्दाक्रान्ता १-२६, स्रग्धरा२७-२८, शार्दूलविक्रीडित २९, स्रग्धरा ३०

१८. मालिनी १-२१, हरिणी २२-२३, पृथ्वी २४-२५

१९. वसन्ततिलका १-३०, मालिनी ३१

२०. वसन्ततिलका १-४०, पृथ्वी ४१

२१. प्रहर्षिणी १-१७, मञ्जुभाषिणी १८, वसन्ततिलका १९-२२, उपजाति (इन्द्रवज्रा+उपेन्द्रवज्रा)२३, शार्दूलविक्रीडित २४

२२. रथोद्धता १-११, वसन्ततिलका १२

२३. आर्या १-२७

२४. सुमुखी (न ज ज ल गा) और शशिलेखा (न ज य) की उपजाति (विषम पादों में १४ और सम पादों में १२ वर्ण) १-२५, वंशस्थ २६, पृथ्वी २७, शार्दूलविक्रीडित २८

२५. मञ्जुभाषिणी १-२५, वंशस्थ २६, द्रुतविलम्बित २७

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

२६. इन्द्रवज्रा १-३४, मालिनी ३५

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

२७. द्रुतविलम्बित १-३३, वसन्ततिलका ३४

२८. शार्दूलविक्रीडित १-२०, मन्दाक्रान्ता २१-२५, स्रग्धरा २६-२७

२९. वंशस्थ १-२४, द्रुतविलम्बित २५, वंशस्थ २६, वैतालीय (प्रथम-तृतीय पादों में १४ मात्रा और द्वितीय चतुर्थ पादों में १६ मात्रा, अन्त में रगण (ऽ।ऽ), ल (।) गा (ऽ) २७, वंशस्थ २८, द्रुतविलम्बित २९, वंशस्थ ३०-३२, जलोद्धतगति ३३-३४, मन्दाक्रान्ता ३५, शार्दूलविक्रीडित ३६

३०. रथोद्धता १-५, उपेन्द्रवज्रा ६, रथोद्धता ७-८, द्रुतविलम्बित ९, मञ्जुभाषिणी १०, वसन्ततिलका ११, पुष्पिताग्रा १२, उपजाति (इन्द्रवज्रा+उपेन्द्रवज्रा) १३, उपेन्द्रवज्रा १४, वंशस्थ १५-२१, उपजाति (इन्द्रवज्रा+उपेन्द्रवज्रा) २२, द्रुतविलम्बित २३-३०, प्रमाणिका ३१-३८, द्रुतविलम्बित ३९, तोटक ४०-४१, वसन्ततिलका ४२-५८, तोटक ५९-६१, प्रमिताक्षरा (स ज स स) ६२-६७, चण्डी (न न स स गा) ६८, सुपवित्रा (न न न न गा गा) ६९, वसन्ततिलका ७०, द्रुतविलम्बित ७१-७३, उपेन्द्रवज्रा ७४, द्रुतविलम्बित ७५-७६, तोटक ७७, पृथ्वी ७८, पञ्चचामर ७९, स्रग्धरा ८०-८१

३१. उपेन्द्रवज्रा १, उपजाति (५+३) २-४, वंशस्थ ५, प्रमिताक्षरा ६-१०, तामरस (न ज ज य) ११-१५, तोटक १६-२०, शशिकला (न न न न स) २१-२५, गीतिका (१४, १२=२६) २६-३०

३२. गीतिका १-८

३३. शार्दूलविक्रीडित १-२९, स्रग्धरा ३०-४५

३४. स्रग्धरा १-१३

३५. शिखरिणी १-२२, शार्दूलविक्रीडित २३-२५

३६. वसन्ततिलका १-३१, मन्दाक्रान्ता ३२-४१

३७. आर्या १-२०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

३८. वंशस्थ १-२१, हरिणी २२, वसन्ततिलका २३-२५, नर्कुटक/नर्दटक तथा कोकिलक २६, पृथ्वी २७, मालिनी २८-२९, द्रुतविलम्बित ३०

३९. कविवंशवर्णनम् : वंशस्थ १-८, वसन्ततिलका ९-११, मन्दाक्रान्ता १२, शार्दूलविक्रीडित १३-१६

* १०/२७A प्रक्षिप्त रूप में है। जिसको योग में जोड़ा गया है।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' में प्रयुक्त छन्दों में निर्मित पद्यों की संख्या तथा छन्दों के लक्षण

(छन्दों के लक्षण वृत्तरत्नाकर (वृ.र.), छन्दःकौस्तुभ (छ.कौ.) तथा छन्दःप्रभाकर (छ.प्र.) से लिये गये हैं।)

१. **रथोद्धता** - १/१-२२; १४/१-१९; २२/१-११; ३०/१-५; ३०/७-८ = ५९

लक्षण - रान्नराविह रथोद्धता लगौ (वृ. र. 3/38)

२. **औपच्छन्दसिक** - १/२३, ३१; १३/३८-४१ = ०६

लक्षण - पर्यन्ते र्यौ तथैव शेषं त्वौपच्छन्दसिकं सुधीभिरुक्तम्।। (वृ.र. 2/13)

३. **वसन्ततिलका** - १/२४-२७; ३/१-४४, ४९; ४/१-८; ५/१-२३; ७/३४-३८; ८/१-४९; ९/१-८०; १०/६५-६६; ११/१-१२३; १२/२२-३१; १३/४३; १५/३१-३२; १९/१-३०; २०/१-४०; २१/१९-२२; २२/१२; २७/३४; ३०/११, ४२-५८, ७०; ३६/१-३१; ३८/२३-२५; ३९/९-११ = ४८४

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः। (वृ.र. 3/79)

सिंहोन्नतेयमुदिता मुनिकाश्यपेन। (वृ.र.3/80)

उद्धर्षिणीयमुदिता मुनिसैतवेन। (वृ.र.3/81)

४. **पृथ्वी** - १/२८; ३/४५; ६/१-८; ७/३९-४०; १०/८५-९१; ११/१२९-१३०; १८/२४-२५; २०/४१; २४/२७; ३०/७८; ३८/२७ = २७

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लक्षण - जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः। (वृ.र.3/94)

५. **मन्दाक्रान्ता** - १/२९-३०; ३/४६-४७; ७/४१-४२; १०/७४, ८२; ११/१२६-१२८; १४/२७; १५/३३-३६; १६/२७; १७/१-२६; २८/२१-२५; २९/३५; ३६/३२-४१; ३९/१२ = ६०

लक्षण - मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौं नतौ ताद् गुरू चेत् (वृ.र. 3/97)

६. **अनुष्टुप्** - २/१-२४ = २४

७. **वंशस्थ** - २/२५-२९; ७/१-३३; १२/१२-२१; १४/२३-२५; २४/२६; २५/२६; २९/१-२४, २६, २८, ३०-३२; ३०/१५-२१; ३१/५; ३८/१-२१; ३९/१-८ = ११९

लक्षण - जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ। (वृ.र.3/46)

८. **नर्कुटक/ नर्दटक तथा कोकिलक** - २/३०; ३८/२६ = २

लक्षण - यदि भवतो नजौ भजजलागुरु नर्कुटकम्। (वृ.र.3/98)

मुनिगुहकार्णवैः कृतयति वद कोकिलकम्। (वृ.र.3/99)

९. **शार्दूलविक्रीडित** - ३/४८, ५०-६०; ५/२८-३६; ८/५०-५२; ९/८१-८२; १०/७६-८१; ११/१३१-१४३; १४/२८; १५/३९; १७/२९; २१/२४; २४/२८; २८/१-२०; २९/३६; ३३/१-२९; ३५/२३-२५; ३९/१३-१६ = १०७

लक्षण - सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्। (वृ.र.3/101)

१०. **हरिणी** - ५/२४; १०/७५; १८/२२-२३; ३८/२२ = ५

लक्षण - रसयुगहयैर्न्सौम्रौ स्लौ गो यदा हरिणी तदा। (वृ.र.3/96)

११. **शिखरिणी** - ५/२५-२७; १०/६७-७३, ८३-८४; ११/१२४-१२५; १५/३७; ३५/१-२२ = ३७

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लक्षण - रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी। (वृ.र. 3/93)

१२. **द्रुतविलम्बित** - १०/१-६४*; २५/२७; २७/१-३३; २९/२५, २९; ३०/९, ३९, ७१-७३, ७५-७६; ३८/३० = १०९

लक्षण - द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ। (वृ.र. 3/49)

१३. **उपजाति (इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा)** - १२/१-११; २१/२३; ३०/१३, २२, २३-३०; ३१/२-४ = २५

लक्षण - अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः। (वृ.र.3/30)

१४. **मञ्जुभाषिणी** - १२/३२; १५/४०; १६/१-२६; २१/१८; २५/१-२५; ३०/१० = ५५

लक्षण - स ज सा जगौ भवति मञ्जुभाषिणी। (वृ.र. 3/74)

१५. **पुष्पिताग्रा** - १३/१-३७; ३०/१२ = ३८

लक्षण - अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च न जौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा। (वृ.र. 4/10)

वदन्यपरवक्त्राख्यं वैतालीयं विपश्चितः।
पुष्पिताग्रामिधं केचिदौपच्छन्दसिकं तथा।। (वृ.र. 4/11)

१६. **प्रहर्षिणी** - १३/४२; २१/१-१७ = १८

लक्षण - म्नौ ज्रौ गस्त्रिदशयतिः प्रहर्षिणीयम्। (वृ. र. 3/70)

१७. **उपेन्द्रवज्रा** - १४/२०-२२; ३०/६, १४, ७४; ३१/१ = ७

लक्षण - उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ। (वृ.र. 3/29)

१८. **अतिरुचिरा** - १४/२६ = १

लक्षण - चतुर्ग्रहैरतिरुचिरा जभस्जगाः (वृ. र. 3/38)

१९. **वियोगिनी/ सुन्दरी** - १५/१-३० = ३०

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लक्षण - विषमे ससजा गुरुः समे सभारंल्गा च तदा वियोगिनी

अयुजोर्यदि सौजगौ युजोः सभराल्गौ यदि सुन्दरी तदा (शब्दकल्पद्रुम 483)

२०. **गीतिका - १५/३८; ३१/२६-३०; ३२/१-८ = १४**

लक्षण - (14, 12 = 26 मात्रा अन्त में ।ऽ) मुख्य नियम तो यह है कि इस छन्द की तीसरी, दसवीं, सत्रहवीं और 24वीं मात्रामें सदा लघु रहती हैं। अन्त में रगण कर्णमधुर होता है।

२१. **स्रग्धरा - १७/२७-२८, ३०; २८/२६-२७; ३०/८०-८१; ३३/३०-४५; ३४/१-१३ = ३६**

लक्षण - म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् (वृ.र 3/105)

२२. **मालिनी - १८/१-२१; १९/३१; २६/३५; ३८/२८-२९ = २५**

लक्षण - ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। (वृ.र. 3/87)

२३. **आर्या - २३/१-२७; ३७/१-२० = ४७**

लक्षण - लक्ष्मैतत्सप्त गणा गोपेता भवति नेह विषमे जः।
षष्ठोऽयं नलघू वा प्रथमेऽर्धे नियतमार्यायाः॥

षष्ठे द्वितीयलात्परके न्ले मुखलाच्च्वसयतिपदनियमः।
चरमेऽर्धे पञ्चमके तस्मादिह भवति षष्ठो लः॥

त्रिष्वंशकेषु पादो दलयोराद्येषु दृश्यते यस्याः।
पथ्येति नाम तस्याश्छन्दोविद्भिः समाख्यातम्॥ (वृ.र. 2/13)

२४. **सुमुखी + शशिलेखा की उपजाति - २४/१-२५ =२५**

लक्षण - न ज जलगैर्गदिता सुमुखी। (वृ.र. 3/32)

शशिलेखा (न ज य) (हेमचन्द्राचार्य छन्दोनुशासन)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

२५. **इन्द्रवज्रा - २६/१-३४ = ३४**

लक्षण - स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः। (वृ.र.3/28)

२६. **वैतालीय - २९/२७ = ०१**

लक्षण - षड्विषमेऽष्टौ समे कलास्ताश्च समे स्युर्नो निरन्तराः।

न समाऽत्र पराश्रिता कला वैतालीयेऽन्ते रलौ गुरुः।। (वृ.र.2/12)

२७. **जलोद्धतगति - २९/३३-३४ = ०२**

२८. **प्रमाणिका - ३०/३१-३८ = ०८**

लक्षण - प्रमाणिका जरौ लगौ।

२९. **तोटक - ३०/४०-४१, ५९-६१, ७७; ३१/१६-२० = ११**

लक्षण - इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्। (वृ.र. 3/48)

३०. **प्रमिताक्षरा - ३०/६२-६७; ३१/६-१० = ११**

लक्षण - प्रमिताक्षरा सजससैरुदिता। (वृ.र. 3/60)

३१. **चण्डी - ३०/६८ = ०१**

लक्षण - प्रभवति ननससगैरिह चण्डी (छ.कौ. 2/88)

३२. **सुपवित्रा - ३०/६९ = ०१**

लक्षण - (न न न न गा गा) न चहु गगरि धरि तिय सुपवित्रा (छन्दः प्रभाकर पृ. 168)

३३. **पञ्चचामर - ३०/७९ = ०१**

लक्षण - प्रमाणिकापदद्वयं वदन्ति पञ्चचामरम् (छ.कौ. 2/123)

३४. **तामरस - ३१/११-१५ = ०५**

लक्षण - इह वद तामरसं न ज जा याः (छ.कौ. 2/73)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

३५. शशिकला - ३१/२१-२५ = ०५

लक्षण - द्विहतहयलघुरथ गिति शशिकला। (वृ.र. 3/84)

* १०/२७A प्रक्षिप्त रूप में है। जिसको योग में जोड़ा गया है।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

परिशिष्ट

॥श्रीः॥

स्तुति-कुसुमाञ्जलि

की हिन्दी टीका

टीकाकार :

भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री 'मञ्जुनाथ'

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जयन्ति कृतिनः कवरेमृतसारसिक्ताक्षरा
विकस्वरशरत्सुधाकरकरानुकारित्विषः।
पुरारिपदपङ्कजस्तवपवित्रचित्रक्रमाः
समुन्मिषितमालतीमुकुलकोमलाः सूक्तयः॥

– स्तुतिकुसुमाञ्जलिः १०/८५

श्रीशंकर के चरणकमल की स्तुति के कारण पवित्र और सुन्दर है क्रम (परिपाटी) जिनकी, अमृतसार से सींचे हैं अक्षर जिनके, शरत्काल के पूर्णचन्द्रमा की किरणों के समान कान्ति वाली, खिलती हुई जो मालती की कली उसके समान कोमल, ऐसी सूक्तियाँ (सुन्दरवाणी, रचना) किसी भाग्यवान् कवि की ही सर्वोत्कृष्ट (विजय पाने योग्य) होती हैं।।

(भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री 'मञ्जुनाथ' कृत हिन्दी टीका से)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सम्पादकीय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने जब मेरे द्वारा सम्पादित **'स्तुतिकुसुमाञ्जलिः'** के मूल पाठ के प्रकाशन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तो मुझे स्मरण आया कि कुछ वर्षों पूर्व जयपुर में आयोजित पुण्यश्लोक स्व. भट्ट श्री मथुरानाथ जी शास्त्री 'मञ्जुनाथ' से सम्बद्ध संगोष्ठी में यह ज्ञात हुआ था कि उन्होंने 'स्तुति-कुसुमाञ्जलि' की कोई टीका भी लिखी थी। मैंने उनके आत्मज और मेरे आदरणीय मित्र देवर्षि डा. कलानाथ शास्त्री जी से फोन पर सम्पर्क साधा। इस काम में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मुक्तस्वाध्यायपीठ के निदेशक डा. रमाकान्त पाण्डेय ने मेरी सहायता की। उन्होंने अपने मोबाइल फोन से उनसे मेरी बात करा दी। मैंने उनसे कहा कि स्तुतिकुसुमाञ्जलि के मूल पाठ की वर्णयोजना लगभग पूरी हो चुकी है। यदि आप पं. जी की टीका प्रकाशन के लिए दे सकें तो उसे इस संस्करण में जोड़ दिया जाये। शास्त्री जी ने इसे कृपापूर्वक स्वीकार कर लिया। दुबारा फोन करने पर उन्होंने सूचना दी कि टीका का लिफाफा मिल गया है। वे उसे डाक द्वारा भेजने को तैयार थे किन्तु मैंने उसे किसी व्यक्ति के हाथ ही मँगाना उचित समझा। संस्थान में कनिष्ठ शोध अध्येता श्री रौनक कुमार ने जयपुर से टीका की पाण्डुलिपि लाना स्वीकार कर लिया। अगले ही दिन वे जयपुर जाकर उसे ले आये। शास्त्री जी से मैंने यह भी अनुरोध किया कि इस टीका के लेखन काल और संक्षिप्त इतिहास पर भी लिखित रूप में प्रकाश डालने की कृपा करें। 3 जून 2013 को उनका पत्र मुझे मिला। उस पत्र की स्कैन प्रति इस टीका के अन्त में संयोजित की जा रही है तथा हस्तलिखित पत्र की टंकित प्रति टीका के प्रारंभ में दी जा रही है।

टीका वर्णयोजना के लिए दे दी गयी। पहले सोचा था कि प्रत्येक श्लोक के नीचे उसकी टीका दी जायेगी। किन्तु बाद में ज्ञात हुआ कि यह टीका बारहवें स्तोत्र तक ही है। तब यह सोचा गया कि इसे परिशिष्ट रूप में ही प्रकाशित किया जाय। 13.6.2013 को मैंने राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी से अनुरोध किया कि इस टीका को मूलपाठ संस्करण के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित करने की अनुमति दे दें। उन्होंने कृपापूर्वक अनुमति दे दी और उसी दिन शोध-प्रकाशन-विभाग से मुझे प्रेस कॉपी देने का पत्र मिल गया।

भट्ट मथुरानाथ शास्त्री 'मञ्जुनाथ' जी ने इस टीका की रचना जोधपुर राजवंश के गुरु योगिराज स्वामी माधवानन्द जी के अनुरोध पर 1953 ई. में प्रारम्भ की। उन्होंने इसकी रचना सम्भवतः संस्कृत के विद्वानों और विद्यार्थियों के उपकार के लिए की होगी। इसीलिए टीका पद्धति से समासों का विग्रह, कहीं दण्डान्वय और कहीं खण्डान्वय का अनुसरण, यथास्थान अलंकारों निर्देश और संगति यह सब दिखाया गया है।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

देवनागरी लिपि में उन दिनों संयुक्त पंचमाक्ष ें का उपयोग होता था, अतः शास्त्री जी ने भी गङ्गा, चञ्चल आदि वर्तनी स्वीकार की हैं। प्रयुक्त हिन्दी भाषा में दैं, करैं, करौ होओ आदि क्रिया रूपों का प्रयोग किया है। कोष्ठकों में कतिपय शब्दों के अर्थ दिये हैं। टीका की शैली ऐसी है जैसे कोई संस्कृत पण्डित किसी को ग्रन्थ समझा रहा हो। इस टीका का भाषागत और शैलीगत अध्ययन अपने में एक रोचक शोध-विषय हो सकता है। मैंने टीका के पाठ की यथावत् वर्ण-योजना करा दी है। कुछ स्थलों पर जहाँ अनिवार्य प्रतीत हुआ, सम्पादन कर दिया है। इस टीका का आज की हिन्दी भाषा और प्रचारित लिपि में पुनःसंस्करण यदि आवश्यक होगा तो उस पर आगे विचार किया जा सकता है। यहाँ तो प्रायः यथावत् टीका दी जा रही है। टीका के दो पन्ने- जो दस्ते के फुलस्केप साइज पर लिखे हुए हैं, भी यहाँ दिये जा रहे हैं जिससे टीकाकार के लेख से पाठक परिचित हो सकें।

टीकाकार ने यह टीका बीच में क्यों छोड़ी- यह एक विचारणीय प्रश्न है। हो सकता है कि टीका लिखते समय उन्हें यह ज्ञात हो गया हो कि 1938 में पं. प्रेमवल्लभ त्रिपाठी जी का हिन्दी अनुवाद के साथ 'स्तुतिकुसुमाञ्जलि' का संस्करण प्रकाशित हो गया है। अतः आगे टीका लिखने क़ा कोई विशिष्ट प्रयोजन नहीं है। अथवा कोई और कारण रहा हो। बहरहाल, यह टीका द्वादश स्तोत्र तक ही 113 पृष्ठों में लिखी प्राप्त हुई है।

संस्थान के कुलपति, विश्रुत कवि, आचार्य, सम्पादक और संशोधक प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी का मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने संस्थान से इसका प्रकाशन अनुमत किया।

मैं इस टीका को प्रकाशन के लिए सात्त्विक भाव से सुलभ कराने के लिए आदरणीय देवर्षि कलानाथ शास्त्री जी – जो टीकाकार के ज्येष्ठ सुपुत्र और प्रसिद्ध संस्कृत कवि, विद्वान्, अध्यापक और यशस्वी सम्पादक हैं – का आभारी हूँ। साथ ही शास्त्री जी से त्वरित सम्पर्क सधाने के लिए डा. रमाकान्त पाण्डेय, जयपुर से पाण्डुलिपि लाने के लिए श्री रौनक कुमार (जो अब संस्थान छोड़कर दीव में संस्कृत के प्राध्यापक होकर संस्कृत का अध्यापन कर रहे हैं) तथा वर्ण- योजना में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने के लिए श्री विपिन द्विवेदी को धन्यवाद देता हूँ।

(डा. रमाकान्त शुक्ल)
सम्पादक

'रमालय'
आर 6, वाणी विहार
नई दिल्ली- 110 059

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुसुमाञ्जलि की यह हिन्दी टीका

उमापति आशुतोष भगवान् शिव की स्तुति में लिखे गए शतशः काव्य, भुजङ्गप्रयात आदि हृदयावर्जक छन्दों में लिखे गए शतशः स्तोत्र सहस्राब्दियों से इस देश में विख्यात हैं। रावणकृत शिवताण्डवस्तोत्र और पुष्पदन्त कृत महिम्नः स्तोत्र तो जन-जन के कण्ठहार बन गए हैं किन्तु विद्वज्जनों में जगद्धरकृत स्तुतिकुसुमाञ्जलि की प्रतिष्ठा अनेक कारणों से पिछली सदियों में बनी रही। प्रमुख कारण तो संभवतः यह रहा कि इसमें उनका वरद, आशुतोष, सौम्य और कृपालु स्वरूप प्रमुखतः प्रतिफलित रहा, दूसरे इसकी शैली सरस, प्रसाद गुण युक्त और प्राञ्जल है जो तत्काल हृदय को आवर्जित कर देती है। यही कारण रहा कि उत्तर भारत में लिखा गया यह स्तोत्र दक्षिण भारत के अनेक विद्वानों को प्रायः कण्ठस्थ था, शैव मनीषी इसका पाठ कर आह्लादित होते थे।

आधुनिक संस्कृत के युगपुरुष प्रमुख पत्रकार विद्वत्प्रवर कविशिरोमणि भट्टमथुरानाथशास्त्री ने अपने ग्रन्थ जयपुरवैभवम् में लिखा है कि उनके गुरु वैयाकरणमूर्धन्य, शिक्षाशास्त्री महाराजा संस्कृत कालेज जयपुर के प्रधानाचार्य पं. लक्ष्मीनाथशास्त्री दक्षिणभारत के शिखरस्थ विद्वान् थे किन्तु अवकाश के क्षणों में स्तुतिकुसुमाञ्जलि के पद्यों को सस्वर गाते हुए भावविभोर हो जाते थे।

यस्य शस्य महसो निरर्गलं योगमाप्य चरणादजरेणुभिः।
अद्भुतां दधति नीरजस्कतां तं जगत्पतिमुमापतिं नुमः।

यह पद्य उनके शिष्यों को कण्ठगत हो गया था। काव्य प्रतिभा के निखार के लिए अनेक कवि स्तुतिकुसुमाञ्जलि का अनुशीलन करते थे यह मेरे पिता भट्टमथुरानाथशास्त्री बतलाते रहते थे। अतः वे कुसुमाञ्जलि के प्रारंभ से ही प्रशंसक थे।

आधी सदी से भी अधिक पहले की बात है। भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हो गई थी किन्तु देशी रियासतों का विलय नहीं हुआ था। पाकिस्तान का बटवारा हो रहा था। उस समय जोधपुर आदि कुछ रियासतें हिन्दुस्तान में मिलें या पाकिस्तान में यह दुविधा राजवंशों में हो रही है ऐसी अफवाह फैल गई थी। हैदराबाद आदि कई रियासतों के प्रमुखों की ऐसी दुविधा इतिहास को विदित ही है। उस समय जोधपुर राजवंश के गुरु योगिराज स्वामी माधवानन्द जी का प्रभाव अनेक रियासतों पर था (जिनमें ईडर भी शामिल है)। वे विद्वान् थे, तंत्रशास्त्रमर्मज्ञ थे, विवेकी थे। वे इस विवाद में प्रमुख भूमिका अदा कर रहे थे यह बात प्रसिद्ध थी। उनके सत्परामर्श से अनेक राजवंश पाकिस्तान में मिलने या अलग राज्य बने रहने की नीति छोड़कर भारत गणराज्य में सहर्ष आ मिले यह बात भी उन दिनों प्रचारित हो रही थी। ये ही स्वामी माधवानन्दजी राजस्थान की रियासतों के एकीकरण और संयुक्त राजस्थान राज्य के गठन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद राजस्थान के राज्यों का भ्रमण करते हुए जयपुर आए। यहाँ ईडर के नरेश के संयोजन में अनेक संस्कृत विद्वानों से मिले। संस्कृत रत्नाकर सम्पादक कवि शिरोमणि भट्टमथुरानाथ

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शास्त्री से भी मिले। उनके ग्रन्थ वे पढ़ ही चुके थे। उसी समय उन्होंने भट्टजी से कहा कि जगद्धर कृत स्तुतिकुसुमाञ्जलि आपका प्रिय एवं अत्यन्त ललित स्तोत्र है किन्तु इसकी हिन्दी टीका मुझे अब तक नहीं मिली है आप यथा शीघ्र इसकी हिन्दी टीका लिखें जिसे मूल सहित प्रकाशित कराया जा सके।

स्वामी माधवानन्द जी के इस आग्रह पर भट्टजी ने 1953 में इसकी हिन्दी टीका का लिखना प्रारम्भ किया। ग्रन्थ विशाल था अतः कुछ समय लगना स्वाभाविक था। टीका पूरी हुई। इसका भली भाँति अवलोकन करें इससे पूर्व ही स्वामी माधवानन्दजी का असमय ही 'देवलोक' हो गया। तब से टीका की पाण्डुलिपि भट्टजी के संग्रह में ही पड़ी रही, प्रकाशित नहीं हुई। इसका कारण क्या रहा यह पूर्णतः मुझे ज्ञात नहीं है। या तो उन्हें कहीं से यह पता लगा हो कि इसकी हिन्दी व्याख्या आदि पहले छप चुकी है या वे अन्य काव्यलेखन, सम्पादन आदि में व्यस्त हो गए हों। इस कारण यह पाण्डुलिपि ज्यों की त्यों रखी रही।

हाल ही में भट्टजी की सम्पूर्ण ग्रन्थावली का जो प्रकाशन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने किया उसमें मेरे सहयोगी सहसम्पादक डा. रमाकान्त पाण्डेय (वर्तमान में संस्थान के दूरस्थ शिक्षा केन्द्र के निदेशक) ने सूचित किया कि राष्ट्रपति सम्मानित पत्रकारप्रवर पद्मश्री डा. रमाकान्त शुक्ल स्तुतिकुसुमाञ्जलि का सम्पादन और प्रकाशन कर रहे हैं, उसके साथ भट्टजी की यह हिन्दी टीका प्रकाशित हो यह शुक्लजी की इच्छा है। शुक्लजी स्वयं भट्टजी के प्रशंसक रहे हैं, उनके पिता विद्वत्प्रवर ब्रह्मानन्द शुक्ल (खुर्जा निवासी) भट्टजी के प्रिय सुहृद् रहे हैं। शुक्लजी ने सोत्साह भट्टजी की इस हिन्दी टीका का प्रकाशन मूल के साथ करने का निश्चय कर मुझसे आग्रह किया कि तत्काल यह टीका उन्हें भेजी जाए। उन्होंने तत्काल स्वयं अपने प्रतिनिधि श्री रौनक श्रीमाली से व्यक्तिशः टीका की पाण्डुलिपि मँगवाई। यह आपके हाथों में है। इसमें सरल शैली में मूल पद्यों का आशय बतलाया गया है, उसमें जहाँ श्लेष आदि है उन शब्दों के सभी अर्थों को समझाया गया है। अन्त में अलंकार निर्देश भी है। यह संक्षिप्त टीका पाठक को मूल पद्य का आशय समझने में पर्याप्त सहायता कर देती है। इसके प्रकाशन के लिए डा. रमाकान्त शुक्लजी को शतशः धन्यवाद समर्पित हैं।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(देवर्षि कलानाथ शास्त्री)
(महामहोपाध्याय, राष्ट्रपति सम्मानित)
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृतपीठ,
जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय,
प्रधान सम्पादक 'भारती' संस्कृत मासिक, भूतपूर्व अध्यक्ष,
राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा निदेशक संस्कृत शिक्षा एवं
भाषा विभाग, राजस्थान सरकार।

दिनांक - 01 जून 2013

C/8 पृथ्वीराज रोड सी. स्कीम, जयपुर - 302001

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जगद्धरकृत

स्तुतिकुसुमाञ्जलि

स्तुतिप्रस्तावनात्मकं प्रथमं स्तोत्रम्

(१)

यह मेरी वाणी स्तुतियों के कारण आठों देव के लिए श्रीशंकर के मन को शोक सकती है। क्योंकि ये स्तुतियाँ अलौकिक आनन्द देनेवाली, निर्दोष, बिना तत्वज्ञ के भवों बढ़ानेवाली, संसार में जीवन देनेवाली, तथा पाप सन्तापों को दूर करनेवाली हैं ॥१

ओज, प्रसाद आदि गुणयुक्त, श्लेष आदि अलंकारों से विचित्रता-वाली, कानों में अमृत बरसाती हुई यह मेरी वाणी भावतरङ्ग आने वाले स्वामी के उनको आठों देव के लिए स्थिर कर सकती है ॥२

(रचनी अच्छी) सुन्दर रचनावाली, निर्दोष, प्रसाद आदि गुणों से युक्त, सुन्दर छन्दों से मनोहर, रस और अलंकारों से ~~[illegible]~~ अलंकृत यह मेरी वाणी - सुन्दर अक्षरवाली, लावण्य आदि गुणवती, उत्तम चरित्र से प्रशंसनीय जनों से अलंकृत, अनुराग (प्रेम) वाली किसी प्रणयिनी की तरह स्वामी के मन को प्रसन्न करे ॥३

बरसात प्राणी के योग्य सुन्दर अक्षरवाली, किन्तु काल (यमराज) के भय से डरी हुई यह मेरी वाणी, सत्वगुण के भाव, तथा निर्मल हो भगवान् शंकर के मन में प्रवेश करे ॥४

मेना नामकी अपनी माता से शिक्षित (समझायी हुई) सर्वमङ्गला (श्रीपार्वती) ने अपना चाहा हुआ पति पाने के लिए जैसे भक्तिपूर्वक भगवान् शंकर की अपनी बुद्धि से आराधना की उसी तरह निरवद्यात्म होने के कारण सब प्रकार से मङ्गल [शुभ विशेष] मेरी इस बुद्धि से प्रेरित यह मेरी वाणी अपना अभीष्ट वर प्राप्त करने की इच्छा से भक्तिपूर्वक शंकर की आराधना करना चाहती है ॥५

हृदयाकाश से उत्थित होकर ब्रह्मरन्ध्र में अनाहत ध्वनि करनेवाले, जिसके कि भीतर समस्त वाङ्मय (चतुर्दश विद्या) लीन हैं, सत्य और सनातनस्वरूप परमेश्वर के ज्योतिःस्वरूप उस ॐकार की मैं प्रथम उपासना करता हूँ ॥६

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उद्योग
मे मनङ्कुर हुए प्रमादी इस आपको दृष्टिपातने पहले काम (कामदेव) के भङ्ग (भस्म) को कैसे स्वीकार किया? [यहाँ भी — जो कामभङ्ग का अङ्गीकार नहीं करता वही कामभङ्ग करता है, यह आश्चर्य है। काम का अर्थ अभिलाष और कामदेव दोनों हैं। यहाँ भी वही अलङ्कार ॥ २८ ॥२८

सुमेरु, मन्दर प्रभृति पर्वत अपनी ऊँचे अपने मस्तकों (शिखरों) से इतना बड़ा गर्व (अभिमान) क्यों धारण करते हैं। चन्द्रमा जिनका आभूषण है ऐसे शम्भु के प्रणाम के लिये नीचा हुआ यह मेरा मस्तक संपूर्ण जगत् को जीतता है। इन ऊँचे मस्तकों से नीचा हुआ यह मेरा मस्तक ही धन्य है ॥ २९

हे प्रभु! यह मस्तक और और अङ्गों की अपेक्षा अतिशय सूचन करने वाला 'अनमाङ्क' (उत्तम अङ्ग, मस्तक) यह नाम धारण करता है, यह इस लिये नमस्कार करने योग्य है अर्थात् नमस्करणीय है। क्योंकि यह आपके चरणारविन्द के तलमें प्रणाम में तत्पर है [प्रणाम के कारण उत्तमाङ्ग है अन्यथा और अङ्गों की अपेक्षा कोई विशेषता नहीं] ॥ ३०

हे स्वामी! आप 'भीषण' (पहले स्वर्ण-मोहरूपी लक्ष्मी से भरे-भरे पूरे हैं, तो भी 'अनुगत' प्राणियों की प्रार्थना पहुँचे हुए हैं, प्रणामस्वरूप हैं। जो 'भीषण' (कुरूप) हैं वह 'अनुगत' नायवादी होते हैं, किन्तु आप भीषण होकर भी 'अनुगत' हैं, यह विरोध। किन्तु श्लेष से दूसरा अर्थ होने से परिहार। आप उमा (श्रीपार्वती) के 'भव' (पति) हैं, तो भी 'जनार्दन' नहीं [जनों को अर्द न पीडन नहीं करते)। जो माधव है वह 'जनार्दन' (जना, माया का अर्दन, विष्णु) होता है। आप माधव होते हुए भी जनार्दन नहीं, यह विरोध। किन्तु 'भिन्न - उमाधवः' यों पदच्छेद से उमाधव अर्थ लेकर उसका परिहार।

हे स्वामी! आप 'गजारि' (गजासुर के वैरी) हैं तो भी 'नगजा प्रिय' (नग-पर्वत-पुत्री पार्वती के प्रिय हैं। जो गज का अरि वैरी है, वह 'न गजाप्रिय' अर्थात् गज का अप्रिय ही होता है, प्रिय नहीं। किन्तु श्लेष से 'नगजा' प्रिय पार्वती यह अर्थ होने से इसका परिहार। अथवा- यह सब कुछ नहीं, सर्वसमर्थ आपकी यह अलौकिक स्वतन्त्रता है ॥ ३१

हे स्वामी! प्रभात समय के समान अरुण (लाल) कान्ति से भर कर दिया है 'भीतरीचित्त' (नेत्र) जिसने, तथा प्रकाशित है 'अलिक' ललाट जिसमें, ऐसा आपका मस्तक लोचन देखकर ऐसा अन्धकार यह तम (अज्ञान) कव नाश को प्राप्त होगा? प्रभात का सभी ऐसा है कि — 'अरुण' (अर्थात् सूर्य) की द्युति से स्थगित (बन्द) कर गया है चन्द्रमा जिसने। और प्रकटीकृत हैं 'अलि' जिसमें ऐसे हैं कमल जिसमें। अर्थात् प्रभात होते ही रात्रि के कमल में बन्द हुए भौंरे प्रकट हो जाते हैं। प्रभात में तम (अन्धकार) नाश हो जाता

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

॥श्रीः॥

स्तुति-कुसुमाञ्जलि

की हिन्दी टीका

टीकाकार : भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री 'मञ्जुनाथ'

स्तुतिप्रस्तावनाख्यं प्रथमं स्तोत्रम्

(१)

❀❀❀

यह मेरी वाणी स्तुतियों के कारण थोड़ी देर के लिए श्री शंकर के मन को रोक सकती है। क्योंकि ये स्तुतियाँ अलौकिक आनन्द देने वाली, निर्दोष, बिना रुकावट के आगे बढ़ने वाली, संसार में जीवन देने वाली, तथा पाप संतापों को दूर करने वाली है।।1।।

ओज, प्रसाद आदि गुणयुक्त, श्लेष आदि अलंकारों से विचित्रता वाली कानों में अमृत बरसाती हुई यह मेरी वाणी नानातरफ जाने वाले स्वामी के चञ्चल मन को थोड़ी देर के लिए स्थिर कर सकती है।।2।।

सुन्दर रीतिवाली, निर्दोष, प्रसाद आदि गुणों से युक्त, सुन्दर छन्दों से मनोहर, रस और अलंकारो से अलंकृत यह मेरी वाणी सुन्दर व्यवहारवाली, लावण्य आदि गुणवती, उत्तम चरित्र से प्रशंसनीय, गहनों से अलंकृत, अनुराग (प्रेम) वाली ऐसी प्रणयिनी की तरह स्वामी के मन को प्रसन्न करै।।3।।

वरदान प्राप्ति के योग्य सुन्दर अक्षरवाली, किन्तु काल (यमराज) के भय से डरी हुई यह मेरी वाणी, सत्त्वगुण के धाम, तथा निर्मल ऐसे भगवान् शंकर के मन में प्रवेश करै।।4।।

मेना नाम की अपनी माता से बोधित (समझाई हुई) सर्वमङ्गला (श्रीपार्वती) ने अपना चाहा हुआ पति प्राने के लिए जैसे भक्तिपूर्वक भगवान् शंकर की अपनी

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बुद्धि से आराधना की उसही तरह शिवपरायण होने के कारण सब प्रकार से मङ्गल (मे अनया धिया) मेरी इस बुद्धि से प्रबोधित यह मेरी वाणी अपना अभीष्ट वर प्राप्त करने की इच्छा से भक्तिपूर्वक शंकर की आराधना करना चाहती है।।5।।

हृदयाकाश से उत्थित होकर वक्षस्थल में अनाहत ध्वनि करने वाले, जिसके कि भीतर समस्त वाङ्मय (चतुर्दश विद्या) लीन हैं, सत्य और सनातन रूप परमेश्वर के ज्योतिःस्वरूप उस ॐकार की मैं प्रथम उपासना करता हूँ।।6।।

सूर्य, चन्द्र और अग्नि से दूर नहीं होने वाला अविद्या रूपी हृदय का अन्धकार जिससे तत्काल ही दूर हो जाता है ऐसे उस शिवात्मक परम तेज की आराधना करता हूँ।।7।।

बंसी, ढोल आदि के छिद्रों में आकाश की तरह, जल के तरङ्गों में सूर्य के बिम्ब की तरह, जो परात्पर एक ही ज्योति जड़ और चेतनों में अनेक की तरह प्रतीत होती है उस परम ज्योति की मैं उपासना करता हूँ।।8।।

'इस सृष्टि को कौन कैसे उत्पन्न करता है' इत्यादि तर्कनावाणियों से जो अगोचर है, जिसमें अपने आत्मा का अनुभव ही साक्षी है. जिससे समस्त संकल्प विकल्प (चिन्ताजाल) दूर हो जाते हैं, ऐसी उस पारमेश्वर ज्योति की मैं उपासना करता हूँ।।9।।

नानारङ्गवाले इन्द्रधनुष को मेघपंक्ति के द्वारा जिस तरह सूर्य प्रकाशित करता है, वैसे ही अपने से प्रकाशित होने वाले इस जगत् को मायातत्त्व के द्वारा जिसने नानारूप प्रकाशित किया है उस तेजःस्वरूप की मैं उपासना करता हूँ।।10।।

हृदय-गुफारूपी-इस गंभीर घर में जो छुपा हुआ है तौ भी जिसने समूचे तीनों लोकों को प्रकाशित कर रक्खा है, नाभि के अधोभाग रूपी गुफामुख से निकल कर ऊपर की तरफ उठते हुए प्राणवायु ने जिसकी स्थिति को स्थिर कर दिया है, जिसमें बाल्य, जवानी आदि अवस्थाएं नहीं होतीं, जिसकी उत्पत्ति और अन्त नहीं होता, रूपरहित, बिना किसी आश्रय के स्थिर रहने वाले, निरञ्जन (निर्लेप) तथा जहाँ नेत्र आदि इन्द्रियाँ नहीं पहुँचती, ऐसे जिस परमेश्वर को ऋषिगण अद्भुत-दीपक बताते है मैं उस परमेश्वर तत्त्व की स्तुति करता हूँ। दीपक छुपा रहने पर बाहर की चीज प्रकाशित नहीं करता, किन्तु यह हृदय में गुप्त रहने पर भी तीनों लोकों को प्रकाशित करता है। लौकिक दीपक वायु से

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar, New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बुझ जाता है, किन्तु यह दीपक प्राणवायु से स्थिर है। दीपक में दशा अर्थात् बत्ती रहती है किन्तु इसमें दशा (बाल्य आदि कोई अवस्था) नहीं रहती। दीपक की उत्पत्ति और नाश है यहाँ नहीं। दीपक में रूप है और भींत आदि किसी आश्रय पर ठहरता है, परन्तु यहाँ न रूप है न आश्रय। दीपक में अञ्जन (काजल) होता है यह निरञ्जन (निर्लेप), दीपक नेत्र आदि इन्द्रियों से दिखता है, यह नहीं। अतएव यह अद्‌भुत दीपक है। विरोधाभास अलङ्कार॥11-12॥

प्रशंसनीय तेजवाले (जिन शंकर के) चरण कमल के रज (पराग) के संसर्ग पाकर भक्त लोग रजोगुण (तमोगुण) से छूट जाते हैं, उन जगत्पति श्री उमा (पार्वती) पति की मैं स्तुति करता हूँ। रज से संपर्क होने पर भी नीरजस्कता विरुद्ध है। किन्तु रजोगुण शून्यता यह परिहार है। विरोधालंकार॥13॥

हम एक अद्भुत नीलकण्ठ (महादेव और मयूर) की स्तुति आरम्भ करते हैं। महादेव कैसे हैं- जो 'चारुचन्द्रकलया' उपशोभित। सुन्दर जो चन्द्रमा की कला उससे उपशोभित हैं। भोगी जो सर्प उनसे स्नेहभाव जिनने अङ्गीकार किया है। तथा घन (प्रचण्ड) काल (अन्तक, मृत्यु) के साथ जिनने शत्रुता स्वीकार की है, ऐसे हैं। नीलकण्ठ (अर्थात् मयूर) इस अर्थ में अद्भुतता यही है कि- वह सुन्दर जो 'चन्द्रक' (मोर पंख के चँदुवे) उनके लय अर्थात् नाश से उपशोभित नहीं हो सकता, किन्तु चँदवों से सुशोभित रहता है। भोगी जो सर्प उनसे मित्रता नहीं रखता। प्रत्युत वह उनको खा जाता है। और वह घनकाल अर्थात् वर्षा समय के साथ शत्रुता नहीं रखता किन्तु उसमें प्रसन्न रहने के कारण मित्रता रखता है। व्यतिरेक अलंकार॥14॥

अपने शक्ति तत्त्व से युक्त ऐसे शिव की हम स्तुति करते हैं। जो अपनी इच्छाशक्ति से ही दो सौ चौबीस (224) भुवनों को उत्पन्न करते हैं। तथा जिनका उपकरण अर्थात् लोकों के उपकार (हित) में आग्रह है, तौ भी -'उपकरण' अर्थात् भुवनों के बनाने में जो साधन है वे प्रिय नहीं है। अर्थात् कारीगर काष्ठ पाषाण आदि साधनों से ही भुवन निर्माण करता है किन्तु श्रीशिव उपकरणों (साधनों) की अपेक्षा के बिना ही सब भुवनों की इच्छा मात्र से ही उत्पत्ति करते हैं। विरोधालंकार॥15॥

हम शंकर के उन चरण कमलों की स्तुति करते हैं, ब्रह्मा जिनको अपने हाथ से दाबते हैं। अर्थात् पगचंपी करते हैं। विष्णु ने जिनके ऊपर अपना नेत्ररूपी कमल चढाया है। और जो सूर्य देव के मुकुट के किरणों से नानारङ्ग वाले दिखाई देते हैं॥16॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो शंकर-इन्द्र के मस्तक में धारण की हुई मालाओं से सुशोभित चरण युगल, भस्म से रञ्जित वक्षःस्थल, चन्द्रमा के किरणों से उज्ज्वल मुकुट, धारण करते हैं, हम उनही शंकर की उपासना करते हैं।।17।।

हम-समुद्रमंथन के समय त्रिलोकी की रक्षा के लिए विष को पीने वाले, सदा आनन्द स्वरूप, उन शंकर का आश्रय लेते हैं जो मस्तक में चन्द्रकिरण की तरह सुन्दर कान्तिवाली, जल फेन के समान स्वच्छ हास्य वाली, प्राणियों के त्रिविध तापों को हरने वाली विशाल गंगा तथा ऐसे ही देह को धारण करते हैं। क्योंकि शंकर का देह भी मस्तक में धारण किये हुए चन्द्रमा के किरणों से सुन्दर है, तथा उसका हास्य भी पयः फेन की तरह सुन्दर है। तथा (आपका) शरीर भी प्राणिमात्र के त्रिविध संतापों को दूर करता है।

'जिन शंकर का सेवक सबके मनको आश्चर्यचकित करता है, क्योंकि वह (सेवक) शान्त हो गया है नया विग्रह (वैर) जिसका ऐसा होने के कारण 'शान्त-नव-विग्रह' है तो भी भीष्मता अर्थात् भयंकरता और विचित्रवीर्यता (अर्थात् जिसके चित्त से वीरता चली गई हो ऐसी स्थिति) धारण नहीं करता। जो 'शान्तनवविग्रह' शंतनु राजा से पैदा हुआ है विग्रह (शरीर) जिसका ऐसा है, वह भीष्मपितामह तथा विचित्रवीर्य (तन्नामक राजा) अवश्य होना चाहिये। (महाराज शंतनु के भीष्म और विचित्रवीर्य दो पुत्र थे)। किन्तु शंकर के सेवक में यही विचित्रता है कि 'शान्तनवविग्रह' होने पर भी भीष्मता और विचित्रवीर्यता को धारण नहीं करता। विरोध अलंकार।।

जिन शंकर ने आते हुए यम (यमराज) को अयम (संयम शून्य-हक्का बक्का अथवा- अयत्न, लाचार), तथा 'सविग्रह' विग्रह याने वैर सहित होने पर भी 'अविग्रह' (अर्थात् जला देने के कारण देह रहित) कर दिया और जिनने दर्पक (अर्थात् कामदेव) को 'अदर्पक' अहंकार रहित कर दिया, हम ऐसे श्री शंकर का आश्रय लेते है। वही अलंकार।।18, 19, 20।।

हम प्राणियों का शुभ करने वाले उन शंकर का भजन करते हैं जो गगन (आकाश) रूपी वस्त्र से वेष्टित हैं, अर्थात् आकाश के सिवाय उनके कोई वस्त्र नहीं (दिगम्बर)। प्राणियों को जीवन देने वाले गंगा के जल से युक्त हैं तथा जो भुजाओं में लपटे हुए भोगियों (सर्पो) से विभूषित हैं। यहाँ अम्बर और गगन। जीवन और वारि। भोगी और भुजग। ये शब्द एकार्थक से दिखते हैं, अतएव पुनरुक्त की शंका होती है, किन्तु उनका अर्थ दूसरा हो जाने से दोष चला जाता है और 'पुनरुक्तवदाभास' नामका अलंकार हो जाता है।।21।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हम भगवान् शंकर के तीनों लोचनों की उपासना करते हैं, जिनमें एक-पावक अर्थात् पवित्र करने वाले अग्नि से शोभित है। दूसरा श्वेत कान्ति वाले चन्द्रमा से भासित है। तीसरा देदीप्यमान सूर्य से विराजित है। यहाँ भी पावक और शिखी। सितरुक् और हिमांशु। भास्वत् और रवि। एकार्थक से दिखते हैं किन्तु तात्पर्य दूसरा होने से 'पुनरुक्तवदाभास' अलंकार है।।22।।

हम भगवान् शंकर के तीनों नेत्र तथा त्रिशूल की तीनों शिखाओं को नमस्कार करते हैं (आगे दोनों में समानता दिखाता है) क्योंकि तीनों नेत्र 'अभय' (प्राणियों को निर्भयता) करने वाले स्वरूप को धारण करते है। त्रिशूल भी 'अभयम्' 'करमाश्रितम्', दूसरों से सदा निर्भय, तथा 'करम् आश्रितम्(शंकर के कर (हाथ) में आश्रित है। तीनों नेत्र उत्कट जो संपूर्ण धाम (तेज-सूर्य चन्द्र अग्निरूप) उनके योग (संयोग) वाले हैं। त्रिशूल की शाखात्रय भी प्रचण्ड जो संपूर्ण तेज उनके योग वाला है (अर्थात् पूर्ण तेज से युक्त है)। शंकर का नेत्रत्रय शुचि अर्थात् पवित्र हैं तारका (आँखों के डेले) जिसमें ऐसा है। तथा त्रिशूल का शाखात्रय भी शुचि अर्थात् पवित्र है, तथा 'तारकम्' दैत्यों के युद्ध समुंद्र से देवताओं को तराने वाला है।।23।।

बड़े भाग्यवाले सज्जन- ध्यान के समय मूँद लिए नेत्रों से उत्पन्न हुए प्रेमाश्रु प्रवाह से जिनका कपोल भाग नहा गया (भींग गया) है ऐसे होकर- चन्द्रमा की कला को मस्तक का भूषण बनाने वाले भगवान् श्री शंकर की 'हे शंकर हे शंकर' इस तरह स्तुति करते हैं।।24।।

मैं दुःखमय इस कलियुग के समय में दिशाओं को भूलकर, व्यर्थ ही बड़े लम्बे कुरस्तों में (शंकरोपासना से अन्य मार्गो में) भूल रहा हूँ। अब शिवकी स्तुति रूपी नन्दनवन में विश्राम करके वह मेरा समग्र खेद (संताप) समाप्त होता है।।25।।

पूर्णिमा के चन्द्रकिरण की तरह सुन्दर अपने वाहन हंस के साथ रहने वाली श्रीवाग् देवी (वाणी, सरस्वती) भी जो हमारे मैले मन में विश्राम कर रही है वह श्रीचन्द्रशेखर भगवान् शंकर का सौभाग्य (महिमा) है (नानापापों से मलिन मेरा मन कहाँ, और सदा स्वच्छ रहने वाली वाग्देवी कहाँ? परन्तु भगवान् शंकर की महिमा से मेरे मनमें सरस्वती विश्राम करती है, जिससे कि मैंनें शंकर की स्तुति निर्माण किया। यह कवि का विनय निवेदन हैं)।।26।।

संयम को धारण करने वाले हे चित्त! सर्वसुन्दर जिन शंकर को 'अहीनभोगाः' ('अहीन्' सर्वश्रेष्ठ वासुकि आदि सर्पो के 'भोग' शरीर भूषित करते हैं, और

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जिन शंकर की स्तुति करके भक्त लोग 'न हीना भोगाः येषां अर्थात् परिपूर्ण भोग (मनोरथ) वाले होते है, उन शंकर को छोड़कर अपनी वाणियों को परत्र (और जगह 'मही-नभोगाः) पृथ्वी और आकाश आदि में जाने वाली करना उचित नहीं। यह ही खेद की बात है। यहाँ चारों चरणों के अन्त में एक से पद आने के कारण 'पादान्तयमक' नामक अलंकार है।।27।।

प्रशस्त गुणों से जगत् में गौरव को प्राप्त करके जो चन्द्रशेखर भगवान् शंकर का ध्यान करते हैं उनकी वाणी सफल होती है। इसलिए उमा (पार्वती) के साथ महान् विलास करने वाले (उन शंकर) के प्रति मैंने मेरी निर्मल बुद्धि अब स्तुति में लगा दी है।।28।।

इस संसार में इने गिने धन्य लोग- इस मर्त्यलोक को सुकृत का मित्र (अर्थात् पुण्यों से मिलने वाला), अतएव दुर्लभ मानकर तथा संपूर्ण व्यसनों को दूर करने वाले विवेकरूपी एक मित्र को प्राप्त करके, निर्मल और मधुर तथा भक्तिरूपी अमृत से सिंचे, अपने वचनों से चन्द्रकला को अपने मस्तकका भूषण बनाने वाले हंस (परमात्मस्वरूप) उन शंकर की स्तुति करते हैं।।29।।

जो काव्य भीतरसे शून्य हो अर्थात् जिसमें लक्ष्यार्थ व्यङ्ग्यार्थ न हो, ओजः प्रसाद आदि गुण युक्त न हो, तथा रस शून्य और सर्गबन्ध रहित हो, वह स्थल में पैदा हुए कमल की तरह सुन्दर मन वाले चतुरों के लिये हृद्य (हृदयंगम, मनोहर) नहीं होता। स्थलकमल भी शून्य (पोला) गुण यानी तन्तुओं से रहित नीरसंसर्गहीन (स्थल में पैदा होने के कारण नीर अर्थात् पानी के संसर्ग से रहित) होता है। ऐसा होने पर भी अविच्छिन्न प्रगाढ प्रेम के कारण उत्पन्न हुई भक्ति से वह सर्वगुणयुक्त, अतएव अगर्ह (निन्दाकर योग्य नहीं)। अतएव ईश (सर्वैश्वर्य के सागर) भगवान् उसको कान के समीप लाने के योग्य हैं। अर्थात् मेरा काव्य गुण रहित है तो भी एक दृढ आसक्ति के कारण भगवान् शंकर उसको कृपया सुन सकते हैं। यह यहाँ विनय का भाव है।।30।।

अथवा-अमृत बिन्दुओं को बरसाने वाली, अमन्द आनन्द देने वाली चन्द्रमा की कान्ति जिस तरह चन्द्रकान्तमणि को आर्द्र (गीला) कर देती है। इस ही तरह दृढ आसक्ति के कारण - अमृत बरसाने वाली, सहृदयों को अमन्द आनन्द देने वाली, इन्दु (चन्द्र) की तरह कान्तिवाली यह मेरी वाणी इन्दु (चन्द्र) के समान सुन्दर श्रीगिरिजानाथ (शिव) को निश्चय ही कृपा से आर्द्र कर देगी।।31।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज मृत्युञ्जयरञ्जक प्रथम॥

भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री मञ्जुनाथ कृत हिन्दी टीका का
प्रथम स्तोत्र समाप्त।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नमस्कारस्तोत्राख्यं द्वितीयं स्तोत्रम्

(२)

❀❀❀

जो परम पुरुषार्थ (मोक्षस्वरूप) होने के कारण आनन्दरूप हैं। अथवा- जो वास्तव में एकरूप (असाधारण) हैं। जिनने अपनी इच्छा से यह भेदप्रपञ्च (द्वैत-अर्थात् अपने से अलग देव-मनुष्य-पशु आदि) दिखलाया है, किन्तु आप उससे अलग हैं। अतएव परमात्मा (चिदानन्दघनस्वरूप), ऐसे भगवान् शंकर को प्रणाम हो।।1।।

जहाँ अविद्या-अस्मिता-रागद्वेषादि संपूर्ण क्लेशों का अभाव है। सत्त्व-रजस्तमरूप तीन गुणों की गाँठ पड जाने से दुर्भेद (अति कष्ट से खोला जाय) ऐसे संसार बन्धन को दूर करने वाले भगवान् शिव को नमस्कार हो।।2।।

जिनके चरणों को संपूर्ण देवताओं के मुकुट स्पर्श करते हैं, जगत् रूपी नगर की निर्माण-क्रीडा ही जिनका सुखदायक कार्य है (अर्थात् जिनने क्रीडामात्र से जगत् का निर्माण कर दिया) ऐसे भगवान् को नमस्कार।।3।।

चन्द्रमा की कला से जिनका मस्तक सुशोभित है, त्रिविध (आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक) ताप तथा मोहरूप अन्धकार से जो वैराग्य खेद उसको जानने वाले, अर्थात् भक्तों के खेद को जान कर दूर करने वाले श्री शिव को नमस्कार।।4।।

भक्तजनों के इस लोक, परलोक संबन्धी समस्त मनोरथों के लिये कल्पवृक्ष (अर्थात् पूरण करने वाले), चन्द्रमा की कला से जिनका जटा जूट मण्डित है, ऐसे भगवान् शम्भु को नमः।।5।।

अज्ञान से हारे हुए (अर्थात् भटके हुए) प्राणिवर्ग पर दया करने वाले, सूर्य-चन्द्र-अग्निरूप तीन नेत्रवाले श्रीशिव को नमस्कार।।6।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यमराज के हुंकार से डरे और पीडित प्राणियों को हर्ष देने वाले, संसार रूपी दावानल से व्याकुल दीनों पर अमृत बरसाने वाले, श्री शिव को नमस्कार।।7।।

मदमत्त कामदेव के अभिमानरूपी ज्वर को दूर करने वाले, संसार रूपी कठिन रोग को दूर करने वाले अपूर्व वैद्य श्रीशिव को नमस्कार।।8।।

जन्म-जरा (बुढापा)-मृत्यु, के डर से दुःखित हुओं की रक्षा करने वाले, दयारूपी अमृत के कारण कोमल अन्तःकरण वाले-कपालधारी श्रीशिव को नमस्कार।।9।।

स्वभाव से ही विघ्नरहित ऐसे प्रसन्नतारूपी अमृत के समुद्र। संसार रूपी मरुभूमि (निर्जल प्रदेश के संतापो से सताये हुओं के बन्धु ऐसे श्री शिव को नमः।।10।।

कृपारूपी अमृतवर्षा और अभयदान रूपी गर्जना करने वाले, भयंकर ताप देने वाले संसार रूपी ग्रीष्म काल के खेद को दूर करने वाले महाकाल (कल्पान्त में संहारकर्ता श्री शिव) रूपी महाकाल (मेघसमय रूपी महान काल, वर्षा समय) को नमः।।11।।

वाणी और मन से भी जिनकी महिमा वर्णन नहीं की जा सकती, सत्त्वरजस्तम तीन गुण वाले, बुद्धि-सुख-आदि आठ गुण वाले, तथा अनन्तगुण वाले, किं वा किसी भी गुण से रहित कार्य के लिए ब्रह्मा का रूप धारण करने वाले श्री शिव को नमः।।12।।

बड़े दोष रूपी जो दोषा (रात्रि) उसके अन्त करने वाले, हृदय रूपी आकाश में विचरने वाले, तथा अपने तेज रूपी महिमा से समस्त अज्ञानरूपी तम (अन्धकार) को दूर करने वाले ऐसे हंस अर्थात् परमात्मस्वरूप हंस (अर्थात् सूर्य) श्री शिव को नमः।।13।।

जो सुन्दर रङ्ग वाले चन्द्रमा से, गणपति से तथा स्वामिकार्तिक से अपूर्व प्रभु शोभा को धारण करते हैं, ऐसे कामदेव को जीतने वाले उन शंकर को नमः। यहाँ सुवर्ण-चन्द्र-इत्यादि सब ही सुवर्णवाचक शब्द होने से पुनरुक्त से दिखते हैं किन्तु उनका तात्पर्य दूसरा हो जाने से पुनरुक्तवदाभास अलंकार है।।14।।

अपने अङ्ग का भङ्ग करके भी जो भक्तों पर अनुग्रह करते हैं (पहले मुनिशाप से शंकर के लिङ्ग का भङ्ग हो गया था, भगवान् उसके पूजन से ही भक्तों पर दया करने लगे)। जिनने वज्र चलाते हुए इन्द्र के भुजरूपी स्तम्भ (खंभे) को स्तम्भित कर दिया (रोक दिया) उन शम्भु को नमः।।15।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो असाधारण (बेजोड़) हैं, पूज्य हैं, न्यायमार्ग का उपदेश देने वाले हैं, ब्रह्मादि सब देवताओं में मस्तक स्थानीय है, दीनों को अभीष्ट देने वाले है, तथा धन्य हैं, उन स्वामी (श्रीशिव) को नमस्कार।।16।।

जिनने काल (मृत्यु) का भी संहार कर दिया। जिनके गले की कान्ति काले लोहे के समान है। (विषपान के कारण), जिनके जटाजूट को गङ्गा ने धो दिया है। जिनकी कला (शक्ति) का अपाय (नाश) कभी नहीं होता, ऐसे श्रीशिव को नमः।।17।।

लोकों को जीतने वाले इन्द्र ने, सर्वसमर्थ श्रीविष्णु ने, तथा ब्रह्मा ने भी वेद और उपनिषदों से जिनकी स्तुति की, ऐसे स्वामी श्रीशिव को नमस्कार।।18।।

आठ कुल पर्वत जिसके पत्ते हैं, संपूर्ण सुमेरु जिसकी कर्णिका (बीच की डोडी), शेष नाग जिसका नाल है, ऐसे कमलरूपी आसन पर बैठे हुए ब्रह्मारूपी श्रीशंकर को नमः।।19।।

जो बिना किसी कारण के ही अर्थात् केवल दया के वश होकर ही सपङ्क (पङ्क-पापसहित) जनको अभयदान देने को प्रवृत्त हैं, उन पङ्कजनाभि (विष्णु) रूपी प्रभु, श्रीशंकर को नमस्कार।।20।।

जिनका अर्द्धदेह उमा (पार्वती) सहित है। जिनने अर्द्धचन्द्रमा मस्तक पर धारण किया है, श्वेतनामक राजा को अभय देने में जिनका श्वेतकान्ति वाला यश उत्पन्न हुआ है, एसे श्रीशंकर को नमस्कार।।21।।

विनत अर्थात् नम्र (नमस्कार करते हुए) भक्तों को आनन्द देने वाले नाग अर्थात् हाथी का जो विग्रह (शरीर, शरीर का ऊर्ध्वभाग) उससे उग्र (उत्कट, तेज) मुखवाले विनायक (श्रीगणेश) को तथा दूसरा अर्थ होता है कि 'विनता' नाम की माता के पुत्र तथा नागर अर्थात् सर्पों के साथ जो विग्रह (युद्ध) उसके कारण क्रूर मुख वाले वि (अर्थात् पक्षियों के) नायक गरुड को 'उप-आसना' (गरुड पर बैठने वाले) श्री विष्णु पर दृष्टि से अनुग्रह करते हुए स्वामी श्री शंङ्कर को नमस्कार।।22।।

ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र रूप से जिनका यश फैला है, इस ही लिये क्रम से जगत् की उत्पत्ति पालन और संहार करने वाले संसार समुद्र के सेतु (संसार से पार उतारने वाले), वृषकेतु (नन्दिकेश्वर पर बैठने वाले) श्री शंकर को नमः।।23।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अलग-अलग नाम के कारण अलग-अलग दिखाई देने वाले कर्णभूषण-कंकण-मालादि में जैसे सुवर्ण। तथा समुद्र-नद-नदी आदि में जैसे जल, नाम से भिन्न है, किन्तु सुवर्ण और जल के रूप में सब एक हैं, इस ही तरह सुर-नर-पशु-पक्षी आदि में नाम से भिन्न दीखने पर भी जो परमात्मा रूपी तेज सब एक है, उस परात्पर तेजोरूप शंकर को नमः।।24।।

एकमात्र जिनकी सेवा करने पर बड़े से बड़े देवता की वर प्राप्ति के लिये इच्छा नहीं होती जिनने आपत्ति में पड़े हुए समस्त दीनों के पालन का व्रत (नियम) ले रखा है, एसे सर्वसमर्थ पिनाकी (अर्थात् पिनाक नामक धनुष को धारण करने वाले) श्री शिव को नमः।।25।।

भगवान् ने जगत् की सृष्टि के लिये ब्रह्मा में जो स्थापन किया, जगत् की स्थिति (पालन) के लिए विष्णु में जो स्थापन किया, संहार के लिए अर्द्ध चन्द्रमा धारण करने वाले (श्रीशंकर) में जो स्थापन किया, उस परात्पर तेज (श्रीशंकर) को नमः।।26।।

तारकासुर को मारने वाले (स्वामिकार्तिक) को जिनने उत्पन्न किया। जिनके तीनों नेत्रों के ताराओं (डेलों) में सूर्य-चन्द्र-अग्नि रूप तीन तेज हैं। जिनके पवित्र कार्य जगत् के तारक (उद्धार करने वाले) हैं, एसे तारकराज (चन्द्र) को मस्तक पर धारण करने वाले श्री शिव को नमस्कार।।27।।

मस्तक पर अमृतभानु (चन्द्रमा) को रखने वाले को नमस्कार। अमृत (मोक्ष) सिद्धि देने वाले को नमस्कार। अमृत का घड़ा जिनके हाथ में हैं, उनको नमस्कार। अमृत भैरव रूप धारण करने वाले अथवा काल ग्रास समाधि में लगे योगिरूप श्री शंकर को नमः।।28।।

अज्ञान के पर पार में अर्थात् उस को उलाँघ कर जिनकी परात्पर (सर्वोत्कृष्ट) स्थिति है। पदमार्ग-वर्णमार्ग-मन्त्रमार्ग आदि समस्त मार्गों में जिनकी शक्ति बँट गई है। ब्रह्मा-विष्णु-रुद्रादि रूपों में क्रम से जिनकी मूर्ति अलग-अलग दिखाई देती है। शान्ति में स्थित योगियों को जिनने भोग और मोक्ष दिए हैं ऐसे श्री शिव को नमस्कार।।29।।

तपस्या के फल रूप में विजय अर्थात् अर्जुन को जय देने वाले ऐसे शबर (भिल्ल) रूपधारी श्रेष्ठ शंकर को नमः। सकल पापों के संकर (समूह) को हरने वाले श्री हर को नमः। जगत् को नीरोग करने में जिनका उत्कृष्ट वैभव है ऐसे

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्री भव (शिव) को नमस्कार। उत्कृष्ट से उत्कृष्ट वर देने में जिनने लोकों का कल्याण प्रकाशित किया है ऐसे श्री शिव को नमस्कार।।30।।

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज यह द्वितीय शिवचरणधृत।।

द्वितीय स्तोत्र समाप्त।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आशीर्वादस्तोत्रम्

(३)

❀❀❀

जो सत्तारूप से सदा वर्तमान है, जिसमें अविद्या आदि कोई आवरण नहीं। जहाँ अपनी आत्मा का अनुभव ही एक प्रमाण (साक्षी) है। जिसमें दूसरी चीज का अनुभव ही न हो, ऐसे परम आनन्द का स्थान। संपूर्ण जगत् का एक मात्र मूलकारण (अर्थात् नीचे के कालाग्निरुद्र भुवन से लेकर ऊपर के शिवभुवन पर्यन्त 224 भुवनात्मक जगत् का कारण)। पूर्व, पश्चिम आदि दिशा, देश (स्थान, भूत, भविष्यद् वर्तमान-आदि काल, यह ऐसा, इतना इत्यादि परिच्छेद (इयत्ता-परिमाण), इत्यादि का जिसमें हस्तक्षेप (पुहँच) नहीं, ऐसा परात्पर तेज हम को कल्याण दे।।1।।

बादल जैसे आकाश में तरङ्ग समूह जैसे सरोवर में, चन्द्रमा का तेज जैसे सूर्य के तेज में जिस तरह उत्पन्न होता है और फिर उसही में लीन हो जाता है। इस ही तरह यह दृश्य प्रपञ्च (जगत्) जिसमें उत्पन्न होता है और फिर लीन हो जाता है वह भगवान् शंकर का वैभव (ऐश्वर्य) हमारी समृद्धि के लिये हो।।2।।

तीनों लोको की उत्पत्ति-स्थिति और संहाररूपी क्रीडा को करने वाला जो कार्य के लिये विष्णु शिव और ब्रह्मा का रूप धारण करता है जिसकी शक्ति संपूर्ण मनुष्यों की वाणी और मन से अतीत (परे) है, वह देव हम को सदैव अक्षय कल्याण दे।।3।।

जिसकी दया से- आत्मा, द्व्यणुक त्र्यणुक, शुभाऽशुभ कर्म, काल आदि यह कारण समूह विवश होकर विश्व की रचना में चतुर बन जाता है- त्रिलोकी के सर्वतन्त्र स्वतन्त्र स्वामी श्री महेश्वर आपकी रक्षा करैं। (इस जगत् सृष्टि मे- परमात्मा की दया (इच्छा) कर्ता (कुम्भकार) के स्थान पर, परमात्मा के ही लघुतर अंश प्रतिबिम्बभूत जीवात्मा के संबन्धी पृथिवी-जलादि के अणु (उपादान कारण) मृत्तिका के स्थान पर। सृष्टि के शुभाशुभ कर्म (निमित्त कारण) दण्ड के

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्थान पर। काल आदि (सहकारि करण) चक्र (चाक) आदि के स्थान पर हैं। यों परमशिव से उत्पन्न हुए सृष्टि प्रपञ्च को समझना चाहिये।।4।।

जिन भगवान् शंकर के ज्ञान और क्रिया किसी कारण की अपेक्षा (जरूरत) नहीं रखते। स्वतन्त्र जो अपने आगे भासित होते हुए विश्व प्रपञ्च को हाथ में लिये हुए आमलक (आँवला) की तरह तटस्थता से देखते हैं। वह परमेश्वर आपको लाभ (अर्थात् कल्याण) दें।।5।।

जिनकी महिमा का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। जो काल (मृत्यु) का खंडन (दूर) करने वाले हैं, बालक जिस तरह गैंदो से, इस तरह जो इन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु आदि के द्वारा खेलते हैं, जिनका ब्रह्मादि भी पार नहीं पाते, वह पार्वती के पति प्रभु भगवान् शंकर आपका पाप दूर करैं।।6।।

सेवा के समय प्रणाम करते हुए देवताओं के मुकुटों में लगे हुए रत्नों की कान्ति से जिनके चरणों के स्थापन करने की चौकी लाल दिखाई देती है। इस ही लिये- नानारङ्ग वाले गेरू आदि धातुओं के शिखर पर शोभित चन्द्रमा के समान सुन्दर प्रतीत होने वाले भगवान् शिव आपका पोषण (रक्षण) करैं।।7।।

भुजाओं में जहाँ सर्पों के बाजूबन्द हैं। मस्तक पर तरङ्गों से आकाश को छूने वाली जहाँ गङ्गा बिराजती है। ललाट ऐसा है जिससे निकलते हुए अग्नि ने चपलता से भ्रमण करते हुए कामदेव का दाह कर दिया ऐसे प्रभाव वाले शरीर को धारण करने वाले श्रीशिव आपके संपूर्ण अभिलाष पूरण करैं।।8।।

जो त्रिलोकी के गुरु, अग्नि कुण्ड-यज्ञ के मण्डल-कमण्डलु (कलश) मन्त्र आवाहनादि मुद्रा-ध्यान-पूजा-स्तोत्रपाठ-जप इत्यादि का गुरु के द्वारा उपदेश दिवाकर भक्तों पर भोग तथा मोक्ष रूपी अनुग्रह करते हैं, वह शंकर आपको अनुरक्त करैं।।9।।

शरत्काल के विशाल मेघ के समान सुन्दर, चमकते हुए भस्म की श्वेत कान्ति जिसमें शोभित है, भ्रमर के समान जिसमें कण्ठ की कान्ति है, शरत्काल के पूर्णिमा चन्द्र के समान सुन्दर श्री शंकर का वह शरीर आपको शुभ दे।।10।।

गुरु को द्वार बनाकर जिनके बताये हुए, आगमशास्त्रोक्त, स्थिर उपाय को प्राप्त करके जिनके भक्त स्वर्ग, मोक्ष तथा अणिमादि सिद्धियों के द्वारा सर्व समर्थ हो जाते हैं। शुभाशुभ संपूर्ण कर्मफल प्राप्ति के प्रामाणिक स्थान (आश्रय) वह देव (शंकर) आप की वाञ्छित सिद्धि के लिये हों, अर्थात् आपके मनोरथ सिद्ध करैं।।11।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भगवान् स्थाणु श्री शिव (तथा बिना पत्ते आदि का ठूँठ) अपने अद्भुत शरीर के द्वारा आपको कल्याणप्रद हों। भगवान् का शरीर मूल (उत्पादक) कारण से रहित है (भगवान् सब के कारण हैं, शिवका कोई उत्पादक नहीं)। कलिका (शिर में रहने वाली चन्द्रमा की कला) से युक्त है। त्रिविध तापों की शन्ति में समर्थ है। प्रणाम करने वाले भक्तों को लेश मात्र भी विपत्ति नहीं देता। तत्काल ही शुभफल देने वाला, तथा सुमन (अर्थात् देवताओं) के द्वारा उपासित है।

बिना पत्ते आदि के ठूंठ में अद्भुतता यही है कि वह मूल (अर्थात्) जड से रहित है (ठूंठ में जड जरूर होनी चाहिये।) उसमें पुष्पों की कलियाँ है। उसके नीचे आने वाले को वह शान्ति (ग्रीष्म ताप से) देने वाला है। विगत पल्लव (बिना पत्ते का) न ही। अर्थात् उसमें खूब पत्ते हैं। (ठूँठ में पत्ते कली नहीं होते् किन्तु इसमें पत्ते, पुष्प की कलिया हैं, यही आश्चर्य है)। तत्काल इसमें फल लगते हैं और सुमन (यानी पुष्प) उनसे युक्त हैं, यही आश्चर्य है। श्लेषमूलक विरोधालंकार।।12।।

ईश्वर (भगवान् शंकर) से आदर किया हुआ। (मस्तक पर धारण करने के कारण) द्विजाधिपति (नक्षत्रपति चन्द्रमा तथा ब्राह्मणों में श्रेष्ठ) आपके अन्धकार और त्रिविध संतापों को दूर करै। जो (चन्द्रमा) समीपस्थित गङ्गा के स्नान और तृतीय नेत्र में स्थित अग्नि के सेवन से शुद्ध, कलङ्क रहित देह को धारण करता है। तथा जो दोषा (रात्रि) के संबन्ध से रहित है (शंकर के मस्तक पर रहने के कारण)। दूसरे अर्थ में ब्राह्मण श्रेष्ठ भी तीनों सन्ध्या के समय गङ्गास्नान, पावक सेवन (अर्थात् अग्निहोत्र सेवा) इनसे उसका शरीर पवित्र और लौकिक कलङ्क (निन्दा) आदि से रहित है। वह (ब्राह्मण श्रेष्ठ), दोष जो (मानसिक चपलतादि पातक) उनके संबन्ध से रहित है। वह ईश्वरों से (देश के समर्थ राजाओं से) वन्दित है। अतएव तिमिर (अविद्यारूप अन्धकार तथा संसार भ्रमण जन्य ऊष्मा (संताप) की शान्ति करै।।13।।

जिनके पुत्र का कर (हाथ तथा सूंड) सदा दान जल (मद का जल तथा दान देने के लिये संकल्प का जल) से पूर्ण रहता है। धनद (कुबेर और धन देने वाला निधिपति) जिनके पास आज्ञाकारी बना रहता है। संपूर्ण दिशाओं में फैले हैं कर (किरण और हाथ) जिसके ऐसे राजा (चन्द्रमा और भूपति) ने जिसके मस्तक में आश्रय लिया है। वह सोने को बरसाने वाला मेघ भगवान् शंकर आपका पालन करै (मरुत्त नामक राजा के घर में सात दिन पर्यन्त भगवान् शंकर ने सौना बरसाया था)। जिनके समीप पुत्र, भृत्य और राजा इस तरह के रहते हो, वह सोने की वर्षा करैं इसमें क्या आश्चर्य? श्लेष मूलक काव्यलिङ्ग अलंकार।।14।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जहाँ दिन को करने वाला सूर्य तथा रात्रि को करने वाला चन्द्रमा ईर्ष्याभाव को छोड़कर साथ-साथ रहते हैं। ऐसे ही जल और अनल (अग्नि), अमृत और हालाहल (विष) निर्वैर होकर साथ-साथ रहते हैं। जहाँ उज्ज्वल नया राजा अधिष्ठाता है, ऐसा भगवान् शंकर का शरीर आप को वाञ्छित सिद्धि दे (भगवान् के सूर्य चन्द्रात्मक नेत्र हैं। ऐसे ही मस्तक में गङ्गाजल तथा तृतीय नेत्र में अग्नि। कण्ठ में विष तथा हस्त में अमृत का घड़ा। मुकुट पर नया राजा (अर्थात् एक कलात्मक चन्द्रमा)। नया राजा जब होता है तो एक बार विप्लव हुआ करता है। किन्तु भगवान् के शरीर में पूर्वोक्त सब निर्वैर रहते हैं।।15।।

जो ईश्वर श्रुतियों (वेदों) के वक्ता तथा श्रुतियों (कानों) को (अमृतमय वेदवाणी सुनाने के कारण) सुख देने वाले हैं (ब्रह्मा रूप से)। जो कमल से अङ्कित हस्त और कमला (लक्ष्मी) से अङ्कित वक्षःस्थल धारण करते हैं (विष्णु रूप से)। जो मस्तक पर हैमवती (हिमाचल से पैदा हुई गंगा) को तथा शरीर में (वामाङ्ग में) हैमवती (हिमालय की पुत्री पार्वती) को धारण करते हैं (शंकर रूप से)। यों सृष्टि स्थिति संहार के लिये त्रिधा (तीन प्रकार से) विद्यमान भगवान् शिव हमारे कल्याण के लिये हो।।16।।

त्रिपुरान्तक (त्रिपराऽसुर को मारने वाले) भगवान् शंकर का तीनों लोकों में पूजित वह त्रिशिख (त्रिशूल) आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक तीनों तापों को दूर करै। तीनों तेजों (सूर्य-चन्द्र-अग्नि)का लयन (घर) वह नयनत्रय (तीनों नेत्र) धर्म, अर्थ, काम, रूप तीनों पुरुषार्थों की सिद्धि के लिये हो। तथा त्रिस्रोता (त्रिपथगा, गंगा) का त्रिलोकपूजित जल तीनों मलों (शरीर का अणु संबन्धी, माया संबन्धी, कर्म संबन्धी) के दूर करने के लिये हो।।17।।

पुण्यवान् लोग जिनके दर्शनरूपी अमृत के सुखानुभव से् अपने नेत्र कमलों को बहुत देर तक आधे मुँदे हुए धारण करते हैं। मानों नेत्रमार्ग में आये हुए जो सूर्य और चन्द्र उनके किरण सम्बन्ध से ही आधे मिचें हो (आनन्दानुभव की अवस्था में नेत्रकमल अपने आप अधखुले रह जाते हैं किन्तु कवि ने उत्प्रेक्षा की है कि जिन भगवान् के दर्शन का आनन्द ले रहे थे उनके नेत्र में सूर्य और चन्द्र दोनों हैं। चन्द्रमा का स्वभाव कमल को बंद कर देने का और सूर्य का काम उनको विकसित कर देने का है। इस लिये आधा मूँद देना चन्द्रमा का और चन्द्रमा के कारण आधा खिला देना सूर्य का काम हुआ। अतएव नेत्र कमल आधे खुले रहे)। उत्प्रेक्षालंकार।।18।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दृष्टिमात्र से काल को दूर करते हुए अद्भुत चमत्कारकारी जिन शंकर ने श्वेत (श्वेत नामक राजा) को काल से अभय प्राप्ति के कारण सफलप्रयास बना दिया। तथा दुष्ट चित्तों के श्वेत यश को दूर करते हुए जिनने सज्जनों के काल (समय) को सर्वलोकों से प्रशंसनीय बना दिया। वह शंकर आपकी रक्षा करें। पूर्वार्द्ध में –काल का निग्रह और श्वेत पर अनुग्रह। उत्तरार्द्ध में – श्वेत की शान्ति और काल को कृतार्थ कर देना, प्रभुता के कारण उत्तमचमत्कारकारित्व दिखाया है। श्लेषमूलक काव्यलिङ्ग।।19।।

प्रमथाधिप (शंकर) का भूरे रंग का जो जटाजूट ललाटस्थित अग्नि के साथ मित्रता धारण करता है। और जहां सर्प (कंठ में लपेटा हुआ वासुकि नाग) अग्नि के साथ समरसता (अत्यन्त-प्रीति) रखता है। तथा सर्प शिखी (अर्थात् स्वामिकार्तिक के मयूर) के साथ स्नेह रखता है। वो शिव का जटाजूट बैरियों के साथ भी रोषरहित व्यवहार को आपके सामने प्रकट करै। यहाँ बभ्रु' का दूसरा अर्थ होता है, 'नकुल' (नेऊला)। वह अग्नि के साथ प्रीति कैसे करता है तथा सर्प मयूर के साथ समरसता (अत्यन्त प्रीति) कैसे रखता है, यह विरुद्ध बातें दिखाई देती है? किन्तु श्लेष से 'बभ्रु' का 'भूरे रङ्ग का' यह अर्थ हो जाता है, तथा शम्भु के प्रभावातिशय से भी उसका परिहार हो जाता है।।20।।

जिनके मस्तक पर नेत्राग्नि की ज्वालामालाओं से सब तरफ से व्याप्त हुआ जो गंगाजल, उससे चारों तरफ से घिरा हुआ चन्द्रमा ऐसा मालूम होता है जैसे अब भी बाडवाग्निकी ज्वालाओं से घिरे हुए रमणीय क्षीरसमुद्र के बीच में स्थित हो। ऐसे वह महेश्वर आप की रक्षा करैं।।21।।

आपकी वह शंकर रक्षा करैं, जिनके चरण-रेणु समूह से (अर्थात् चरणरजरूपी) धूलि बिछाकर लेखपट्टी की तरह बनाये पुण्यवानों के ललाटों पर विधाता यह अक्षर लिखता है कि – 'भूमि में यह भूपतियों के मस्तक पर रखी हुई मालाओं से पूजितचरणकमल सम्राट् होगा।' महेश्वर की पदधूलि ललाट पर लगते ही विधाता को उसे सम्राट् बनाना पड़ता है।।22।।

शंकर के जटाजूट पर जो सर्प उसके रत्न-किरण पड़ जाने से रक्त वर्ण हुई वह चन्द्रमा की कला आप को कल्याण दे, जिसका प्रतिबिम्ब अपने कुचतट पर पड़ जाने पर देवी पार्वती नवीन नखक्षत की बुद्धि से उसको अपने उत्तरीय के अञ्चल से ढाँकती है।।23।।

चन्द्रशेखर भगवान् के शरीर के वामार्द्ध में विराजनें वाली पार्वती के कुच का वह अग्रभाग आपको मोक्ष दे, जो (अग्र.) अपराधी कामदेव ने पूजा के लिये

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुवर्ण के पट्टे के मध्य में स्थापित पन्ने के शिवलिङ्ग की सी शोभा को प्राप्त होता है। पार्वती का वक्षः स्थल सुवर्ण सिंहासन के समान, तथा वक्षःस्थल के ऊपर का स्तनाग्रभाग पन्ने के शिवलिङ्ग के समान वर्णित किया है।।24।।

जो चन्द्रमा की कान्तियें शंकर के जटा जूट की शोभा को ऐसी कर देती हैं मानों क्षीरसागर की तरङ्गों से घिरा मन्दरपर्वत हो। और जिनने गङ्गा की महातरंगों को दुगुना कर दिया है। वह शीतरुचि (चन्द्रमा) की कान्तियाँ आपके पाप को दूर करें।।25।।

जो (गङ्गा) तीनों लोकों के मङ्गल की जन्मभूमि है। जो सब से ऊँचे (स्वर्ग से भी महान्) स्थान के चढ़ने के लिये निसैनी (सीढ़ी) है, और जो चन्द्रशेखर के मुकुट रूप ध्वजा की पताका (फहराने वाला कपड़ा) है, और जिसने नीति का मार्ग सबके आगे प्रकट किया है (त्रिलोकी के कल्याण करने के कारण तथा पापियों के पातक दूर करने के कारण) वह जह्नु राजा की पुत्री भगवती गंगा आपकी रक्षा करै।।26।।

ललाटाग्नि की ज्वालाओं से जिसके संपूर्ण छिद्रभाग पूरित हो गये हैं, ऐसा भगवान् शंकर के शिर में स्थित कपाल आपको कल्याण दे। महाप्रलय के समय रुद्रभगवान् कालाग्नि रुद्र होकर जिस समय अनेक लोक समूहों को पकाते हैं, उस समय जो महानस (रसोई) का काम देता है।।27।।

चन्द्रमा का तेज (प्रकाश), श्रीगंगा का जल, हस्त में स्थित सुवर्ण कलश में भरा हुआ अमृतरूप जल, कृपा से स्निग्ध (सरस) दृष्टि और श्वेत हास्य ये सब आपके भवाटवी में भ्रमण जन्य संताप को दूर करने के लिये हों।।28

गंगा से श्वेत मस्तक पर श्वेत ही चन्द्र-कला, श्वेत कैलास शिखर पर श्वेत ही वाहन (नन्दिकेश्वर), हिम के समान श्वेत शरीर पर श्वेत ही भस्म यों भगवान् श्री शंकर की सदृश में सदृश संघटना (सदृश का सदृश के साथ मेल) आपको पुष्ट करै (अर्थात् भक्तिरस का उत्कर्ष करै)।।29।।

तपे हुए सुवर्ण के सदृश (पीले) जटाजूट पर चन्द्रकला, नवीन पत्ते के समान (लाल) हस्त में कपाल, रक्त ओठ पर यह श्वेत हास्य, यों यह भगवान् शंकर की अद्भुत शोभा (अन्य रङ्ग के साथ अन्य रङ्ग का मेल) आपका कुशल करै।।30।।

श्रेष्ठ कवि की वाणी के समान-सुन्दर विशुद्ध (सफेद) वर्ण (रंग) वाली, तथा पूर्ण हो गई है अभिलाषा जिनकी ऐसे इन्द्रादि देवश्रेष्ठों से वन्दनीय तथा पुण्य

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

(प्रणाम करते ही पापियों को भी पवित्र करती हुई), बाल चन्द्रमा है शेखर में जिनके ऐसे भगवान् श्रीशंकर के चरणों का यह धूलिकणसमूह आपको कल्याण दे। कवि की वाणी भी कैसी है- विशुद्ध अर्थात् वर्णनीय रस के उपयुक्त हैं वर्ण (अक्षर) जिसमें ऐसी, पूर्णाभिलाष जो विबुधाधिप (पण्डितश्रेष्ठ) उनसे भी प्रशंसनीय, तथा पुण्य (सुन्दर, हृदय में पैंठने वाली)।।31।।

कण्ठ में हार के स्थान पर स्थापित किया हुआ जो भयंकर सर्प, उसके फण की जो इन्द्रनीलमणि, उसकी नीली कान्ति के मिल जाने से चित्र वर्ण हुआ ऐसा वह शंकर का वक्षःस्थल, भक्तिरस उत्पादन से आप का पोषण करै, जिस वक्षःस्थल में आलिङ्गन के समय पार्वती के स्तन के अग्रभाग में लगा हुआ कस्तूरी के लिखे मकर-चित्र का चिह्न छुप गया है। कस्तूरी का श्याम चिह्न इन्द्रनील मणि की श्याम प्रभा में मिल गया।।32।।

नवीन नील कमल के समान श्याम द्युति वाला वह भगवान् शितिकण्ठ (शिव) का कण्ठ आपको सुन्दर (शिवभक्ति के अनुकूल) बुद्धि दे। जो केतकी पुष्प के समान सुन्दर (शिवभक्ति के अनुकूल बुद्धि दे। जो केतकी पुष्प के समान श्वेत रङ्ग के वासुकि (हार बनाये हुए सर्प) के शरीर के संयोग से गंगा प्रवाह से मिले हुए आकाशगङ्गण की सी शोभा धारण करता है। शंकर का नीला कण्ठ आकाश के समान। उस पर श्वेत वासुकि नाग का शरीर गंगा प्रवाह के समान। उपमा।।33।।

दया के समुद्र तथा आश्रित (शरणागत) हैं प्यारे जिनको ऐसे शरणागतवत्सल भगवान् शंकर आपको आनन्द दें, जिनने सेवकी तरह चरण कमलों में पड़े हुए क्षीरसमुद्र के बेटे (बालक चन्द्रमा) को अपने मस्तक पर रखकर लाड लडा रखा है। जो अपने आश्रितों को मस्तक पर भी बैठा लेते हैं उनकी आश्रितवत्सलता किससे छुपी हुई है।।34।।

वर्षा का अन्त और शरद् ऋतु के आदि के दिनों के (ऋतुसंधि में) आकाश की तरह जो (नेत्रत्रयी, तीनों नेत्र) राजा (चन्द्रमा) हंस (सूर्य) शिखी (अग्नि) इन तीनों की कान्ति से पूर्ण है, तथा अतिशीघ्र (भक्तों को प्रणाम करते ही) जिसने अविद्या का घना आवरण (आच्छादन) दूर कर दिया है, जो शीघ्र ही प्रसाद (भक्तों पर प्रसन्नता, अनुग्रह) को धारण करती है वह भगवान् शम्भु की दृक् (दृष्टि, नेत्रत्रयी) आपके अभीष्ट फल को पकाने वाली (पूर्ण करने वाली) हो। ऋतुसन्धि का आकाश भी राजहंस और शिखी (मयूरों) से पूर्ण कान्तिवाला होता है, उसमें घनों (मेघों) का आवरण दूर हो जाता है। शीघ्र ही प्रसाद (निर्मलता) आ जाता है।।35।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

भीतर धारण किये हैं अहिमकर (सूर्य) अग्नि और बाल चन्द्रमा जिसने तथा गङ्गा के सङ्गम से सुन्दर एवं भक्ति करने वाले पण्डितों के लिये- हाथी, अच्छे घोड़े तथा लक्ष्मी (धन) का लाभ करने वाला भगवान् शंभु का नेत्रत्रय (तीनों नेत्र), समुद्र के शरीर की तरह आपको अमृत देने वाला हो। समुद्र का शरीर भी कैसा है कि - जिसने अन्दर धारण कर रखे हैं अहि (सर्प) मकर (मगर) बाडवाग्नि और चन्द्रमा जिसने ऐसा है। सब नदियों के समुद्र में मिलने के कारण-समुद्र शरीर भी गङ्गा के संगम से सुन्दर है। तथा सुमनसाम् (अर्थात् देवताओं के लिये) ऐरावत हाथी, अश्व (उच्चैःश्रवा घोड़ा) कौस्तुभादि-लक्ष्मी का लाभ करने वाला है। तथा वह भी सुमनसाम् (देवताओं के लिये) अमृत देने वाला है।।36।।

पुरारि (भगवान् शंकर) का वह नेत्रत्रय जो श्री (शोभा) और लक्ष्मी (धन) का स्थान है, वह आपको श्री (अर्थात् मोक्षलक्ष्मी) दे। जिस नेत्रत्रय में अग्नि जिह्वा (शिखा-ज्वाला) फैला कर कण (हवनीय का लेश) नहीं चाहता, (क्योंकि शंकर के नेत्र में स्थित अग्नि नित्य तृप्त है) और जो लक्ष्मी के धाम (घर) में रहता है वह भी जिह्वा फैलाकर किसी से धान्यांश नहीं माँगता। और जिस नेत्रत्रय में दूर हो गया है वसु (तेज) जिसका ऐसा अर्क (सूर्य) प्रत्येक रात्रि में अग्नि में प्रवेश नहीं करता। (रात्रि में सूर्य का तेज अग्नि में चला जाता है, यह आगम प्रसिद्ध है)। किन्तु नेत्रत्रय के सूर्य और अग्नि सदा जाज्वल्यमान रहते हैं। श्रीधाम में रहने वाला भी दूर हो गया है वसु (धन) जिसका ऐसा नहीं होता, सदा उसके पास धन रहता है। और क्षीण होकर चन्द्रमा नेत्र में रहने वाले सूर्य का कभी आश्रय नहीं लेता (अमावास्या के दिन क्षीण हुआ चन्द्रमा सूर्य का आश्रय लेता है (सूर्य और चन्द्र दोनों एक कक्ष्या में आ जाते हैं) किन्तु नेत्रत्रय का चन्द्रमा सूर्य का आश्रय नहीं लेता। और जो श्री (लक्ष्मी) के धाम में रहता है वह कभी क्षीण (दरिद्र) नहीं होता जो दूसरे का आश्रय ले।।37।।

भगवान् शंकर का वह नेत्रत्रय आपकी रक्षा करै। जहाँ शिशिर ऋतु में भी सूर्य का उत्तर दिशा में गमन (उत्तरायण) नहीं होता (मकर राशि के प्रारम्भ में सूर्य का उत्तरायण प्रसिद्ध है किन्तु शंकर के नेत्रत्रय में सूर्य सदा (एक सा है)। जहाँ चन्द्रमा की कलाओं का कृष्णपक्ष में अपलाप (हानि-क्षीणता) नहीं होती (नेत्र में रहने वाला चन्द्र सदा प्रकाशमान रहता है)। और जहाँ अग्नि दिन में क्षीण तेज धारण नहीं करता (लोक का अग्नि दिन में उतना नहीं चमकता जितना रात्रि में। किन्तु नेत्र का अग्नि सदा प्रज्वलित रहता है)।।38।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शंकर के शरीर के वे तीनों नेत्र आपके कल्याण के पोषण करने वाले (बढाने वाले) हों। जिनमें सुन्दर तेजवाला अम्बरमणि (सूर्य) आश्रय लेता है। और अनलस (कभी मन्द नहीं होने वाले अर्थात् सदा तेज रहने वाले) जिस (नेत्रस्थ अग्नि) ने काम और यम को 'अनलसात्' अग्नि के अधीन अर्थात् जला दिया। और जो चन्द्र से पैदा होने वाले अमृत की भूमि (स्थान है। अर्थात् ये नेत्रत्रय क्रम से सूर्य अग्नि और चन्द्रात्मक हैं।।39।।

प्रथम संगम में भय से व्याकुल श्री पार्वतीके विश्वासन (सान्त्वन) के लिये आवश्यक जो प्रेम उसका कहीं भङ्ग नहीं हो जाय इसके लिये व्याकुल (चिन्तित) ऐसे उरगाभरण (सर्प को भूषण बनाने वाले) श्री शंकर का उस समय काम देने वाले कामदेव के देह दाह से पश्चात्ताप करने वाला चित्त भक्ति रस से आप को पुष्ट करै। (विवाह के उत्तर गौरी के साथ प्रथम समागम होने पर नवोढा स्वभाव से डरी हुई श्री पार्वती को राजी करने के लिये प्रेम आवश्यक था। किन्तु प्रेम के विषय में कामदेव सेवा करने योग्य था। ''उसको मैंने क्यों जला दिया' यों अनुतापयुक्त श्रीशम्भु का दयालु चित्त आपके भक्ति रस को पुष्ट करै)।।40।।

जिनके जटाजूट पर कपालों के टुकड़े (महाप्रलय के आदि में हरि-ब्रह्मादि के कपाल आप शिरमें रख लेते हैं)। तथा चन्द्रमा हस्त में सुधारूप जल (कलश में भरा हुआ) तथा गले में उदार विष) इन्द्रादिक देवताओं द्वारा प्रणाम और बैल की सवारी से जाना जिनका होता है। वह भगवान् हर, भवभ्रमण से हुई आपकी दुर्गति का हरण करैं। जिनके समीप परस्पर विरुद्ध वस्तुएं भी निःसंभ्रम रह रही हैं, यह भगवान् का ही माहात्म्य है।।41।।

जिस शेषनाग के मस्तक पर पृथिवी फूलों की माला की भाँति शोभित होती है और वह शेष जिनके बाजूबन्द के स्थान पर है, उन प्रभु शंकर की अमृत के झरने के समान (पीडितों को अभय देने वाली) सरस्वती (वाणी) आपके संपूर्ण पातक दूर करै।।42।।

जिस असाधारण शंकर के अनुग्रह को वह कल्पद्रुम भी नहीं दे सकता। जिस अनुग्रह के प्राप्त करने पर जराव्याधि दूर करने वाले रसायन रस (औषधि) के लिये भी तृष्णा नहीं होती। और जो अनुग्रह बड़े कठिन योग और हव (अर्थात् यज्ञों) से भी नहीं प्राप्त होता। वह अप्राकृत (अलौकिक) शंकर कृत अनुग्रह आपके पापको हरण करै।।43।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अधिक कहने से क्या लाभ। चन्द्रमा की कला को अपने मस्तक का आभरण बनाने वाले श्रीशंकर की अविच्छिन्न भक्ति आपकी हो। जिस भक्ति के अन्तर (विशेषता) को जानने वाले विवेकी लोग मुक्ति को भी एक विघ्न ही मानते हैं, जो मुक्ति एक परम पुरुषार्थ गिनी जाती है।।44।।

भगवान् शम्भु का वह महान् तेज आप को तेज अथवा उत्कृष्ट स्थान दे जिसके आगे परस्पर विरोधी भी आपस में प्रमोद धारण करते हैं। स्वामिकार्तिक का मयूर शंकर के सर्प की जिह्वा को खैंचने की क्रीडा करता हुआ प्रसन्न होता है। पार्वती का सिंह गणेश जी की सूड खैंचता हुआ, तथा यम का महिष (भैंसा) सूर्य के घोड़ों के हिनहिनाने से (प्रसन्न होता है) महिष और घोड़े का परस्पर विरोध स्वाभाविक है।।45।।

भगवान् शम्भु के नेत्रों का तीसरा भाग (अर्थात् (अग्निरूपी तृतीय नेत्र) आपको अत्यन्त अभीष्ट कल्याण दे। जिसके आगे त्रिभुवन को जीतने वाला कामदेव भी भग्नकाम (असफल मनोरथ, पराजित) हो गया। अपना समय आने पर भी वह काल (यम) पतङ्गे की तरह तुच्छ हो गया। तथा गङ्गा का प्रवाह भी जिस (अग्नि) के तेज को रोकने में समर्थ नहीं हुआ।।46।।

वह भगवान् शंकरदेव त्रास (भय) को देने वाले परात्पर स्थान में भी (यहाँ सिंहादि दुष्ट जीवों से घिरे स्थान में, और वहाँ यमदूतों से भयानक मार्ग में) आपको विघ्नों का अभाव दें। जिनने कामदेव को क्रोधाग्नि का समिधा (काष्ठ) बना दिया अर्थात् जला दिया। जिसने जगत् का अन्त कर दिया ऐसे कृतान्त (यम) को भी गर्वमूल के नाश का जानने वाला बना दिया (अर्थात् उसके घमण्ड का समूल नाश कर दिया) और जो संपूर्ण संसार की मति (अपने को शंकर से भिन्न समझना इस भेद बुद्धि) के नाश करने में समर्थ है।।47।।

तीनों लोकों के गुरु (पिता या आचार्य) वो कामदेव के अरि (शंकर) आपकी रक्षा करैं- जिनके चरणों का (जो चरण भक्ति से नम्र हुए सुर और असुरों के अधीश्वरों के मस्तक पर की मन्दार पुष्पों की माला से झरे हुए केसरों के समूहों से नखभाग में पीले हो गये है) उपग्रह सहित सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों की पङ्क्ति ने आश्रय इसलिये लिया है कि 'मस्तक पर रहने वाले चन्द्रमा की तरह हम भी शंकर के प्रिय क्यों न हो जाँय,' यो चन्द्रमा की ईर्ष्या से। यहाँ राहु-केतु-ध्रुव-अगस्त्य ये चार उपग्रह। और आदित्यादि सात ग्रह। यों ग्यारह हुए। उनमें चन्द्रमा तो शिरसे है ही। अतएव अवशिष्ट दश रहे। यों दश ग्रहोपग्रहों ने दश नखों के ब्याज (बहाने) से चन्द्रमा की ईर्ष्या से मानों जिनके चरणों का आश्रय लिया है। उत्प्रेक्षा अलंकार।।48।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जिन प्रभु शंकर को सूर्य-चन्द्र-मंगल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-मन्दार-कुन्द और कुमुद पुष्पों से ऊँचे प्रकार से अर्चन करते हैं, उन प्रभु की स्तुति पाप (वाचिक, मानस और कायिक) और मलों (मायीय-अणुसंबन्धी-कर्मसंबन्धी) की ऊष्मा (संताप) को दूर करने के कारण आकाश गंगा की तरह अमन्द (प्रभावशालिनी) स्तुति आपको आनन्द दे।।49।।

सब शरीर पर जिनने भस्म लगा रखी है, चन्द्रमा के समान श्वेत स्फटिक शैल के शिखर पर स्थित, हिम के समान श्वेत वृषभ पर आरूढ। अतएव दुग्ध समुद्र के मध्य में खिले हुए श्वेत कमल पर, क्रीडा करते हुए बालक हंस की तरह शोभित होते हुए श्री पार्वतीपति आपके कल्याण के लिये हों (आपको मङ्गल दें)।।50।।

भव (संसार) रोग से डरे हुओं के रक्षा करने वाले, चेतन और अचेतनों (जीव और जडों) के स्वामी, भक्ति से स्तुति करने वाले सज्जनों के क्लेश दूर करने वाले, दुष्टों का दमन करने वाले, सेवकों के लिये भोग और मोक्ष (पुनर्जन्म न होना) देने के स्थान, एकाग्रता से ध्यान करने वालों को अपनी समानता (अर्थात् सायुज्य) देने वाले, भूः, भुवः, स्वः नामक (और भी सब) भुवनों के निर्माण-पालन-और संहार रूपी क्रीडा को प्रकट करने वाले भगवान् मृड (सब को सुख देने वाले आपकी रक्षा करैं।।51।।

जिन शंकर से सुदर्शन (चक्र) प्राप्त करके त्रिलोकी में प्रसिद्ध हो गई है विजय की (कंस चाणूरादि दैत्यों को जीतने की) प्रसिद्धि जिनकी तथा चरणपूजाविधि में (शंकर के पूजा विधान में) लोचन देने वाले (श्रीकृष्ण ने शंकर पूजा में नित्य सहस्त्र कमल चढ़ाने का नियम किया था। एक दिन एक कमल घट गया। तब आपने अपना नेत्र निकाल कर उस कमल की पूर्ति कर दी यह प्रसिद्ध है)। वासव (इन्द्र) के सूनु, अनुज, छोटे भाई ('सूनु' छोटे भाई का भी नाम कोष में प्रसिद्ध है) श्रीकृष्ण ने जिस तरह संपूर्ण विश्व अपने अधीन कर लिया। इस ही तरह कृष्ण ने भी (अर्थात् अर्जुन ने भी, कोषों में कृष्ण अर्जुन का भी नाम है) जिन शंकर से सु (सुन्दर) दर्शन प्राप्त करके (अर्थात् जिनके दर्शनमात्र प्राप्त करके। त्रिलोकी में प्राप्त की है 'विजय' इस नामकी ख्याति जिसने (कोष में विजय अर्जुन का नाम प्रसिद्ध है) तथा वासव (इन्द्र) के पुत्र तथा जिन शंकर की पूजा विधि में भक्ति से आलोचना (नित्यचिन्तन) करते हुए, अर्जुन ने भी संपूर्ण विश्व को अपने अधीन कर लिया, अर्थात् जीत लिया, वह धूर्जटि (धूः अर्थात् गंगा है जटा में जिनके ऐसे शंकर भगवान् हमारे बहुत से श्रेय (यहाँ के और परलोक के कल्याण) संघटित करैं (पूर्ण करैं)।।52।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नक्षत्रपङि्क्त के समान 'सकृत्तिका', 'कृत्ति' अर्थात् व्याघ्रचर्म के सहित। आर्त (अर्थात् पीडितों का) भरण पोषण करने वाली। सज्जनों को उन्नत स्थानों पर (ब्रह्मादि पदों पर) स्थापित करने वाली, ब्रह्मादि सब देवताओं में ज्येष्ठ (श्रेष्ठ), कल्याण देने वाले हैं पद (चरण) जिसके ऐसे वसु (तेज) से युक्त, अक्षत (दृढ) हस्तमूल (हाथ के मूलभाग) में ग्रहण किया है पलाश (छीले का दण्ड जिसने ऐसी। मघ (सुख, अथवा महिमा) से अलंकृत (शोभित)। वैश्रवण (मित्रभूत जो कुबेर) उसके द्वारा आश्रित ऐसी भगवान् श्रीकण्ठ (शंकर) की मूर्ति आपको श्रेय (कल्याण) दे।

नक्षत्र पङि्क्त भी कैसी है कि- कृत्तिका सहित, 'आर्त (आ-ईषत्'-ऋत, प्राप्त) है भरणी (तन्नामक नक्षत्र) जिसमें। सदा (नित्य) स्थित है रोहिणी नक्षत्र जिसमें ऐसी। ज्येष्ठा, भद्रपदा (पूर्व और उत्तर दोनों) और पुनर्वसु नक्षत्रों से युक्त। चित्रा और विशाखा से अन्वित (युक्त)। सदा हस्त-मूल से घटित (युक्त) है आषाढा (पूर्व, उत्तर दोनों) जिसमें ऐसी। मघानक्षत्र से अलंकृत। वै (निश्चय) श्रवण नक्षत्र से युक्त ऐसी। यहाँ श्लेष और मुद्रा अलंकार हैं।।53।।

आपकी वो श्रीभैरव (शंकर) रक्षा करैं जिनने सन्ध्याकाल के उद्धत ताण्डवनृत्य के समय पर्वतों की सन्धि (जोड़) तोड़ दी। समुद्र के जल समूह को उद्वेलित कर दिया (उबला दिया, चारों तरफ उफनाँ दिया)। चरणों के बोझ से पिस रहे जो शेषनाग के फण, तद्रूपी पीठकपर लुढक रही है दृढता जिसकी ऐसे भूमण्डल को चूर्णित कर दिया। नाट्य के समय ऊँचे किये हाथों के फट कारों से सशब्द (आवाज करते हु) टूट रह हैं तारागण जिसमें ऐसे आकाश को पीस दिया।।54।।

जगत्प्रभु शंकर का वह शरीर आपको मोक्षसंपत्ति देने वाला हो। जो सन्ध्याताण्डव के समय, मस्तक पर धारण की हुई गंगा के नाद से प्रतिध्वनि करते हुए अपने कपाल रूपी भूषणों से अपने अट्टहास की भी विडम्बना करता है (गंगा की गर्जना से मस्तक के कपालों की ऐसी प्रतिध्वनि होती है जैसे कि आपको अट्टहास होता है)। नाट्यरङ्ग स्थल में घूमते हुए नारद और तुम्बुरु के द्वारा बजाई हुई गम्भीर भेरी (नगारे) के शब्द से हर्ष में नाचते हुए स्वामिकार्तिक के वाहन मयूर ने जिस ताण्डव क्रीडा का अनुकरण (नकल) किया है (अर्थात् शंकर की ताण्डव क्रीडा की नकल उसने भी की, वह भी नाचने लग गया)।।55।।

पहले सेवा के लिये चन्द्रमा शंकर के चरण तल में स्थित रहा। फिर

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उसको हाथ का आलम्बन (आश्रय) मिला (आगम में ध्यान है कि शंकर के हस्त में अमृत का कलश तथा चन्द्रमा है।) फिर उसको शुभ नेत्र में स्थान मिला, इसलिये शंकर की और भी प्रियता को प्राप्त हुआ। अन्त में यह चन्द्रमा मस्तक पर स्थापन कर लेने की महिमा को प्राप्त हुआ। यों क्रम से बढ़ी है महिमा (माहात्म्य) जिसकी ऐसा वह स्वामी (शंकर) का प्रसाद (अनुग्रह) हमको मोक्षसंपत्ति देने वाला हो।।56।।

एकमात्र जगत्कर्ता जिस परमेश्वर का वाहन वृषभ, सुवर्ण से भरा हुआ जो चरणन्यास उससे मनोहर है चरण धरने की पहचान जिसकी ऐसा है (जहाँ जहाँ शम्भु का वाहन चरण स्थापन करता है वहाँ वहाँ जाम्बूनद सुवर्ण बरसता है, यह आगम में प्रसिद्ध है)। तथा बेरोक टोक गति की जो स्वतन्त्रता उससे मनोहर (सुन्दर) लगता है आकार जिसका, ऐसा वह (वृषभ) 'प्रेङ्खति' सब जगह शोभित होता है। तथा जिस (परमेश्वर) का सृष्टिरचना का संरम्भ (व्यापार, काम) अति प्रख्यात है। और जो ओजस्वी (अत्यन्त तेजस्वी) काव्य (शुक्राचार्य) की उत्पत्ति का स्थान है (रुद्र के अङ्गविक्षेप से शुक्र की उत्पत्ति हुई, यह क्षीरस्वामी ने लिखा है)। ऐसा पुराने कवि (अनादिबोध सूरि, पण्डित) भगवान् शंकर आपके परमानन्द के लिये हों।

'कवि' का दूसरा अर्थ है, 'कविता करने वाला'। वह भी कैसा है कि जिसकी 'गौ' वाणी सुन्दर वर्णों (अक्षरों) से भरा हुआ है पदन्यास (सुप्तिङन्त पदों का स्थापन) जिसका ऐसी है। तथा निर्दोष है क्रम (आरम्भ से अन्त पर्यन्त परिपाटी) का प्रकाशन जिसका ऐसी। बिना रुकावट (शक्ति के कारण अविश्राम) जो गति (रचनाक्रम) की स्वच्छन्दता, उससे हृदयंगम है आकृति (अक्षरबन्ध) जिसका ऐसी। तथा सर्वत्र विख्यात। एवम् अद्भुत (आश्चर्यजनक) है सर्गबन्ध (महाकाव्य) की रचना का संरम्भ (आटोप 'ठाठ') जिसका, ऐसी तथा ओजोगुणयुक्त काव्य (कविता) की जो उत्पत्तिस्थान है, ऐसी जिसकी वाणी 'प्रेङ्खति' सर्वदा सुशोभित होती है।।57।।

त्रिलोकी के गुरु भगवान् शंकर की स्तुति कथा (स्तोत्रप्रबन्ध) के मध्यगत जो सूक्त (मधुर उक्तियाँ) हैं वे आपकी शिवभक्ति में एकाग्रता की वृद्धि करें। जो उक्तियाँ पूर्णिमा के चन्द्रमा से भी सुन्दर अर्थात् अमृत झरने वाली हैं। जो षोडशवर्ष की सुन्दरी के मुग्ध (मनोहर) बातचीत रूपी अमृत से भी अधिक हृदयंगम हैं। जो मोती के हार से भी मनोहर हैं। जो वर्षा समय में मनोहर लगने वाले मयूर शावक (बालक) के वचन से भी कानों में अधिक अमृत बरसाने वाले हैं।।58।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सान पर चढ़ाये इन्द्र नीलमणि (नीलम) की तरह है नीली चमक जिसकी ऐसे श्रीकण्ठ (शंकर) के कण्ठ स्थान में प्रेम से डाली हुई, सोने के समान शोभावाली श्रीपार्वती की भुजारूपी लता आपको सांसारिक भयों से रक्षा करै। जिस (भुजलता) को देखकर जल से भरे बादल के खण्ड में लिपटी हुई बिजली की शोभा के भ्रम से स्वामिकार्तिक का मयूर, हर्ष के कारण प्रचण्ड नृत्य (नाचना) के नवीन बँधे हुए क्रम को नहीं छोड़ता (बादल में चमकती हुई बिजली की भ्रान्ति से बराबर नाचता ही रहता है, बन्द नहीं होता)।।59।।

आज जो भी कुछ ऐसे उदार लक्ष्मीवान् (धनिक) तथा श्रेष्ठकवि दिखाई देते हैं, जिनका कि शरीर संपूर्ण सृष्टि का भूषण स्वरूप है (जब तक वो शरीरसहित वर्तमान है, तब तक यह सृष्टि अलंकृत दिखाई देती है)। दश दिशा रूपी कामिनियों के कर्णभूषण समान है कीर्ति जिन की। तथा जिनकी शोभा स्वर्ग की तरह आनन्द देने वाली है। तथा जिनकी उक्तियाँ (वचन) दुष्काल (कलियुग का भयंकर समय) रूपी जो अग्नि उससे पीडित हुए सज्जनों के लिये अमृतवर्षा के समान हैं। आज ऐसे कई बिरले उदार लक्ष्मीवान् तथा कविश्रेष्ठ जो दिखाई दे रहे हैं यह जिसकी महिमा है, वह भगवान् शर्व (शंकर) की स्तुति आपका कल्याण करै। (उदार श्रीमान् होना अथवा उत्तम कवि होना, यह इस जन्म अथवा पूर्वजन्म की शंकर स्तुति (सेवा) का ही फल है, यह आशय है)।।60।।

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज यह तृतीय शिवचरणधृत।।

तृतीय स्तोत्र समाप्त।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मङ्गलाष्टकं चतुर्थं स्तोत्रम्

(४)

❀❀❀

जो लक्ष्मी पाञ्चजन्यशङ्ख और कौस्तुभ (हरिआत्मक अर्द्धभाग में), चन्द्रमा-विष और अमृत (हररूप अर्द्धभाग में) इन सबकी भ्रातृभाव के कारण जो मैत्री (स्नेह) उसके सुखानुभव का एक स्थान। जिसमें गरुड-वृष दोनों ने रोष छोड़कर प्रेमभाव से निवास स्वीकार किया है [(हरिपक्ष में गरुड वाहन तथा हर पक्ष में धर्म (वृष)]। वह हरिहरात्मक भगवान् का शरीर (मूर्ति) आपको मङ्गल दे (सहोदर भाइयों का भी कभी-कभी विरोध हो जाता है, इसलिये यहाँ श्लेष से सूचना दी है कि 'सत्यधर्मकृतनिष्प्रतिघप्रतिष्ठं) सत्य और धर्म में यहाँ प्रेम के साथ प्रतिष्ठा (स्थिति) है। अतएव यहाँ सचाई और न्याय के कारण लक्ष्मी-विष-अमृत-आदि में कभी विरोध नहीं हो सकता।।1।।

भगवान् का हरिहरात्मक वह शरीर आपको मङ्गल दे जिसमें सर्पराज शेष एक भाग में जटाजूट के बाँधने में, तथा दूसरें भाग में शय्या में, अपने सर्प शरीर के भोग को धन्य मानता है। अर्थात् मेरा सर्प शरीर धन्य हुआ जो इसके द्वारा जटाजूट बाँधा गया। तथा शय्या का काम लिया गया (हरिभाग में)।।2।।

चन्द्रमा की तरह श्वेत जिस अर्द्ध भाग को श्रीपार्वती ने नील कमलों से, तथा भ्रमर की तरह नील अर्द्धभाग को श्रीलक्ष्मी ने मालती (चमेली) पुष्पों से पूजित किया। जिसकी शोभा अनिमेष नेत्र (जिनकी आँखों के पलक नहीं पड़ती, सदा खुली रहती) ऐसे देवताओं के द्वारा देखी जाती है। वह शंकर का हरिहरात्मक शरीर आप को मङ्गल दे। श्वेत वस्तु की नीले के साथ, और नीली चीज की श्वेत के साथ अधिक शोभा होती है। इसलिये हरात्मक भाग में नीले कमल तथा हरिपक्ष में श्वेत चमेली का संयोग दिखाया गया है।।3।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नयन में स्थित अग्नि की ज्वाला, और गंगा के तरङ्गों की झंकारध्वनि जिनके अन्दर भरी है ऐसे केशों में रहने वाले मेघ (हरि आत्मक अर्द्धभाग में – क्योंकि 'विष्णु के केशों में मेघ रहते हैं, यह स्मृति कहती है) सदा स्थिर रहने वाली अद्भुत बिजली के शब्द को धारण करते हैं, वह हरिहरात्मक शरीर आपको मङ्गल दे। बिजली स्थिर नहीं रहती, किन्तु यह स्थिर है, यही अद्भुतता है (हर रूपी अर्द्धभाग में अग्नि की ज्वाला स्थिर बिजली तथा गंगा का तरङ्ग झंकार स्थिर बिजली का शब्द यही कल्पना है।।4।।

नाभि के अर्द्धभाग में- आधे कमल के तङ्ग स्थान में बड़े संकोच से जो निवास, इससे संकुचित और दुखी हो गये हैं अङ्ग जिसके, ऐसा ब्रह्मा भी जहाँ अपने शरीर को आधा करना चाहता है, वह भगवान् का हरिहरात्मक शरीर आपको मङ्गल दे।

(हरिहरात्मक विभाग नाभि पर होता है, अतः नाभि अर्द्ध रह जाती है।)।।5।।

जहाँ तृतीय नेत्र में स्थित अग्नि, सूर्य और चन्द्र दोनों को पूरे शरीर वाला और अपने शरीर को आधा देखकर, थोड़ा होने पर भी क्रोध के कारण अधिक जलता है, वह हरिहरात्मक शरीर आपको मङ्गल दे। हरिहरात्मक विभाग बीच के अग्न्यात्मक नेत्र से होता है। अतएव अग्नि आधा रह जाता है। और सूर्य-चन्द्रात्मक भाग पूरे रहते हैं। यही अग्नि के क्रोध में कल्पना है।।6।।

जिस हरिहरात्मक शरीर में शिवात्मक भाग का कमल गुण (तन्तु) युक्त है, हृदय (मध्यभाग का केसरा) से युक्त है। फल (अक्ष 'कमलगट्टा') सहित है। मूल (जड) सहित है, तौ भी हाथ से गिरा है। किन्तु शंख उससे विपरीत है। अर्थात् निर्गुण (तन्तु रहित), अहृदय (मध्यभाग रहित), निष्फल तथा निर्मूल है। तौ भी विष्णु आत्मक अर्द्धभाग में स्थित है। क्योंकि वह शरीर स्वातन्त्र्य का धाम (स्थान) है। भगवान् शंकर स्वतन्त्र हैं। अत एव गुणी, सहृदय, सफल, समूल (जिसका मूल-कारण साथ है), ऐसे का पतन कर दिया। और जो अगुणी निर्हृदय (बेकलेजे का) निष्फल (निष्प्रयोजन जिसका कोई हेतु नहीं), ऐसे को स्थिर कर रक्खा है। यह भगवान् की स्वतन्त्रता है। ठीक ही है 'न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः'। शब्दश्लेष अलङ्कार।।7।।

अत्यन्त अद्भुतचरित्र तौ भी सुन्दर और स्वतन्त्र, ऐसा हरिहरात्मक शरीर आपको मङ्ल दे। जहाँ चरण से निकला हुआ गङ्गा का जल बेरोक टोक मस्तक

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

के ऊपर चढ़ता है। जल का स्वभाव नीचे बहना है किन्तु यहाँ ऊपर चढ़ता है। गङ्गा विष्णुपदी विष्णु के चरण से निकली है, और हरात्मक भाग में वह मस्तक पर रहती है। इस प्रसिद्धि पर यह कविकल्पना है।।8।।

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज यह चतुर्थ शिवचरणधृत।।

चतुर्थ स्तोत्र समाप्त।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कविकाव्यप्रशंसास्तोत्रम्

(५)

❀❀❀

शंकर की दया की तरह आपत्ति में पड़े हुओं के तापों को (आध्यात्मिक आदि) हरण करने में तत्पर। गंगा की तरह उछलते हुए तरङ्गों से मनोहर (वाणी पक्ष में तरङ्गों की तरह मनोहर)। चन्द्रमा की कला की तरह अमृत के सारभाग से शीतल। श्रीपार्वती की तरह शिव ही हैं आश्रय जिसके ऐसी। शंकर की स्तुति में लगाई हुई कवि की वाणी धन्य है।।1।।

जो भोगिराज (शेष) पृथिवी को माला की तरह मस्तक पर धारण करते हैं और वो शेष जिनके मस्तक पर उष्णीष (पगड़ी) की तरह रहते हैं। वाणी के पति (परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैरारी यों चारों के पति परम शिव) जिस वाणी में रहते है (अपनी शक्तिस्वरूपा वाग्देवी में नादरूप से शंकर रहते हैं)। और उस वाग् देवी को भी जो अपने हृदयमें धारण करते हैं वो कविलोग 'जयन्ति' अर्थात् सबसे बढ़कर है। शेष पृथिवी को धारण करते हैं। शेष को शंकर धारण करते हैं। शंकर को वाणी धारण करती हैं और वाणी को अपने हृदय में कवि धारण करते हैं। अतएव सबसे अधिक भारसह कविगण धन्य हैं।।2।।

वे कविगण धन्य हैं जो अपने मुखरूपी उपवन (बाग) में पैदा हुई वाणीरूपी लता के निर्मल-पवित्र, शम्भु भक्ति के परिमल से सुगन्धित, माधुर्य ओज प्रसादादि गुण रूपी गुण (डोरों) से गूँथे हुए तथा सुन्दर वर्ण (अक्षर) रूपी वर्ण (अर्थात् रङ्ग) वाले अपनी उक्ति (वचन) रूपी पुष्पों को सज्जनों के कानों में भूषण बना देते हैं।।3।।

वे सुकवि धन्य हैं जो ऐसे सुन्दर पदों से कि जिन पदों में निरन्तर मधु (शहद) की बिन्दु झरती रहती हैं, ऐसे पदों से गुम्फित अपने वचनों से सज्जनों के कानों को सुखी करते हैं। और वे सज्जन भी धन्य हैं जो स्वाभाविक चमत्कार वाले अपने प्रशंसा वाक्यों (साधुवादों) से उन कवियों के कानों को सुखी करते हैं।।4।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जिनमें रचना का क्रम कभी रुकता नहीं ऐसे जो नवीन नवीन प्रबन्ध (साहित्यिक रचना) उनके निर्माण में सुन्दर वाणी वाले वे विरले कवि धन्य हैं। जिनकी सूक्ति (सुन्दर वर्णना) अच्छी तरह इसका आस्वादन किये बिना ही, केवल कान में पड़ते ही अमृत के समान आनन्द देती है।।5।।

जहाजी महाव्यापारियों की तरह अपार वाङ्मयरूप समुद्र के पर पार को देखने वाले (पारंगत) वे महाकवि धन्य हैं। जिनकी सूक्ति रूपी कोमल लवङ्गों के लेशमात्र से सज्जनगण (सभाओं में) अपने और दूसरों के मुखों को सुवासित (सुगन्धित) करते हैं।।6।।

अच्छे कवियों के जिह्वाग्र रूपी रंगस्थल (नाच का अखाड़ा) में आनन्दपूर्वक नृत्य करने का व्यसन (शौक) रखने वाली वाग् देवी (सरस्वती) सहृदयों की भृकुटि, कान के कुण्डल, मस्तक का मुकुट, गर्दन, इन सबके नृत्य कराने की गुरु (उस्ताद) बन जाती है। अर्थात् कवि की रचना सुनते ही सब सहृदयों के मस्तक मुकुट कुण्डलादि हलने लग जाते हैं।।7।।

अपनी उदरपूर्ति मात्र के लिये खर्च कराई है अर्थ कणिका (धनलेश) जिन्होंने ऐसी गणिका (वेश्या), अपनी उदरपूर्तिमात्र के लिये खर्च कराई है अर्थकणिका (खुशामद, चापलूसी की 'वचनकणिका बातें) जिन्होंने ऐसे विट (बदमाश) आदि मूर्खों को बस करते हैं। किन्तु भुजगभूषण (श्रीशंकर) की भक्ति से सरस सूक्तियों की रचना में चतुर कवीन्द्र तो निपुण बुद्धिवाले लोगों को अपने अधीन करते हैं।।8।।

वो सुकवि धन्य है, श्री शंकर के पवित्र चरित्र की तरह लोक की पीडा को दूर करने वाले, कार्तिक के चन्द्रमा की तरह कान्तिशाली, जिसके काव्य को सुकृती लोग गाते हैं (चरित्र और काव्य दोनों पीडा दूर करने वाले, और कान्तिशाली हैं)।।9।।

त्रिलोकी को भूषित करने वाला अद्भुत रत्न, तथा गुणी लोकों का बन्धु आकाश में एक सूर्य है, तथा भूतल में कवि है, (गुणी, गुण तन्तु' वाले कमलों का बन्धु सूर्य, उदारतादि गुण वालों का मित्र कवि)। जिन दोनों के माहात्म्य को अपने मस्तक पर जिनके चरणों को धारण करते हुए यही द्वार पर्वत और राजा) सूचित करते हैं। सूर्य के पादों (किरणों) को मस्तक पर धारण करते हुए पृथिवी भृत (पर्वत) सूर्य के तथा कवि के चरणों को मस्तक पर धारण करते हुए पृथिवी भृत् (राजा) कवि के, अलौकिक यश को सूचित करते हैं।।10।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

 In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

हम उस सुकवि को प्रणाम करते हैं जिसके मुख में - शंकर के मस्तक पर रहने वाली गंगा और चन्द्रकला की तरह अमृत बरसाती हुई, हिम और मोती के हार के समान स्वच्छ कान्ति वाली, अद्भुत वङ्क्रिमा को (व्यङ्ग्यार्थक पदों के प्रयोग के कारण) धारण करती हुई सुन्दर उक्ति (वाणी) रहती है। गंगा और चन्द्रकला भी अमृत झरती हैं। चन्द्रकला सुधा, तथा गंगा जल झरती हैं, जल का नाम अमृत भी है)। तथा दोनों हिम (बर्फ) और हार के समान स्वच्छ कान्ति वाली हैं। तथा दोनों वक्र भङ्गी शोभा को धारण करने वाली हैं। गंगा कुटिल भङ्गी अर्थात् तरङ्गों को धारण करती है और चन्द्रकला एक कला होने से स्वाभाविक कुटिलता (टेढ़ापन) धारण करती है।।11।।

निपुणता गंभीरता आदि गुणों से वृद्धि को प्राप्त हुई, स्वभाव से ही निर्मल, सांख्य मत के अनुसार प्रकृति (सत्त्व रज तमोगुणों की आदिम अवस्था) के आदिम परिणाम को धारण करती हुई (मूल प्रकृति का आदिम परिणाम बुद्धि ही है) ऐसी सज्जनों की बुद्धि तथा माधुर्य ओज प्रसादादि गुणों से परिपूर्णता को प्राप्त हुई। और स्वभाव से ही निर्दोष। स्वाभाविक परिणति (अर्थात् प्रौढता) को प्राप्त हुई ऐसी सज्जनों की वाणी। ये दोनों ही चन्द्रकला को मुकुट में धारण करने वाले (श्रीशंकर) के प्रसाद से कहीं भी नहीं रुकती। कहीं भी उनको धक्का नहीं लगता।।12।।

श्रीचन्द्रशेखर के चरण के स्मरण से जो अनुग्रह उससे परिपूर्ण और गंभीर है वाणी जिनकी, ऐसे कवियों की सूक्ति (मधुर रचना)। मुखकमल रूपी रङ्गस्थल में नाचती हुई वाग्देवी के सुवर्ण नूपुरों (के पाजेब) के नाद की समानता को धारण करती है। अर्थात् वह वाग् सरस्वती के नूपुरनाद के समान मनोहर है।।13।।

अपने काव्य की मधुरता को विचार कर उसके रसास्वाद से मुकुलित (बन्द) हुए ऐसे भाग्यवान् कवियों के नेत्र, पलक डालने की स्वाभाविक चपलता को छोड़ देते हैं (अर्थात् रसास्वाद से निश्चल निस्पन्द हो जाते हैं)। किन्तु उनकी भोहैं (भ्रुकुटियाँ) अपनी स्वाभाविक निश्चलता को छोड़कर उस चञ्चलता को ग्रहण करती हैं। (शंकर की कृपा से धन्य हुए कवि लोग ही अपने काव्यरसास्वाद से आँखें मूँद लेते हैं किन्तु अर्थ चमत्कार के विचार से उनकी भौंहें फडक उठती है।।14।।

सत्कवियों ने पूर्व जन्म में किये, हिम और मोती के हार के समान स्वच्छ और सफेद पुण्य का ही वह परिपाक (परिणाम) है जो इस जन्म में भगवान्

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

चन्द्रशेखर की स्तुति की सूक्तियों में इस समय बिम्बित हुआ है। (पूर्वजन्म के पुण्यवान कवियों की वाणी ही शंकर स्तुति में इस तरह की शोभा धारण करती है)।।15।।

कविश्रेष्ठों का वह सूक्ति रूपी अमृत धन्य है (सर्वोत्कृष्ट है) जिसका आस्वादन करके सुमति (उत्तम बुद्धि वाले) लोग - लक्ष्य और व्यङ्ग्य अर्थात् (अतिबारीक) अर्थ के विचार विमर्श से फडकती हुई भ्रुकुटियों के नृत्य ने सूचित की है चेतनता जिसकी, ऐसा अपना मुख धारण करते हैं। (अर्थात् सूक्ष्म अर्थ का विचार करते करते आनन्द विभोर नेत्र बन्द हो जाते हैं। सुनने वाले में इस समय चेतना रही है कि नहीं इस संदेह में भ्रुकुटियों का फड़कना रूपी चेतन चेष्टा ही उस समय चेतना का अनुभव कराती है।।16।।

हम कवीन्द्रों की उस वाणी की स्तुति करते हैं कि जो लोग शब्द का अर्थ भी नहीं जानते है वे भी जिस वाणी की कानों से सुनते हुए गीत के अर्थ को न जानते हुए भी स्वरों के अवरोहाऽवरोह रूपी मूर्च्छना (तान) को कानों से सुनते हुए मृगों की तरह, चित्रलिखित की भाँति रुक गये हैं सब इन्द्रियों के व्यापार जिनके, ऐसे हो जाते है।।17।।

कविवरों को ऐसा सहृदय सज्जन कहाँ मिलता है जिसको अपनी रचना सुनाने पर जिसकी दोनों भ्रुकुटियाँ ऐसी मालूम देती है मानों नेत्ररूपी कमलों पर दो भौरें घूम रहे हो (अपनी रचना सुनकर हर्ष से फडकती हुई भ्रुकुटिवाला सहृदय मिलना कवियों को दुर्लभ है।)।।18।।

यदि वाग्देवी अपना मधुद्रव (रसायन की भाँति अपना मधुर रस) झरै तो कस्तूरी मृग के उत्कट सुगन्ध समूह से क्या प्रयोजन? कपूर का वह सार भी निःसार है। पुष्पों की माला भी मनको प्रसन्न नहीं कर सकती।।19।।

संसाररूपी मारवाड के प्रचण्ड संताप-खेद को दूर करने में चतुर यह कवियों का काव्य सर्वोत्कृष्ट बना रहे, जिसने यमुना से मिला हुआ सुप्रसिद्ध गङ्गा का जल भी हमको भुला दिया। शिवभक्ति से सरस काव्यके द्वारा ही संसाररूपी मरूभूमि का भ्रमणजन्य संताप दूर हो सकता है फिर गङ्गा यमुना संगम तक जाने की क्या जरूरत?।।20।।

मनुष्यों को पुण्यों के बिना ऐसा कवि कहाँ मिल सकता है, कैलास पर्वत के मानस सरोवर के समान गंभीरताशाली, पवित्र, अमृत के प्रवाह के समान शीतल, इस ही लिये मदनान्तक (कामदेव के वैरी श्रीशंकर) ने जिसको अपना

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

घर बना लिया। मानस सरोवर में स्वच्छता के कारण जिस तरह नानाविध पदार्थों के प्रतिबिम्ब (परछाँहीं) दिखाई देते हैं। इसही तरह जिस कवि के मानस (मन) में अर्थ (वाच्य लक्ष्य व्यङ्ग्य आदि) सुशोभित होते हैं।।21।।

विश्व का भूषण वह द्विजेन्द्र (जन्म और वैदिक संस्कार से उत्पन्न हुआ) कवि वर सर्वोत्कृष्ट है - गङ्गा की तरह निर्मल, विचार करते ही ज्ञान में प्रसन्नता देने वाली, अमृत रस झरने वाली, जिसकी वाणी चारों दिशाओं में फैलती है। यहाँ द्विजेन्द्र (द्विजराज) का अर्थ चन्द्रमा भी होता है। इसलिये अर्थ बना कि - वह नक्षत्रों का इन्द्र चन्द्रमा धन्य है जो विश्व का भूषण है तथा गङ्गा की तरह श्वेत, निर्मल, अमृत को झरने वाली, देखने वालों की दृष्टि में प्रसन्नता देती हुई जिसकी 'गावः' (किरण) दशों दिशाओं में फैलती है।।22।।

शंकर की स्तुति में तत्पर, अर्थ (धन) से विभूषित जिस महापुरुष के समागम को पाकर चरणों के पास रहने वाला तुच्छ पुरुष भी गौरव को प्राप्त हो जाता है। शुद्ध आचरण वाले तथा सुशोभित यश वाले, उस शंकर स्तुति तत्पर जन को प्राप्त होकर किसको आनन्द नहीं होता?

यहाँ श्लोक का अर्थ 'पद्य' भी होता है।, इसलिये दूसरा अर्थ निकलता है कि - शंकर की स्तुति में है तात्पर्य जिसका , निदोष है वृत्त (छन्द वसन्ततिलकादि) जिसके, ऐसे सुन्दर श्लोक (पद्य) को सुनकर किसका चित्त प्रमोद को प्राप्त नहीं होता? सुन्दर अर्थ से विभूषित जिसके भीतर, अग्रिम संयोग को प्राप्त होकर तथा पादान्त (श्लोक के चरण के अन्त) में आया हुआ लघु (एकमात्रिक) भी गुरु (द्विमात्रिक) बन जाता है। (पाद के अन्त में लघु भी दीर्घ माना जाता है। तथा अगाडी संयुक्त अक्षर आ जाने पर पहले का लघु अक्षर भी दीर्घ माना जाता है, यह छन्दःशास्त्र की परिभाषा है)।।23।।

माया अविद्या (शंकर से पृथक् जगत् को मानना आदि) से उत्पन्न हुआ जो मोहप्ररोह (अज्ञान अथवा मूढता का उद्भव), उससे ढके हुए जगत् की एक मात्र चिकित्सक (अर्थात् अज्ञान को निवारण करने वाली) वाग्देवी की महिमा (अर्थात् काव्यशक्ति का विकास) यहाँ चारों तरफ विस्तार को प्राप्त होती है। जो (महिमा) जरा (बुढापा), मृत्यु, रोग आदि के सम्बन्ध से उत्पन्न हुए विशेष प्रकार की आपत्ति-संताप-खेदों को दूर करने के लिए समर्थ है [सरस्वतीप्रसाद से प्राप्त हुआ का काव्योल्लास जरा-मृत्यु-रोगादि से जनित-खेदों को सर्वदा दूर कर देता है]।।24।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विचार करने वालों के हृदय में अद्‌भुत चमत्कार को पैदा करने वाला कविवाणियों का वह परिणाम (परिपाक, प्रौढता) धन्य है (सर्वोत्कृष्ट है)। कवियों की जिस प्रौढोक्ति से (पकी हुई वाणी से) प्रभावित हुए श्रोताओं के चित्त में - "यही अमृत है, यही मोक्ष है यही सर्वोत्कृष्ट तेज अथवा स्थान है, यही सर्वोच्च पद (प्रतिष्ठा, स्थान)" ऐसी बुद्धियां हो जाती हैं। अर्थात् शंकर के स्तुतिकाव्य को पढने वालों के चित्त में 'यही अमृत अथवा मोक्षादि है' यह भान होने लगता है।।25।।

मधु (रसायन रस, अथवा शहद) को झरने वाला, दूर कर दी है विपत्तियों की उपाधि (उपद्रव अथवा मानसिक पीडा) जिसने संसार रूपी मारवाड (निर्जल प्रदेश) में भ्रमण करने से जो क्लेश (दुःख, दबाव) उसको शान्त करने मे वाञ्छनीय। घना जो चन्दन का रस, तथा नवीन अमृत का सार उनकी तरह सरस। ऐसा, श्रेष्ठ कवियों के काव्यामृतरूप श्रीवाग्देवी का प्रसाद (अनुग्रह) सर्वोत्कृष्ट है।।26।।

अमृत की तरह सरस ऐसी महाकवियों की वाणी भाग्यवानों के मुख को - घना जो आनन्दप्रवाह उससे उत्पन्न हुए आंसुओं से भीगे नेत्रों वाला, लीला (क्रीडा) के साथ जो भ्रुकुटियों का मरोडना उससे ऊपर की तरफ सिकुड गया है ललाटस्थल जिसमें। तथा उत्पन्न हुए रोमाञ्च से युक्त हैं कपोल जिसमें ऐसा बना देती है।।27।।

मन्दर पर्वत से मथा गया जो क्षीरसागर उसकी लहरों के समान सुन्दर है उठान जिनका। श्यामाकामुक (रात्रिपति चन्द्रमा) का खण्ड है मण्डन (मस्तकभूषण) जिनका ऐसे श्री शंकर के कथा समूह से गर्भित वाणियाँ, भाग्यवानों के हृदय में अमृत का झरना बनती हैं। गले में मोती के हार बनती हैं।।28।।

भाग्यवान् कविवरों के मुख में उनकी रचना के बहाने - हृदय-कमल में निवास करने वाले, तथा उन कवियों की रचना सुनकर प्रसन्नता से मस्तक हलानेवाले चण्डीपति (श्रीशंकर) की क्या ये मस्तक पर रहने वाले सर्पों के फण में स्थित रत्नों की कान्तियाँ हैं? किं वा, पुष्पमाला के पराग की शिखायें हैं? किं वा मस्तक के चन्द्रमा की किरणें हैं, किं वा गङ्गा की लहरें हैं [कवियों की यह सूक्तियाँ हैं] यह तो एक बहाना (मिष) मात्र है। किन्तु क्या ये कवियों के हृदय मे रहने वाले श्रीशंकर के मुकुट के सर्पों के रत्नों की कान्ति, पुष्पमाला के पराग, चन्द्रकिरणें, किं वा गङ्गा की तरङ्गें हैं]।।29।।

अमृत के सहोदर भ्राता, मधुर श्रीशम्भु के स्तुति व्यापार में जो आनन्द है,

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वह आनन्द - अत्यन्त आनन्द को करने वाले, जिसने अमृतमय कर (किरण) धारण कर रखे हैं ऐसे पूर्णिमा चन्द्र में भी नहीं है। और वह आनन्द जोरदार प्रवाह वाले, स्वभाव से ठण्ढे, ऐसे स्वर्गङ्गा के झराव में भी नहीं है। तथा वह आनन्द गाढ प्रेम करने वाले, कामपीडा को हरने वाले, रक्तिमादि गुणयुक्त - कान्ता (सुन्दरी स्त्री) के अधरोष्ठ में भी नहीं है।।30।।

तेजस्वी, सुन्दर, शंकर के प्रसाद (अनुग्रह) से निर्मल, षोडश संस्कारों से शुद्ध। नाम, शिवभक्ति तथा लोगों में प्रसिद्धि, इनके कारण उत्तम है बरताव जिसका। अच्छे मार्ग से उपार्जित धनों से धारण किये हैं गहने जिसने। उत्तम आचार में स्थित। गाम्भीर्य गुणवान्। विरस नहीं अर्थात् सरस। अच्छी जीविका वाला। ऐसा असाधारण सत्कवि उस (सत्कवि) की सूक्ति परिपाटी (काव्यरचना) के समान, भूमि में किस के द्वारा प्रशंसनीय नहीं? अपि तु सबही के द्वारा प्रशंसनीय है।।

कवि की काव्य रचना भी कैसी है कि - ओजस्वी (आजोगुणयुक्त), मधुर (माधुर्यगुणयुक्त), प्रसादगुण से निर्मल, संस्कार (लोकचरित-काव्यपरिशीलनादि जनित अभ्यास) से विशुद्ध, अभिधा भक्ति (लक्षणा) व्यक्ति (व्यञ्जना नामक वृत्ति) - इनसे विशिष्ट (संयुक्त) हैं रीतियाँ (वैदर्भी पाञ्चाली आदि काव्य शैली) जिसकी। उचित जो अर्थ (वाच्य-लक्ष्य-व्यङ्ग्य से युक्त) उनके द्वारा धारण किये हैं उपमा-रूपकादि अलंकार जिसने। वृत्तों (वसन्ततिलकादि छन्दों) में स्थित। परिपाकवान् (रचनाप्रौढि से युक्त)। सरस (शृङ्गार-वीरादिरसों से युक्त), सत् (अच्छी) हैं वृत्ति (कैशिकी आदि साहित्य प्रसिद्ध) जिसमें। अप्राकृत (असाधारण अथवा प्राकृतभाषा रूप नहीं) ऐसा सूक्तिक्रम (काव्यगुम्फ) किसके द्वारा प्रशंसनीय नहीं?।।31।।

विरले भाग्यवानों के पूर्वजन्म के पुण्यों से कल्पलता की तरह अभीष्ट देने वाली भगवती वाग्देवी यदि प्राप्त हो गई हो, किन्तु वह अपने और दूसरों को अलौकिक आनन्द देने रूप उपकार में प्रौढ हो वह दुर्लभ है। वही (वाग्देवी), तत्त्वज्ञों के उपदेशों पर अवज्ञा (अनादर) रखने वाले, तथा धन की दुराशा से मारे गये ऐसे अज्ञों के द्वारा यदि शिवशक्तिपराङ्मुख दुष्ट लोगरूपी कीचड में फैंक दी हो ते वह शाप और पाप के सिवाय क्या फल दे सकती है?।।32।।

यह मुझ को उचित स्थान में ले जायेगा। यों विश्वास के साथ अध्यास करती हुई। शब्द और अर्थ के अलंकारों से भव्यपद (सुबन्त-तिङन्त) वाली। ... आकृतिवाली। ऐसी गौ विलास के कारण मस्ती से चलने वाली। तथा सुकुमार

Pandit Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

(वाणी), अकारण बैरी कुकवियों के द्वारा मदसे ध्यान की गई (मद के कारण दुर्व्यवहार में लाई गई)। धन की दुराशा से व्याध (धीवरों) के समान गर्विष्ठ नृपतिरूप अन्धे कुए में डाल दी गई। तो वह गौ (वाणी) सून्ति (सुन्दर काव्योक्ति) के ब्याज से ऊँचे और करुण स्वर से रोती है। अर्थात् वह सूक्ति नहीं, वह उस (गौ - वाणी) का करुण क्रन्दन है।

गौ का दूसरा अर्थ निकलता है 'गाय'। तब अर्थ हुआ कि - 'यह मेरी रक्षा करेगा' यों विश्वास के साथ खेलती हुई सुन्दर चरण वाली। विलास से धीरे धीरे चलने वाली। कुलीन आकार वाली गौ। निष्कारण बैरी जंगली चांडालों ने यदि अन्धे कुए में डाल दी हो तो ऊँचे स्वर से करुण क्रन्दन (रोने) के सिवाय और क्या कर सकती है।।33।।

वागदेवी को धन दी दुराशा में पडे लोगों ने - कृपणता के कारण व्यर्थ ही रोष दिखाते हुए निर्दय नृपतियों (राजाओं) की जो स्तुति उसमें जो लज्जा, उसकी पात्र बना दी हो तो, वह प्रबल हृदय ज्वर से पीडित होकर ताते निसाँसे लेती है। जमीन कुचरती है। वाणी के स्वामी की उस सूक्ति से अत्यन्त प्रिय की भी स्तुति करना नहीं चाहती। केवल उदास होकर अपनी हथेली पर अपने कपोल स्थल को रखकर विषण्ण बैठ जाती है। 'इससे शंभु की स्तुति के द्वारा ही अपनी वाणी की सफलता कवियों को करना उचित है।' यह सूचित किया जाता है।।34

धन लोभ से मारी गई है बुद्धि जिनकी एसे लोगों की वागदेवी अस्थान में (शिवभक्ति से पराङ्मुख लोगों की स्तुति में) समाप्त कर दी हो तो वह लोगों के धिक्कार (निन्दा) , बडा भारी पराजय (हार), मानसिक संताप और बडे भारी पाप के लिये हो जाती है। किन्तु वही वाणी स्थान में (अर्थात् शंकर और उनके भक्तों की स्तुति में) लगाई हो तो वही कीर्ति , कल्याण, मन को आनन्द देना, दूसरों का उपकार तथा अन्त में मोक्ष प्राप्ति के लिये हो जाती है।।35।।

यह मेरी वाणियें कालिदासादि पूर्व कवियों के बनाये विविध ग्रन्थों के अमृतास्वादनरूप क्रीडा से नटखट (ढीठ) हुए सहृदयों के मन को कैसे हरण कर सकती हैं। किन्तु मेरे सदृश जो कतिपय सांसारिक क्लेशों से सताये हुए हैं और जिनको श्रीशंकर की स्तुति के पदों के कथन में होंस है, उनको इस भूमि में अपने आप स्पृहणीय (वाञ्छनीय) हो जायेगी।।36।।

पशुपतिसेवा कुञ्ज मञ्जुनाथ कर कञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज यह पञ्चम पशुपतिशरण।।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हराष्टकं षष्ठं स्तोत्रम्

(६)

संपूर्ण देवताओं में श्रेष्ठ जो ब्रह्मा विष्णु इन्द्रादि, उनके मुकुट के रत्नकिरणों से द्विगुणीभूत हो गई हैं चरणकमलोंकी नखकिरण जिनकी, तथा जिनके विशाल तीन नेत्रों में घर करने वाली जो तेज त्रयी (सूर्य-चन्द्र-वह्न्यात्मक) उसके द्वारा दूर कर दिया है तीनों जगत् का घनीभूत अन्धकार जिननें, एसे भगवान् हर (शंकर) की जय। (अर्थात् वह सर्वोत्कृष्ट हैं)।।1।।

देवताओं की बावडी (अर्थात् देवनदी, स्वर्गङ्गा) के जल सींचने से बढे हुए प्रचण्ड नेत्राग्नि से दूर कर दी है तीव्र ताप (सांसारिक आध्यात्मिकादि त्रिविध ताप) की पीडा जिसने। मनुष्य के विचारों से भी बाहर जो अलौकिक चरित्र उनसे उज्ज्वल। अत एव देदीप्यमान जो। असाधारण ऐश्वर्य का प्रभाव (प्रभुता - महिमा), उससे किया है त्रिलोकी का उपकार जिनने, ऐसे हर सर्वोत्कृष्ट हैं। ऐश्वर्य का अलौकि प्रभाव देखिये कि - जल सींचने से अग्नि बुझती है किन्तु यहाँ गङ्गाजल से नेत्राग्नि प्रज्वलित होती है। तथा अग्नि से ताप होता है। किन्तु यहाँ भगवान् की नेत्राग्नि त्रिविध तापों से दूर करती है। ऐसे ऐसे ही अचिन्त्य चरित्र हैं।।2।।

पार्वती की भुजलता से आलिङ्गित है, पिये हुए विष की कालिमा से युक्त सुन्दर कण्ठस्थल जिनका। अत एव वह श्याम कण्ठ ऐसा मालूम होता है कि बिजली से लपटा हुआ जैसे जलपूर्ण मेघ हो। इस ही भ्रम से मस्त हुआ स्वामिकार्तिक का मयूर नृत्यरूपी उपहार भेंट करता है उससे प्रसन्न हुए हर सर्वोत्कृष्ट हैं।।3।।

निरन्तर उछलती हुई विषाग्नि की ज्वाला माला जहाँ जटा की तरह चारों तरफ फैली हैं। ऐसे फणों से भयंकर यमराज के नागपाश से बचाने में समर्थ। उदार दयारसप्रवाह से सिंचा हुआ है हृदय जिनका। शरणागतों को विपत्तिरूपी समुद्र से पार उतारने में कर्णधार (केवट) ऐसे हर सर्वोत्कृष्ट है।।4।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मथन के समय समुद्र से निकले हुए विष के पान के कारण अभय जिनको मिला, अत एव आनन्द भर से पूर्ण देव और दानवों के समूह से स्तुति किए गए। पातालतल से जलता हुआ जो लिङ्ग (अग्नि की लाट, लौ), उसके प्रकट प्रभाव से ब्रह्मा और विष्णु दोनों को जिनने मोहित कर दिया ऐसे हर सर्वोत्कृष्ट हैं। 'तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः' यह महिम्नः स्तोत्र यहाँ मिलता है।।5।।

अनुपम पराक्रम से उलझते हुए प्रचण्ड गर्व रूपी ज्वर से देदीप्यमान चपल कामदेव के दहन से दूर कर दी है संभोग की इच्छा जिनने। रावण की भुजमण्डली से हला दिया जो वैश्रवणाद्रि (कैलाश) उससे डरी हुई पार्वती ने बलात्कार से ग्रहण किया है कण्ठस्थल जिनका ऐसे हर सर्वोत्कृष्ट हैं। अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं., महिम्नःस्तोत्र ।।6।।

अपरिमित, उछलते हुए मद से उत्कट (प्रचण्ड) अन्धकाऽसुर की हिंसा और सान्त्वना से प्रसिद्ध है निग्रह और अनुग्रह की शक्ति जिनकी। त्रिभुवन को भय पैदा करने वाला जो त्रिपुरासुर रूपी घोर दावानल, उसको खेल के साथ बुझाने में प्रलय - महामेघ के समान श्रीहर सर्वोत्कृष्ट हैं।।7।।

कायिक-वाचिक-मानसिक त्रिविध तापरूपी वन के काटनें में वज्र। सन्मति रूपी माधवी लता के विकसाने में वसन्त। कृपारूपी अमृत के समुद्र। संसाररूपी महासमुद्र की नौका। विपत्तिरूपी तृणों को उडाने में वायु। प्रेमी भक्तों के मनचाहे अभिलाषों को पूरण करने में चिन्तामणि। समस्त भुवनों (240 संख्यक) की उत्पत्ति और विनाशरूपी क्रीडा को करने वाले श्री हर का जय हो (वह सर्वोत्कृष्ट है)।।8।।

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज षष्ठ हुआ शिवचरण धृत।।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सेवाभिनन्दनं सप्तमं स्तोत्रम्

(७)

❀❀❀

प्रातःकाल की निद्रा की तरह, बाल्यावस्था की तरह, नव विवाहिता स्त्री की लज्जा से चौंकी हुई दृष्टि की तरह, श्रीगङ्गा की तरह, भगवान् शंकर की कथा की तरह, कविश्रेष्ठों की वाणी आपको निर्वृति (आत्यन्तिक दुःखनिवृत्ति, चैन) दे।।1।।

अलौकिक आनन्द देने वाला, मन को प्रसन्न करने वाला, अपनी आत्मा का अनुभव ही साक्षी जिसमें ऐसा, सत् चित् आनन्द घन ऐसा श्रीशंकर का तेज-सुकवि की वाणी के रहस्य की तरह आपके हृदय में प्रकाशित हो।।2।।

सब ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति करने वाले किन्तु स्वयम् अभव (अनादि), भैरव (भयङ्कर) कहलाने वाले भी वे शिव आपके भय (इस लोक और परलोक के) दूर करें। जिनके हिमालय रूपी धनुष से च्युत (निकले), अग्निज्वालाओं से भयंकर अच्युत (विष्णु) रूपी बाण ने, पुरों को (त्रिपुरासुर को) अपुर अर्थात् पुर (नगर) का नाम निशान नहीं रखा। यहाँ च्युत-अच्युत, शिखायुक्त और विशिख, भैरव और भय दूर करनेवाला, पुर और अपुर, यह विरोधालंकार है।।3।।

त्रिलोकी के नाथ वह भगवान् शंकर , अमृत को बरसाने वाली अपनी वाणी से आपका संताप दूर करें। जिनके वृष (वाहनरूपी वृषभ) पर बैठने के समय अपनी पीठ पर चरण रखने को इन्द्र भी अनुग्रह (असाधारण दया) मानता है। 'असंपदस्तरस्य वृषेण गच्छतः 'कुमारसंभव'।।4।।

जिनके चरणों को प्रबल शासन (आज्ञा) वाला इन्द्र भी सदा सावधानी से पूजा करता है। वह अनङ्गशासन (कामदेव को भस्म करने वाले) प्रभु श्रीशंकर, प्रसन्नता के कारण सुनिर्मल अपनी दृष्टि के द्वारा हमारी विपत्तियों को नाश करें।।5

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain, Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुन्दरकान्ति से (उपलक्षित, युक्त), तरुण (उगते हुए) सूर्य के समान रक्तवर्ण जटाओं को धारण करने वाले, महातेजस्वी, भक्तों के दुःख-परिश्रमादि को दूर करने वाले। तथा भय पैदा करने वाले हैं नक्कारे जिनमें , ऐसी दैत्यों की कौनसी सेनाओं को नहीं जीत रहे (अपितु सब ही सेनाओं को जीतने वाले) 'सेनानी' स्वामी कार्तिक जिनके पुत्र हैं, वह शम्भु नाशभय रहित (अर्थात् अक्षय) ऐसी श्रियों (लक्ष्मियों) को दें।।6।।

हे शम्भु! आपने मेरे ऊपर कृपाऽमृत से सरस, तथा सर्व जगत् में महित (पूजित), हित करने वाली ऐसी दृष्टि स्थापन की, इसलिये आपका आशय (हृदय) दयादाक्षिण्य आदि गुणों के आधिक्य से युक्त है - इसलिये "संसार में आपका अभेद देखूँ (''संसार को शिवमय देखूँ'' यह दृष्टि मुझको मिल जायेगी, इस आशा से दूर कर दिये हैं मृत्यु और महारोग जिसने, अथवा मृत्युरूपी महारोग जिसने) ऐसी आपकी स्तुति मैनें की।।7।।

मात्सर्य रहित मन वाले, जरा (वृद्धावस्था), रोग तथा मरण की पीडा से डरे हुए मनुष्य, बिना मेघ के ही वर्षा के समान (अर्थात् बिना यत्न के, केवल दया से प्राप्तव्य) चन्द्र को मुकुट में रखने वाले (श्री शिव) की स्तुति को छोडकर रसायन (जरा-मृत्यु को दूर करने वाली औषधि) के लिए क्यों दौडते हैं।।8।।

सूक्ष्म (छोटी सी) गारुत्मत मणि (विष दूर करने वाली मणि) जैसे भयंकर विष को कणमात्र भी अग्नि बहुत ढेर तृण को। बच्चा भी सिंह गज (हाथी) समूह को। पतला सा भी दीपक समस्त अन्धकार को। थोडा सा भी औषध अत्यन्त उग्र रोग को। जरा सा भी अमृत (रसायन) जरा मृत्यु करने वाले रोग के भय को जैसे दूर कर देता है वैसे शंभु- शंकर की अणु (अति थोडी-एक छन्द, एक पदमात्र भी) स्तुति अनेक जन्मार्जित पाप को क्षणमात्र में दूर कर देती है (युग्मक)।।9 -10।।

महान् (ऊँचे दर्जे का) जो प्रबन्ध (रचना), उसमें गंभीर अर्थात् बुद्धिमानों से ही जानने योग्य है विलास जिसका तथा प्रौढ है वैदर्भ रीति (साहित्य प्रसिद्ध) की रचना का परिश्रम जिसमें। ऐसा भाग्यवान् कवि की वाणी का क्रम (परिपाटी से रचना) - सर्वगुणों से योग्य विभु (स्वामी श्रीशंकर) को प्राप्त करके अक्षय (पूर्ण) सौभाग्य (भाग्यवत्ता- भाग्यशाली) को धारण करता है। जैसे सुन्दर कामिनी का व्यवहार सुगुण (गुणयुक्त) स्वामी को प्राप्त करके सौभाग्य पाता है, वैसे धन्य कवि का वैदर्भमार्ग का उन्नत प्रबन्ध गुणसागर श्री परमेश्वर को प्राप्त

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करके अवश्य ही सौभाग्य को प्राप्त करता है।।11।।

सदाचार के बिना जैसे कुलनारी। कार्याऽकार्य के विचार के बिना जैसे पण्डिताई। (अच्छे अर्थबोध के बिना जैसे श्रुति (शास्त्र का श्रवण)। पृथ्वीपति (राजा) के बिना जैसे पृथ्वी । कमल बान्धव (सूर्य के बिना जैसे आकाश)। चन्द्रमा के बिना जैस रात्रि। चतुर लोगों के बिना जैसे सभा। नम्रता के बिना जैसे वैभव। कृपा की परिपाक (अर्थात् दीनजनों का उपकार) के बिना बुद्धि। सुपुत्र के बिना जैसे घर की मर्यादा। ऐसे हरिणाङ्कशेखर (चन्द्रशेखर - श्रीशंकर) की स्तुति के उपयोग के बिना वाणी भी शोाचनीय है।। 12-13 -14।।

श्री लक्ष्मी देवी भी मेरे लिए मनोरम (अर्थात् आश्वासजनक) नहीं पृथिवी देवी भी मुझ को आश्वास (ढाढस) बँधाने के लिए समर्थ नहीं। भगवान् श्रीशंकर में परायण, तथा उन्हीं में रस (एकता भाव) को अनुमान करने वाली यह एक मेरी वाणी ही जन्ममरण रूपी पीडा को दूर करने में समर्थ है।।15।।

जो अचेतन (जड) है, कु (भूमि) में स्थिति ही जिसको प्रिय है। नाना तरह की जो उप (समीप में) आधि (वन के हाथी, दुष्ट जानवर, आदि से आन्तरिक पीडा) उससे क्षतिग्रस्त (टूटा फूटा) है मध्यभाग जिनका। किन्तु शुद्ध है मानस नाम का सरोवर जिसकी, ऐसा यह गिरि (कैलाश)। अपने शाखापर्वतों के द्वारा जो श्रेष्ठ मुनियों से आश्रित किया जाता है, (इसमें तपस्या करते हैं), यह श्रीगौरीशंकर (श्रीशंकर) के आश्रय रूपी कल्पवृक्ष का फलोद्गम है। (अचेतन और नानाविध कुस्थिति में रहने पर भी श्रीशंकर का आश्रय होने के कारण यह मुनीन्द्रों का तपस्या स्थान है, यह आशय है) यहाँ श्लेष से दूसरा अर्थ निकलता है - जो पुरुष अचेतन (मन्दबुद्धि) है। कुस्थिति में रहना ही जिसको प्रिय है। नाना तरह के जो उपाधिशत (शत्रु-रोग-आदि के सैकडों उपद्रव - कष्ट) उनसे क्षीण हो गया है हृदय जिसका। ऐसा होने पर भी जो शंकर का आश्रय लेता है वह शुद्धमानस (मन वाला होने के कारण श्रेष्ठ मुनियों से भी (पादतले) चरणों में सेवा किया जाता है अर्थात् मुनीन्द्र जिसके चरणों की सेवा करते हैं। यह गौरीश्वर का आश्रय लेना रूपी कल्पवृक्ष का एक फलोदय है।।1।।

जो फणी (सर्प) स्वभाव से ही राजमार्ग आदि अच्छे रास्तों में निन्दनीय स्थितिवाला है। जो मलिन (काला) और कुटिल गति वाला है। वह भी 'कुण्डली' कुण्डल धारणयोग्य, मणियुक्त मस्तक वाला तथा महान् भुजङ्ग अर्थात् फणियों में राजा। और बडे 'भोग' (सर्पशरीर) वाला गिना जाता है, यह शंकराश्रयरूपी कल्पवृक्ष का फलोद्गम है। यहाँ भी - "जो पुरुष स्वभाव से ही

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सन्मार्ग में निन्दनीय स्थिति वाला, मलिन तथा सज्जनों की अपेक्षा टेढी गतिवाला है, वह भी कुण्डली (कुण्डलधारी), मणिमुकुट से भूषित, महाभुजङ्ग (अर्थात् महाकामी) तथा नानाभोगों का सेवन करने वाला है। यह गौरीश्वर के आश्रयरूपी कल्प वृक्ष का फलोद्गम है" यह श्लेष से अर्थ निकलता है।।2।।

जो सदा ही जड (जल [श्लेष में 'ड - ल' एक गिने जाते हैं]) संगम के योग्य है [चन्द्रमा समुद्र से निकला है] 'कलामय' (एक कलात्मक) होने के कारण स्वभाव से ही तुच्छ (नाचीज), ऐसा 'शशभृत्' (चन्द्रमा) भी। दूर कर दिया है 'दोषा' (रात्रि) में उदय जिसने ऐसा। सुधा (अमृत) मय, कलंकरहित, [शिवमस्तक स्थित एककलात्मक चन्द्रमा में कलङ्क नहीं], तथा उज्ज्वल शरीर को धारण करता है। यह गौरीश्वर के आश्रयरूपी कल्पवृक्ष का फलोद्गम है। यहाँ भी जो पुरुष जड (मूर्ख) पुरुषों के संगम योग्य है। स्वभाव से तुच्छ (नीच प्रकृति), कलामय (शिल्प आदि से जीवन करने वाला) है, वह भी कलङ्क (पातक आदि अथवा -अपवाद- निन्दा) रहित, अमृतमय (अमृतमय की तरह निर्दोष) समुज्ज्वल शरीर को धारण करता है। यह गौरीश्वर के आश्रय रूप कल्पवृक्ष का फलोद्गम है। इस (गौरीश्वर के आश्रय) को जिसका उत्तरकाल (आगे का समय) हितकारी है, ऐसा कौनसा चेतनावान् (ज्ञानी) प्राप्त करने को यत्न नही करेगा? अपि तु प्रत्येक ज्ञानी यत्न करेगा। (चार श्लोकों का एकान्वय)।।16, 17, 18, 19।।

अत्यन्त दूर इस भूमिलोक के मार्ग में श्रीशंकर के चरण कमल की भावनापूर्वक कहा गया 'नमः शिवाय' यह ध्वनि - घोर गरमी के संताप से जलता हुआ जो महान् मरु (मारवाड), उसमें घूमते हुओं के खेद को दूर करने वाले मार्ग के वृक्ष की अपेक्षा भी - जन्म - जरा - मरणादि से दुःखित मेरे हृदय में सफल - अमन्द - आनन्दामृत के रसप्रवाह को झरता हुआ चमत्कार करता है। तथा यमुना के जलप्रवाह से मिला हुआ जो गङ्गा का जलप्रवाह उसमें स्नान करने की अपेक्षा भी अमन्द आनन्दामृत के रसप्रवाह को झरता हुआ चमत्कार करता है। वाणी का जो सूक्ति चातुर्य, (सुभाषितपटुता) उससे पूर्ण, प्रसादगुणयुक्त, गंभीर , कवि की रचना की अपेक्षा भी अमन्द आनन्दामृत......। कस्तूरी और घनी केसर से लिपे है स्तन जिसके ऐसी सुन्दरी के आलिङ्गनविलास की अपेक्षा भी भवदुःखित मेरे हृदय में अमन्द आनन्दामृत के रसप्रवाह को बरसाता हुआ चमत्कार करता है। (तीनों का एक अन्वय)।। 20, 21, 22।।

मैं अपने इस जीवन को जीवन अर्थात् जलप्रवाह की तरह चंचल जानता हुआ। अथवा जीवन गङ्गाजल को ही जीवन अर्थात् जीव धारण का उपाय जानता

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हुआ। पार्थिव अर्थात् मृत्तिका से बनाये शिवलिङ्ग को ही पार्थिव अर्थात् वरदानी राजा मानता हुआ। वै (निश्चय से) भव (इस संसार) को वैभव (विभु संबन्धी अर्थात् शिवमय) विचार करता हुआ मैं शं (कल्याण) करने वाले श्रीशंकर का आश्रय करूंगा।।23।।

अधम भी यह शरीर जो केवल शंकर के आराधन का साधन (उपकरण) है तो श्रेष्ठ है। और शंकर की सेवा में विघ्न डालने वालनी, अयुक्ति अर्थात् युक्ति के बिना, शंकर के अनुग्रह से अचानक आ पडने वाली मुक्ति (मोक्ष) भी श्रेष्ठ नहीं, जिसमें शरीर न रहने के कारण शिव की पूजा, अर्चना नहीं हो सकती।।24।।

श्री शंकर के मन्दिर में दर्शन – पूजन के लिए जाने में जिनका उपयोग स्पष्ट प्रतीत हो रहा है, अत एव महान् गुण वाले दोनों चरण (पांव) कहाँ और जिसमें स्मरारि (कामदेव के बैरी, श्रीशंकर) की सेवासुखरूपी सर्व संपत्तियों का मार्ग (संबन्ध) नही वह मोक्ष कहाँ ? अर्थात् इन दोनों मे बहुत तारतम्य है। मोक्ष की अपेक्षा यह शरीर अधिक उपयोग वाला है। आगे भी यों ही सर्वत्र अन्वय होगा। श्रीशंकर की प्रतिमा पर अंजन लगाना, उबटन लगाना, चन्दन का लेपन करना, इत्यादि श्रीशंकर की पूजा करने मे तत्पर दोनों हाथ कहाँ और सेवासुखरूपी सर्वसपंत्तियों से दूर मोक्ष कहाँ? प्रतिदिन प्रभु श्रीशंकर के नामग्रहणरूपी महोत्सव मे लगी यह जिह्वा कहाँ, और मोक्ष कहाँ? श्री पार्वती के स्वामी श्रीशंकर के चरण कमल की धूलिपङ्क्ति से शोभित यह मस्तक कहाँ, और मोक्ष कहाँ ? श्रीशंकर के स्वरूप – सौन्दर्य के देखने की अभिलाषा जिससे पूर्ण होती है ऐसी दृष्टि कहाँ, और मोक्ष कहाँ? जिससे क़ंदर्प (कामदेव) के बैरी श्रीशंकर का विचित्र चरित्र सुना जाता है अत एव परम पवित्र ऐसी श्रुति (कान) कहाँ, और मोक्ष कहाँ? दूर कर दिए हैं अनेक संकल्प विकल्पों (मानसिक चिन्ताओं) के उपद्रव जिसने ऐसा, त्रिलोचन (श्रीशंकर) के ध्यान में लगा मन कहाँ और मोक्ष कहाँ? यह जानते हुए भी, मानसिक व्याधियों को दूर करने वाली समाधि (अष्टाङ्ग योग के द्वारा आत्मा और मन को एक कर लेना) का आश्रय करने वाले भी, तथा संसार के संन्ताप (भय) से रहित भी, श्रेष्ठ बुद्धि वाले साधक, प्रभु के प्रणाम – स्तुति (कीर्तन) – ध्यान – और पूजा में जिसका उपयोग स्पष्ट प्रतीत हो रहा है ऐसे इस शरीर को बहुत मानते हैं (इसका आदर करते हैं)।।25, 26, 27, 28, 29।।

अङ्ग (हे) हे अभागे ! अनङ्ग (कामदेव) का भङ्ग (नाश) करने वाले श्रीशंकर के प्रसादन (आराधन) से अन्य किसको मङ्गलकारी मानते हो? जिसके

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लिये धन को नष्ट करने वाले - अतिकठिन - और अत्यन्त प्रयास से होने वाले यज्ञों में तुम पचते हो, (खिन्न होते हो)। बर्फ की तरह स्वच्छ (निर्मल) ये देवताओं की संपत्तियाँ प्रभु श्रीशंकर की प्रसन्नता मात्र से जिनको मिली हुई हैं उन देवताओं की केवल तृप्तिमात्र की इच्छा से दया के पात्र प्राणियों की हिंसा का (यज्ञ में) पातक करते हो, खजिनकी प्रसन्नतामात्र से देवताओं को भी अणिमादिक सिद्धियाँ मिली हैं, उनही का आराधन क्यों नही करते, दान लेना, पढाना, यज्ञ कराना आदि कामों से धन पैदा करने के लिए प्रयत्नशील (खिन्न) हुए तुम्हारी आयु (उम्र) प्रतिक्षण वायु की तरह जा रही है। और यज्ञ के लिए यह तुम्हारी चेष्टा वास्तव में तुम्हारा अभिप्रेत (चाहे हुए - शंकराराधन) को नष्ट कर रही है ख्यज्ञ में लगे रहने के कारण शंकराराधन से वञ्चित कर रही है,। इसलिये अपने आप- प्रार्थित (सबकी चाही हुई) संपत्तियों के स्थान, कदर्थना (अनादर) से रहित, पाप से भी दीन (गरीब-अधम) नहीं। आनन्दोत्पत्ति का कारण, स्वयंभू (अनादि-श्रीशंकर) के चरणकमल के सेवन रूपी उत्सव (आनन्द) को सेवन करो (चरणे सेवा रूपी आनन्द का उपभोग करो) चार श्लोकों का एक अन्वय ।।30, 31, 32, 33।।

बिना प्रयास के ही कोमल (अथवा , क्लेश रहित और कोमल), अलंघनीय (जिनका निवारण नहीं किया जा सके) ऐसे जो यमदूत उनके हुंकारो का भङ्ग (नाश) करने वाला (यमदूतों से रक्षा करने वाला), पापरूपी काष्ठों का जलाने वाला। जन्म - जरा - मरणादि महारोगों को दूर करने वाले। ऐसे श्रीशंकर के चरण कमल के प्रतिदिन सेवा के सुख को कौनसा ऐसा बुद्धिमान् होगा जो आदर न करेगा?।।34।।

रोमन्थ (चर्वितचर्वण -'जुगाली') के कारण अलस ऐसे सैंकडों मृगों के द्वारा आश्रित। श्री गङ्गा की ठंडी फुँहारो से शीतल, जिनमें ऊँची जाति के पल और कन्द उगते हैं, अत एव सुन्दर ऐसी हिमालय की कन्दराओं मे स्थान बनाने वाले। धन-पुत्रादि का संबन्धरूपी बन्धन को काटकर बुद्धिपूर्वक समाधि (आत्मा और मन की एकता) को लगाते हुए तथा चित्त की एकाग्रता को धन समझने वाले भाग्यवान् जन। जिनसे अनन्त संकल्पविकल्परूप जाल दूर हो जाता है, परम ज्योतिः (तेज) स्वरूप ऐसे श्रीशंकर को अपने अन्तः करण में देखते हैं।।35, 36।।

राजमहलों मे द्वाररक्षकों के मुख हुंकारों से दीनबुद्धि हुए (पहले), किन्तु वे अब भाग्यवान् हैं जो वैराग्य के कारण वशीकृत चित्त हुए उन्नत मन वाले (बुद्धिमान्) जनों से स्थित गङ्गातट की नवीन पर्णशालाओं में भगवान् चन्द्रशेखर

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

का भजन करते हैं।।37।।

चन्द्रखण्ड है मुकुट में जिनके ऐसे श्रीशंकर की सेवा में होंस (अभिलाष) रखने वाले सज्जन। गङ्गा की तट भूमि में लक्ष्मी के लेशमात्र से उलझते हुए महान् मस्ती के गर्व से युक्त मूर्ख राजाओं के तिरस्काररूप उपद्रवों को स्मरण करते हैं।।38।।

यह 'मधुमुख विष' (मुख (आदि) में मधुर-किन्तु अन्त मे विष) जीवन को तत्क्षण हरण कर लेता है। यह वह अपथ्य भोजन है जो परिपाक मे शरीर को पीडा पहुँचाता है। यह तृणसमूह से ढँका हुआ वह खड्डा है जो क्षण में नीचे गिरा देता है। वो क्या है कि जो मलिन और भयंकर कामों से इकट्ठा किया हुआ धन। इसलिये थोडे से धन से उत्पन्न हुआ महान् गर्व जिनको ऐसे राजाओं के प्रणय (याचना) से उत्पन्न हुए तिरस्कार के आडम्बर (उफान) को छोडकर। गङ्गा के तट में रहने के अभिलाषी पुण्यवान् लोग निशापति (चन्द्रमा) है चूडामणि जिनका ऐसे श्रीशंकर का भजन करते हैं।।39-40।।

निःसार इन बहुत से कठिन विषय भोगों से क्या फल? साररहित इन लक्ष्मी के विकारों से भी क्या प्रयोजन। इस ही तरह जिनसे अन्त मे नीचे गिरना पडता है ऐसे स्वर्ग सुखभोगों की इच्छाओं से भी क्या? मैं तो इस संसार मं सांसारिक भयरूपी आपत्तियों से डरे हुए मनुष्यों के लिये भगवान् श्रीशंकर में भक्ति को छोडकर दूसरा प्रशंसनीय (उत्तम) चाहने योग्य वस्तु हो, यह नहीं मानता हूँ।

इस लिये भगवान् चन्द्रशेखर के चरणकमलों की सेवा का जो अभिलाष वही है मानसिक व्यसन (शौक) जिनका ऐसा सज्जन - दूर तक उछलती जो चञ्चल लहरें वही हुए जो सुन्दर हाथ, उनसे दूर कर दिये हैं विपत्ति और संताप जिसने ऐसी श्री गङ्गा के जल में गोता लगाना और बाहर उठना, इनमें अपनी श्रद्धा (भक्ति) के बन्धन को लगाते हैं, (श्रद्धा को दृढता से लगाते हैं)।। (युग्मक) ।।41-42।।

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथ कर कञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज यह सप्तम शिवचरणधृत।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शरणाश्रयणम्, अष्टमं स्तोत्रम्

(८)

❀❀❀

कल्याण (सुवर्ण) से युक्त [संस्कृत कल्याण शब्द का अर्थ सुवर्ण भी है।] सुरगिरि (सुमेरु पर्वत) के पाद अर्थात् प्रत्यन्तपर्वत (आसपास के पहाड) जिस तरह भुवनों (लोकों) को पवित्र और भूषित करते हैं। लक्ष्मी से आश्रित श्रीहरि के पाद अर्थात् वामनावतार- समय के पादन्यास जिस तरह भुवनों को पवित्र और मण्डित करते हैं। दीप्ति (कान्ति) युक्त सूर्य के पाद (किरण) जिस तरह भुवनों को पवित्र और भूषित करते हैं। इस ही तरह कल्याणयुक्त अर्थात् मङ्गलयुक्त, लक्ष्मी अर्थात् वर्णों (अक्षरों) की शोभा से आश्रित (युक्त), दीप्ति अर्थात् 'कान्ति' नामक अर्थ गुण से युक्त, भगवान् श्रीशम्भु के वर्णन विषयक श्लोक के पाद अर्थात् चारों श्लोक के जिन चारों चरणों को कानों से सुनकर, नेत्रों के द्वारा पढकर, भुवन के संपूर्ण भक्तगण पवित्र हो जाते हैं, तथा अपने को बडा भाग्यवान् मानते हैं।।1।।

गङ्गा के तरङ्ग - भङ्ग अर्थात् लहर की लपेटों की तरह सुन्दर और बे रोक टोक गति वाली श्रीशंकर की स्तुति सर्वोत्कृष्ट हैं, जो पङ्क (कीचड, दलदल) युक्त मलिनता से दूर करती हैं और नित्य निर्मल ऐसे कल्याण से युक्त करती हैं।।2।।

श्रीशम्भु की स्तुति, ध्यान और पूजन सर्वोत्कृष्ट है जो संसार रूपी भयंकर दावालन से जलते हुए वाणी, चित्त और शरीर इन को नीरोग (पीडा रहित) करने में महौषधिरूप हैं। और लक्ष्मी, तथा इस लोक और परलोक की भोगपरम्परा, तथा मोक्ष इन को अपने वश करने के लिए जादू के समान हैं।।3।।

भगवान् श्रीशंकर की निरङ्कुश (बेरोकटोक) बेमुलाहिजा, वह स्वतन्त्रता धन्य (सर्वोत्कृष्ट) है, जिसके द्वारा दोषाकर (दोषों का दुर्गुणों का खजाना - वास्तव मे दोषा (रात्रि) का करने वला चन्द्र को मस्तक पर स्थापन किया, जिस

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

(स्वतन्त्रता) के द्वारा ब्रह्मा का मस्तकच्छेदन किया, [ब्रह्मा के अपराध को देखकर बाँये हाथ की कनिष्ठा अङ्गुलि से मस्तक अलग कर दिया, यह पौराणिक कथा है] जिस स्वतन्त्रता से कुबेर के साथ मित्रता की। जिस स्वतन्त्रता से त्रिपुरासुर, यम तथा कमदेव इनको भस्म कर दिया। और जिस स्वतन्त्रता से दशों दिशाओं को रावण के वशीभूत कर दिया।

और जिस स्वतन्त्रता से राम (परशुराम) परशु देकर उस परशु रूपी पंखे से उनके शूरता रूपी अग्नि को प्रज्वलित किया। जिस स्वतन्त्रता से इन्द्र की बाहुरूपी अर्गला का प्रतिष्ठम्भ (रुकावट) कर दिया। और जिससे सात दिन तक मरुत्तराजा के (पुर में) सुवर्णवर्षा करी। और जिससे विष्णु को सुदर्शनचक्र समर्पण किया।।

जिस स्वतन्त्रता से श्वेतराजा के कण्ठतट से यमराज के नागपाश को दूर यिा। जिस स्वातन्त्र्य से दक्षयज्ञ - भङ्ग के समय भग के नेत्र हरण कर लिये। जिस स्वातन्त्र्य से उपमन्युनामक ऋषिबालक को दुग्धसमुद्र का दान किया। जिस स्वातन्त्र्य के द्वारा यज्ञ में दीक्षित हुए दक्ष प्रजापति के याज्ञिक कामों मे विघ्न किया।।

जिस स्वतन्त्रता के द्वारा अन्धकासुर को सूली पर चढाया। पूषा (सूर्य) की ठोढी पकड ली तथा जिसके द्वारा अर्जुन पर पाशुपत दान रूपी अनुग्रह (दया) किया। जिसके द्वारा नन्दिकेश्वर को यमराज से अभयदान किया। और जिस स्वतन्त्रता से मुनिपत्नियों का कामुकशैली (लम्पटता) के द्वारा अभिमान - मर्दन किया।।

अधिक क्या कहैं, जिस स्वातन्त्र्य के द्वारा ब्रह्मा - विष्णु और हर के स्वरूप धारण करके क्रीडा करते हुए ही इस त्रिलोकी के उत्पत्ति स्थिति - और संहार करते हैं वह भगवान् ईश्वर (शंकर) का अप्रतिहत (बेरोकटोक) स्वातन्त्र्य सर्वोत्कृष्ट है।।4,5,6,7,8।। (एकान्वय)

अत्यन्त घोर है विष जिसमें ऐसे जिनके कण्ठतट से प्रणाम करते हुए भक्तों के लिये संजीवन औषधिरूप वचन ('मत डरो' इत्यादि) निकलते हैं। जलती हुइ प्रचण्ड अग्नि शिखाओं से भयंकर भी जिनकी दृष्टि अमोघ अमृतरस को बरसाती है, उन प्रभु को मैं शरण जाता हूँ, यह 33 वें श्लोक तक एकान्वय है।

दाढों से विकराल घोर भी जिन (पञ्चमुख 'सकलनाथ') का 'अघोर' नामक मुख शरणागतों के भय दूर करने में चतुर है। (भयानक मुख भी भय दूर

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करता है यह अद्भुत है)। जिनके अङ्ग की भस्मकणिकायें भी आश्रित भक्तों के लिये कपूर - पराग की शोभा को धारण कारती है। (उन विभु को मैं शरण जाता हूँ, यह सर्वत्र अन्वय है)॥

जिनकी भुजाओं में रहने वाले काले भुजङ्ग आश्रय लेने वाले भक्तों को नीलकमल की मालाओं की तरह आनन्दित करते हैं। जिनके अङ्ग में रहने वाला ब्रह्मा का मस्तक ('शिरः कपाल') हवा से भरकर शरणागत भक्तों के लिये निर्मल तथा मङ्गल शङ्ख की शोभा को धारण करता है। (ब्रह्मा का 'शिरःकपाल' हवा के द्वारा मंगल शंख सा बजता है, यह भाव है) उन प्रभु की शरण जाता हूँ।

जिनके अङ्गों में घने रुधिर पङ्क (कीचड़) से लिप्त हाथी का चर्म मङ्गल रेशमी वस्त्र के विलास (शोभा) को धारण कारता है। और जिनके हाथ का कपाल तापत्रय से विकल भक्तों के लिये अमृत से भरे कमण्डलु की लीला को धारण करता है। उनका मैं आश्रय......॥

जिनकी चरण धूलि - स्पर्श से पवित्र हुआ श्मशान, श्रीशैल. (सिद्धगिरि) नैमिषारण्य आदि पवित्रतीर्थों को भी तिरस्कार करता है (मात करता है)। जिनके स्पर्शरूप परिचय से कपालों की माला भाग्यवान् भस्मों के लिये कमल माला के समान - कुशल (आनन्द सुख) करती है। उन विभु को..... ॥

इन्द्र की गोदी में स्थापन किया है मस्तक जिनने, रावण के हाथ किया जा रहा है पंखा जिनको, बैठे हुए ही सुख निद्रा सेवन करने वाले जिन देव को ब्रह्मा शतरुद्रिय आदि मन्त्रों के द्वारा मधुर स्वर से स्तुति करते हैं, उनको मैं आश्रय. .... ॥

जिस काल (मृत्यु) ने इन्द्र-विष्णु - सूर्य- चन्द्र आदि को भी ग्रस लिया है, तिरस्कारपूर्वक जिसने त्रिभुवन का ग्रास कर लिया है, वह काल भी जिसके विशाल भाल में जलते हुए नेत्राग्नि की ज्वाला में पतङ्ग बन गया। उनको मैं... .... ॥

जो प्रभु श्वेत (शुक्ल) पक्ष को अपने नेत्र (वाम) का आश्रय करने वाले चन्द्रमा के उदय का कारण, तथा काल (कृष्ण) पक्ष को चन्द्रमा का क्षयकारक समझ कर, दया के द्वारा विशद हुई अपनी दृष्टि के द्वारा श्वेत नामक राजा पर अनुग्रह करके विपक्षी (शत्रु) का (यम, मृत्यु) को दृष्टि के द्वारा ही शान्त कर देते हैं, उन विभु को......॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पर्वत श्रेष्ठ हिमालय है धनुष जिनका ऐसे जिन प्रभु (शंकर) का संग्राम के नाके पर, मुख के अग्रभाग में (अर्थात् बाण की नोंक पर) प्रज्वलित जो अग्नि उसकी उग्रज्वाला रूपी जिह्वाओं से व्याप्त कर लिया है आकाश जिसने, ऐसा 'चक्री' (चक्रधर श्री विष्णु) 'बाणीकृत' बाण (तीर) बना लिया गया था, तथा मुख के अग्रभाग में अग्नि की तरह लसन् (वर्तमान) जो उग्र जिह्वायें (शेष सहस्त्रमुख का है), उनसे व्याप्त कर लिया है 'अम्बर' अर्थात् युद्धवस्त्र जिसने, ऐसा 'चक्री' अर्थात् वासुकि (शेष) नाग जिनका गुण अर्थात् धनुष की प्रत्यञ्चा (डोरी) बन गया था। अत एव जिनका बाण बना लिया और डोरी बना लिया 'चक्री' (विष्णु तथा वासुकि) के (त्रिपुरासुर के) मरने में साधन (उपकरण, सामान) बन गया था, उन प्रभु की शरण..........॥

जिन प्रभु ने चक्रायुध (अर्थात् चक्रधारी विष्णु) को बाण बना कर नक्षत्रचक्रवर्ती (चन्द्रमा) तथा चक्रों (चक्रवाकों) के मित्र (सूर्य) को रथ के दोनों चक्र (पहिये) बनाकर। स्वर्ग में तथा पाताल में क्रम से पुर की नारियों के हर्ष तथा शोकमय अश्रु (आँसू) पैदा कर दिया उन प्रभु को शरण.... स्वर्ग की पुरनारी अर्थात् देवाङ्गनाओं के हर्षमय अश्रु पैदा किया (क्योंकि उनके शत्रु त्रिपुरासुर को मार दिया), तथा पाताल में पुर अथात् त्रिपुरासुर की नारियों के शोकमय अश्रु पैदा किया (क्योंकि उनके पति को मार दिया), यह तात्पर्य है।

अवहेला (अवज्ञा, तिरस्कार) के साथ भी दिये गये जिस दृष्टिपात को प्राप्त करके कामदेव प्रीति और रति नामकी अपनी भार्याओं को भूल गया। उस दृष्टिपात को प्राप्त करके सफल हुआ है काम (मनोरथ) जिसका ऐसा कौन भक्त हृदय में प्रीति (आनन्द) और रति (सुख) को नहीं धारण करता। अपितु शम्भु के दृष्टिपात को प्राप्त करके सबही को सुख होता है मैं उनही का आश्रय. ....।

कृष्ण अर्थात् काला दिखाई देता है मार्ग जिसका, पृथुल (बडी) ऊष्मा (गर्मी) से भयानक, तथा श्लाघनीय शरीर को धारण करने वाला। स्वीकार किया है वन अर्थात् जल के समीप में वास जिसने (नेत्राग्नि शिरःस्थ गङ्गा के समीप ही रहता है) ऐसा धनञ्जय (अग्नि) व्याधाकृति (शबर रूप धारण करने वाले) जिनके नेत्रगोचर में (नेत्रों के) स्थान बनाने के कारण तेजसे प्रदीप्त हुआ है। यहाँ 'धनञ्जय का दूसरा अर्थ अर्जुन भी निकलता हे। इस पक्ष मे अर्थ होगा - श्रीकृष्ण के द्वारा दिखाया गया है मार्ग ('अब शंकराराधन के बिना विजय नहीं हो सकेगा, यह उपदेश) जिसको, अत्यन्त पराक्रम की है गर्मी जिसकी ऐसे भीष्म पितामह द्वारा प्रशंसनीय शरीर को धारण करने वाला, तथा स्वीकार किया है

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वनान्त (जंगल) में निवास जिसने, तथा अर्जुन के अनुग्रह के लिये शबर रूप को धारण करने वाले जिन शंकर के दृष्टि विषय में चरण रखने वाला 'धनञ्जय' अर्जुन, जिनके अनुग्रह के कारण तेज से प्रदीप्त हो उठा, उन प्रभु को शरण जाता हूँ।।

जिनके मन मे, सुधाकर (चन्द्र), तथा सुधा (अमृत) से भरा कमण्डलु, देवनदी (गङ्गा) का जल ये सब, सृष्टि- पालन- संहारादि के ताप को दूर कर दें, यह बात युक्त ही है। किन्तु जिनके अङ्ग में लगे शव ((मुर्दे) की भस्म, कपालों की माला, हलाहल (विष), अहि(सर्प) तथा दहन (अग्नि) आदि भी सब बडे सुन्दर प्रतीत होते हैं, यह अद्भुत है।

कीडे की सौ पैर वाली मूर्ति यदि कान में चली जाय तो मनुष्यों के प्राण हरण करने वाला रोग पैदा करती देखी जाती है। किन्तु जिनके नेत्र में स्थित सौ पद (पाद, किरण) वाली सूर्य की मूर्ति आश्रय लेने वाले भक्तों का मृत्युभय दूर कर देती हैं, यह आश्चर्य है। सौ पाँव वाली 'गिजाई' (वर्षा में उत्पन्न होने वाला एक कीडा) कान में चले जाने पर भयंकर रोग पैदा करती है किन्तु सौ (पाद -किरण) वाला सूर्य (शंकर के नेत्र में स्थित) भक्तों का मृत्यु भय दूर करता है। (यह तात्पर्य)।। उनकी मैं शरण.......।।

जो दयासागर 'मेरी रक्षा करो' इत्यादि पीडितों का दीनवचन सुनकर, दया की भावना मन में पैदा होते ही, कंपित हुआ जो मस्तक उसमें स्थित श्रीगङ्गा की बूँदों के समूहों से अपनी गोदी में स्थित श्रीपार्वती के स्तनों पर लगे मोतियों के मनियों को द्विगुण कर देता है। उनका मै आश्रय.... ।। दया के कारण श्रीशंकर का मस्तक हल जाता है और गङ्गा की बूँदे नीचे टपक कर पार्वती की मोती की माला को उन बूँदों से दूनी कर देती है। (यह तात्पर्य)।।

अत्यन्त गाढी भक्ति वाले विधुरों (सांसारिक तापों से पीडित भक्तों) का दूर कर दिया है तीव्र दोष (अपने की शंकर से भिन्न समझना) रूपी, अन्धकार जिसने (वचन सुनते ही आत्मा में शिव से अभेद भावना उत्पन्न हो जाती है)। जो अत्यन्त निर्मल है, प्रकाश अर्थात् अत्यन्त स्पष्ट है। विविक्त अर्थात् अलग अलग प्रतीत हो रहे हैं वर्ण अर्थात् अक्षर जिसमें, तथा जो भक्तों को 'कर्णान्तगामि' कानों में जाने वाला। ऐसा जिनका वचन अमृत बरसाता है। तथा जिनका विलोचन (नेत्र, तीनों नेत्र) भी 'उद्गाढभक्ति' (गाढी भक्ति 'विच्छित्ति' (रचना) वाले हैं) (सूर्य, चन्द्र नेत्रों को विचित्र प्रकार की बनावट है)। ऐसी रचना वाले जो विधु-रवि (सूर्य - चन्द्र) उनसे 'अपनीत' दूर कर दिया है 'दोषा' रात्रि का

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अन्धकार जिसने ऐसा है। तथा तृतीय नेत्र कैसा है कि अत्यन्त है 'शुचि' अर्थात् अग्नि का प्रकाश जिसमें (संस्कृत में 'शुचि' अग्नि का नाम है)। तथा जिनका नेत्र विविक्तवर्ण अर्थात् अलग अलग हैं श्वेत - कृष्ण - और लाल रंग जिसमें ऐसा है (नेत्र में यह तीनों रङ्ग होते हैं) । तथा वह बडा होने से कर्णपर्यन्त जाने वाला है। ऐसा श्री शंकर का लोचन भी भक्तों पर अमृत बरसाता है। (ऐसे प्रभु का मैं आश्रय लेता हूँ, आगे से अन्वय।)

जिनके चरण कमल की रज से पवित्र मस्तक वाले, स्थिर और सच्ची है वाणी जिनकी ऐसे जिन (शंकर) के भक्त। अत्यन्त आडम्बर (रोब) के साथ किया जो क्रोध उससे विकट है भ्रुकुटी की छटा जिनकी, ऐसे प्रचण्ड यमदूतों की विभीषिकाओं (डराने के लिए मुखों की भयंकर चेष्टाओं) के पात्र नहीं होते। जिनकी चरण रज को मस्तक पर धारण करने वाले भक्त यमदूतों की विभीषिका कभी नहीं देखते।

जिन (शंकर) का आश्रय लेने वाले भक्त का यश, कवि और वीणा बजाने वाले दोनों गाते हैं। दोनों के विशेषण एक से हैं - कवि कैसे हैं - निर्दोष, कानों में अमृत को बरसाने वाली, वक्र अर्थात् औरों से अलग अपना नया स्थान रखने वाली, दृढ अर्थात् स्थिर हैं ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि काव्य गुण जिसके ऐसी महती (बडी) सूक्ति (सुन्दर उक्ति, रचना) को धारण करने वाले तथा अति विशुद्ध है कुल और विद्या (ज्ञान) जिनका ऐसे। वीणावादक भी कैसे हैं कि - सुन्दर है बोल जिसमें, शुचि (निर्मल, सुस्वर) कानों में अमृत बरसाने वाली, बनावट से टेढी, सुस्थिर हैं गुण (तार) जिसके ऐसी 'महती' नाम की वीणा (सौ तारवाली, कइयों के मत से इक्कीस तारवाली) को धारण करते हुए। तथा विशुद्ध है 'वंश' (वीणा का बाँस) और वीणावादन की विद्या (कला) जिनकी ऐसे। ऐसे विभुं को मैं......।।

जिस प्रभु के सेवक कामदेव के बाण समूह से आक्रमण की गई (अर्थात् कामोन्मत्त), ललाट भाग में शोभमान जो तिलक (टीकी, सौभाग्य बिन्दु) उससे सुन्दर शोभावाली। तथा मधुर कण्ठ स्वर से मनोहर। कुसुमित (अर्थात् जिसका 'कुसुम' रजोदर्शन काल आ गया हो)। ऐसी सुन्दर पत्नी तथा 'कुसुमित' खूब फूलों से युक्त उपवनस्थली (पुष्पवाटिका) का अवसर पर (सुन्दर मौके पर) सेवन करते हैं। सब विशेषण 'उपवनस्थली' मे भी लगते हैं। यथा - पुष्पवाटिका कैसी है - मदन नाम के वृक्ष तथा 'उल्बण' (ऊँचे- ऊँचे) जो 'बाण' तन्नामक वृक्ष, तथा 'पूग' (सुपारी के वृक्ष), उनसे व्याप्त 'अलि' भ्रमरों से मनोहर और

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

खिलते हुए जो 'तिलक' जातीय वृक्ष उनसे सुन्दरशोभा वाली। कलकण्ठों (कोकिलों) के नाद से मनोहर।

जिन भगवान् के भीतर - प्रसन्नमनवाली, सांसारिक संतापों से पीडित लोगो की संतापशान्ति में जिन सबने अपनी संमति की हुई है ऐसी भगवती पार्वती, करुणा (दया) चन्द्रमा की कला, भक्तों पर दया रखने वाली दृष्टि गङ्गा और सरस्वती । 'ऐसे प्रभु की मैं शरण जाता हूँ' यह अग्रिम अन्वय।।

सांसारिक संतापों की 'संपत्ति' (बहुतायत) को दूर करने में चतुर, गङ्गा के जल की तरह चन्द्र समान उज्ज्वल ऐसे जिस प्रभु के यश (चरित्र) तीनों लोकों को भूषित, आनन्दित, पवित्र तथा अत्यन्त संजीवित करते हैं।

कर्पूर की तरह सुन्दर कान्तिवाले जिस प्रभु के चरित्र - दुष्ट जो कलिकाल वही हुआ तंग कटाह (कडाही) उसमें पकाये गये (पीडा दिए गये)। तथा तीव्र अभिमान युक्त है मन जिनका ऐसे मनस्वी लोगों की -' सुदर जो उत्तम चन्दन की बूँदे उनके समूहों की अभिलाषा को पूर्ण करते हैं। अर्थात् वे चरित्र ही ऐसे सुरभित और शीतल, सुखप्रद हैं कि मनस्वी लोगां को चन्दन बिन्दु प्रवाह की इच्छा ही नहीं होती।

जिस प्रभु के चरित्र को बुद्धिमान दिक्पाल (इन्द्र वरुण कुबेरादि) कमलयुक्त पुष्करिणियों (तलैयाओं) के तटों पर - तीर में खिले हुए जो कमल उनके मकरन्द पान में तेजी से लगी हुई जो भृङ्गाङ्गना (भौरियाँ), उनकी जो गुमगुमाहट (गुम् गुम् इत्याकारक गीति) बीच मे जिसके ऐसे चरित्र को गाते हैं।

जिन प्रभु के चरित्र को गाते हुए भक्त के मुख में कमल को आसन बनाले वाली श्रीलक्ष्मी के विजय की इच्छा से स्वयं वाग्देवी (सरस्वती) निवास करती है। अब मुख और कमल दोनों के समान विशेषण दिये जाते हैं। मुख कैसा है - व्यक्त (प्रकाशित), उज्ज्वल (देदीप्यमान) जो अलिक (ललाट) उससे व्यक्त। बडी हैं आँखे जिसमें, बडा है 'कर्णिका' कर्णभूषण जिसमें। अनर्गल (सीधा) खडा है 'नाल' (अर्थात् कण्ठ) जिसमें। अब देखिये, कमल भी कैसा है- व्यक्त (प्रकाशित) सुन्दर जो अलि (भौंरे) उनसे 'कचित' (शोभित) बड़े बड़े हैं अक्ष (कमल के बीज, कमलगट्टे) जिसमें। बडी है कर्णिका (कमल के बीच में रहने वाली बीजों की डोडी) जिसमें। सीधा है नाल (कमल की डंडी) जिसमें। उन प्रभु को मैं आश्रय बनाता हूँ, यह अग्रिम अन्वय।।

आपन्निग्रस्तों के बान्धव (सहायक)। जिनका डूबना समीप में है ऐसे

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नमस्कार कते हुए भक्तजनों को 'मत डरो' इत्यादि सान्त्वना देने में जिनका वचनविलास सफल है, ऐसे बालचन्द्रमा को मस्तकभूषण बनाने वाले, आश्रितजनों की पीडा हरने वाले, देव भगवान्, शम्भु की शरण में जाता हूँ।। 9-33 (पच्चीस श्लोकों का एकान्वय)

मैं उन देव का आश्रय लेता हूँ जिनके मुकुट में सर्प श्रेष्ठों की चमकती हुई हजार मणियों के मिस से - गङ्गा जी के जल से छिडके गये लालाट के अग्नि ने मानों अङ्कुर सहस्र छोडे हों। अग्निपर जल डालने से चारों तरफ किरणें सी निकलती है। इस ही पर 'उत्प्रेक्षा' है कि सर्पो की मणियें नहीं, ललाट के अग्नि की ये किरणें हैं।।34।।

अनुग्रह सहित (कृपापात्र) जो उत्तमगण (पारिषद) उनसे सेवन किया गया है चरणमूल जिनका। मस्तक पर जिनने गङ्गा को धारण कर रखा है। शीतमूर्ति (शीतल बिम्बवाला जो चन्द्रमा) उस सहित। कडों के स्थान पर विषधर सर्पों से आश्रित। अतिमनोहर गुह (स्वामिकार्तिक, पुत्र) जिनका, ऐसे गिरीश (श्रीशंकर) को आध्यात्मिक आदि तापों की शान्ति के लिये आश्रय करता हूँ।

यहाँ श्लेष से 'गिरीश' शब्द का गिरिओं (पर्वतों) में श्रेष्ठ हिमालय भी अर्थ होता है। इस पक्ष में श्लोक का अर्थ है - 'सानु' (शिखरों) का आश्रय करने वाले जो शंकर के उत्तम गण उनसे आश्रित हैं 'पाद' प्रत्यन्तपर्वत (अर्थात् समीप के पहड़ों) का मूलदेश जिसका। जिसके मस्तक (चोटी) पर गङ्गा है। तुषार (हिम) सहित है मूर्ति जिसकी (इस ही लिये तो वह 'हिमालय' है)। कटकों (पर्वत के मध्यभागों में) विषधरों से सेवित । अत्यन्त मनोहर हैं गुहा (गुफा) जिसकी ऐसे 'गिरीश' हिमालय को मैं ग्रीष्मताप की शान्ति के लिये आश्रय करता हूँ।।35।।

जो शम्भु चरणकमल में क्षीरसमुद्र, हाथ में अमृत कलश, मस्तक पर लहराती गङ्गा को, संसार में जन्म लेने वाले प्राणियों के अणु (पुद्गल, आत्मा) संबन्धी, सब तरह के कर्म सबन्धी, तथा अविद्या (परमशिव से विश्व को पृथक् मानना), रूप तीनों मलों को हरण करने के लिये ही मानों धारण करते हैं। यहाँ 'इव' आदि वाचकशब्द नहीं रहने से गम्योत्प्रेक्षालंकार है।।36।।

जिनकी जटाओं पर गङ्गा फूलों की माला की तरह शोभित है और जो शिरःस्थ चन्द्रमा की चाँदनी को श्वेत चन्दन के विलेपन की तरह धारण करते हैं उन प्रभु का मैं आश्रय लेता हूँ।।37।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जो प्रभु गणेश की जननी (माता), हिमवान् (हिमालय) से पैदा होने वाली, दर्शनमात्र से तीनों लोकों को पवित्र करने वाली 'गौरी' (गौर वर्ण और अजातरजस्का) भगवती कात्यायनी को तथा सुरनदी (गंगा) को धारण करते हैं (दोनों में सब विशेषण समान हैं। गंगापक्ष में 'गौरी' श्वेतवर्ण), 'निर्वाण' (अत्यन्तदुःख निवृत्ति, मोक्ष) को देने वाले उन चन्द्रमौलि को शरण जाता हूँ।।38।।

किसी समय विधाता (ब्रह्मा) रूपी मृग के मस्तक को काटने वाले (सन्ध्या को अतिरूपवती देखकर मुग्ध हुए ब्रह्मा उसके पीछे दौडे। सन्ध्या ने मृगी रूप धारण किया। ब्रह्मा भी मृग बन गये। भगवान् शंकर ने यह अपचार देखकर मृगरूपधारी ब्रह्मा का मस्तक काट लिया। जो मृगशिर नक्षत्र रूप से आज भी आकाश में विद्यमान है। यह पुराण कथा है।) और किसी समय गोदी में मृग को लेने वाले (मृग को गोदी में लेने वाले 'मृगांक' चन्द्रमा की मूर्ति धारण करने वाले। किसी समय मृगों को मारने में ही प्रीति रखने वाले 'किरात' व्याध का रूप धरने वाले। कभी मृगों को अपना 'रथ' (अश्व) बनाने वाले वायु-रूप (पृषदश्व-पृषत् (मृग) है अश्व जिसका, यह वायु का नाम है।) ऐसे 'विभु' (सर्वतन्त्र स्वतन्त्र) श्री शंकर का मैं आश्रय लेता हूँ।।39।।

मैं निरङ्कुश (किसी से भी नहीं दबने वाले) स्वतन्त्र प्रभु शंकर का आश्रय लेता हूँ। स्वतन्त्रता देखिये- उद्दाम (प्रचण्ड) हैं दोष (दूषण) जिसके वह 'दीर्घगुण' वाला कैसे होगा? किन्तु शंकर उद्दाम (विकट) हैं अन्धक त्रिपुरादि दैत्यों को मारने में 'दोष' अर्थात् भुजा जिनकी ऐसे हैं। जो भुजङ्गों (सर्पों) के शरीरों से आलिङ्गित है वह उत्पन्न हुआ है शिखि (अर्थात् मयूरों) का संबंध जिसको ऐसा कैसे हो सकता है? क्योंकि सर्प और मयूरों का आपस में वैर हैं किन्तु यहां 'शिखि' का अग्नि अर्थ है। उत्पन्न हुआ है ललाट में स्थित अग्नि का प्रसङ्ग (संबंध) जिसको यह अर्थ हो जाता है। जो कापालिकों (कपालों से खेलने वालों) का व्रत धारण करै वह द्विजेन्द्र (श्रेष्ठ ब्राह्मणों) का चूडामणि (सिरमौर) कैसे होगा? किन्तु शंकर द्विजेन्द्र (चन्द्रमा) है चूडामणि (मस्तकभूषण) जिनका ऐसे हैं इसही लिये तो शंकर निरङ्कुश, स्वतन्त्र हैं।।40।।

अपने अर्द्ध अङ्ग में ही धारण की है अङ्गना (श्रीपार्वती) जिनने ऐसे हैं तौ भी कामदेव के शरीर को जिनने भस्म कर दिया। संपूर्ण विश्व के जो एकमात्र स्वामी हैं तौ भी टूटा हुआ कपाल जिनके हस्त में है ऐसे। जो उग्र (प्रचण्ड क्रोधी) है तौ भी भक्तों के शिव (कल्याण) कारी हैं। जगत् के

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

संहारकर्ता हैं तौ भी अघोर अर्थात् परमानन्दप्रद हैं। जो अज, अजन्मा, ब्रह्मा आदि सबके आदिकारण हैं तौ भी सद्योजात (अर्थात् शिव को आदि लेकर पृथिवी पर्यन्त विश्व के नित्यनवीनोल्लासशाली होने कारण विश्वरूप शंकर भी नवीन जात) हुए। इस तरह आश्चर्य के निधान विभु श्री शंकर का मैं आश्रय लेता हूँ।।41।।

अत्यन्त दुर्गम इस भव (संसार) मार्ग में भयमुक्त मैं काम क्रोध आदि जो डाकू उनको दबाने में एकमात्र वीर, रात्रि ही है कुटुम्ब (गृह, गृहिणी) जिसकी ऐसा जो चन्द्र, उसकी एककला है शिरोभूषण जिनका, जिससे बढ़कर कोई उत्तम नहीं ऐसी सर्वोत्कृष्ट स्वातन्त्र्यशक्ति वाले स्वामी श्रीशंकर को मैं शरण स्वीकार करता हूँ।।42।।

सुमेरु वा मन्दर प्रभृति बड़े बड़े पर्वतों से क्या प्रयोजन? कैलास ही सबसे गौरववान् है क्योंकि सब प्राणियों को अभय देने वाले, 'अवकर' धूलि आदि कजोडेसे रहित, सर्वशङ्काशून्य, सुन्दर शोभाशाली निष्कलङ्क जिसके अङ्ग (मध्यभाग) को जगत् के एकमात्र गुरु श्री गिरीश (कैलास के स्वामी श्रीशिव) अलंकृत करते हैं।।43।।

अनन्यज (मनोज, कामदेव) का शासन (दमन) करने वाले श्री शम्भु के शासन (आज्ञा उपदेश) को उल्ङ्घन करके कोई मूर्ख ही अन्य के शासन (आज्ञा) का अनुगमन करने की इच्छा रखता है। नवीन नागरबेल के पानों से भरे बन को छोडकर कंटक समूह से व्याप्त ऐसे खड्डे का आश्रय ऊँट ही लेता है।।44।।

दूसरे के लिये की गई भी श्रीशंकर की सेवा कल्पवृक्ष की तरह लोगों को सर्वाभीष्ट फल देती है। दूसरे के लिये जलाई गई भी दीपशिखा (बत्ती) जलाने वाले के संमुख भी घट-पटादि पदार्थों को दिखा देती है।।45।।

यहि किसी ने जीविका के लिये भी भगवान् शंकर का पूजन किया हो तो भी भगवान् उसके पाप परिणाम (फल) को नाश कर देते हैं। यदि कोई गरमी के संताप को दूर करने के लिये भी गंगा में नहाता है तो भी वह निष्पाप हो जाता है।।46।।

दूसरों के द्वारा आज्ञा दिये हुए भी जो भगवान् शंकर की भक्ति करते हैं वे भी सांसारिक दुर्गति से छूट जाते हैं। अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिये रखी गई 'धाय' (उपमाता) संपूर्ण भोग, तथा सुख पूर्वक सोने बैठने आदि आरामों की पात्र हो जाती है।।47।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दम्भ (ढोंग) से भी की गई कामविजयी श्रीशंकर की सेवा परम आनन्द और समृद्धि देती है। दूसरों को प्रसन्न करने के लिए किया अङ्गराग (चंदनादिलेपन) पुष्पमाला- नये वस्त्र इत्यादि कृत्रिम वेष क्या वेश्या को सुख नहीं देता?।।48।।

इसलिये हे सज्जनो! जैसे हो वैसे भी प्रभु शंकर की ही शरण में जाओ। यदि दुर्भाग्य से मोक्ष न भी हो, तौ भी पाप तो दूर हो ही जाते हैं। जो पुरुष अपनी इच्छा से ही अमृत के सरोवर में गिर जाता है वह चाहै डूबै नहीं, किन्तु क्या वह अमृत बिन्दु से बिना सिँचा (सूखा) ही बाहर आता है? अपि तु नहीं।।49।।

बेपरवाही से बालक उपमन्यु को क्षीरसमुद्र का दान, बेरोकटोक सुवर्ण की वर्षा (सात दिन तक मरुत्त राजा के लिए), क्रुद्ध हुए यमराज के नागपाश के बन्धन से छुडाना (श्वेतनृपति को), प्रचण्ड हालाहल का पान करना इत्यादि और भी अद्भुत काम जिनकी क्रीडा मात्र है उन देव का वर्णन कैसे किया जाय?50।।

जो स्वच्छन्द (स्वतन्त्र) हैं, और कभी स्वेच्छा से अपनी भ्रूलता (भ्रुकुटि) को चञ्चल कर देते हैं (अर्थात् भ्रुकुटी के हिलाने से किसी काम की आज्ञा का इशारा करते है), उस समय शंकर की आज्ञा को ही अत्यन्त अनुग्रह लाभ मानकर- 'मुझको आज्ञा हुई है' यों परस्पर डींग मारना तथा होडा होडी से उत्कट हुए देवता और असुर सरगर्मी के साथ जिनकी सेवा करने के लिये परस्पर कलह करते हैं, उन भगवान् महेश्वर के माहात्म्य वर्णन में हम सरीखे कौन होते हैं, कोई चीज नहीं।।51।।

पृथिवी-जल-वायु-सूर्य-अग्नि-आकाश-आत्मा (यजमान) और चन्द्र इन आठ प्रकार के वैभवों (मूर्तियों) से जो भुवन की रक्षा करते हैं। जो स्वयं भोक्ता (कर्ता रूप), और भोग्य (कार्यरूप) हैं। उन महान् ईश्वर (जो ब्रह्मादिकों का भी कारण है) उनके संबंध में हम क्या कहैं? जो स्वतन्त्र प्रभु अपने उल्लास रूप ब्रह्मा-इन्द्रादि के द्वारा अपने ही उठाये हुए पाशों से जैसे कोई खेलता है वैसे अपने आप उठाये और बिगाडे खिलौनों की तरह इन्द्रादि से क्रीडा करता है।

शरणाश्रयणं नाम, अष्टमं स्तोत्रम्

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज यह 'अष्टम' शिवचरणधृत।।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कृपणाक्रन्दनं नवमं स्तोत्रम्

(९)

❀❀❀

हे स्वामी! थोड़े ज्ञान वाले हम सरीखों अन्दाज के वचनों से आप की स्तुतिरूपी जो चपलता की जाती है वह सूर्य की कान्ति को दीपकसमूह से पूर्ण करना है। ओस की बूँदों से समुद्र को भरना है।।1।।

पूर्ण प्रौढता को नही पहुँची हुई किन्तु 'वाचाल' बहुत बोलने वाली, प्रारम्भ के वर्णन की ही शक्तिवाली, यह मेरी वाणी परम पुरुष आप तक पहुँचना चाहती है इसमें हे स्वामी! मेरी वाणी की धृष्टता का अपराध है।।2।।

अथवा आपका आश्रय लेने वाले मेरे सरीखे की भी अनिर्वचनीय (जो कहने में न आवै) और प्रशंसनीय वह महिमा हो यह दुर्लभ नहीं। हे स्वामी जहाँ आपका बैल (नन्दी) स्वतन्त्रतापूर्वक धीरे से भी चरण धरता है वह भूमि सुवर्णमयी हो जाती है।।3।।

विष से भी भयंकर अकारणवैरी इस मोहरूपी रोग ने मेरे चित्तको दुःख से व्याप्त तथा अनेक विन्ता जाल से विकार युक्त बना दिया है। हे स्वामी! इसको मैं आपकी स्तुति रूपी रसायन के सेवन से नष्ट करता हूँ।।4।।

हे गिरीश! (कैलाश के स्वामी) अपूर्व आनन्द का उपदेश करता हुआ आपका स्तव (स्तुति) रूपी गुरु सर्वोत्कृष्ट (धन्य) है। जिस स्तुति के अन्तःप्रवेश (हृदय में आना) रूपी दुर्लभ सोपान (सीढ़ी) के द्वारा वाग्देवी मेरे संमुख शीघ्र ही स्फुरित (प्रकट) हो जाती है।।5।।

हे अन्धकारि (अन्धक नामक दैत्य के बैरी)! स्वादिष्ट षड्रस रसायन के लिये मेरे इस मन की इच्छा नहीं। चन्द्रमुखी के निरन्तर मुखामृत की भी चाह नहीं। आपके समीप इसका यही निर्बन्ध (हठ) है कि इसको 'निर्बन्ध' (सांसारिक बन्धन रहित मुक्त) कर दीजिये।।6।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे भगवन्! इन्द्र की पुरी अमरावती मेरी दृष्टि में बड़ी नहीं। सुवर्ण का सुमेरु भी प्रीति उत्पन्न नहीं करता। हे शंकर! जहाँ आपके चरण कमलों की पूजा का सुख मिलता है उस जंगल को ही मैं शरण लेने योग्य मानता हूँ।।7।।

मेरी दृष्टि रूपी जो भ्रमरी (भौंरी) कामदेव के अभिलाष के वशीभूत होकर बेबस कामिनियों की भुजलताओं में घूमती थी, सबल हुई वह दृष्टि अब आपकी भक्तिरूपी कल्प-लता के फलभोग की तृष्णा को प्रकट करती है।।8।।

हे प्रभु! भक्तों की सांसारिक तापशान्ति के लिये यह आपकी भक्ति क्या मुकुट की चन्द्रकला को निचोड़कर बनाई गई है? अथवा मस्तक की नदी (गंगा) के जल से बनाई गई है, कि वा आपके हस्त में स्थित कलश के अमृत-प्रवाह से बनाई गई है?।।9।।

हे स्वामी! अद्भुत चरित्रशाली आपके अद्भुत पराक्रमों के गानरूपी अमृतपान में अत्यन्त आसक्त हुई यह मेरी वाणी हरिणी की तरह और सब रास्तों को छोड़कर एक पैंड भी यहाँ से आगे हटने की क्षमता नहीं रखती। यह सत्य है।।10।।

यमराज के भय से व्याकुलता को प्राप्त हुओं के लिये आश्वासन (ढाँढस) स्वरूप, जन्ममरणरूपी दावानलकी पीड़ा से मरों के लिए संजीवनी (जीवनौषधि), सुकवियों की (सत्य) वाणी का आधार। आपके चरित्र रूपी अमृतों का कीर्तन (गान) करना सर्वश्रेष्ठ है।।11।।

तरङ्गों से चञ्चल दुग्ध का समुद्र आपका दान है (उपमन्यु के लिए) अत्यन्त भयंकर यमराज के भय से मुक्त कर देना यह आपका अनुग्रह है (श्वेतराजा के लिये)। सात दिन तक निरन्तर सुवर्णवृष्टि करना यह आपका त्याग है। हे प्रभु! आपका कौन सा सुन्दर चरित्र प्रशंसनीय नहीं।।12।।

रज (अर्थात् पुष्प के पराग) से परिचय रखने वाला, चपलस्वभाव, जाति से मलिन (काला) भौंरा कमल में अपने पक्षों (पंखों) को डालकर जैसे प्रसन्न हो जाता है, ऐसे ही रजोगुण से छुआ, चंचलस्वभाव तथा स्वभाव से ही मैला यह मेरा हृदय आपके चरणरूपी कमल में पक्षपात (स्नेह) रखकर प्रसन्नता से भरे भौंरे की शैली (शोभा) धारण करता है।।13।।

हे शंकर! आप वामदेव (संसार से 'वाम' विपरीत हैं, अथवा 'वाम' सुन्दर हैं) तो भी आश्रय लेने वाले भक्तों के पक्ष में दक्षिण (अर्थात् अनुकूल) हैं, आप सब जगह बसते हैं, वर्तमान हैं, तो भी कामदेव के बैरी हैं। वसन्त (ऋतुराज)

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

काम का बैरी कैसे होगा, किन्तु आप सर्वत्र निवासी होकर भी कामदेव का दाह करने वाले हैं। आप 'अन्तक' जो काल (मृत्यु) उसके शान्त करने वाले हैं तो भी अनन्त (अपरिमित, बेअन्दाज) जो क्रोध उसके शान्ति के कारण हैं। जो 'अन्तकोपशमहेतु' है वह 'अनन्तकोपशमहेतु' अर्थात् उससे भिन्न कैसे होगा? किन्तु एक जगह 'अन्तक' काल का उपशम हेतु, और दूसरे पक्ष में अनन्त जो कोप, क्रोध उसके शान्त करने वाले। अतएव अचिन्तनीय, विचार सीमा से बाहर है गति (चरित्र) जिनकी ऐसे विभु, सर्वसमर्थ आपका आश्रय लेता हूँ।।14।।

स्तुति (प्रशंसा) करने लायक है महान् महिमा (महत्त्व, प्रभाव) जिसका ऐसे 'आकाश', तथा समर्थ प्रभु आप, उनकी दूसरे के द्वारा 'नियति' नियमन (रोक, रुकावट) नहीं हो सकती। क्योंकि आकाश कभी स्वच्छ निर्मेघ अर्थात् निर्मल अवस्था में निर्मल प्रकाश देता है और कभी मेघों के आवरण (आच्छादन) से उपरोध (रुकावट) देता है। इस ही तरह आप किसी भक्त पर निर्मल चैतन्य का प्रकाश देते हो और किसी पर घना (गहरा) जो माया का आवरण उससे सब प्रकार 'उपरोध' रुकावट देते हो।।15।।

आपसे अन्य परम दयालु और कौन होगा जो भक्तों की जन्म-मरण-व्याधिरूप आपत्ति (क्लेश) तथा 'उपताप' (आध्यात्मिकादि त्रिविध संताप) इनके दूर करने में लगे हुए मन को। तथा सांसारिक भयों से डरे हुए लोगों को अभय ('मत डारो' यों सान्त्वन) दने रूप 'पण' (नियम) में तत्परवाणी को। तथा त्रिभुवन के उपकार (उत्पात मनाने वाले त्रिपुर, अन्धक आदि असुरों का वध करके तीनों लोकों को अभय देना रूप) में परवश ऐसे शरीर को धारण करता है। आकाश-पृथ्वी-वायु आदि अनेक मूर्ति धारण करके आप संपूर्ण लोकों का उपकार करते हैं।।16।।

हे भगवन्! आपके साथ वियोग (विरह) धारण करके इस चित्त को विषाद (दुःख) प्राप्त हुआ, प्रसाद (प्रसन्नता) नहीं। तुमसे बिछुड कर इस चित्तने उचित विचार को छोड़ा, समाधि (चित्त की एकाग्रता) आदि का बैरी बाह्य जनसंग नहीं (बाहरी आदमियों के साथ मेल मिलाप को नहीं छोड़ा) तुमसे दूर हुए इस चित्त में दुर्विचारों ने कहाँ नहीं छिद्र पाया? अपि तु सर्वत्र मौका पाया, इसके अतिरिक्त श्रेष्ठ प्रबोध (ज्ञान) नहीं पाया। यहाँ कवि ने यह शब्द चमत्कार भी रखा है कि यह चित्त धारण किया है 'वि' और 'प्र' रूप उपसर्ग रूप (शब्दों) का योग जिसने ऐसा है। तीनों चरणों में 'वि'षाद, 'प्र'साद। 'वि'चार, 'प्र'चार। 'वि'वर, 'प्र'वर यों सर्वत्र 'वि' और 'प्र' शब्दों का संबंध रखा है।।17।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे चन्द्रकिरीट ('सारंग', मृग है केतु में जिसके ऐसे हे चन्द्रशेखर), रजोगुण का विकार जिसका शान्त नहीं हुआ है, 'अश्रान्त' निरन्तर घूमने वाला (जिसको थोड़ा भी विश्राम नहीं मिला।) ऐसा यह अन्तःकरण का प्रकट अन्धकार (तम) मनुष्य को अन्धा बना दे, यह तो ठीक है। किन्तु जो बहरा भी बना देता है, यह क्या अतिप्रसङ्ग (आसक्ति) है, यह मैं तर्कना नहीं कर सकता। रज (धूलि) से मिला बाहर का अन्धकार मनुष्य को अन्धा बना देता है किन्तु वह बहरा नहीं बनाता। किन्तु यह हृदय का अन्धकार (तमोगुण) मनुष्य को अन्धा और बहरा बना देता है,? यह निश्चित है।।18।।

जो कामदेव विलास से चञ्चल हुए जो स्त्री के नयन उसका जो अन्त (अर्थात् नेत्र का अन्तिम हिस्सा 'कटाक्ष') उस निवास (स्थान) को प्राप्त करके अपने को मनस्वी (अर्थात् वशीकृत चित्त) मानने वाले मानियों का भी कहाँ नहीं भङ्ग करता है? अपि तु सर्वत्र जीत लेता है। धिक्कार योग्य वह मनोभू (कामदेव) मेरे चित्त में बैठ (घुस) कर मेरे मर्म का क्या भेदन नहीं करता? अपि तु मर्म मर्म भेदन कर रहा है। हे स्वामी। आपका ध्यान करने के कारण विमल हुए मेरे चित्त में निवास करते हुए आपको 'असन्तम्' अवर्तमान (नहीं रहते हुए) की तरह वह मानता है, यह क्या बात है? अथवा और क्या बात है। केवल यह आपका 'सर्वंकष' (सर्वव्यापक) प्रसाद (अनुग्रह) है, जो यह जला हुआ भी आपके अनुग्रह को प्राप्त करके गर्व (अभिमान) को धारण करता है कि आपके भक्तों को भी धनुष का लक्ष्य (निशाना) बनाता है (श्रीपार्वतीजी के परिणय के अवसर पर श्रीशंकर ने ही कामदेव का अपराध क्षमा करके अनुग्रह कर दिया था)।।19-20।।

उत्कृष्ट चन्दन में घिसे हुए जो कस्तूरी कपूर और केसर इनके मेल से किया है विलेपन जिस अङ्ग में। नवीन कदली (केले का खंभ) के समान कोमलता और चिक्कणता जिसमें हो। कामदेव रूपी नट का क्रीडा स्थान ऐसे अङ्ग को धारण करती हुई। खिले कमल के समान मुख वाली, फूले हुए शिरीष (सिरस के फूल) की माला के समान कोमल बाहु वाली। नये नीलकमल के समान नेत्रवाली, वसन्त ने अपने मित्र कामदेव के हित के लिये पुष्पों के द्वारा मानों ब्रह्मास्त्ररूप बनाई। 'हे नाथ!' यों प्रेम से, 'हे जीवितहर!' (विरह में जीवन भी हर लेते हो) यों कोप से, 'हे दयापर' (दासी पर दया करो) यों कोमल, इस तरह प्रेम-कोप- और कोमलता से बातचीत करती। वाणी से नहीं कहे जाँय ऐसे विलासों (विभ्रम, नखरों) से मन को इस तरह बस करती हुई कि मानों अपने दृढ़ प्रेम के द्वारा अपना भीतरी गुप्तभाव सब प्रकट कर दिया हो। अधिक क्या,

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुपित हुआ जो निर्दयी कामदेव उसके बाणसमूह से छिद गया है हृदय जिसका (कामोन्मत्त) ऐसी (मृगनेत्रा स्त्री) गाढा आलिङ्गन करके, मुग्धा स्त्रियों में स्वभाव से रहने वाली लज्जा को भी जीत कर, उत्कण्ठा से घने (गहरे) अधरामृत को देती हुई ऐसी मृगनेत्री स्त्री भी। समुद्र मंथन से उत्पन्न हुए अमृतप्रवाह को भी जिसने जीत लिया, ऐसे आपके भक्तिरस के पीने से नित्य तृप्त हुए। 'प्रत्याहार' नामक योग क्रिया से इन्द्रियों को विषयभोगों से लौटा ली हैं जिसने। आत्मा और मन की एकता रूपी जो समाधि उसका जिसने आनन्द प्राप्त कर लिया है ऐसे। आपमें परायण, आपके भक्त को हरण (वशीकरण) करने में समर्थ नहीं होती (सब प्रकार की मोहन सामग्री से युक्त परम सुन्दरी स्त्री भी आपके भक्त को हरण नहीं करती, यह भावार्थ)।। 21-22-23-24-25।।

शंकर के स्मरण से, उत्कण्ठा के कारण उनमें ही घूम रहा है चित्त जिसका ऐसे शंकर भक्त की। दक्षिण दिशा के पवन से कम्पित हुए जंगली पेड़ों के अपने आप टूटे हुए फलों से शरीरवृत्ति (अर्थात् भोजन) कहाँ, और गर्वित राजाओं के संमुख याचना से दीनतापूर्ण मुख कहाँ। अर्थात् भक्तों को जंगली फलों से भोजन उचित है। किन्तु कुल्सित राजाओं से याचना अत्यन्त गर्हित है।।26।।

हे शंकर! आपकी मूर्ति के दर्शन के समय मेरी अन्य इन्द्रियें नेत्र बनना चाहती हैं। आपके चरित्र का जो आस्वादन (कीर्तन) उसके आनन्दों में मेरी सब इन्द्रियों जिह्वा बनना चाहती हैं। आपकी कथाश्रवण के काम में मेरी अन्य इन्द्रियाँ 'कर्णता' (कान बन जाना) चाहती हैं।।27।।

छत्र और चमरों से धवल वैभव (अर्थात् छत्र चमरों वाली, सर्वतन्त्र स्वतन्त्र राजशक्ति) हे भगवन्! आपका थोड़ा सा ही अनुग्रह है। आपके साथ सायुज्य (एकात्मता, आप में मिल जाना) उसकी अपेक्षा कुछ अधिक प्रसाद है। किन्तु आपका निरन्तर ध्यान करते हुए के वृक्षों के बक्कलरूप वस्त्र और जंगल का निवास यह उससे भी अधिक प्रसाद (अनुग्रह) है।।28।।

यदि मेरे हाथ आपके चरणकमल की धूलि से व्याप्त हों, यह मेरी वाणी आपके चरित्रों के आस्वादन में अभिमान वाली हो। चित्त आपके गुणगणों के स्मरण में व्रती (नियमधारक) हो तो आहा! मैं बड़ा धन्य (बडभागी) हूँ।।29।।

हे वर देनेवाले! प्रलय के समय त्रिजगत् को भक्षण करने वाले, हे भगवन्! भिक्षा ही भोजन करनेवाले, कुछ पास नहीं रखनेवाले (दरिद्र), पुराने श्मशान में घर करने वाले, दिगम्बर (नग्न), और क्या कहूँ भस्म से रूखे शरीर वाले भी मेरे जन्म जन्म में आप ही स्वामी हों।।30।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे भगवन्! मैं और कुछ नहीं माँगता, आप जिस कैलास नामक पर्वत में निवास करते हैं मेरा निवास उसही में हो। वहां मेरे मित्र क्या नहीं हैं? मेरे जैसे बहुत हैं। रीछ, बन्दर, हिरन ये क्या मेरे सखा नहीं हैं?।।31।।

हे भगवन्! चारों तरफ विष को फैलाती हुई विषम (विकट) तृष्णा जिन विषयों के संबंध में मैंने अब तक अनुभव की, वे पाँचों इन्द्रियों के शब्द-स्पर्श रूप आदि विषय, वाणी से भी नहीं कहे जा सकते। इस लिये हे दयालु भगवन्। स्वच्छ और चञ्चल जो नेत्रप्रान्त (कटाक्ष) उसका मेरे ऊपर डालना रूपी जो सुन्दर धार वाला सुधा (अमृत) रस, उसके द्वारा मेरे ऊपर कृपा कीजिये। अर्थात् आपकी कृपा दृष्टि रूपी अमृत की वर्षा कीजिये।।32।।

हे स्वामी! आप में भक्ति के विना आपका अनुग्रह नहीं होता। और आपके अनुग्रह के विना आपकी भक्ति नहीं होती। बीज से जिस तरह अङ्कुर और अङ्कुर से बीज, इसही तरह आपकी भक्ति और अनुग्रह इन दोनों का परस्पर कार्यकारणभाव किसके लिये कल्याणकारक नहीं?।।33।।

यदि मन शान्त (हिंसा-पराये धन की इच्छादि से निवृत्त) है तो 'यम' (बाहरी शुद्ध आदि) तथा नियमों (व्रतादि) से क्या फल? वाणी यदि मधुर हितोपदेश देने वाली है तो स्तुति रूपी खुशामद से क्या लाभ। यदि प्राणियों पर दया है तो व्रत-होम, दोनों से क्या। यदि भगवान् शंकर में भक्ति है तो अन्य सुखों की अभिलाषाओं से क्या।।34।।

कुतर्क कल्पना करने वालों ने स्वर्ग लोक के सुख (अप्सरा, अमृतपान नन्दनविहारादि) के भोग को मुक्ति बतलाया है। किन्तु विविध शास्त्रों के ज्ञान के अनुसार हमनें तो 'शिवभक्ति ही मुक्ति है' यह निर्णय किया है। जो कानरूपी पान-पात्रों से पिया गया- समक्ष में आस्वाद्रन किया अमृतरूप है।।35।।

आषाढ मास में जिस तरह दिन बड़े होते हैं इस तरह मेरे पाप बड़े दीर्घ हैं शरत्काल में नदी के जल की जिस तरह प्रतिदिन हानि होजी है, इस तरह मेरे बल की हानि है। दुर्जनों के किये हुए तिरस्कारों की तरह मेरे दुःख दुःसह हैं। हे भगवन्! मैं इन कष्टों को सहन नहीं कर सकता। अशरण इस दीन पर दया करिये।।36।।

विपत्तिकाल में शरण के लिये आये हुए किन्तु तिरस्कार किए हुए (धमकाये हुए) अभिमान शाली बन्धु की तरह विवेक (कार्याऽकार्य का विचार) शास्त्राभ्यास से शून्य मेरे मन को चाहै मत छुओ। किन्तु गर्मी में हिमसमूह का

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नाश करके सूर्य जैसे दुनिया को तपाता है, इस तरह मोह (अज्ञान), विद्या (तत्त्वज्ञान) को नाश करके मेरे चित्त को संताप देना है।।37।।

सायंकाल में उगने वाली प्रतिपदा की चन्द्रकला की तरह, मेरे शरीर का जब तक अवसान (समाप्ति) नहीं हो जाता तब तक मेरे ऊपर कृपा कर दीजिये। नीति को जिसने छोड़ दिया है ऐसे इस पाप ने मुझको मार लिया। जिस (पाप) ने कि मेरे ऊपर होने वाली आपकी कृपा को भी रोक दिया है।।38।।

विष्कम्प (निर्भय) होकर यमदूतों की पंक्ति सामने आ रही है जिसको मन में लाते (विचार करते) हुए भी हमको कम्प होता है। इस मामले में एकमात्र आपकी कृपा उपाय है। जो आपकी कृपा किस मनुष्य को शुभ और अभ्युदय (भाग्योदय) का पात्र नहीं बनाती? अपि तु सबको कल्याण और अभ्युदय का पात्र बनाती है।।39।।

आप निष्काम (निःस्पृह) हैं तो भी कामदेव को अपनी नेत्राग्नि का पतङ्गा बनाकर अर्थात् जलाकर आपने कुमार (स्वामिकार्तिक) को पैदा किया। यह चरित्र आपका दूसरों के लिये है (तारकासुर से देवताओं की रक्षा के लिये है), यह बालकों पर्यन्त प्रसिद्ध है। इसलिये आप वेग से (शीघ्र) आइये। मुझको नष्ट मत करिये। मेरा त्याग मत करिये। अभय की वाणी दीजिये।।40।।

हे स्वामी! महान् प्रहार (चोट) देकर मेरे बैरी सर्वस्व, हार की तरह निर्मल मेरे विवेक को हरण कर रहे हैं। मेरी रक्षा करने वाली आपकी कृपा इस समय मेरी अवहेला (तिरस्कार) कर रही है। मैं राजशेखरों में श्रेष्ठ अर्थात् श्रेष्ठ राजाओं के भी मुकुटमणि (राजा अर्थात् चन्द्रमा है शेखरमणि शिरोभूषण जिनका ऐसे) आपके सामने चोरों से लूटा जा रहा हूँ।।41।।

हे प्रभु! कबूतर देवालय मन्दिर में निवास चाहता है (जहाँ उसको हिंसा का डर न हो)। निःशंक है जहाज जिसका ऐसा जहाजी व्यापारी समुद्र में निःशङ्क होकर स्थिति करता है। हाथी अपनी पीठ पर नित्य लक्ष्मी को धारण करता है। इसलिए मण्डूक (मेंढक) का बच्चा जिस तरह तालाब में जाता है, इस तरह मैं भी आपकी भक्ति का आश्रय लेता हूँ।।42।।

यज्ञ के द्वारा आपकी सेवा करने वाले को जो नया धैर्य (ढाँढस) प्राप्त होता है वह स्वर्ग में वसुओं (देवताओं) के सैन्य से घिरे वासव (इन्द्र) को कदाचित् भी प्राप्त नहीं होता। भूमि में भी युद्धोत्तेजक 'नव' नया 'आसव' (मद्य) पी हुई सेना से भी वह धैर्य प्राप्त नहीं होता।।43।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

महान् (बड़े) ऋषभ (बैल) को यान (सवारी) बनाने वाले हे प्रभु! जो वाणी स्वर्ग में ब्रह्मा को भी दुर्लभ है। जो वाणी भयंकर काल को भी निधन (काल) देने वाली है। नमस्कार करने वाले भक्त के लिये अभयदान के 'आनक' (सूचना का नगारा) के समान शोभावाली आपकी शुभवाणी के द्वारा किस मनुष्य को आप कल्याण नहीं देते, अपि तु प्रत्येक को कल्याण देते हो।।44।।

नष्ट कर दिया है महान् कलि (अर्थात् कलह) करने वाला काल (यम) जिसने ऐसे। तथा कृतयुग (सत्ययुग) के समान बना दिया है बड़ा कलिकाल (कलियुग का समय) जिसने ऐसे हे प्रभु! जिस सन्त (सज्जन) को 'क्लिष्टं सन्तं' (क्लिष्ट होते हुए) देखते हो, उसको चन्द्रमा की अमृतमयी कला की तरह 'सोत्कलिका' (उत्कण्ठित हुई) सुन्दरी बाला (षोडश वर्ष की स्त्री), 'अलस' धन-यौवन से आलसी हुए तथा 'लसन्तं' क्रीडा करते हुए देखती है (जो पहले दुखी रहता है वह भी आपकी कृपा दृष्टि पड़ जाने पर स्त्री आदि के सांसारिक विषय विलासों से सुखी हो जाता है, यह भाव)।।45।।

हे शिव! नायक (बीच की धुगधुगी, लटकन) से रहित मोती की माला की तरह, विनायक (गणेश) जी से रहित आपके गणों की सभा की तरह अखिल विश्व के स्वामी आपसे रहित वाणी-हृदय को वशीभूत कर सकेगी, यह कौन संभावना करता है। कोई भी नहीं।।46।।

हे प्रसिद्ध मान को धारण करने वाले! (सकल अभिमान के धारक) जिस मानसी पीडा का अन्त समाधि (आत्मा और मन को एक कर लेने रूपी योगाभ्यास) द्वारा उचित है, उस आधि (मानसी पीडा) से यह मन व्यथा को धारण करता है। हे भगवन्! यह मलिन भाव का लेप (मति के ऊपर आवरण प्रभाव) विशुद्ध भी बुिद्ध को दबाता है। आप को भी इस समय अभिमान सुलभ हो गया है, जो इस दीन पर कृपा नहीं करते।।47।।

संसार में रमणीय स्वभाव वाले चाहै बहुत से पदार्थ हों, किन्तु मेरी अभिलाषा के लिये दो ही पदार्थ हैं। शब्द और अर्थ इन दोनों की प्रौढता से मनोहर कविजनों की वाणी (कविता) और गंगा को धारण करने वाले (श्रीशंकर) की स्थिर भक्ति। महाकवियों की कविता और श्रीशिव की भक्ति ये दो पदार्थ ही मेरे अभिलषणीय हैं।।48।।

चकोर को जैसे चाँदनी की लहरों (शोभाओं) से प्रीति होती है, कमल की कली को जैसे सूर्य की कान्तियों से प्रीति होती है, मयूर के बच्चे को जैसे मेघ

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

के जलों से प्रीति होती है, इस तरह हे शिव! आपकी स्तुति कथाओं से किसको प्रीति नहीं होती।।49।।

हे भगवन्! संपूर्णों के वाणी और मन से अतीत (परै) ऐसा आप का चरित्र कहाँ, और संसार में अज्ञान के आवरण से स्खलित हो गई है (बिगड गई है) गति (शक्ति) जिसकी ऐसा मेरा चित्त कहाँ? इसलिए त्रास (भय) युक्त मुझको आपकी पवित्र भक्ति ने प्रेरणा की, इस ही लिये शोभन छटा वाली (सुन्दर) आपकी यह स्तुति मैंने बनाई।।50।।

हम इस पेट के लिये प्रणाम करते हैं (कुत्सित राजा आदि को) नाना वाद करने वालों से विवाद करते हैं। लज्जित होते हैं और नानाविध पाप करते हैं। हम शुभ अशुभ नाना चेष्टा (काम) करते हैं। दुष्टों के कुत्सित वचन सहते हैं। इस तरह इस पेट के लिये पातकों से जलाये जाते हैं।।51।।

बहुत काल के अनन्तर अनेक जन्मों के अर्जित पुण्यों से प्राप्त किया यह मनुष्य जन्म, थोड़े काल तक रहने वाला, तथा फिर सुलभ नहीं है यह हम जानते ही हैं, किन्तु अपना हित करने की चेष्टा नहीं करते। आश्चर्य है, हम भाग्यपर सब छोड़ बैठते हैं।।52।।

इसलिये परवश (दूसरे के वशीभूत), विषयभोगों में रसिक तथा संसार से पार उतरने का स्वकार्य जिनने समाप्त नहीं किया ऐसे, हमको जैसे धीवर अकस्मात् आकर मच्छियों को पकड़ लेता है इस तरह अशरण (अगतिक) हमको अकस्मात् आकर मृत्यु जबरदस्ती जब तक नहीं पकड़ै तब तक हम पर प्रसन्न होइये और हे चन्द्रमा को धारण करने वाले! हम पर कृपा करिये। हमारे करुण विलापों को सुनिये और हमारा त्याग मत करिये। हे भगवन्! आप ही कहैं, दया के समुद्र आप के द्वारा त्याग किये गए हम और किस दूसरे की शरण जाँय?।।53-54।।

यदि यह कहा जाय कि उत्पन्न होने वाले प्राणी की मृत्यु जरूर होती है, तो हे चन्द्रशेखर! श्वेतनामक राजा ने और नन्दीश्वर ने क्या उस मृत्यु को नहीं लाँघा? (अर्थात् उनकी मृत्यु नहीं हुई)। यदि इन दोनों ने विपुल तपस्या से मृत्यु को जीत लिया (यह कहा जाय), तो नाममात्रकी तपस्या वाले हमारी तो मृत्यु नहीं रोकी जा सकती। यदि मृत्यु निश्चित है तो हे नाथ! आपके अनुग्रह से पूजा समाप्ति के अनन्तर आपकी दृढ भक्ति में लगे, आपके ही चरणों का आलिङ्गन करके निद्रा के बहाने से आँखें बन्द किए हुए मेरे प्राण निकलैं (यह प्रार्थना है)।।55-56।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे स्वामी! ये आपके आभरण बनाये भुजङ्ग गाढी गाँठ वाले (मोड़ गाँठ बँधना) तथा वक्रिमा (टेढापन की लीला) को धारण करने वाले नहीं हैं? मेरा सूक्तिरूपी अमृत भी कैसा है कि निबिड (अर्थात् दृढ़) है रचना जिसमें ऐसा है। तथा वक्रिमा- साधारण उक्तियों से जिसमें बाँकपन, अर्थात् नवीनता की लीला को धारण करने वाला है। किन्तु ये सर्प क्रम (अर्थात् पदन्यास) से गिरे हैं (सर्पों के पैर नहीं होते)। मेरी सूक्तिमें 'क्रम' से (जो मार्ग ग्रहण किया है उससे) हीन (पतित) नहीं हैं (काव्य में 'अक्रम' क्रमभङ्ग दोष गिना जाता है) ये सर्प पदगुम्फ (चरण रचना) से हीन है (चरण नहीं होने से सर्पों के चरण चिह्न भी नहीं होते)। किन्तु मेरी सूक्ति पदगुम्फ (पदों का जो निबन्धन (रचना) उससे हीन नहीं, अपि तु तच्चातुर्ययुक्त है। इसलिए ये भुजङ्ग मेरी सूक्ति रूपी अमृत के अनुकरण करने में कैसे समर्थ हैं? इसलिये हे स्वामी! नीति से दूर, प्राणियों की दृष्टि में भयंकर, सर्पो को कर्णाभूषण बनाने का अभिलाष रूपी जो दुर्व्यसन (दुरभ्यास) उसको छोड़कर, प्रणय (अर्थात् याचना) और पूजा (उपचार, नियमानुकूल सत्कार) है मध्यमें जिनके ऐसी इन मेरी वाणियों को चतुरता किं वा शीघ्रता के साथ अपने कर्णों का आभरण बनाइये, अर्थात् इन वाणियों को सुनिये।।57-58।।

अन्तक(यम) का भी नाश करने वाले, करुणा के समुद्र हे शंकर! बान्धवशून्य (निराधार) होने के कारण मैंने जो वाणी जगत् के एकमात्र बन्धु आपके सामने कही। कहते हुए मेरी उस वाणी को कानमें करिये।।59।।

निर्धनता की जो पीडा है वह देखते हुए को भी अन्धा बना देती है। अभिमानी को भी मानशून्य बना देती है, बड़े बड़े कान वाले को भी बहरा कर देती है। वह (निर्धनता की पीडा), कुत्सित पुरुषों की लक्ष्मी की तरह मनुष्यों को क्या नाँच नहीं नचाती? इसलिये हे भगवन्! मेरे निवेदन में जो असंबद्ध प्रलाप आदि अपराध हुए हों उनको क्षमा कर दीजिये।।60।।

कृतान्त (यम) को उच्छृङ्खल (स्वतन्त्र, निर्विचार), दुष्ट, जिसके बल का उलङ्घन नहीं किया जा सकै ऐसा, भीतर ही भीतर क्रोध से जलने वाला, निर्विकल्प ('समवर्ती' सबमें समान बर्ताव करने वाला) तथा बड़ा गर्व रखने वाला, श्रीशंकर के पवित्र चरित्रों की जो अद्भुत सूक्तियें (वाणी रचनायें) हैं उनमें भी स्थिर रोषवाला समझकर उसको समझाते हैं, बोध कराते हैं।।61।।

हे यमराज! तुम्हारे लिये हितकारी तथा थोड़ा भी बहुत अर्थवाला, आरम्भ में कठोर किन्तु आगामी काल के विपाक में हित निर्दोष, सत्य, हर्ष के सहित, दोष

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

से रहित, रोष के कारण जिनका पोषण (समर्थन) नहीं किया गया, ऐसा जो कुछ तुम से हम कहैं, वह तुम सावधान होकर निश्चित रूप से अमल में लाओ, क्योंकि हम तुमसे सन्धि (सुलह) करना चाहते हैं।।62।।

हे उच्छृङ्खल कृतान्त! हे दुष्ट अभिप्राय वाले! तुम किसी दूसरे आदमी पर हुंकार दिखाओ। खबरदार है, तुम अपने अभिमान नष्ट मत होने देना। क्या यह तुम मानते हो कि जिनने भगवान् चन्द्रशेखर को अपना स्वामी बना लिया है उनको भी तुम धमकाओगे? यह तुम्हरी आशा नष्ट हो चुकी है।।63।।

हे काल! जिस महान् ईश्वर ने अपराध करने वाले भी तुम पर फिर अनुग्रह कर दिया कि तुम फिर सजीव हो गये)। हम उनही ईश्वर (शंकर) के सेवक हैं। इसलिये बैरी भी तुम्हारे प्रति जो कुछ हित बात कहैं उसको तुम 'रोष से कहते हैं' यह तुम जान रहे हो।।64।।

हे दुर्विनीत (ढीठ) दुष्टकाल! मृत्युञ्जय भगवान् से अपनी ढीठता का जो कुछ शासन (दण्ड) प्राप्त कर चुके हो उसको सुनकर धैर्यशालियों का भी चित्त काँप जाता है। तुम फिर वही अविनीत चेष्टा (ढीठपन) आरम्भ करते हो।।65।।

हे पुरुषाधम काल! तुम अपने नागपाश को अपने हाथ में ही छुपा लो तुम्हारे रोष का यहाँ अवकाश नहीं। 'कातर' अर्थात् कायरों को डराने वाले हे काल! जो संकर (कचरा, दोष) से दूर रहने वाले, शंकर की शरण में जाने वाले हैं उन भक्तों में तुम क्या कर सकते हो।।66।।

हे कृतान्त! कठोर अपने दूतको शंकर भक्तों से अन्य पुरुषों के विषय में प्रेरणा करो। शंकर के किंकरों (सेवकों) पर अपना रोष मत अङ्कुरित (उत्पन्न) करो। हे सर्प को आयुध बनाने वाले कृतान्त! क्या यह बात तुम भूल गये कि उच्छृङ्खल क्रोध के लिये प्रबोध (चेतावनी) का पटह (नगारा) रूप श्रीशंकर का हुंकार है, उसको तुम भूल गये।।67।।

हे कृतान्त मूर्ख! उच्छृङ्खल विचारशून्य! खड्ग की तरह निर्दय अथवा मर्यादाशून्य और कठोर! किसी का अनुरोध (मुलाहिजा) नहीं करने वाले! यदि तुम शरणहीन पुरुषों में निष्कारण रोष करते हो, तो तुम महेश्वर (भगवान्) शंकर का आश्रय लेने वाले भक्तों पर रोष क्यों करते हो।।68।।

हे यम! बान्धव (सहायक) शून्य लोंगों में निष्कारण विरोध हुए तुम नाहक ऊँची ग्रीवा (गर्दन) किये हुए हो। जो दयालु और साधु हैं वे तीव्र अपराधों से युक्त तथा भयभीतों पर तथा अधमों पर भी पीड़ा पहुँचाने की सामर्थ्य नहीं रखते,

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वह पीडा चाहै अपने द्वारा हो अथवा पराये के द्वारा।।69।।

गणों के नाथ (जो गणेश) उनके पिता (शंकर) के प्रसाद को प्राप्त करके जो तुम प्राणियों पर बलात्कार से प्रहार करने में समर्थ हो यह उनके पहले किये, दुर्लङ्घ्य (कठिन) पाप का फल है। हे अन्तक! ये क्या तुम्हारा पुरुषार्थ है?।।70।।

हे काल! प्राणियों के निष्कारण ही वैरी तुमको लोग धर्मराज कह कर स्तुति करते हैं, क्या यह सत्य ही है? ठीक है, लोग जगत् के अमङ्गल (अपशकुन) के मूल खजाने उल्लू को क्या 'मंगल विहङ्गम' (पक्षी) नहीं कहते? विपरीत लक्षणा से अमंगल भी उल्लू को जिस तरह 'मङ्गलपक्षी' कहते हैं इसही तरह तुमको भी धर्मराज कहते हैं।।71।।

हे यम! रोती हुई स्त्रियें, (मुर्दो पर रोने का व्यवसाय करने वाली 'निरीश्य' नाम से कश्मीर में प्रसिद्ध हैं।) कापालिक (मृतों के कपालों से क्रीडा करने वाले), मुर्दो को जलाने वाले, गुरु (अन्तिम कार्य कराने वाले कर्मकाण्डी) श्राद्धादिभोजी ब्राह्मण, तुम को 'जीवितेश' (जीवन का स्वामी) कह जो स्तुति करते हैं, यह योग्य ही है। क्योंकि तुम इनके मित्र हो, इनसे भिन्न जो और लोग हैं उनके तुम निष्कारण 'असुहृत्' वैरी हो क्योंकि 'असुहृत्' उनके 'असु' प्राणों के हृत् हरनेवाले हो।।72।।

हे रविज! (सूर्य के पुत्र यम) मृत मनुष्य को पञ्चगव्यादि से स्नान मुर्दे की चिता पर चिता का वास्तु याग, निर्याण कर्म, अन्त्येष्टि, शवदाह से लेकर नव दिन का कार्य (शिवक्रिया) आदि कार्यों में जो अत्यन्त दयालु गुरु लोग अन्यों के लिये क्लेश उठाते हैं वे तुमको 'श्राद्धदेव' कहकर स्तुति करते हैं। (तुम 'पितृपति' हो, श्राद्ध के अंशभागी हो, इसलिये श्राद्धदेव कहना उचित ही है)।।73।।

हे अन्तक! तुम्हारे पिता सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए अच्छे अथवा बुरे देश (स्थान) को नहीं छोड़ते, इसलिये सूर्य 'समवर्ती' (समान बर्ताव करने वाले) हैं। तुम भी सज्जन और असज्जन पुरुषों में समान रूप से प्रहार (ताडना) करते हो, इसलिये तुम को भी 'समवर्ती' कहते हैं। तुम यद्यपि विषमवर्ती (साधु और असाधु के विचार शून्य) हो तौ भी व्याज से स्तुति (निन्दा) करते हुए तुम्हें समवर्ती कहते हैं। किन्तु जिन (शंकर) ने तुम्हारे ऊपर कोप करके भी अन्त में अनुग्रह कर दिया, उनके सेवक्रों पर क्या तुम अनुग्रह करना चाहते हो? फिर मेरे प्रति क्या बर्ताव करते हो?।।74-75।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे नीतिज्ञ (तुम नीति जानने वाले हो इसलिये नीति की बात तुम को सुझाता हूँ)। तुम मानवान् हो (अपने संमान की रक्षा करना चाहते हो) सो हे रौद्र! यदि तुम अपनी मानमुद्रा की रक्षा करना चाहते हो तो उन मनुष्यों का अपमान मत करो, जिनका ललाटस्थल चन्द्रशेखर के पादारविन्द के मकरन्द (रज) से श्वेतवर्ण देखते हो।।76।।

हे यम! दुराचारियों के गर्व को शान्त करने के कारण तुम 'शमन (गर्व को शान्त करने वाले) हो, और अधमों (पापियों) के 'संयमन' (दमन, जच्च करने) के कारण तुम 'यम' हो। यह बात दूसरी है, इसे जाने दो। मैं तो मानता हूँ कि- शिव में भक्ति करने वाले भक्त तुम्हारे ही मद को शमन (शान्त) करने में समर्थ हैं और तुम को ही 'यमन' (वशीभूत, जच्च) करने में 'प्रभु' (समर्थ) हैं।।77।।

नृशंस (प्राणियों का घात करने वाले)! अत्यन्त गर्व रखने वाले हे अन्तक! शर्व (शंकर) की स्तुति करने वालों में भी (अर्थात् उनके प्रसंग में भी) यदि तुम उच्छृङ्खल चेष्टा करते हो तो, वो (चेष्टा) भा (कान्ति-प्रकाश) के वैभव (आधिक्य) से भैरव (भयंकर) जो श्री भैरव (शंकर) का भालानल (ललाटाग्नि), उससे होने वाला जो पराभव (दाहरूप तिरस्कार) उसकी करने वाली पुनः हो जायेगी (वो तुम्हारी उच्छृङ्खल चेष्टा भालानल से होने वाले दाह तिरस्कार की करने वाली हो जायेगी- अर्थात् तुम्हारा दाह हो जायगा)।।78।।

शंकाशून्य विकराल मुख वाले हे सूर्य पुत्र (अन्तक)! अधिक क्या कहैं, ईश्वर का आश्रय लेने वाले भक्तों का जो तुम हास्य करना चाहते हो, सो मत करो। भगवान् महेश आश्रितों पर बहुत वात्सल्य (पुत्र के समान स्नेह) रखनेवाले हैं। वो यद्यपि तुम पर सानुग्रह हैं। (ब्रह्मादि के कहने से तुम्हारे अपराध क्षमा कर दिये थे)। तौ भी भक्तों का उपहासरूपी इस अनुचित चेष्टा को नहीं क्षमा करते हैं।।79।।

तिलक (भाल में किई चन्दनादि बिन्दु) से जिस तरह भालस्थली (ललाट देश)। वधू (स्त्री) के कटाक्षों से विक्षोभित (अर्थात् फूले हुए) तिलक वृक्ष से जिस तरह वनपङ्क्ति (कामिनी के कटाक्ष पड़ने से तिलक वृक्ष फूलता है,' यह कविसमय है।) मृग को तिलक (अंक, चिह्न) बनाने वाले चन्द्रमा से जिस तरह रात्रि शोभा धारण करती है, इस ही तरह मेरे द्वारा की गई शम्भु की यह विज्ञप्ति (प्रार्थना) 'वसन्त-तिलक' नामक छन्द से शोभा को धारण करती है (इस प्रकरण में वसन्ततिलका छन्द है)।।80।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

क्षीण (नष्ट) हो गये हैं 'दशा' (अंचल, अन्तभाग) जिसके ऐसा वस्त्र, तथा क्षीण हो गई है 'दशा' (बाल्य, यौवन आदि तथा ज्योतिष प्रसिद्ध आयुष्य की दशा) जिसकी ऐसा वय (अवस्था) धारण करते हुए। 'अक्षम' असमर्थ इन्द्रिय समूह को और 'अक्षम' नहीं है क्षमा (सहनशीलता) जिसमें ऐसे मन को धारण करते हुए। निःसार (कृपणचित्त होने के कारण भीतर से शून्य) ऐसे दुरीश्वर (कुत्सित धनिकों) से 'अपचिति' अपमानजनित 'उद्वेग' (पीड़ा) को तथा 'निस्तार' (दुर्बल अतएव असमर्थ)। ऐसे अङ्गों में 'अपचिति' अर्थात् क्षय जनित 'उद्वेग' 'उत्' अधिक जराजनित कम्प आदि 'वेग' को धारण करते हुए। तथा 'व्यर्थ' विगत है, 'अर्थ (धन) जिससे ऐसे घर को, तथा 'व्यर्थ' निष्फल, पारलौकिक मार्ग का शोधन नहीं करने के कारण निरर्थक संपूर्ण नर जन्म को भी धारण करते हुए। 'कल्याण' अर्थात् मुक्तिका उपायरूप कोई श्रेयस्कर काम से शून्य इस शरीर को, तथा 'कल्याण' अर्थात् 'धन' से शून्य 'कोष' (खजाने) को धारण करते हुए मेरे ऊपर - 'चित्ते करुणां कुरुष्व, श्रुतौ करुणां गिरं कुरुष्व' (चित्त में दया करो, और श्रुति अर्थात् कान में करुण अर्थात् दयनीय इस वाणी को करो। अर्थात् सुनो)। यहाँ 'क्षीणदशम्' 'अक्षमम्' इत्यादि विशेषणों के दो दो अर्थ होते हैं, अतः यहाँ 'श्लेष' अलङ्कार है।।81।।

हे स्वामी! मैं 'अज्ञ' अज्ञानी मूर्ख हूँ। अतएव मन्दबुद्धि होने के कारण उन मनोहर स्तुतियों को नहीं कर सकता, जिनसे कि आपकी कृपापात्रता को प्राप्त करूं। किन्तु हे दयालु! मैं आर्त (पीडित) हूँ। अशरण हूँ (मेरा कोई रक्षक नहीं) और 'कृपण' दीन हूँ। मेरे द्वारा जो यह 'आक्रन्दन' (अपने दुःख का रोदन) किया गया है, उसको कानों में करके त्वरा (जल्दी) के साथ आँवैं। और अभाग्य ऐसे मेरे मस्तक पर चरण को दैं (स्थापन करैं)। अभी मैं अभाग्य हूँ। किन्तु मेरे ऊपर जब चरण दैंगे तब मैं अपने को 'मूर्धन्यधन्य' अर्थात् मस्तक पर स्थान पाने वाले उच्च पुरुषों में भी 'धन्य' कहूंगा।।82।।

'कृपणाक्रन्दन' नामक नवमस्तोत्र

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज मृत्युञ्जयरञ्जन नवम।।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करुणाक्रन्दन दशम

(१०)

❀❀❀

पुण्यात्माओं के चित्तरूपी चकोर के लिये चन्द्रिका, मुखरूपी कमल के लिये सूर्य की कान्ति, कानरूपी मयूरों के लिये वर्षा की धारा, ऐसी चन्द्रमा की कला को मुकुट बनाने वाले भगवान् शंकर की स्तुति धन्य (सर्वोत्कृष्ट) है।।1।।

भक्तिरूपी लता के लिये नवीन वसन्त, पुण्यरूपी वृक्ष के पके हुए फलों का उद्गम (उत्पत्ति), जन्म-जरा-मरण रूपी विपत्तियों से घबराये हुओं के लिये बन्धु, सुकवियों की सूक्तिरूपी वधू का मुखमद्य (मस्त कर देने वाला वदनामृत) संसार समुद्र के तरने का जहाज, श्रेष्ठ पण्डित रूपी मयूरों के लिये मेघध्वनि, हृदय के दाह हरने में अमृत का प्रवाह, ऐसा चन्द्रमा को आभूषण बनाने वाले श्रीशम्भु का स्तव (स्तुति) धन्य है।।2-3।।

चन्द्रमुखी के मुख से भी मधुर, गंगा के जल से भी खेद के हरने में अधिक, त्रिलोकनाथ श्रीशंकर की स्तुति से पवित्र ऐसा सत्कवियों का सूक्ति रूपी रसायन (अमृत) धन्य है।।4।।

नवीन नव (स्तुति) रूपी जो भ्रमर उनके शब्द से मनोहर, संसार रूपी मरु में भ्रमण से उत्पन्न जो गर्मी उसके शान्त करने में समर्थ, हृदयरूपी नन्दनवन (देवताओं का बाग) की चन्दन लता, ऐसी शंकर की अविच्छिन्न भक्ति धन्य है।। चन्दनलता भी नवीन नवीन भ्रमरों के शब्द से शोभित होती है तथा मरु के भ्रमण से उत्पन्न गर्मी को शान्त करने वाली होती है। इसलिये ये दोनों विशेषण दोनों में लगते हैं।।5।।

अब मैं- कष्टों के कारण से मन में थोड़ी देर के लिये उत्पन्न हुए, किन्तु अनेक तरह के काम-क्रोधादि व्यसन रूपी जल प्रवाह से टकराये, विवेक (विचार) रूपी नये अंकुर को देखकर, जगद्गुरु भगवान् श्री शंकर को कुछ निवेदन करना चाहता हूँ।।6।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे हंस (परमात्मा, श्रीशिव)! आप त्रिलोकी में प्रसिद्ध दीनदयालु हैं जिनने संसार समुद्र में डूबते हुओं के उद्धार रूपी हित के लिये स्वीकार किया है 'सकलनाथ' रूपी मूर्ति जिनने ऐसे हो, और आप शरण चाहने वाले दीनों के हृदय कमल में स्थिति भी करते हो फिर हम सरीखों की विपत्ति (जन्म-जरादि) को क्यों नहीं नष्ट करते हो।।7।।

हे स्वामी! यदि आप हृदय में स्थिति (स्थान) कर लो तो यह जन्म-जरा-मरणादि व्यसनों की संपत्ति (प्रभाव) क्यों फैले? और यदि वह संपत्ति न फैले तो विज्ञ (पण्डित) जन भी अयोग्य कामों में क्यों लगें?।।8।।

बड़े दुर्लङ्घ्य (कठिन) शिकार-जूआ आदि व्यसनों के आ पड़ने से बड़े उत्कट हुए उन व्यसनों के स्वीकार के आग्रह के कारण जकड़ ली गई है बुद्धि जिसकी ऐसा यह मनुष्य दीनता, परतन्त्रता (बेबसी), निष्फलता (नाकामयाबी) और दुर्जनता को यदि प्राप्त न हो तो.... 'भवत्पदपंकज पूजाव्यसनपरमानन्दं विहाय कार्यविकारकदर्थनां कः सहेत' आपके चरणारविन्द के पूजा व्यसन के आनन्द को छोड़कर कृपणों के नानाविकाररूपी तिरस्कारों को कौन सहै। यह 24वें श्लोक से अन्वय है। ऐसे आगें भी।।9।।

सज्जनों के समागम रूपी व्यसन (नित्य का अभ्यास) से फैलती हुई बडी कृपा का पात्र (स्थान) यह मनुष्य का हृदय, चन्द्रकिरणों के टकराने रूपी संपर्क से झरते हुए चन्द्रकान्तमणि की शोभा को यदि नहीं धारण करै तो... (आप की पूजा के परमानन्द को छोड़कर कृपणों के नानाविकाररूपी कदर्थनाओं को कौन सहै,' यह अग्रिम संबन्ध।।10।।

निरन्तर दरिद्रता के प्रसाररूपी लंबे गर्मी के समय से पीड़ित अर्थी (चाहने वाले याचक) प्यासे हरिण जिस तरह मेह के आने को, इस तरह धन के आगमन को यदि नहीं चाहैं तो....।।11।।

पुष्ट और कर्डे स्तनों से भङ्गोन्मुख (अब टूटूँ अब टूटूँ, इस तरह भार से दबा) तथा उदर की त्रिवलि (तीन रेखा) रचना से मानों तीन तरङ्ग युक्त है कटिभाग जिनका, अति सुख और प्रमोद (मस्ती) देने वाली स्त्रियाँ अपने कटाक्ष विलोकन से यदि मन न हरण करैं तो....।।12।।

बलवान् नेत्र-कर्ण आदि इन्द्रियरूपी डाकुओं से घिरे, रूप-रस आदि पाँच विषयरूपी सर्पो से भयंकर, पापरूपी बड़े दावाग्नि (जंगली आग) से भयानक, घने अज्ञानरूपी तम (अन्धकार) से नष्ट हो गया है चैतन्य का प्रकाश जिसमें, ऐसे इस संसाररूपी लम्बे रास्ते में, प्रबल कर्म रूपी वायु के वेग से जिनका

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आत्मा उड़ रहा है ऐसे, इस ही लिये भव-मार्ग मं दौड़ते हुए बुद्धिमानों को भी ये काम-क्रोध-अहंकार आदि शत्रु (डाकू) अवसर पर (आपके ध्यान के अवसर में) यदि प्रहार न करैं तो.......।।13-14।। (युग्मक)

नवीन आम के मौरों की पङ्क्ति के आस्वादन (खाने) से दुगुने उत्कण्ठित हुए कोकिलों के कुहू शब्दों से और भी बढ़ा हुआ। वसन्त में कामदेव के दिग्विजय करने के समय का यह डिंडिम (नगारा) मनुष्यों को तर्जन करने में यदि समर्थ नहीं हो तो.....।।15।।

हे हर (शंकर)! कमलों के मधुपान की मस्ती से उन्मत्त हुए भ्रमररूपी गायकों की गुंजनरूपी ये गीतियां वसन्त में सुखलेश के अनुभव के लिये इच्छा करने वाले इस मनरूपी मृग को यदि हरण नहीं करैं तो.....।।16।।

नवीन पुष्पों के गुच्छों रूपी स्तनों से नमी हुई, पवन से नचाये गये हैं पत्ते रूपी हस्त जिनके, भ्रमरों का गुञ्जन ही है मधुरवाणी जिनकी ऐसी ये लतारूपी कामिनियें मनरूपी मृगों का जिसमें बन्धन हो जाय इस तरह की समृद्धि (शोभा) को प्राप्त नहीं करैं, तो......।।17।।

ग्रीष्मकाल में रज (धूलि) सहित इन दिशाओं को अपने तरुण (देदीप्यमान, नये) करों (किरणों) से गाढ आलिङ्गन करने की इच्छा वाला सूर्य- 'अब हम कामिनियों के समीप नहीं जाँयगे। यह अभिमान रखने वाले लोगों के स्वच्छ मन में यदि घना संताप नहीं पैदा करै तो...। यहाँ श्लिष्ट (दो अर्थ वाले) विशेषणों से अप्राकरणिक (दूसरे प्रसङ्ग का) अर्थ भी प्रतीत होता है- ''जैसे कोई कामी तेजी वाले अपने नये हाथों से रज (ऋतुकाल) वाली (रजस्वला) स्त्रियों को गाढालिङ्गन करता हुआ- मानवाले मनुष्यों के निर्मल हृदय में भी विरह का संताप उत्पन्न कर देता है'' (कामी की आलिङ्गनलीला से विरही को उत्कण्ठाजनित संताप हो जाता है)।। (समासोक्ति अलंकार)।।18।।

पृथु (बड़े) और शोभायुक्त हैं 'जघन' (नाभि के नीचे का भाग) तथा जाँघ और स्तन जिनके, तेज पवन के द्वारा फहरा रहा है तथा इधर उधर हटा हुआ है शरीर का वस्त्र जिनका, ऐसी ये मृगसदृश नेत्रवाली स्त्रियाँ वर्षा के समय पुरुष के धैर्य को हरण करने वाली यदि न हों तो........।।19।।

वर्षा के समय दिशायें भी कैसी हो जाती हैं कि पृथुल (विशाल) वर्षा के लिये तयार, घने, बड़े-बड़े हैं बादल जिनमें, वेग वाले पवन से और 'चपला' अर्थात् बिजली से व्याप्त है आकाश जिनमें, ऐसी ये दिशायें पावस की ऋतु में मनुष्य को उत्कण्ठित करके धैर्य हरण करने वाली नहीं होतीं तो...।। वर्णन के

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लिये दिशा और स्त्रियाँ दोनों प्राकरिण हैं और श्लेष से आती है। अतः 'समुच्चय' अलंकार।।19।।

शरत्काल में सुगन्धित तथा 'हास' अर्थात् विकास युक्त हैं मुख (अग्र) भाग जिनके ऐसे हैं कमल जिनमें ऐसी, मनोहर हंसों का विभ्रम (विलास, क्रीडा) जिनने धारण कर रखा है, तथा मज्जन की घर ये पहाड़ी नदियाँ यदि पुरुषों को सुन्दर भ्रुकुटि वाली स्त्रियों की याद नहीं दिलावैं तो....। नदियों की शोभा देखकर उनके सदृश सुन्दरी स्त्रियों का भी स्मरण हो जाता है। स्त्रियाँ भी कैसी है कि सुन्दर गन्ध वाला है हास्ययुक्त मुखकमल जिनका। धारण किये हैं मनोहर 'हंसक' (चरण में पहने हुए कड़े के) विलास जिनने (**हंसकः पादकटकः** यों पैर के कड़े को 'हंसक' कहते है)। जो 'मज्जन' संसार में डूब जाने की स्थान हैं। यहाँ उपमा और स्मृति अलंकार हैं।।20।।

हेमन्त में ठंडी होने से असह्य है उत्कट पवन जिनमें, ऐसी बड़ी-बड़ी रात्रियाँ यदि धारण की है घनी ऊष्मा (गर्मी) जिनने ऐसे बड़े-बड़े तरुणी स्तनों के स्मरण की कारणता को नहीं प्राप्त करैं तो...। ठंडी और बड़ी बड़ी रात्रियें, शीत में गर्मी पहुंचाने वाले तरुणी स्त्रियों के स्तनों को याद न दिलावैं तो...... ।।21।।

तपस्या में लगा है रस (आनन्द) जिनको ऐसा तपस्वी जन भी। 'वि' जो पक्षी उसके 'असन' अर्थात् अत्यन्त शीत से उड जाने के कारण व्याकुल (शोभाशून्य) ऐसे 'तपसि' शिशिर ऋतु में, तथा चित्त भी जब 'व्यसन' अर्थात् मृगया-जुआ-मद्यपानादि से व्याकुल हो जाय तब। तथा सूर्य भी, बाहर की ओर 'घनों' (मेघों) के आवरण (ढँक जाने) के पैदा होने से दब गया है 'धाम' (तेज) जिसका ऐसा हो जाने पर, यह मनुष्य अलस अर्थात् अपने कर्तव्य में ठंढा न हो जाय तो...।।22।।

हे भव (शिव)! यदि पूर्व श्लोकों में जो बात कही गई है वह पैदा न हों जाय तो संपूर्ण आपत्तियों से उद्धार करने में समर्थ। बड़ी कठिनता से मिलने योग्य। तथा वायु से हलाई गई नई कमलिनी (कमलपुष्प) की पत्ती पर हलते हुए जल बिन्दु के समान (अस्थिर) इस मानुष शरीर को प्राप्त करके, कौन ऐसा होगा कि आप के चरण कमल के पूजारूपी 'व्यसन' (नित्य का अभ्यास) से पैदा होने वाली 'सौमनसी' (सुचित्तता परमानन्द में विश्रान्ति) को छोड़कर, वैभव के थोड़े से लेश (हिस्से) से बढी हुई है मस्ती जिसको, ऐसे तुच्छ, कृपण (लोभी) मनुष्य के नानाविकारजनित कदर्थनाओं (तिरस्कारों) को सहन करै? (यदि

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पूर्वोक्त विघ्न बाधायें न हों तो आपकी सेवा के आनन्द को छोड़कर ओछे आदमियों के तिरस्कार कौन सहै। किन्तु ये विडम्बनायें इनके सहन करने के लिये मनुष्य को बाध्य कर देती हैं (मध्य में युग्मक)।।23-24।। यों 16 श्लोकों का एकान्वय 'कुलक' है। (पुस्तकों में 18 श्लोक यह पाठ है, किन्तु यह ठीक नहीं बैठता।)

हे हंस (परमात्मन् शिव) मेरा 'अघमय' पापमय (पापों का परिणामस्वरूप), आच्छादित कर दिया है (ढँक दिया है) बहुत कान्ति वाला 'तेज' (ज्ञान स्वरूप) जिसने, ऐसा 'महत्' बड़ा 'तम' (विवादात्मक तमोगुण) उठ खड़ा हुआ है। प्रचण्ड बल वाला वह 'काल' (कृतान्त, यम) भी उपस्थित हो गया है (समीप आ गया है) इसलिये इस मेरे मन में स्थिति करिये। श्लेष के द्वारा दूसरा अर्थ निकलता है- यह मेघमय (बादलों से व्याप्त), ढँक दिया है 'भास्वत:' (अर्थात् सूर्य का) प्रचण्ड तेज जिसने, ऐसा बड़ा अन्धकार उदय हो गया है। मेघों का जिसमें जोर है ऐसा वह वर्षाकाल भी आ गया है। इसलिये हे हंस! तुम अब 'मानस' नामक सरोवर में स्थिति करो (वर्षा काल में हंस मानस सरोवर में चले जाते हैं, यह प्रसिद्ध है)।।25।।

हे अनन्त! (ब्रह्मादि भी जिसका अन्त नही पा सके) आनन्दको लुप्त करता हुआ जो महान् मोह रूपी तम (अन्धकार) पहले कहने के अनुसार हृदय में उमड़ रहा है। यह सूर्य-चन्द्र-अग्नि रूप तीन नयन वाले आपकी अवर्तमानता हृदय में सूचित करता है। क्योंकि परम ज्योति के नहीं रहने से ही मोह रूपी अन्धकार को अवकाश मिला है।।26।।

हे महेश्वर! आप जिस चित्त के अधिष्ठाता हों उस चित्तको जन्म-जरा-मरणादि रूप संसार की लहरें नहीं घुमा सकती। सिंह के द्वारा रक्षित जंगल को बन्दर कभी भी बाधा नहीं पहुँचा सकते।।27।।

जंगल, नदीतीर, मैदान तथा वृक्ष की नीचे, कन्द, फल और जल, खा पीकर तथा स्वच्छन्द वल्कल (वृक्षों की छाल) पहन कर रहना अच्छा, किन्तु भगवान् शंकर की भक्ति के बिना इन्द्र होना भी अच्छा नहीं। (क्षेपक)

हे महेश! आपके देखने पर (कृपादृष्टि डालने पर) दुर्गति दूर हो जाती है। सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है। बुद्धि का धैर्य मिल जाता है। और सब लोकों से पूज्य हुए तथा श्रुति (वेद) स्मृति (धर्मशास्त्र) में पारंगत हुए ऐसे आप के स्तुति करने वाले में परमानन्द सुस्थिर हो जाता है।।28।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

इस संसार सागर में जल के समान कितने जीव पैदा नहीं होते और बिला

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जाते हैं। किन्तु जो भगवान् शिव का सेवक है वही जगत् में उत्पन्न हुआ कहलाता है। उसी का जन्म प्रशंसा करने लायक है।।29।।

श्रीशंकर के चरणों के धूलिकणों की तरह उन (शंकर) की चरण चौकी पर लोटा दिया है शरीर जिनने, अतएव पवित्र हुए, उनकी भक्ति को धारण करने वाले हम सरीखों ने देवताओं के मस्तक पर भी स्थान कब लिया है। दोनों में सब विशेषण समानता से लगते हैं। 'कृतम्' स्थान कर लिया यों भूतकाल कहने से 'ध्वनि' होती है कि जिस समय शंकर के चरणों में लोट गये उसही समय देवताओं के मस्तक पर स्थान 'हो गया' (होगा, या हो सकता है, इस संदेह की जरूरत नहीं)।।30।।

भयंकर जन्म-जरा-मरणादि समुद्र में पड रहे जीवों के लिये विघ्न विडम्बना रहित जो एकमात्र सहारा है, जो जगत् के अमंगलों का नाश करने वाला है वह शिव का सेवन रूप रत्न धन्य है।।31।।

सकल मङ्गलों का स्थान, अमृत (रसायन) रूप, भगवान् का पूजन रूप महौषध धन्य है, जो जन्म-जरा-मरणादि की पीडा को शमन करने में समर्थ तथा संपूर्ण अविद्या- अस्मितादि क्लेशों को दूर करने वाला है।।32।।

अविच्छिन्न (कभी जिसमें व्यवधान, अन्तर नहीं पड़ता) ऐसा यह शंकर का सेवन बिना परिश्रम के साधन किया रसायन (जरा-दुर्बलतादि को दूर करने वाला महौषध) है, उपभोग से नहीं घटने वाला आत्यन्तिक सुख (सकल कर्म तथा दुःख निवृत्ति रूप) है, समुद्रमंथन के बिना पैदा होने वाला अमृत है।।33।।

संसार में इन्द्रजाल से दिखने वाले, निष्फल, हाथी-घोड़े-रथ आदि अन्य ढोंगों से क्या फल, हे स्वामी! आपके चरण कमल का सेवाव्यसन ही मेरे तो अक्षय धन होओ।।34।।

प्रसिद्ध सुन्दरी चाहै रमणीयता धारण करो। अमृत भी (सदा जीवित, अक्षय) बना रहौ। मधु (शहद) भी मीठा बना रहो। हमारे तो यामिनीरमण (रजनीपति, चन्द्र) को मण्डन बनाने वाले भगवान् चन्द्रशेखर का सेवन ही परम आनन्द का धाम होओ।।35।।

संसार की गतियों (व्यवहारों) को मुश्किल से उल्लङ्घन करने योग्य (कठिन) जानकर उपराम (समाप्ति) को प्राप्त हो गये है मद (मस्ती) कामदेव और मात्सर्य (ईर्ष्याद्विष) जिसके ऐसा मैं एकचित्त होकर भगवान् चन्द्रशेखर को अपना शरण (रक्षक) समझ कर आश्रय लूं।।36।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दयारूपी अमृत के सागर, बाल चन्द्रमा को मुकुट बनाने वाले भगवान् शंकर से मैं यही प्रार्थना करता हूँ कि जन्म जन्म में मेरा यह शरीर आपकी आराधना का साधन बनै (आपकी सेवा में काम आवै)।।37।।

जो शिवनाम संकटशून्य, अतिमनोहर, एक अद्भुत शोभाविशेष को धारण करता है, अविद्यादि क्लेशों को दूर करने वाला वह शिवनाम मेरे मुख में कलङ्कशून्य अलंकार हो।।38।।

हे हृदय तू निर्मल (पाप मलिनता रहित) भाव (स्वभाव) को धारण कर। सावधानी नहीं रखने वाले (हे हृदय) भक्ति में दृढ बुद्धि लगाओ। हे डरपोक (दुर्बल)! श्रीशंकर की सेवा के बिना अक्षय सुख क्या समझते हो।।39।।

हे मन इस समय संसार में जो आनन्द दिख रहा है उसकी तृष्णा से संमानपूर्वक जो तुम्हारी उन्नति हो रही है उसका त्याग कर रहे हो। कामदेव को दमन करने वाले श्री शंकर के दर्शन के अतिरिक्त नाश (नुकसान) रहित और कौनसा उपाय (साधन) देखते हो।।40।।

पवन से हलाई जो माधवी लता उसके पुष्पों से सफेद हो रहे, नाना वृक्ष पंक्तियों से घिरे, निर्मल और कोमल ऐसे बीजकोषों (डोडियों) पर बैठे हुए भौंरों की पालना करने से पवित्र है कमल जिसमें, मदन नामक वृक्षों सहित उपवन (बाग) में कामदेव से वशीभूत सुन्दर स्त्रियों को छोड़कर प्रभु शंकर की सेवा करो। अशरण (असहाय) पुरुषों के उद्धारक, स्वतन्त्र है बुद्धि जिनकी ऐसे वह (शंकर) तुम्हारे जन्म-जरा-मरणादि दुःखों का एकदम नाश कर देंगे।।41-42।।

अविद्या (अज्ञान) को छोड़ो। अपनी मर्यादा पर आओ। सोच फिक्र छोड़ो। अपने संमान को स्वीकार करो। हे चित्त! प्रतिदिन श्रीशंकर के चरण कमलों का ध्यानरूपी रसायन (जरा मरणादि दूर करने वाला महौषध) के पीने में संलग्न होओ।।43।।

सांसारिक बाहरी कामों में लगे रहने के कारण बहिर्मुख हे चित्त! कामिनी के नेत्रों की चपलता रूपी शाप (नरक दुःख देने वाले) को अपना प्राप्य (प्राप्त करने योग्य सुख) मान रहे हो और श्रीशंकर के स्मरण से प्राप्त होने वाली सुचित्तता (परमसुखरूपी विश्रान्ति) को त्याज्य बना रखा है यह अयोग्य है।।44।।

हे चित्त! यदि कुपित हुए यमराज के दूतों की भ्रुकुटी (भौंह) के भय को दुर्लंघ्य (अतिकठिन, भयंकर) मानते हो तो, असाध्य इस भव रोग का औषध, सर्पों को भूषण बनाने वाले श्री शंकर का प्रसादन (प्रसन्न करना) स्वीकार करो

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection of Devavani Parishad Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अर्थात् अराधन करके शंकर को प्रसन्न करो।।45।।

हे चित्त यदि अपनी सुचित्तता (बेफिक्री, सुख) करना चाहते हो और पाप बन्धनों को दूर करना चाहते हो तथा संसार सागर को तैरना चाहते हो तो कल्याण (परमानन्द) कारक श्री शंकर के सेवन का आश्रय लो।।46।।

दया के पात्र हे चित्त! अच्छे कर्मों के परिणाम से यदि तुम्हारे हाथ यह निधि (खजाना) पड़ गया है, तौ संपूर्ण आपत्तियों को दूर करने में समर्थ उस (निधि) को (मानुष जन्म) को हे मूढ निरर्थक क्यों करते हो।।47।।

निर्मल शील (चरित्र), कुल तथा 'श्रुत' (शास्त्रों का ज्ञान) इनसे विख्यात। अव्छे और बुरे कामों के विचार में निपुण ऐसे इस मानुष जन्म को शंकर के पूजन सुख से बहिर्मुख होकर बिताते हो।।48।।

हे हर! आप आवैं। घूमते हुए तेज मन्दरपर्वत रूपी मन्थान दण्ड (रई) के वेगपूर्वक आघात से ध्वनि (आवाज) करता हुआ जो निर्मर्याद (वेला को छोड़ा हुआ) समुद्र उसकी ध्वनि के समान वाणी से शान्त कर दी है जन्ममरणादि क्लेशरूपी शापदशा की आपत्ति जिसने ऐसा सत्य वर मुझ को दीजिये।।49।।

हे दयासागर! कृपा करिये। इस याचक के याचनानुसार वचन को अंगीकार करिये। भवसागर से उद्धाररूपी मेरा उपकार करिये। थोड़ी देर के लिये निःसहाय पुरुषों के उद्धार में तत्पर मन को दृढ कर लीजिये।।50।।

आपका विशाल मस्तक देवनदी (गंगा) ने आश्रय कर रखा है। और विशाल (उदार) हृदय दया ने आश्रय कर रखा है। तथा विशाल (विस्तृत) शरीर श्री गिरिजा ने आश्रित कर रखा है। फिर इस अत्यन्त सूक्ष्म, कान के छिद्र रूपी स्थान में भी मेरी वाणी का धारण कैसे नहीं होता (इस दीन की वाणीको क्यों नहीं सुनते)।।51।।

हे हर! यह मेरी बुद्धि आप में गाढ अनुराग (प्रेम) के कारण पीडित है। और आपको प्रसन्न करने में असमर्थ है। इसलिये आपकी स्तुति से विमुख हुई यह (मेरी बुद्धि) अपनी पीडा को निवेदन कर रही है। कामिनी भी स्वामी में अनुरक्त हो और उसको राजी करन में असमर्थ हो तो खुशामद आदि न करके अपनी व्यथा स्वामी के आगे निवेदन कर देती है।।52।।

हे महेश! आप मेरी मति के प्रियतम (अत्यन्तप्रिय, तथा प्राणप्यारे पति) हो। वह गुण (सत्त्व रजः तम) वाली, (कमिनी पक्ष में सौन्दर्य-चातुर्य आदि

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vahi Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वाली) है तौ भी आपकी हृदयंगम (हृदय तक पहुँच वाली) नहीं। इसलिये हे महेश! आपके विरह से विह्वल होकर नहीं कही जा सकै ऐसी नाना प्रकार की कामनाओं से कदर्थना (पीडा) को प्राप्त होती है (कामिनी भी गुणवती होकर भी जो प्रिय की हृदयंगम नहीं होती वह कामदेव की पीडा को प्राप्त होती है)।।53।।

हे भव! (शंकर) इस मेरी मति को आपके आलिङ्गन का आनन्द न हो, फिर आपके द्वारा किये गये उपभोग (आस्वादन) की तो बात ही कहाँ? किन्तु हे स्वामी! तुम्हारे दर्शनमात्र की अभिलाषा रखने वाली मेरी इस मति को यों उपेक्षा (बेपरवाही) क्यों कर रहे हो?।।54।।

यह मेरी मति (मतिरूपी कामिनी) स्वभाव से कुटिलता (कर्मशाठ्य, कामिनी पक्ष में कुटिलहृदयता) को नहीं पहुँची। तथा स्वभाव से मलिनता (सदोषता, कामिनी पक्ष में मैलापन को पहुँचने वाली भी नहीं। फिर आपके प्रति अत्यन्त गाढ़े प्रेम से पीड़ित इस बुद्धि तथा (कामिनी) के प्रति कठोर हृदय क्यों धारण करते हैं (कृपा करिये)।।55।।

मेरी इस मुग्धतम (अत्यन्तमूढ, कामिनी पक्ष में-मुग्धावस्था वाली सुन्दरी) मति को परिणाम दशा को प्राप्त हुई (प्रकृति की परिणाम दशा को ही सांख्य में बुद्धि कहते हैं) समझकर यदि त्याग करते हैं (कामिनी पक्ष में अतिमुग्ध को भी परिणाम (प्रौढता) को प्राप्त समझते हैं) तौ और क्या कहा जाय। यह घने मोह (अज्ञान) से मूर्च्छित (पीडित) होकर आपकी निर्दयता को प्रकट करो (आप निर्दय हैं जो इस पर दया नहीं करते)। कामिनी पक्ष में अतिमुग्ध सुन्दरी को भी प्रौढ (पकी अवस्था की) समझकर जो त्याग किया जाय तौ वह 'मोह' (काम के बढाव) से मूर्छित होकर प्रियतम की निर्दयता को सूचित करती है।।56।।

हे अमृत कलश को धारण करने वाले, देवनदी (गंगा) को धारण करने वाले तथा चन्द्रमा को मुकुट बनाने वाले! अनङ्ग रूपी चण्डाल के समागम से चारों तरफ भ्रमण करने वाले, अत्यन्त मैलवाले इस चञ्चल मन को शुद्ध कर दीजिये।।57।।

हे भव! संसाररूपी निर्जल मरु प्रदेश के भ्रमण क्लेश से दुःखित, तथा बड़ी विकट इन्द्रियों के शब्द-स्पर्श-आदि विषयरूपी ऊष्माओं (गर्मी) से प्यासे इस मेरे हृदय को आपके चरणों का स्मरण रूपी अमृत आनन्दित करता है (भव से संतप्त मेरे हृदय को चरणों का स्मरणरूपी अमृत, शीतल तथा आनन्दित करता है)।।58।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे हर! विषयरूपी नागपाश से बेबस, संसार रूपी महासमुद्र में डूबा, अनाथ, तथा घनी अविद्या रूप जो पाषाण उससे पीडित, किन्तु आपका शरणागत ऐसे मेरा उद्धार करिये।।59।।

हे कामदेव के मर्दन करने वाले! निरंकुश यमदूतों से ले जाया जा रहा, अना:थ, किन्तु अब आपके चरणों का आश्रय लिये हुए मुझ को, घने कृपा रूपी अमृत से पूर्ण आपकी दृष्टि से देख लीजिये।।60।।

अभयदान का जो शब्द उसके मिससे फैल रहा है अमृत प्रवाह जिसका। धारण की है मन्दहास्य रूपी अमोघ चाँदनी जिसने, ऐसे आपके मुखरूपी चन्द्रमा को देखते हुए मेरा अज्ञानरूपी अन्धकार कब शान्त होगा?।।61।।

हे प्रभु! प्रबल आध्यात्मिकादि संतापों से पीडित शरीर वाले शिशु (बालक) इस द्विजपति (विप्रश्रेष्ठ) को पालन करने के लिये, शिशु द्विजपति (चन्द्रमा) को पालन करने के लिए जिस तरह मस्तक में देवनदी को धारण करते हैं उस तरह हृदय में क्या दया को धारण नहीं करते है? अवश्य करते हैं।।62।।

हे प्रभु! आपके चरणों में प्रणाम करने वालों के तापरूपी विपत्तियों के नाशन में समर्थ, नष्ट कर दी है अज्ञानरूपी अन्धकार की स्थिति (सत्ता) जिसने, अमृत को झरने वाली ऐसी दया को- मस्तक पर जैसे चन्द्रकला को धारण करते हो,- वैसे हृदय में धारण करो। ताप और अन्धकार को दूर करना, तथा अमृत को बरसाना ये धर्म दया और चन्द्रकला दोनों में हैं।।63।।

हे प्रभु! अभिलाषा से भी अधिक सिद्धि को देने वाली, संसार रूपी दावाऽनल को दूर करने वाली, कभी दूसरी तरफ नहीं जाने वाली दया को इस तरह धारण करिये जिस तरह अपने अंग में हिमालयकन्यका को धारण करते हैं। ये सब विशेषण दया और पार्वती दोनों में समान है।।64।।

स्फटिक जाति का (अर्थात् पाषाण जाति का) चिन्तामणि (इस नाम का रत्न) अचेतन है, कल्पवृक्ष कठिन काठ का बना है, कामधेनु पशुजाति की है, तौ भी ये भाग्यवानों के भाग्य से अभीष्ट फल देने वाले हैं।। हे प्रभु! आप तो त्रिलोकी के स्वामी, परिपूर्ण शक्तिवाले, पूर्ण कृपा के समुद्र हैं, तौ भी करुणाऽक्रन्दन करते हुए तथा विधाता के द्वारा ठगे हुए मुझ पर दर्शन देने मात्र का भी आदर नहीं स्वीकार करते, अर्थात् दर्शन भी नहीं देते।।65-66।।

'कब अवसर मिलै' इस बुद्धि से दरवाजे के समीप बहुत काल तक ठहरे। कुपित और हर कुछ बोलने वाले दरवानों के द्वारा तिरस्कार सहे। इस तरह वैभव

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लेश के अभिमान से अन्धदृष्टि वाले कुत्सित धनिकों के आगे कौन सा तिरस्कार न सहा?।। संमान मुरझा गया। दुबला होता हुआ यह शरीर भी अत्यन्त खिन्न हो गया। मन मोह (अज्ञान) के भँवर में चक्कर खा रहा है। धैर्य समाप्त हो रहा है। पाँचों तरह के क्लेशों की बात कभी नष्ट नहीं होती, अर्थात् अविद्यादि पाँच क्लेश सदा बने रहते हैं। दूर दराज इस संसार की भूमि में यह बुद्धि व्यर्थ भटक रही है।। इस तरह हे स्वामी! भयंकर सैंकडों पीडाओं के आने से अति कठिन, मोह रूपी ओंडे निर्जल गड्ढे में घुसता हुआ आपत्तिकाल में ढाँढस बँधाने में समर्थ अन्य किसी मित्र को नहीं पाता हुआ, यह दीन जन दयासागर आपकी अवज्ञा का पात्र होने योग्य नहीं।।67-68-69।।

इस संसार में चंचल कमल के पत्ते पर पड़ी ओस के समान चंचल इस लक्ष्मी (धन) मूढ मन वाले ऐसे (तुच्छ धनिकों) के आगे कठिन और टेढी भ्रुकुटियों से उत्पन्न हुए अपमान को, धन के लेश की तृष्णा से अन्धी हो गई है दृष्टि जिनकी, अतएव नष्टबुद्धि हुए लोग सहते हैं।। मैं तो प्रभु के चरणकमलों क नवीन रज (पराग) से पवित्र, भक्ति के आवेश से गौरवयुक्त मस्तक को धारण करता हुआ। आनन्द के उत्कर्ष (बढ़ाव) से जो असाधारण वेग उससे मिली हुई उत्कण्ठा से स्त्री वेष धारण करके नाचने वाले पुरुष का रूप धारण करूंगा, जिससे श्री भूतनाथ की भ्रुकुटि रचना का पात्र होऊँ (भगवान् भूतेश कौतुक से मेरे ऊपर दृष्टि डालें)।।70-71।।

तीरस्थित वृक्षों के पुष्प समूह से सुगन्धित, पर्वत के शिला समूह से गिरने के कारण शब्द सहित प्रवाह वाले देवनदी (गंगा) के जल में संसार के भ्रमण जन्य खेद से दुर्बल अंगों से उपलक्षित, सांसारिक क्लेश और आपत्तियों को कुछ नहीं गिनते हुए हमारी श्री शंकर की चरण सेवा से तृप्ति कब होगी?।।72।।

भगवान् चन्द्रशेखर के चरणकमल को मस्तक पर धारण करते हुए इस ही लिए अत्यन्त आनन्दयुक्त, नष्ट हो रही हैं सांसारिक संताप रूपी विपत्ति जिनकी, ऐसे हमारा सांसारिक बन्धनरूप काष्ठ समूह यमुना जल से मिले हुए गंगा के तरंगों से (अर्थात् प्रयाग में) अँगारा (कोयला) कब होगा अर्थात् देखिये कब दग्ध होता है।।73।।

सब प्रकार से एकमात्र पार्वतीपति श्रीशंकर के शरणागत हुआ, इस ही लिये अन्य किसी भी बात का ध्यान न हो, ऐसे परमानन्द से निश्चल अङ्ग वाला, गंगा के किसी तीरवृक्ष के नीचे बैठा हुआ, अपने आत्मा में ही जिसको आनन्द प्रतीत हो रहा ऐसा कोई बड़ा भाग्यशाली ही शान्तिस्वरूपी अमृत के

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आस्वाद को प्राप्त होता है।।74।।

हे स्वामी! आपके बार-बार लापरवाही रूपी क्रीडा से तिरस्कार करने पर ये इन्द्रियरूपी बैरी मनुष्य को संसारी चक्रमें घुमाने के लिये तयार न होवैं तो कुल-गुण (चातुर्यादि) कीर्ति-बुद्धि इनके अभिमान से स्तब्ध (ऊँची) हुई गर्दन को सभा में झुकाने के लिये कौन क्षमता धारण करता है? आपकी अवज्ञा ही अर्थात् दयादृष्टि न होना ही सभा में नीची गर्दन कराता है।।75।।

संमान किसको प्यारा नहीं? अपनी दीनता के कारण दुष्टों के मुख देखने की खोटी स्थिति किसको प्यारी लगती है। लज्जा से नम्र हुआ मस्तक किसको पसन्द है? किन्तु स्वामी मन से दया न रख कर, अवज्ञा (तिरस्कार, बेपरवाही) रखते हों तो वैरियों से दास बनाये गये हम (काम-क्रोध से बेबस हुए हम) धन के मद से मस्त, आज कल के धनिओं (राजा आदि) को लाचारी से से रहे हैं (उनकी सेवा कर रहे हैं)।।76।।

हे प्रभु! राजाओं के चोबदारों (दरबान पहरायती) से धमकाये गये भी राजाओं के दरवाजे पर ढीठ होकर जो हम बैठते हैं। अभिमान में मस्त राजा के प्रिय पुरुषों के दुष्ट भाषण और दुष्ट विचारों से जो जलाये जाते हैं, स्तुति रूपी पापों से जो भगवती सरस्वती का हम तिरस्कार (अपमान) कर रहे हैं, हे प्रभु! यह सब हमारी तरफ से आपके मुँह मोड लेने का चमत्कार (फल) है।।77।।

प्रथमापराध (कौमारावस्था में संगमादि) से कुपित हुए मृगनेत्री के मुख को देखकर, जिसमें कि कोप के कारण कपोल लाल हो गये, आखें लाल और आँसुओं से भरी, बिम्बफल के समान रक्त ओष्ठ फडक रहा था, उस मुख को देखकर जो हमारा मन प्रेम से युक्त, आश्चर्यसहित, नम्रतायुक्त, लज्जा सहित तथा लालसा और त्रास (भय) सहित हो गया था वही अब श्रीशंकर के भक्ति रस से सिक्त (सिँचा) होकर दुनियां से खिन्न और शम (शान्ति) युक्त हो गया है।।78।।

हे प्रभु! क्षणिक (अस्थिर) तथा थोड़ा, यह इन्द्रियों के विषयों (रूप-रस आदि) से उत्पन्न हुआ सुख, आपके ध्यान से पैदा हुए, स्थिर और महान् सुख के द्वारा दबा दिया जाय तो इसमें क्या आश्चर्य, किन्तु यह आश्चर्य है कि आपके ध्यान करने से जो आनन्द का आँसू थोड़ी देर के लिए पैदा हुआ और थोड़ा भी आया, उससे बड़ा स्थिर और बडा (अधिक मात्रा वाला) सांसारिक दुःखों से पैदा हुआ यह नेत्र जल दबा दिया जाता है (स्थिर और विशाल भी सांसारिक दुःख क्षणकाल के लिये हुए थोड़े से भी आपके ध्यान से दबा दिया जाता है।।79।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे महेश! अज्ञान से अन्ध, आश्वास देने वाले बान्धवों से रहित, इन्द्रिय नामक राक्षसों से ग्रास किये गये (खाये गये), काम-क्रोधादि, भीतरी शत्रुओं से मोहरूपी महान् अन्धे कुए के खद्ढे में डाले गये, विलाप करते हुए, शरण के लिए आये हुए, जन्म-जरा-मरणादि संपूर्ण आपत्तियों के स्थान (अर्थात् उनसे घेरे गये) धैर्य रहित मुझको मत छोड़िये। दया से कोमल इस दृष्टि से आश्वासन करिये।।80।।

हे स्वामी! त्रिलोकी के उद्धार में समर्थ, असहायों की रक्षा करने के स्वभाव वाली, यह आपकी दृष्टि पीड़ित भी मेरी उपेक्षा (लापरवाही) करती है, यह मेरे खोटे कर्म की महिमा (वैभव, करामात) है। यह सर्वसमर्थ आक़ाश (संस्कृत में आकाशवाणी 'दिव्' शब्द स्त्रीलिङ्ग है) मेघों में भरे अमृत (जल) के द्वारा पृथ्वी को पूरित करता है तौ भी मोर के मुख में यदि दो तीन भी बूँदें न पड़ें तो आकाश को क्या कहा जाय? (उसकी क्या निन्दा)।।81।।

हे पार्वतीपति शम्भु! निरन्तर नई रहने वाली करुणा (दया) से भीतर भरे हुए, शान्त हो गया है नमस्कार करने वाली जनता (जनसमूह) के क्लेशों के लेशमात्र का भी प्रवेश (स्पर्श) जिससे, ऐसे स्वच्छ हृदय को धारण करने वाले आप, प्राणों की रक्षा की याचना से दीन हुए साधारण (क्षुद्र) प्राणिवर्ग की व्यापत्ति (जन्म-जरा-मरणादि आपत्ति) से पैदा हुए संताप के नाशन में निपुण, ऐसी आपकी वाणी को छोड़िये (अभयदान की वाणी दीजिये।)।।82।।

बड़े विकट हैं खड्डे जिसमें ऐसा यह संसार मार्ग दुःखों (रोग, भयों) से भरा है। यह अज्ञान रूप रात्रि जिसका अन्त नहीं, वह जिससे ज्ञान रूप चाँदनी (प्रकाश) दूर हो गया है ऐसी (अर्थात् अँधेरी) है। ये भयंकर विषयरूपी प्रलय के वायु प्रज्ञा (चेतना) नामक दीपक को बुझा रहे हैं। इसलिये हे स्वामी! सांसारिक क्लेशों को शान्त करने वाली कृपादृष्टि दीन पर दीजिये।।83।।

नीरोग शरीर, नवीन (तरुण) अवस्था, संस्क़ारयुक्त बुद्धि, सबों से आदरणीय ब्राह्मण जाति, भक्ति से सुलभ आप सरीखे स्वामी, अनेक पुण्यों से मिलने वाली यह सब सामग्री जब तक न बिखर जाय तब तक हे स्वामी! मेरा यह करुणाजनक विलाप सुन लीजिये।।84।।

श्रीशंकर के चरणकमल की स्तुति के कारण पवित्र और सुन्दर है क्रम (परिपाटी) जिनकी, अमृतसार से सींचे हैं अक्षर जिनके, शरत्काल के पूर्णचन्द्रमा की किरणों के समान कान्ति वाली, खिलती हुई जो मालती की कली उसके

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

समान कोमल, ऐसी सूक्तियाँ (सुन्दरवाणी, रचना) किसी भाग्यवान् कवि की ही सर्वोत्कृष्ट (विजय पाने योग्य) होती हैं।।85।।

जो भगवान् शंकर की स्तुति करते हैं वे वसन्त में मलय पवन से हलती हुई लताओं से झरते हुए मकरन्द के मदसे मस्त हुए भौंरो के गुञ्जारव के मिससे (अर्थात् भौंरो का शब्द तो बहाना है अन्यथा वह) नाद (आवाज) करती हुई जो कामदेव की प्रत्यञ्चा (धनुष की डोरी) उसके शब्द हैं, उनसे डरी हुई जो श्रेष्ठ अङ्गना (स्त्रियाँ), उनकी भुजाओं से आलिङ्गन की गई है ग्रीवा (गर्दन) जिनकी, ऐसे होकर क्रीडावन में निवास करते हैं (शंकर की स्तुति करने वालों को लौकिक सब सुख अनायास मिलते हैं)।।86।।

श्री शम्भु की स्तुति करने वाले भाग्यवान् कामदेव के प्रभाव से अलस हुई जो सुन्दर स्त्री उनके स्तनभार से लिपटा हुआ है वक्षःस्थल जिनका ऐसे, प्रातःकाल के समय समीप में स्थित जो बाहर का आँगन उसमें के बाग में उत्पन्न हुए आमों में बैठे हुए मनोहर कोयलों के शब्दों से। चलते हुए मलय पवन से हलती हुई सुन्दरमल्लिका (बेला) के खिले फूलों से फिसलते हुए भ्रमरों के गुञ्जारव से। जल में डूबे हुए मत्स्यों (मछली) के फड़कने से बढ़ा हुआ जो बावड़ियों का कम्पन (लहर) उससे डरे, और कमल के गुम्फों में बैठे हुए बालक हंसों के शब्दों से। बजते हुए नगारे, झालर, मृदङ्ग, तुरुही, बड़े नगारे, इनके शब्दों से बोलते हुए गृहपालित मोरों के शब्दों से। अमृत समान मधुर मद्य से साफ हुए कण्ठ से निकली तान रूपी रसायन से सुन्दर गायिकाओं के गीतों से। चतुर वीणावादकों से निकले विभास राग के स्वरक्रम का साथ करने वाली वीणा, तथा बंसी के शब्दों से। प्रातःकाल के गुणवर्णन में लगे बन्दी समूहों की स्तुति से जगे तोता मैनाओं की आपस की क्रीडा कलह के हल्लों से। बाहर क्रीडा करती हुई स्त्रियों की झनझनाती रत्न की काञ्ची (कौंधनी-कनगती) के बजते हुए सुवर्ण के घुँघरुओं के झनझनाहट शब्दों से। अपने खुरों से भूमि खोदते हुए घोड़ों के हिनहिनाने से उत्पन्न हुआ है जागरण (जगना) जिनका ऐसे, तथा हलाई है गर्दन जिनने ऐसे हाथियों के गले के घण्टा शब्दों से, धीरे-धीरे शयन (निद्रा का रस) छोड़ते हैं।।87-88-89-90।।

पशुपति सेवा कुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज मृत्युञ्जयरञ्जक दशम।।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दीनाक्रन्दन एकादशस्तोत्र

(११)

❀❀❀

स्नेह के कारण झर रहे हैं दोनों स्तन जिसके ऐसी माता अपने बच्चों के जीवनरक्षार्थ जैसे अमृत (दुग्ध) झरती हुई उसका संजीवन करती है, इसही तरह वाणी का अद्भुत अमृतरूप रसायन झरती हुई भगवती सरस्वती (उक्तिदेवी) पीडाविह्वल जिस मेरा संजीवन (रचनाविषय में) करती है वह मैं धन्य हूँ।।1।।

मैं धन्य हूँ कि दुःसह (कठिन) विपत्तियों में पड़े हुए मेरे-धारण की है उन्नति (शब्द और अर्थ का प्रकर्ष, तरक्की) जिसने ऐसी, जिनने पुण्य नहीं किए उनके लिए अप्राप्य, कल्याण देने वाली, देवताओं के सेवन योग्य, अतएव सुमेरु पर्वत की (राह, मार्ग) के समान यह वाणी दूर स्थित नहीं। अपि तु निकट ही है, क्योंकि वाणी मुख में ही तो है।। सुमेरु की राह (मार्ग) भी दुःसह विपत्तियों में पड़े हुए के लिये धारण की है ऊँचाई जिसने अर्थात् अत्यन्त ऊँची (कठिन)। जिनने पुण्य नहीं किए उनके लिये अगम्य, 'कल्याणिनी' (संस्कृत में 'कल्याण' सुवर्ण का भी नाम है) अतएव सुवर्णमयी है। तथा देवताओं से सेवन योग्य है।। श्लेष अलंकार।।2।।

मैं धन्य हूँ कि मोह (अज्ञान) रूपी तिमिर (नेत्ररोग से) अन्धदृष्टि) वाले भी मेरे लिये श्री गिरिश (शंकर) के आराधन के वास्ते दयावान् विधाता ने सुन्दर रचना वाली, माधुर्य, ओज, प्रसाद, गुणवाली, धारण की है लक्षणादि वृत्ति के द्वारा टेढी (साधारण उक्ति से विलक्षण) भङ्गी (बोलने का प्रकार) जिसने ऐसी यह सरस्वती (वाणी) प्रदान की।।।।

श्लेष से यह भी अर्थ होता है कि तिमिर नामक नेत्र दोष से अन्धे पुरुष के लिये दयालु विधाता ने सुन्दर स्वर वाली, गुण (तार) वाली, टेढी बनावट वाली, सरस्वती (वीणा) शंकर के आराधन के लिए दी।।3।।

शंकर के नेत्र की अग्नि से भस्म किये कामदेव के संजीवन करने वाली

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नवीन औषधि की तरह, शंकर ही हैं एक स्थान जिसके ऐसी नवविवाहित गौरी की चकित दृष्टि लहरी (नेत्रशोभा) के समान विधाता ने - भव (संसार) रूपी अग्नि से भस्म हुए मेरे लिये संजीवन औषधि की तरह, तथा गौरी की दृष्टि शोभा की तरह श्रीशंकर ही हैं एक विषय (वर्णनीय विषय) जिसके ऐसी यह मेरी वाणी मेरे लिये बना दी है, यह मैं जानता हूँ।।4।।

जन्म-जरा-मरणादि जन्य शोकरूप अग्नि से तपे हुए मेरे हृदय से जैसे तैसे उठी, तथा गद्‌गद हैं कोमल (दुर्बल) सुप्तिङन्त (शब्द और धातु क्रिया रूप) पद जिसके ऐसी यह मेरी वाणी- तपे हुए स्थान से जैसे तैसे डगमगाते कोमल चरण वाली गौ (गाय) जैसे जल प्रवाह से शीतल स्थान में प्रवेश करती है इस तरह धीरे-धीरे करुणारूपी अमृत प्रवाह के झरने से शीतल ऐसे श्रीशंकर के हृदय में भी प्रवेश कर लेगी। अर्थात् वह भी इस वाणी को हृदय में स्थान दे देंगे।।5।।

अविद्या नामक अज्ञान को धारण करता हुआ, तथा संसार में भ्रमण करना जिसका किसी तरह भी लंघनीय (दूर करने योग्य) नहीं ऐसा मैं स्तुति के नाम से जो शंकर की खुशामद रूपी चपलता बार बार करता हूँ इससे अहार्य (पर्वत) पुत्री (श्रीपार्वती) के पति श्रीशंकर का स्पृहणीय तथा बड़े ऊँचे दरजे का सौकुमार्य (कोमल भाव, दया) ही अपराधी है।।6।।

जो भगवान् शंकर मस्तक पर निरन्तर आवाज करते हुए निर्झरों (झरनों) के प्रवाह से गग्गगार करती हुई अमर नदी (गंगा) को धारण करते हुए भी भक्तजनों से कलशों के द्वारा अभिषेक स्वीकार करते हैं ऐसे दयालु प्रभु से विज्ञप्ति (प्रार्थना) करने का कौन नहीं उत्साह करै, अपि तु प्रत्येक का उत्साह होता है।।7।।

पापरूपी भयंकर निदाघ (ग्रीष्म, गर्मी) के कारण जन्म है जिसका ऐसा दमुना (अग्नि) मेरे अन्तःकरण में जल रहा है, उसने मुझको जला डाला। इसलिये प्रतिभा (उत्तमबुद्धि) से रहित, जरा-मरणादि के भय से विगलित हुए (गिर रहे) मेरे गले से वाणी कैसे निकलै।।8।।

हे पिनाक नामक धनुष को धारण करने वाले! (इससे मेरे सब शत्रुओं का संहार हो जायगा, यह ध्वनि है) तथा तीव्र पीडाओं से छुटकारे के कारणभूत हे शिव! मैं जो कुछ विलाप करूँ- मोह (अज्ञान) रूपी विकट जंगल के अतिसंकट स्थान में स्थित, अतएव आतुर (घबराये हुए) मेरे कल्याण के लिये वह विलाप आप विचारपूर्वक सुनिये।।9।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

हे इन्दु (चन्द्र) को धारण करने वाले! मेरे इस करुण-क्रन्दन को कान में

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

धरिये। ब्रह्मादि सब कारणों के भी परमकारण। आपसे भी बढ़कर स्तुति को कान में धरने वाला और कौन है? 'कर्णधार' का दूसरा अर्थ है नाव को चलाने वाला। आपसे बढ़कर ऐसा चतुर नाविक कौन होगा जो मस्तक पर नक्षत्रपति (चन्द्र) के खण्ड को धारण करते हुए आप न जाने किस किस अखण्डपुण्य अर्थात् पूर्ण पुण्य (सुकृत) करने वाले को संसार सागर से तरा देते हो। 'उडुप' छोटी नौका (डोंगी) को भी कहते हैं। तो जो एक छोटी नौका के खण्ड को धारण करता है वह सागर से मनुष्यों को तरा दे यह आश्चर्य नहीं क्या है?।।10।।

हे चन्द्रशेखर! अपवित्र हम सरीखों से की गईं 'खुशामद' (स्तुति) रूपी चपलतायें आपके मन को आनन्दित नहीं करती, यह मैं जानता हूँ। चाहै कुत्ते ने प्रसन्न करने के लिये ही किये हों, किन्तु उनके भूमि में लोटने का क्या आदर किया जाता है? नहीं।।11।।

अथवा, हे स्वामी! मूढों के चरित्र भी कृपा सागर आपको क्या प्रसन्नता पैदा नहीं करते? अपितु करते हैं। लम्पटों के 'लम्पाकपुर' में रहने वाले स्वतन्त्र आपको क्या बालकों की चेष्टा आनन्दित नहीं करती? अपितु करती ही हैं।।12।।

अस्पष्टार्थ, करुणा उत्पादक, भोले आदमियों के वचनों से दयालु पुरुषों के हृदय जिस तरह पिघल जाते हैं उस तरह जिनने बहुत सभा देखी है (अर्थात् अत्यन्त सभाचतुर), प्रतिभा (विशिष्ट बुद्धि) शाली, ऐसे प्रौढ पुरुषों के बड़े सुन्दर और प्रौढ प्रकरण हैं मध्य में जिनके ऐसे वाणी के विस्तार से द्रवित (प्रसन्न) नहीं होते।।13।।

दुग्धसमुद्र को देने वाले भी (बालक उपमन्यु को) आप भक्त जनकी दी हुई दुग्ध की एक बूँद भी स्वीकार करते हो (अर्चन के समय)। सूर्य-चन्द्र-वह्नि रूप तीन तेज युक्त नयन वाले भी दीपक को स्वीकार करते हो। वाणियों की उत्पत्ति के कारण भी आप हम सरीखे मुग्धों के वचनों को सुनते हो। भक्त जनों के अनुरोध (मुलाहजे) से आप क्या-क्या नहीं करते हो।।14।।

हे देव! 'सत्यवती' सत्ययुक्त भी यह मेरी वाणी जगत्प्रसिद्ध अनसूया असूया (रोष) रहित है, यह आश्चर्य है। श्लेष से दूसरा अर्थ निकलता है कि जो 'सत्यवती' (पराशरमुनि की स्त्री) है वह 'अनसूया' अत्रिमुनि की पत्नी कैसे होगी, किन्तु यह आश्चर्य यहां घटित होता है। पूर्वोक्त प्रकार से कही गई भी यह वाणी आपको 'न रुन्धती' नहीं रोकती (नहीं रोक पाती) हुई है, तौ भी आपका आराधन करना चाहती है। श्लेष से अर्थ निकलता है कि जो 'अनसूया' (अत्रिपत्नी) है वह 'अरुधन्ती' (वसिष्ठपत्नी) कैसे होगी (यह विरोध है),

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

किन्तु 'न रुन्धती' (नहीं रोकती हुई) यह श्लेष के कारण दूसरा अर्थ होने से विरोध का परिहार हो जाता है (विरोधालङ्कार)।।15।।

आपके पररूप इस मेरे हृदयमें प्रवेश करके उसी जगह स्थिति करने वाली मेरी इस वाग्देवी (वाणी) को आपने ही 'उन्मुख' (अपकी तरफ ऊँचे मुखवाली) बनाया है। अब उस वाणी को धैर्य 'तेरा मैं स्वीकार करूंगा' यों दृढता बँधाकर, अब जिसकी विरहपीडा पराकाष्ठा को पहुँच गई है ऐसी इस वाणी का तिरस्कार (लापरवाही) करते हो, यह अनुचित है।।16।।

यदि यह कहा जाय कि 'शंकर के हृदय में दूसरी का अवकाश नहीं शंकर का आधाभाग श्रीपार्वती को मिल चुका है ' तौ - 'एकमात्र तुम ही मेरी प्रिया होगी, यह श्रीपार्वती को दिया हुआ 'वर' (वचन) यदि स्मरण करते हो तो फिर प्रेम के साथ आकाशनदी (श्रीगंगा) तथा चन्द्रकला को मस्तक पर कैसे धारण करते हो? (इस लिये मेरी वाणी को भी हृदय में स्थान देना अनुचित नहीं)।।17।।

हे स्वामी! अपने आपको आप अत्यन्त धीर और गंभीर मानते हैं, इस लिये स्वभाव से ही सीधी, कुलीन, तथा मुग्ध इस मेरी वाणी को निश्चय ही आप तिरस्कार करते हैं। किन्तु क्या यह नहीं जानते हैं कि भक्ति से विनम्र हुए आपके भक्तों के सान्त्वना के समय में इस वृद्धा बढी हुई करुणा (दया) ने आपको सैकडों बार नचा नचा दिया है। श्लेष से अर्थ होता है कि जब आपको एक वृद्धा नाना नाच नचा रही है तब एक मुग्धा (इस मेरी वाणी) को क्यों छोड़ते हैं?।18।।

हे स्वामी! यह मेरी वाणी 'किस प्रकार मैं स्वामी की प्रिय बनूं' यो पीडा से कदर्थित (दुखी) होकर निर्लज्जता से खुशामद के वचन भी शुरू करती है, जो वचन इसकी मुग्धता से विशृङ्खल (गडबड) हो जाते हैं। किन्तु श्रीकात्यायनी (पार्वती) वचन सुनने से 'दुर्ललित' (लाडले) आपको ये (मुक्तोपम) (संसार से 'मुक्त' के समान, अथवा मोती के समान भी) वचन आनन्दित नहीं करते। 'कात्यायनी' पद का संस्कृत में 'अर्द्धवृद्धा' (आधी बूढी) अर्थ है। इसलिये जो 'अर्द्धवृद्ध' के वचन सुनता है उसको मुग्धतामिश्रित वचन कैसे आनन्दित करेंगे, यह भी अर्थ होता है।।19।।

सबके हृदयतत्त्व को जानने वाले हे प्रभु! असहनीय विरह ज्वर से पीडित इस मेरी वाणी में सर्वतन्त्र स्वतन्त्र आपकी प्रीति न होती हो तो फिर सबके अन्तर्गत (अर्थात् अन्तःकरण की) पीडा हरण के लिए जो आपने दृढ प्रतिज्ञा की है वह कैसे भूली गई(आपने सबके हृदय की पीडा दूर करने का व्रत ले रखा

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva-Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

है वह मिथ्या हो जायगा)।।20।।

हे नीलकण्ठ! आपने शरीर के अर्द्धभाग में भगवती पार्वती को धारण करते हुए आप चन्द्रकला को (अथवा 'कला' शिल्प को) भी धारण करते हो। अर्द्ध भाग में पार्वती को धारण करते हुए हृदय में उस दया को भी धारण करते हो जिस दया ने रक्षा की प्रार्थना करते हुए ब्रह्मादिक देवताओं के बीच में आपको ही नीलकण्ठ बना दिया (अर्थात् ब्रह्मादि सब ही देवता मौजूद थे, परन्तु समुद्र मंथन जन्य कालकूट से त्रिलोकी को बचाने के लिये आपको ही 'नीलकण्ठ' बनना पड़ा, याने विष पीना पड़ा जिससे कण्ठ में नीलता आ गई)। किं वा सुदया ने शरण चाहने वालों में नचाते नचाते आपको 'नीलकण्ठ' अर्थात् नाचने वाला मयूर बना दिया। किन्तु यह सब होने पर भी विरह पीडित इस मेरी वाणी के विषय में रोष में जिस तरह होओ इस तरह मुख टेढा करते हो।।21।।

हे स्वामी! स्वच्छ, चञ्चल, ऐसे जलों (ड, ल की श्लेष में एकता है, इसलिए 'जडों') से कम्पयुक्त। 'जड' पक्ष में 'उद्वेलिताम्' अर्थात् अपनी वेला मर्यादा उलाँघ गई, अतएव अपने (पद) स्थान से नीचे आ गई (तथा अपने साध्वी पद से नीचे गिर गई) ऐसी देवनदी (गंगा) को मस्तक पर धारण करते हो, फिर जिसकी आप समर्थ को छोड़कर दूसरे किसी देवता में 'गति' वर्णनीयता की योग्यता नहीं (तथा पति को छोड़कर दूसरी गति जिसका उपाय नहीं, अर्थात् पतिव्रता) तथा साधु 'वृत्त (चरित्र) वाली- वाणी पक्ष में साधु (सुन्दर) हैं 'वृत्त' वसन्ततिलकादि 'छन्द' जिसमें ऐसी इस मेरी वाणी को आप त्याग करते हैं! स्वतन्त्रचरित्र आपको क्या कहा जाय।।22।।

अधिक कहने से क्या लाभ, हे प्रभु! यदि यह मेरी वाणी आपके हृदयंगम नहीं, तौ फिर इस (वाणी) के घर में अर्थात् मेरे हृदय में क्यों निवास करते हैं? प्रियतम के साथ एक घर में रहना और उस (प्रिय) के द्वारा उपेक्षा (लापरवाही) करना यह मानिनी स्त्रियों के लिये मरण से भी अधिक दुःखदायी है।।23।।

हे वाग्देवी! हे माता! धैर्य धारण करिये। वामाङ्ग में स्थित शिवा देवी (पार्वती), शिर में स्थित चन्द्रकला, तथा गंगा, ये पीडा के कारण विह्वल तुम्हारी विज्ञप्ति (प्रार्थना) को प्रभु के लिये निवेदन करके स्त्रीजनोचित तुम्हारा पक्षपात (तरफदारी) करेंगी। स्त्रीजनोचित स्नेह के कारण स्वामी को तुम्हारे अभिमुख कर देंगी।।24।।

यह चन्द्रकला स्वभाव से ही कुटिल (टेढी, कुटिलहृदयवाली) यदि है, और यह देवनदी भी नित्य तरङ्गवाली (मनमौजी) यदि है तौ श्रीनगेन्द्रपुत्री

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

(पार्वती) दया ये आर्द्रहृदयवाली वह धन्य है, और नगेन्द्र की पुत्री है अर्थात् पर्वत के समान क्षमाशील है, वह तुम्हारी अधिक अवज्ञा (अवहेलना, तिरस्कार) नहीं करेगी।।25।।

हे देवी वाणी! मैं तुम्हारी शरण लेता हूँ। हे कल्याणी! तुमही सुन्दर उक्तियों से भगवान् चन्द्रशेखर की स्तुति करो। मैं तुमको झूँठ बोलने वाले वाचाल (मुखर, अस्तव्यस्तवादी) मूर्खों के लिए तिरस्कारों का पात्र नहीं बना रहा हूँ।।26।।

शरणागतों को वर देने वाली, गुणों से गौर (उज्ज्वल) हे देवी गौरी! ये गौ (मेरी वाणी) गौ (धेनु) की तरह जो कुछ परिमित (अंदाज का) झरती है, अर्थोपनिबन्धन द्वारा कविता करती है। (गोपक्ष में जितना कुछ दूध देती है) उसको उचित समय में सुन्दर कवितापरिपाकयुक्त करके (गोपक्ष में सुन्दर, अग्नि से पका कर) स्वामी के संमुख निवेदन करने के लिये प्रसन्न हो जाओ। क्यों कि आप सबके आकूत (आशय) को समझने वाली हैं।।27।।

यह मेरा वचन अपनी इच्छा से (स्वतन्त्रता से) बनाया है, इस वचननिर्माता ने कभी अच्छे अच्छे प्रौढ पाक (कविता की विशिष्टता) नहीं देखे। मात्रा (यह बात यों और इतनी कहनी चाहिये यों अन्दाज) से रहित है। तथा श्रेष्ठ लोगों से सेवित नहीं, अतएव प्रलापरूप है। तौ भी विषमय (विष की तरह परिणाम में दुःख देने वाले) 'भव' (संसार) रूपी दीर्घ रोग का अच्छा औषध है (उन्मत्तप्रलाप भी मेरा वचन शिवभक्तिमय होने के कारण भक्तजनों के सांसारिक रोगों का औषधरूप अवश्य हो जायगा।।28।।

हे स्वामी! आपके मुकुट में सदा रहने वाली यह सिद्धसिन्धु (गङ्गा) ललाट के अग्नि को जैसे शान्त नहीं कर सकती, इसही तरह मेरे हृदय में निरन्तर जलने वाले एक शोकरूपी अग्नि को मेरे मुख में सदा रहने वाली सरस्वती (वाणी तथा नदी) भी शान्त नहीं कर सकती। आपकी कृपा की आवश्यकता है।।29।।

हे स्वामी! पूर्व जन्म में मैंने यदि खोटा ही काम किया है तौ आप में मेरा यह दृढ अनुराग (प्रेम) क्यों है? और यदि मैंने अच्छे काम किये हैं तौ फिर मेरे अन्तःकरण में जरा-मरणादि चिन्ताजन्य यह शोकाग्नि, जो हृदय को जलानेवाली है, क्यों हो रही है?।।30।।

किसी पहले जन्म में प्रभु शंकर की वाणी-मन और कर्मों के द्वारा

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आराधना करके भी यह मेरा मन पश्चात्ताप युक्त हो गया है। अन्यथा कुल तथा गुणादि के द्वारा पवित्र भी यह मेरा मानुष जन्म संपूर्ण ही निष्फल कैसे हो गया? (सेवा के अनुसार थोड़ा फल मानता हूँ, किन्तु यदि आपकी भक्ति पर दृष्टि देता हूँ तौ मेरे जन्म जैसी सफलता आज तक किसी को नहीं मिली)।।31।।

अनेक जन्मों के पीछे मनुष्य जन्म रूपी नौका पाकर, तथा आप सरीखे करुणाभूषण (दयालु) को भव-सागर से तराने वाला पाकर, जिस मुझको संसार समुद्र को तैरने का पूरा भरोसा हो चुका था, वही मैं यदि इसमें डूबता हूँ तौ इसमें किसकी विडम्बना (हँसी) है? आप ही की तो है।।32।।

स्वामी यदि वाणी-मन-शरीरादिके द्वारा सेवारूप उपकार करने वाले सेवकों पर, तथा कुल-शील चरित्रादि से भूषित योग्य भक्त जनों पर कृपा करते हों तो इसमें क्या आश्चर्य। किन्तु दयालु हृदय सन्त अपात्र जनों पर भी बिना कारण ही करुणा रूपी अमृत के सार से सिँचा हुआ हृदय धारण करते हैं।।33।।

इसलिये समाप्त हो गये हैं अभ्युदय (कल्याण) के सकल उपाय जिसके-खिन्न हो गया है चित्त जिसका, सब आवश्यक चीजों के अभाव से नष्ट हो गया है आचरण जिसका तथा यमराज के भय से अत्यन्त दुःख पाते हुए, जरा-मरणादि अनर्थो से कदर्थित (पीडित) इस (मुझ) को अभयदान देकर स्वयम् आदर करिये।।34।।

जो नीतिमान् आपकी सेवा करता है वह 'अनीति' नीति रहित हो जाता है (यह विरोध दिखता है), किन्तु 'अनीति' अर्थात् 'ईति' (उपद्रवों) से रहित हो जाता है, यह असली अर्थ है। जो आपने अपने हृदय से नहीं मुक्त (त्याग) किया, वह 'मुक्त' हो जाता है (यह विरोध है), किन्तु जिसको आपने अपने हृदय में स्थान दिया (छोडा नहीं) वह 'मुक्त', संसार से उसका 'मोक्ष' हो गया। जो आपकी 'अपचिति' पूजा के लिये तत्पर है वह कभी 'अपचिति' को नहीं पाता, यह विरोध है .किन्तु 'अपचिति' अर्थात् (अपचय, हीनता, क्षीणता) को प्राप्त नहीं होता यह वास्तविक अर्थ है। इसलिये 'भव' (जिससे ब्रह्मा आदि षट् कारणों का भी प्रादुर्भाव होता है) ऐसे आपका आश्रय लिया है) इसलिए तीनों चरणों माफिक यहाँ भी 'भव' का आश्रय लेने से मुझको 'अभव' हो जाना चाहिये, मैं अभी तक 'अभव' (असंसार) संसार से मुक्त क्यों नहीं हुआ?।।35।।

सदा चिन्ता सहित चित्तवाले मुझको रात्रि में 'स्वाप' (सुषुप्ति, सुखनिद्रा) दुर्लभ है। हे प्रभु! निर्दाह (दाह अर्थात् हृदय की जलन से रहित होकर) सदा' अहः' दिन को कब बिताऊंगा? हे शिव! आपके ही एकमात्र वशीभूत

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मुझको अवश्य रक्षा करिये। 'अपरुषः' अपगत दूर हो गई है 'रुट्' (रोष) जिससे अर्थात् रोषरहित ऐसे मेरे ऊपर आप 'कर्कश' कठोर क्यों हो रहे हैं। जो सीधा है उस पर कर्डा नहीं होना चाहिये। यहाँ भी विरोध अलंकार है। जो 'स्वाप' (सुखसे प्राप्ति योग्य) है वह 'दुराप' (दुःख से प्राप्ति योग्य) कैसे? ऐसे ही जो 'वशग' (वश में आया) है, वह 'अवश्य' (नहीं वशीभूत) तथा 'अपरुषः' (कोमल) वह 'कर्कशः' (कडा) कैसे। किन्तु श्लेष के कारण दूसरा अर्थ होने से विरोधनिवृत्ति।।36।।

यह पापी है, खल (दुष्ट, चुगल) है, यों समझकर मुझको छोडना उचित नहीं। जो 'कृतमति' (बुद्धिमान्) है, तथा किसी तरफ से भी जिसको भय की संभावना नहीं, उसको रक्षा की क्या जरूरत? मैं असज्जन और अधम हूं, पुण्य मैंने नही किये, इसही लिये आपके द्वारा दया करने योग्य हूँ।।37।।

यद्यपि मैं अपने ही कुकृत्यों (खराब कामों) से नीचे गिरा हूं तौ भी मैं आपके तिरस्कार का पात्र नहीं। पशु गर्व में आकर अपने आप ही अन्धेरे (सूखे) कुए में गिरता है, किन्तु दया करने वाले दयालु लोग उसकी भी उपेक्षा (लापरवाही) नहीं करते।।38।।

'अत्युन्नत अपने स्थान से गिरा यह चपल और दुष्ट प्रकृति बहुत से कुमार्गों पर घूमेगा' यों मानकर आप मुझको छोड़ते हैं तो ऐसा ही गङ्गा का प्रवाह आपने मस्तक पर क्यों धारण कर रखा है? क्योंकि वह भी अत्यन्त उन्नत अपने पद (आकाश) से गिरकर चंचल और जड (ड-ल-का ऐक्य है, इसलिये जल) प्रकृति यह बहुत से 'कु' अर्थात् पृथिवी के मार्गों को घूमेगा ऐसा है।।

इसको मस्तक पर धारण किया गया है तौ यह गंगा प्रवाह नारकियों (नरक में पडे पापियों) की पीडा को भी दूर करेगा' यह समझकर गंगाप्रवाह को धारण करते हैं तो यह बात अनाथ लोगों की पीडा दूर करने का सदा व्यसन (शौक) रखने वाले, तथा गाढ़ी दया रूपी अमृत के सागर, आपके लिये उचित ही है।।

'अपरिमित जन्मों के पुण्य परिणामों से आपके मस्तक पर स्थान प्राप्त करके मैं सुखपूर्वक रहूंगा यह कहती हुई मेरे जिह्वा के तो हजार टुकडे हो जाँय (आपके मस्तक पर चढने की बात मुख से निकालना भी भक्तों का घोर अपराध है) किन्तु आपके चरण के अग्रभाग के स्पर्शमात्र से मैं एक दो पापी क्या, तीनों लोकों का उद्धार करूं, यह मैं प्रतिज्ञा करता हूँ (चरणस्पर्श मात्र से मेरा इतना प्रभाव हो जाय कि त्रिलोकी के उद्धार करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लूँ, नारकियों के उद्धार की तो बात ही क्या?)।।39-40-41।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

"अत्यन्तदुर्बल, अत्यन्त जड़ता (मूर्खता) युक्त, कुटिल (व्रक्रहृदय वाला), दूसरों को ठगने की कला (चातुर्य) धारण करने वाला, दोषों (ऐबों) का खजाना, यह है" यों समझकर हे प्रभु! मुझको त्याग करते हैं तौ ऐसे समस्त दोषों से युक्त शशाङ्क (चन्द्रमा) को आपने क्यों धारण किया। क्योंकि वह भी कलामात्र होने से अत्यन्त दुर्बल, अत्यन्त है जडिमा (शीतलता) जिसकी ऐसा है। तथा कुटिल (टेढा), कला (एक कला) वान्, दोषा (रात्रि) को करने वाला है। श्लेष अलंकार।।42।।

शान्त (शीतल होने से शान्ति देने वाली) है आकृति जिसकी, द्विजों (नक्षत्रों) का राजा, स्वच्छ, कलात्मक होने से कलङ्करहित है, इसलिये यदि चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करते हों तो - ऐसा ही मैं भी हूँ, क्योंकि आपकी भक्ति के कारण शान्तियुक्त हूँ, द्विजों (ब्राह्मणों) में श्रेष्ठ हूँ, पवित्र हूँ और अकुलीनता आदि किसी तरह के कलङ्क मुझमें नहीं। फिर ऐसे ही गुण वाले मुझको मस्तक पर रचाने की बात तो पाप है, किन्तु आपकी चरणचौकी के समीप भी धरने के योग्य नहीं समझा?।।43।।

पाप में है 'ग्रह' (आग्रह, अभिनिवेश) जिसको तथा दूसरों के 'स्व' (धन) के अपहरण के बिना यह धैर्य को नहीं पाता, अर्थात् सदा दूसरों का धनापहरण करता है, इसलिये यदि आप मुझको त्याग करते हैं तो हे परमेश्वर (सकल समर्थ!) ऐसा ही रुचिमान् (सूर्य) आपके दक्षिण नेत्र के स्थान का पात्र (दक्षिण नेत्र के स्थान पर) कैसे हो गया? क्योंकि सूर्य भी 'पापग्रह' (अनिष्ट फलदाता) गिना गया है। और दूसरों के 'स्वाप' (अर्थात् 'निद्रा') के हरण के बिना उसकी स्थिति नहीं (सूर्योदय होते ही लोगों की निद्रा भग्न हो जाती है)। यहाँ भी श्लेष अलङ्कार।।44।।

हे नाथ! यह सूर्य आपके मित्रत्व (जो भूमि को वर्षा के द्वारा 'मेद्यति' स्निग्ध करै, सींचै) तथा 'गुणी' (गुण अर्थात् तन्तुयुक्त कमल) उनका यह 'बन्धु' (विकासक) है, यह विख्यात करके आपका प्रिय हो गया हो तो, मैं तो नित्य आपकी दासता प्राप्त करके तथा सदा गुणियों की सेवा में तत्पर रहकर भी आपका अप्रिय कैसे हूँ?।।45।।

अत्यन्त गर्मी (संताप) करने वाला (अतिगर्वयुक्त), मलिन (निन्दनीय) मार्गवाला, अनेक जीभवाला (कभी कुछ कभी कुछ बोलने वाला) छूने के भी योग्य नहीं, ऐसा समझकर यदि आप मुझको छोड़ते हैं तो ऐसे ही इस 'आश्रयाश' (अपने आश्रय को खाने वाले, अग्नि) को अपनी शुभदृष्टि (नेत्र) में स्थापन

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करने का पात्र कैसे बना लिया? यह भी अत्यन्त गर्मीवाला, जिस रास्ते होकर अग्नि लग जाय वही काला हो जाय ऐसा, अनेक जिह्वा (सात जीभ) वाला, स्पर्श में भी भयंकर, फिर जिसका आश्रय ले उसही को खा जाय (अपने आश्रय काष्ठ आदि को भस्म करने वाला) ऐसे अग्नि को आपने तृतीय नेत्र कैसे बनाया? श्लेष अलंकार।।46।।

'बन्धुजीवद' बन्धुओं को जीव देनेवाली 'लसत्' शोभमान है कान्ति जिसकी, अर्थात् अपने बान्धवों को जीवदान करने वाला- परोपकारी समझकर, (वास्तव में 'बन्धुजीव' नाम का जो रक्त पुष्प उसके पत्ते के समान है (लाल) कान्ति जिसकी ऐसा)। यह अग्नि देवताओं के 'व्रज' (समूह) के जीवन (अर्थात् उनको तृप्त करने) के लिये यजमानों से घृतादि की आहुति की प्रार्थना करने वाला बनता है (घृताहुति लेता है)। तथा यह अग्नि अपने मित्रमण्डल को 'मुख' प्रधान करके संपूर्ण विश्व का पोषण करता है (वास्तव में अग्नि मित्र (सूर्य) मण्डल के द्वारा विश्व का पोषण करता है ('रात्रि में सूर्य का तेज अग्नि में चला जाता है' यह स्मृति है) इसलिये दहन करने वाले इस अग्नि में यदि आप सादर हैं।।

तौ हे स्वामी! 'सुमनस्' (देवता और पण्डित) इनका सदा (आप्यायन) पोषण करने के लिये यदि मैं भी अर्थी (याचक) होऊं तो मुझे देने वाला कोई दाता नहीं। बन्धुजनों का जीवन करने के लिये मैं स्वयम् असमर्थ हूँ। और मित्रों के मुख से (इनको द्वार बनाकर) जगत् का पोषण करने के लिये भी मैं असमर्थ हूँ (अर्थात् ये दोनों काम मैं चाहता हुआ भी नहीं कर सकता। इसमें मेरी अशाक्ति है, दोष नहीं)

इसलिये मुझको निरपराध जानिये। प्रसन्नता से स्वच्छ हुई तथा अमृत (कृपा) प्रवाह से आर्द्र (सरस) ऐसी दृष्टि दीजिये। और दया के पात्र इस दीनको घने मद (हर्ष, प्रसन्नता) से वारंवार है भ्रमण जिसमें ऐसे भ्रुकुटि विलास से (अर्थात् प्रसन्न भौंहें डालकर) मेरे ऊपर कृपा कीजिये।।47-48-49।।

हे भगवन्! कृपा के द्वारा निर्मल दृष्टि देने से यदि आपने 'मित्र' (सूर्य) 'शुचि' (अग्नि), 'द्विजपति' (चन्द्रमा), पर कृपा की है तो यह उचित ही है। ऐसे ही अर्थात् सकलजनों के मित्र, शुचि (पवित्र, निर्दोष), द्विजपति (ब्राह्मणश्रेष्ठ) मुझपर जो आप अप्रसन्न दृष्टि दे रहे हैं यह विधाता मेरे विपरीत है।।50।।

यह 'निष्कर्ण' अच्छी बात नहीं सुनने के कारण 'कर्ण' कान रहित है, कुत्सित मार्ग में व्यासंगी (रसिक) है, तथा जो जिह्वा वाला (संपन्न कुछ, परोक्ष

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

में कुछ, यों दो तरह बोलने वाला) समझ कर यदि असहाय मुझको आप त्यागते हैं तो हे श्रीकण्ठ! ऐसा ही यह पवनाशन (वायु का भोजन करने वाला, वासुकि सर्प) अपने कण्ठ के समीप आपने क्यों ग्रहण किया? क्योंकि यह भी निष्कर्ण ('चक्षुःश्रवा' आखों के द्वारा सुनता है)। 'कु' (भूमि) में जो 'सृति' रेंगना उसका व्यसनी है। तथा दो जीभ वाला है।।51।।

इस (शेष) ने पहले आपकी दो हजार जीभों से स्तुति की, इस लिये यदि आपके कण्ठस्थान में स्थित है तो हे महेश! आपकी स्तुति में मेरे पास यदि एक ही जीभ है तो आपके चरणतल में ही मेरा स्थान होओ।।52।।

यह सींगवाला (गर्वयुक्त), विवेक (विचार) शून्य, अलमस्त, पशुप्राय है समझकर यदि मुझ दीन को आप छोडते हैं तो ऐसा ही (सींगयुक्त, विवेकरहित, मस्ती में आने वाला, पशु) यह वृषभ (नन्दी) चरणस्थापन से कृपापात्र कैसे बना रखा है?।।53।।

यह (वृषभ) भी कभी आपको पीठ पै धारण करता है, इतने मात्र से यदि यह आपकी कृपा पात्रता को प्राप्त होता है तो हे स्वामी! मैं तो आपको प्रतिदिन हृदय में धारण करता हूँ, इसलिये आपका मैं अनुकम्पनीय (दया करने योग्य) क्यों नहीं?।।54।।

टेढ़ा तथा कठोर यह-विद्या, विनय आदि गुणों के ग्रहण में योग्य याचक समूह को पराङ्मुख (विमुख, निराश) करके त्याग कर देता है यह समझकर यदि मेरा आप त्याग करते हैं तो हे स्वामी! ऐसा ही 'पिनाक' (धनुष) आपने अपने हस्त में कैसे धारण किया है? क्योंकि यह भी क्रूर और टेढा है। तथा 'गुण' अर्थात् प्रत्यञ्चा (डोरी) के ग्रहण करने में योग्य ऐसे 'मार्गण' (बाण) समूह को पराङ्मुख (अपने से पीछे मुँह वाला) करके छोड़ता है। श्लेष।।55।।

इसका गुण उत्कृष्ट कोटि (करोड़ संख्या) को पहुँच गया है (वास्तव में 'गुण' डोरी दूसरी 'कोटि' (दूसरे छोड- अन्त) पर्यन्त गया है यह अर्थ है) तौ भी यह अत्यन्त नम्र है (धनुष चलती बार नीचा हो जाता है) यह समझकर इस पिनाक ('अजगव' नामक धनुष) को नहीं छोड़ते हैं तो थोड़े से 'गुण' (दया-दाक्षिण्यादि) में मैं अत्यन्त नम्र (विनीत) हूँ फिर क्या कारण है कि मैं आपका दयापात्र नहीं होता (जिसके गुण कोटि पर्यन्त पहुँच गये हों उसका नम्र होना क्या आश्चर्य, किन्तु मैं थोड़े ही गुण की सत्ता में भी नम्र हूँ, अतएव और भी दया का पात्र हूँ)।।56।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अत्यन्त तीक्ष्ण (उग्रस्वभाव, सरोष) और अतिकठोर। फिर सीधेपन से प्रवेश करके, अन्त में अत्यन्त मर्मव्यथा पहुँचाने वाला समझकर यदि आप मुझको छोड़ते हैं तो हे नाथ! इस ही तरह के इस त्रिशूल को हस्तगत क्यों कर रखा है। क्योंकि यह भी अत्यन्ततीक्ष्ण तथा कठोर है। और सीधेपन से हृदय में प्रवेश करके अन्त में भीतर से मर्मो को भेदन कर देता है।।57।।

इस त्रिशिख (त्रिशूल) को समर में संहित (संधान, संधि) कर्मयोग्य और तीन कोटि (शिखा, शूल की शाखा) से उज्ज्वल मुख वाला (अथवा युद्ध की तीन शाखाओं में विजय करने से उज्ज्वल मुख वाला) समझ कर धारण करते हो तो, हे स्वामी! मैं निर्धन हूँ तौ भी सबसे समान रस (समान प्रेम भाव) रखने वाला हूँ। और हित के कामों में योग्य हूँ (अर्थात् मुझको भी समरसं हित कर्मयोग्यम्' मान लीजिये) आप क्या मुझको ऐसा नहीं मानते हैं, जो मेरे ऊपर प्रसाद (कृपा) नहीं करते हैं।।58।।

नीचे करा दिये हैं ब्राह्मण जिसने, पहले जो अखर्वित (अर्थात् नीचे नहीं हुए थे, अच्छी हालत वाले थे, ऐसे) देवता और आचार्य (गुरु) उन को सदा आपत्ति देने में तत्पर, किया है 'गोत्र' (वंश) का भेद (हानि) जिसने ऐसा समझकर यदि मुझको छोड़ते हैं तो ऐसा ही कुमार (स्वामिकार्तिक) जगद्विजयी आपके नेत्रों को आनन्द देनेवाला कैसे है? क्यों उनने भी 'द्विज' (पक्षी-मयूर) को नीचा किया है, वाहन बनाया हैं तथा वह अखर्वित जो पूर्वदेवों (असुरों) के गुरु उनको आपत्ति (क्लेश) पहुँचाने में तत्पर हैं। 'गोत्र' (क्रौञ्च पर्वत) को उनने भेद किया है।।59।।

हे नाथ! यदि इन विशाख (स्वामिकार्तिक) को शुचि (अग्नि) से है जाति (जन्म) जिनका ऐसा मानकर इनमें पूर्ण प्रसन्न मन धारण करते हैं (पहले श्रीशंकर का वीर्य श्रीपार्वती से धारण नहीं हो सका। उसको उनने अग्नि में पटक दिया। वहीं उनका जन्म हुआ। इसीलिये उनका नाम 'अग्निभू' यह भी है। तो हे स्वामी! मैं भी ऐसा ही हूँ ('शुचि' (पवित्र) ब्राह्मण जाति वाला हूँ। 'विशाख' शाखाशून्य (अवलम्ब शून्य) हूँ, मेरे अन्य (दूसरी) गति नहीं। फिर ऐसा मैं अवलेप (गर्व, तिरस्कार) का पात्र क्यों हो रहा हूँ?।।60।।

सब वस्तुओं के अपहरण (उड़ा लेने) में है प्रेम जिसको, मस्त, तथा सदा टेढा (गर्व से) रहता है मुख जिसका, कर्णो से चपल (एक बात सुनकर इधर उधर फैला देनेवाला) तथा 'तुन्दिल' (आलस्य के वश सदा पेट फुलाये बैठे रहनेवाला) मैं यदि आप का त्याज्य (त्याग करने योग्य) हूँ तो ऐसा ही यह

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

गजमुख (गणेश) गणों की नायकता (प्रबन्धकता) पर क्यों नियुक्त किया है?। क्यों कि यह भी 'सर्वापहार' इस नाम में ही है 'रति' प्रेम जिसको ('सर्वापहारो गजास्यः' अमरकोष) ऐसा है। उन्मद 'सहर्ष' और 'वक्रतुण्ड' इनका नाम है ही। ये भी बार-बार कर्णताल (कर्णो का शब्द) करने वाले हैं तथा तुन्दिल (तौंदवाले) हैं ही।।61।।

यह सदा अपना हस्त (सूँड) दान के जल से गीला रखते हैं ('दानजल' मदजल से गीली सूँड रखते है, यह अर्थ है)। इस ही लिये यदि गणों का स्वामित्व मिल गया है तो हे स्वामी! निर्धन मैं दान देने में असमर्थ हूँ। अतएव मुझको आपके गणों का अधिपतित्व न मिलकर दासता तो हो जानी चाहिये।।62।।

वाणी-मन-कर्म के द्वारा मैं जिस तरह आपके चरणाविन्द का सेवक नहीं हूँ, इसही तरह सब ग्रहों में मेषादि राशियों का भोग सब ही ग्रह समानतया करते हैं किन्तु इनमें दो ग्रह (सूर्य और चन्द्र) ही आपकी दृष्टि को नहीं छोड़ते अर्थात् वाम और दक्षिण नयन बने हुए हैं। इतने मात्र से आपने अन्य ग्रहों को क्यों छोड़ दिया (मैं तो आपके चरणों का ध्यान करनेवाला छोड़ने योग्य क्यों समझा जाऊँगा)।।63।।

हे नाथ! दो कुमार जो द्विज (ब्राह्मण) पति (श्रेष्ठ), तथा 'द्विज' (नक्षत्र) उनमें श्रेष्ठ हैं, आपके भक्त हैं। उनमें एक (चन्द्र) प्रजाओं का घोर अन्धकार हरण करता है। किन्तु दूसरे बालक (मुझ) को अन्धकार (अज्ञान) से व्याप्त होता हुआ देखते हुए आप सह रहे हैं। इस ही लिये आप 'विषमदृष्टि' (भेद युक्त दृष्टि वाले) प्रसिद्ध हैं। (वास्तव में 'विषमदृष्टि' अर्थात् तीन नेत्र होने से विषम संख्या वाले आपके नेत्र हैं)।।64।।

मात्सर्य आदि दोषों से उद्धत वैरी में तथा मित्र में समान दृष्टि रखने वाले आपका हृदय यदि दया से सदा स्निग्ध रहता है- तो यह उचित ही है। इसलिये इस समय गति (उपाय) हीन तथा आत्मा का हित नहीं करने वाले इस दीन के प्रति आप की कृपा का निरादर (अभाव) क्यों है।।65।।

आप सरीखे करुणासागर के द्वारा हम सरीखे अशरणों (निःसहायों) का अकस्मात् तिरस्कार होना, हे स्वामी। चन्द्र मण्डल से वज्र निकलना और सूर्य से अन्धकार की उत्पत्ति है।।66।।

हे स्वामी! आप 'मृड' (त्रिलोकी को सुख देने वाले) हैं, और मैं विशाल दुःखभार से पीडित हूँ। आप 'मृत्युञ्जय' हैं और मैं मृत्यु के भय से व्याकुल हूँ।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

आप 'गंगाधर' हैं और मैं उग्र सांसारिक संतापों से तपा हुआ हूँ। फिर हे स्वामी! आपके द्वारा दया करने योग्य क्यों नहीं।।67।।

आप 'भक्तप्रिय' भक्ति करने वालों के प्रिय हैं फिर आपके दर्शन की जिनको भूख लग रही है उनकी पीडा को क्यों नहीं जानते। श्लेष से दूसरा अर्थ होता है 'भक्तप्रिय' अर्थात् 'भक्त' (भात) जिसको प्यारा है वह भूखे आदमी की पीडा को जानता है आप 'भक्तप्रिय' होकर भी क्यों नहीं जानते। जिसको रसायन पान के आनन्द का रस है वह प्यासे की पीडा को जानता है, आप पान (अर्थात् रक्षण) के आनन्द के रसिक है फिर आपके नेत्रान्त (कटाक्ष) डालने के जो प्यासे हैं (इच्छुक हैं) उनकी पीडा को क्यों नहीं जानते? आप 'घन' (मेघ) के सेवन में सादर हैं फिर संताप (त्रिविध) से पीड़ित की वेदना को क्यों नहीं जानते (श्लेष से- जो घने (अर्थात् निरन्तर) सेवन में सादर (कदरदान) हैं वह सेवक की पीडा को जानता है फिर आप क्यों नहीं जानते?।।68।।

आप सर्वज्ञ हैं- भूत (जो पहले हो चुका), भावी (आगे होने वाला) आप यह सब जानते हैं। किन्तु यह मेरे भाग्य का ही क्षय है- जिसके कि आप हृदय में स्थित हैं उसही की पीडा को नहीं जानते। अथवा जान करके भी 'गजनिमीलिका' (देखकर भी हाथी की तरह बेपरवाही) करते हैं।।69।।

आपके ललाट में अग्नि, कण्ठ में विष, और हाथ में शूल (त्रिशूल) है, यह प्रकाशित बात सब लोग जानते हैं। ये तीनों की तीनों चीजें मेरे हृदय मे हैं (ज्ञान के विरह से शोकरूपी अग्नि है, परिणाम में भयंकर दुष्कर्म रूपी विष, और जन्म-जरा-मरणादि के त्रास से शूल रोग को) अन्तर्यामी आप सब जानते हैं, फिर भी दयालु नहीं होते, अतएव मैं मारा गया।।70।।

एकमात्र आप ही संसारी आदमियों के निष्कारण बन्धु हैं, सूर्य की जैसे कान्ति वैसे आपकी कृपा स्वाभाविक है। किन्तु मेरे ऊपर विधाता वाम (प्रतिकूल) है कि मेरे सब विलाप (रोने धोने) 'अरण्यरोदन' (जंगल में रोने के) समान हो गये।।71।।

हे महेश! अत्यन्त अभाग्य, अयोग्य, दुर्दैवयुक्त, उमर भर सुख से विमुख, मुँहफट (संमुख जवाब देने वाला) कठोर वाणी वाला, सकलों से अधम ऐसे मुझको दैवगति से प्राप्त होकर कुलवधू जिस तरह आपने पति को नहीं छोड़ती, इस तरह जन्म-जरा-मरणादि की विपत्ति (अथवा यह नित्य की सांसारिक विपत्ति) मुझको नहीं छोड़ती।।72।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे शिव! 'असम' (विषम, बड़ी-बड़ी) आधियों (मानसिक पीडाओं) को हरने वाली समाधि (योग से आत्मा और मन की एकता रूप) को छोडकर, तथा उत्कृष्ट तेज वाले अमृत रूप आपका स्थान परम चैतन्य प्रकाशमय छोड़कर, मलय पवन से उठाई गई जो समुद्र की महा तरंग उनके समान चञ्चल है विनाश जिनका ऐसे धनों को प्राप्त करने की आशा में दशों दिशाओं में घूमता हूँ।।73।।

हे स्वामी! मैंने 'चपला' (बिजली) के समान चञ्चल चित्तवाले दुष्ट धनिकों का सेवन किया। गुण समूह से गंभीर ऐसे गुरुओं का नहीं। इसलिये मेरे वे दिन व्यर्थ नष्ट हो गये। विस्तृत मोह रूपी तम (अज्ञान) से मारा हुआ मैं अब थक चुका हूँ।।74।।

नेत्रों में तीन तेजों को धारण करने वाले हे नाथ! हेमन्त ऋतु की रात्रि की तरह लम्बी यह तृष्णा दिनों दिन मेरे मन में अपना बढ़ाव बढ़ाती जा रही है। हे नाथ! दृष्टिरूपी प्रसाद (कृपा) दीजिये। भ्रम (असत्य को सत्य समझना रूप) से भरे इस अज्ञानरूपी गाढ अन्धकार को समाप्त कर दीजिये।।75।।

महान् गर्व (अहंकार) रूपी ज्वर से पैदा हुए अग्नि का यह दुःसह संनिपात (संनिपात का ज्वर) कपटरूपी स्तम्भ (शरीर का ठूंठ बँध जाना) को फैलाता है। भ्रम (असत्य को सत्य समझना रूप) को बढ़ाता है। वाणी में मौन (चुपचापी) पैदा करता है। यह संनिपात कौन सा 'आतप' (रोग-कम्प-मूर्छा-आलस्यादि) को नहीं करता? अपितु नाना रोग करता है। संनिपात ज्वर भी वात के बिगड जाने से स्तम्भ (स्तब्धीभाव) पित्त के बिगड़ जाने के भ्रम, तथा श्लेष्मा के बिगड़ जाने से वाणी में मौन (चुप्पी) पैदा कर देता है।।76।।

इसलिये अब औषधीपति (चन्द्र) है चूडामणि (शिरोभूषण) जिनका ऐसे (वास्तव में - औषधियों के स्वामी अर्थात् वैद्यों के शिरोभूषण, श्रेष्ठ) जिनकी अठारह भुजाओं की सिद्धि भुवनों में विख्यात है (श्लेष से अर्थ है- जिनके हाथ की करामात विश्व में प्रसिद्ध है) ऐसे महावैद्य आपका आश्रय लेता हूँ। अतः मौन को दूर करैं (आपकी स्तुति में जो अशक्तता है उसको हटा दें, श्लेष्मविकार से जो वाणी का मौन है उसे दूर कर दीजिये)। मोह रूपी निद्रा को संकुचित कीजिये। शीघ्र ही इन इन्द्रियों के उपद्रव को भंगा दीजिये।।77।।

हे भगवन्! मूर्ख मैं अगाध जल को थोडा सा समझने का विश्वास करता हूँ। वैरियों के द्वारा निश्चित प्राणबाध होने पर भी आलस्य करता हूँ। क्योंकि यमराज सामने मारने को तयार है और मैं अब भी नहीं जगता। किन्तु हे स्वामी! यदि आप थोड़ी सी भी अवज्ञा (लापरवाही) करते हो तो मेरी क्या गति

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

होगी।।78।।

जो आपके संमुख पूजा के समय 'रव' (अर्थात् ब ब् ब ब्' इत्यादि मुखवाद्य) करता है उसको आप 'वर' देते हो। जो आपके आगे भी 'मद' (मस्ती) करता है (यमराज-कामदेव आदि) उसका 'दम' (दमन) करते हो। यों दो अक्षरों को उल्टा करने की क्रीडा करना आपका स्वभाव है। फिर 'नमः' (नमस्कार) करते हुए मेरे ऊपर 'मनः' कृपा करने का 'मन' क्यों नहीं करते?।।79।।

हे भगवन्! आपके हाथ में चन्द्र है (देवं सुधाकलश-सोम-करम्' इत्यादि ध्यान है)। मस्तक पर चन्द्र है। नेत्र में चन्द्र है (बाँये में), चरणतल में चन्द्रमा है (सेवक रूप से) मूर्ति में चन्द्रमा है (आप श्वेतमूर्ति है)। यों हे शंकर आपके दरबार में चन्द्रमाओं का 'सुकाल' (समर्थता-सुलभता) है। फिर त्रिविध तापरूपी अन्धकार से व्याकुल शरणागत मुझको दूर करते हुए आपके यहाँ यह निष्फलता क्यों आवै। ऐसे चन्द्रों के सुकाल में मेरे तापान्धकार को दूर करके अपनी सफलता प्रमाणित करिये।।80।।

हे नाथ! आपके ध्यान में आसक्त मेरे चित्त ने आपके चन्द्रखण्ड से कुटिलता प्राप्त की, अमृतमयता नहीं। ललाट के नयन (अग्नि) से गर्मी (गर्व, क्रोध आदि) प्राप्त की, प्रकाश नहीं। आपके कण्ठ से मलिनता (श्यामता) प्राप्त की, गंभीर भाव नहीं। मेरा चित्त चलनी सदृश है जो असार लेती है और सार छोड देती है।।81।।

जन्म-जरा-मरणादि विपत्ति की गुरुता (कठिनता, अलंघनीयता) मैं क्या कहूँ जिस (विपत्ति) ने 'निःशाखता' (निराचारता, अर्थात् जो अन्य किसी का आधार नहीं रखते, सर्वाश्रय) देवताओं के भी जो 'उपेय' (प्राप्तव्य) नहीं (अर्थात् देवताओं की भी जहाँ अपनी स्वतन्त्रता से पहुँच नहीं किन्तु अप्राप्य उनही की कृपा से प्राप्तव्य) ऐसा 'अनुपेयभाव', श्वेत पीत आदि नाना कान्तियों का अभाव, 'विफलता' (अर्थात् काम्यफल हीनता, जहाँ कामनारूप फल की इच्छा नहीं) तथा इहलोक के रस (आनन्द) हीनता का उपदेश करके मुझे 'स्थाणु' (सबके ऊपर स्थिति करने वाले श्री शंकर) के पद में उनके चरण में नियुक्त किया।

यहाँ श्लेष से यह भी अर्थ प्रतीत होता है कि विपत्तियों की गुरुता (उपदेशकता) क्या कहूँ, जिसने श्रीस्थाणु (शंभु) के संसर्ग होने पर भी उन (स्थाणु) की शाखारहितता, सुमनस (पुष्पों) की अप्राप्यता (अर्थात् पुष्पहीनता), छायारहितता, फलशून्यता और ठूंठ होने के कारण नीरस(शुष्क)ता का उपदेश

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करके मुझको भी 'स्थाणु' (अर्थात् ठूंठ) के पद पदवी) पर नियुक्त कर दिया, पहुँचा दिया। अर्थात् विपत्ति ने मुझे इस परिस्थिति पर पहुँचा दिया। (अब हे नाथ! आप ही 'निःशाखता' आदि के दूसरे (शंकर विषयक) अर्थ पर पहुंचाने की कृपा करेंगे।।82।।

हे देव! सर्वज्ञ शम्भु (शं-कल्याण को उत्पन्न करने वाले) शिव शंकर विश्वनाथमृत्युञ्जय-ईश्वर-मृड (जगत् को सुखी करने वाले) आदि नाम अन्य भक्तों के विषय में फलवान् अर्थात् सार्थक (सबको जानने वाले- कल्याणदायक-आदि) होंगे किन्तु मुझ मन्दभाग्य के विषय में आप 'स्थाणु' (निःशाखद्रुम, ठूंठ) ही हैं (वस्तुतः मेरी बुद्धि से आप सबके ऊपर स्थिति करने वाले परात्पर श्री शंकर हैं)।।83।।

श्वेत नामक राजा को आप 'सु' (शोभन) दर्शन 'आपका दर्शन, साक्षात्कार) समर्पण में तत्पर हो। और श्रीकृष्ण को भी 'सुदर्शन' (तन्नामक चक्र) के समर्पण (देने) में आप तत्पर हो। यों श्वेत और कृष्ण तथा सफेद और काले में आपको भेद बुद्धि नहीं हुई। वही आप पुण्यजनों (वैश्रवण-कुबेर आदि यक्षों में) लक्ष्मी उत्पन्न करते हैं और मुझको अपुण्यजन (सुकृतशून्य) समझ कर छोड़ते है, यह मेरा भाग्य ही बिगडा हुआ है। श्वेत-कृष्ण-सफेद-काले में आपको समान बुद्धि होने पर भी, पुण्यजन और अपुण्यजन में आपकी भेद बुद्धि हुई, यह मेरा भाग्य ही क्षत है, यह भाव है।।84।।

हे देव! जिसकी कृपा की महिमा से हाथी-घोडे-रत्न (कौस्तुभमणि), श्री (लक्ष्मी) पारिजात (कल्पवृक्ष) मदिरा, इन्दु (चन्द्र), सुधा (अमृत) इनके अर्पण (देने) से देवताओं का वशीकरण करके अर्थात् इन्द्र को ऐरावत और उच्चैःश्रवा, विष्णु को कौस्तुभ और लक्ष्मी इत्यादि। यों अच्छी अच्छी चीजे देकर आपने सब देवताओं का संतोष कर दिया, किन्तु अपने लिये आपने गरल (विष) ग्रहण किया। यह काम जिस कृपा के कारण हुआ वह आपकी कृपा मुझ मन्दभाग्य के विषय में कहाँ गई?।।85।।

जगत् को जीत लेने से गर्विष्ठ हुए कामदेव-दक्षप्रजापति-यमराज-अन्धकासुर इनके विषय में, आपके मन में जो रोषरूपी विष का अंकुर पैदा हुआ, उसने आपकी कृपा के द्वारा सिँचा जाने पर अमृतरूपी प्रसाद (अनुग्रह) को उत्पन्न किया (उन सबको पुनः संजीवित कर दिया गया), वह आपकी कृपा मुझ मन्दभाग्य के विषय में कहाँ हो रही है? नहीं है।।86।।

हे भगवन्! आपकी कृपा को चाहने वाले कितनों ही ने आपके हस्त में

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

स्थित 'वर' की पात्रता प्राप्त की, अर्थात् उनको वर मिला। कितनों ही ने 'अभय' की और कितनों ही ने आपके हस्त में स्थित गहरे अमृत की पात्रता प्राप्त की। अभाग्य से पीडित मैंने आप के हस्त में स्थित 'शूल' (त्रिशूल, आयुधविशेष) की पात्रता प्राप्त की। 'श्लेष' से शूलनामक हृदय की पीडा प्राप्त की।।87।।

'अभ्रान्तवृत्ति' अभ्र अर्थात् आकाश के अन्त में है स्थिति जिसकी ऐसा तथा 'प्रकाश' (तेज) रूपता से प्रसिद्ध ऐसे सूर्य से अधिष्ठित 'बिम्ब' अर्थात् सूर्य मण्डल की तरह। प्रकाश (तेज अर्थात् ज्योतीरूप) है शरीर जिसका ऐसे आपके द्वारा अधिष्ठित, तथा 'अभ्रान्त' नहीं भ्रमयुक्त है 'वृत्ति' जिसकी ऐसा यह मेरा चित्त कभी 'तमसा' (अज्ञान के द्वारा) उपद्रव (विकार) युक्त कर दिया हो, तौ भी इसके पुण्य की महिमा क्षीण नहीं हुई है, ऐसा ही शोभित होता है। कभी अज्ञान का चक्कर आने पर भी इस चित्त में आप अधिष्ठान करते हो इस लिये इसके पुण्य का माहात्म्य अक्षीण है यही निश्चय होता है। जैसे कि प्रकाश शरीर ऐसे सूर्य के द्वारा अधिष्ठित 'सूर्यमण्डल' कभी 'तमसा' राहु के (तमस्तु राहुः) द्वारा सोपप्लव (सोपद्रव, ग्रस्त) होने पर भी अक्षीण पुण्य महिमा वाला गिना जाता है।।88।।

प्रचण्ड जरामरणादि जन्य दुःखरूपी जो दावाग्नि उससे जला हुआ मैं अमृतमय आपके हृदय में प्रवेश करना नहीं जानता। मेरी दुःखरूपी दावाग्नि से आपका हृदय स्थित अमृत भी कदाचित सूख न जाय इस भय से। तथा देवनदी (गङ्गा), अमृत, तथा सुधांशु (चन्द्रमा) इनसे शीतल आपको भी मैं अपने हृदय में धारण नहीं कर सकता (इतनी शीतल वस्तुओं से कदाचित् शीतज्वर हो जाय, इस भय से)। अतएव मन्दभाग्य मुझको धिक्कार है, मैं न आपको अपने हृदय में धारण कर सकता, न आपके हृदय में मैं स्थान प्राप्त कर सकता, यह मेरा मन्द भाग्य ही है।।89।।

जन्म-जरा-मराणादि की चिन्ता से क्षीण (दुर्बल), नष्ट हो गई हैं कला (शिल्प-चातुर्यादि) जिसकी ऐसा, तथा लुप्त हो गया है 'धाम' (तेज) जिसका ऐसा मैं। कृष्ण पक्ष में क्षय को प्राप्त हुआ, नष्ट हो गई हैं संपूर्ण कला (षोडशभाग जिसकी ऐसा, अतएव लुप्त तेजवाला चन्द्रमा जैसे सूर्य का आश्रय लेता है (कृष्णपक्ष के अन्त में (अमावास्या में) चन्द्रमा सूर्य मण्डल में प्रवेश कर जाता है, यह प्रसिद्ध है) ऐसे मैंने आपका आश्रय लिया है। इसके अतिरिक्त मेरे जीवन की कला (गति) कोई नहीं है। यदि आप ने चरणदान के द्वारा मेरे ऊपर अनुग्रह नहीं किया, यदि चरण की शरण आपने नहीं दी, तो मेरी और कोई गति

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi.

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

(ठिकाना) नहीं। सूर्य अपने 'पाद' किरणों के अर्पण से अनुग्रह न करै तो चन्द्रमा की जीवनरूपी कला फिर कहाँ? शुक्लपक्ष में सूर्य किरणों से ही चन्द्र में प्रकाश आता है, यह विज्ञान है।।90।।

घोर अन्धकार से विह्वल, नाना तापों से संतप्त, विपत्तिरूपी बड़े भारे पाले (बर्फ) से दबाये हुए (पीडित) मुझको यदि आप छोड देते हैं तो सूर्य-चन्द्र-अग्नि नेत्रवाला और दूसरा कौन है जो मेरी ऊपर कही हुई त्रिविध पीडा को हरण करै। आप के तीन तरह के नेत्र- सूर्यात्मक मेरे अन्धकार को, चन्द्रात्मक मेरे संताप को और अग्न्यात्मक मेरी हिम पीडा को हरण कर सकता है।।91।।

हे प्रभु! विपत्ति (जन्म-जरा-मरणादि आन्तर, दारिद्र्यादि बाह्य) रूपी अपस्मार (मिरगी) रोग से पीडित मुझको 'व्यक्ति' (अङ्गों की प्रकटता फुर्ती) नहीं, बुद्धि नहीं, चलने की शक्ति नहीं तथा और कामों का सामर्थ्य नहीं, एवं स्मृति (स्मरण) भी नहीं, ऐसे रोगी मेरी चिकित्सा, औषधियों का स्वामी (चन्द्रमा) जिनके मुकुट में है, तथा जो त्रिलोकी के गुरु हैं ऐसे आपको छोड कर और दूसरा कौन कर सकता है।।92।।

हे शिव! आप निर्गुण (सत्त्व-रजस्-तमस् इनसे परे) हैं, मैं भी 'गुण' दया-दाक्षिण्य-पाण्डित्यादि से शून्य हूँ। आपका धाम 'शून्य' (ब्रह्माण्डादि से भी ऊँचा, किसी वस्तु की स्थिति नहीं ऐसा) है, मेरा भी धाम (गृह) सांसारिक उपकरण (सामग्री) से शून्य है। आप गौ (वृषभ, नन्दी) पर 'धृति' स्थिति करते हैं (बैठते हैं), मैं भी गौ (वाणी) में धृति (धैर्य, प्रीति) रखता हूँ। किन्तु कष्ट यही है कि आप शिव (कल्याणस्वरूप) हैं, और विधाता का मारा मैं 'अ' (अविद्यमान) है 'शिव' (शर्म, सुख) जिसको ऐसा हूँ।।93।।

आपके विषय में काम (कामदेव) को निष्फलता मिली, अर्थात् आप पर उसका प्रभाव न चला, उल्टा उसे भस्म होना पड़ा। मेरे विषय में भी काम (नाना तरह की अभिलाषायें) निष्फल हुईं (दरिद्रता और असमर्थता के कारण इच्छा होकर रह जाती हैं, उनकी पूर्ति नहीं होती)। आपने 'काल' (मृत्यु) को वापस फैंक दिया, लौटा दिया (श्वेतराजा के उद्धार के प्रसङ्ग में)। मैंने भी अपना काल (समय) निष्फल (निरर्थक) बिता दिया। हे प्रभु! आपका शरीर 'विध्वस्तधाम', 'विधु' अर्थात् चन्द्रमा के द्वारा 'अस्त' जीत लिया है अन्य 'धाम' तेज जिसने, ऐसा है। मस्तक के चन्द्रमा के द्वारा अन्य सब कान्तियां दबा दी गई है, ऐसा आपका शरीर है। मेरा भी शरीर 'विध्वस्त' नष्ट है 'धाम' तेज जिसका ऐसा, तेजो रहित है। कष्ट यही है आप 'शिव' कल्याणस्वरूप हैं और अभागा मैं अ'शिव'

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सुख-कल्याण रहित हूँ।।94।।

हे प्रभु! जैसे आपके वक्षःस्थल में नाग (सर्प) शोभित हैं वैसे ही आप में ही एकमात्र परायण (एकमात्र निर्भर, भरोसा रखने वाले) मेरे भी हृदय में अब कोई 'नाऽऽगः' ' न आगः, कोई अपराध नहीं)। आपकी शरण लेने वाले मुझमें अब कोई दूषण नहीं रहा। जैसे आप अपने 'स्व' धर्म (वृषभ, नन्दी) मैं आसक्त हैं, वैसे मैं भी आपकी शरण लेने के कारण अपने कर्तव्य में लगा हूँ। यदि आप वैसा नहीं मानते तो (स्वधर्मनिरतः) (सु-अधर्मनिरतः), अच्छी तरह, पूरे तौर पर 'अधर्म' जो वेद आदि ने नहीं बताया उस कर्तव्य में तत्पर हूँ। किन्तु कष्ट यही है आप 'शिव' हैं और दैव का मारा मैं 'अशिव' हूँ।।95।।

हे शिव! आपकी मूर्ति जिस तरह 'विधुरोचित्त' विधु अर्थात् चन्द्रमासे 'रोचित' प्रकाशित है, वैसे मेरी भी मूर्ति (शरीर) विधुर विह्वल (दीन) लोगों के उचित (योग्य) है। हे भगवन्! जैसे आपकी दृष्टि (नेत्र) विषम (ऊने अर्थात् तीन हैं, वैसे मेरी दृष्टि 'विषम' (संसार के पदार्थो में भेदभाव रखने वाली) है। आप जिस तरह 'शूली' त्रिशूल को धारण करने वाले, तथा 'विषादहतशक्ति' (विषात् अर्थात् विष से 'अहतशक्ति' नष्ट नहीं हुई है शक्ति (सामर्थ्य) जिनकी, ऐसे हैं। तो मैं भी 'विषाद' अर्थात् जन्म-जरा-मरणादि दुःखों से हत हो गई 'शक्ति' सामर्थ्य जिसकी ऐसा हूँ। बस, कष्ट यही है आप शिव हैं, और दैवहत मैं अशिव हूँ।।96।।

हे शिव! जैसे आपके कण्ठ में विषम (भयंकर) विष रहता है, वैसे मेरे भी कण्ठ में मत्सरतादि अवगुण रूपी भयंकर विष रहता है जैसे आप 'भूत' प्राणिमात्र के ईश्वर हैं, और 'पशु' आणव (अणु उत्पन्न), मायीय (माया से उत्पन्न), कार्म (कर्मो से जनित), त्रिविध पाशों से बद्ध जनों के पति हैं, वैसे मैं भी भूत अर्थात् अत्यन्त उग्र भयंकर मनुष्यों का ईश्वर (मालिक, श्रेष्ठ) तथा पशु (जड, मूर्खो) का पति (शिरोमणि) हूँ। आपका अङ्ग जैसे 'गुरुरुग्ज्वलित' बडी भारी जो 'रुक्' रुचि, शोभा, कान्ति उससे देदीप्यमान है, वैसे मेरा भी अङ्ग, बडी भारी जो रुक् 'रुजा' (पीडा) उससे जला हुआ है। कष्ट यही है, आप शिव हैं, और दैव का मारा मैं अशिव हूँ।।97।।

राहु से ग्रास किये गये पूर्ण चन्द्रमा के मण्डल की तरह, भयङ्कर बीमारी से पीडित षोडशी (सुन्दरी) के अङ्ग की तरह, अजगर से लपटे मलयागिरि चन्दन की तरह, दुष्ट लोगों से घिरा हुआ राजा के चरणतल (राजा का सामीप्य) की तरह, हलाहल (विष) से व्याप्त क्षीरसागर के जल की तरह, भयंकर मगर

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

से रुके श्री गङ्गा के तीर की तरह, दरिद्रता से दग्ध (जला) हुए सज्जन गृहस्थ के चरित्र की तरह, द्वेष-द्रोहादियुक्त शास्त्रज्ञान के कारण प्रसिद्ध ऐसे विद्वान् के चित्त की तरह, विद्या से हीन कुलीन पुरुष के रूप की तरह, दान तथा 'उपभोगों (खर्च), से रहित कंजूस के धन की तरह, हे प्रभु! उत्तम कुल, और शील (स्वभाव, चरित्र) से शुद्ध ऐसा मेरा मनुष्य जन्म दरिद्रतादि विपत्तियों से पीडित होकर शोचनीय (शोच करने योग्य) हो गया।।98, 99, 100।।

नागपाश को हाथ में लिये हुए दुष्ट यमराज को आता हुआ समझ कर पीछे, आगें, प्रत्येक दिशा में, देखता हुआ मैं भूमि में गिरता हूँ, दीनता से विलाप करता हूँ, (आपकी मूर्ति की) चरण चौकी पर लोटता हूँ, आप धूर्त की तरह कठिन हृदय कैसे हो गये?।।101।।

ओः महेश! यह यमराज मुझको ले जा रहा है। आप रक्षा क्यों नहीं करते? क्या यह क्रीडा से तिरस्कार करने का समय है? चाहै दया से आप के हृदय को पीड़ा न हो, किन्तु अपने शरणागत को छोडते हुए क्या आपको लज्जा भी नहीं आती।।102।।

हे प्रभु! क्या अज्ञ (पराये की पीडा को नहीं जानने वाले) हो? क्या निबल हो, क्या व्याकुल हो, तथा जगत् की रक्षा के कारण दूसरे काम में व्यग्र (फँसे हुए) हो? क्या निर्दय हो, क्या असमर्थ हो, क्या निद्रा के कारण आलसी हो रहे हो। क्या समुद्र मंथन से उत्पन्न मदिरा की मस्ती से घूम रहे हो जो यम के भय से पीडित और रोते हुए मेरी उपेक्षा (बेपरवाही) करते हो।।103।।

हे सबके स्वामी! क्या यह गरीब मेरे ऊपर द्वेष है, अथवा उपेक्षा है? अथवा यह कठोरता है। किं वा यह असमर्थता ही है? जो हुंकार मात्र से जिसका गर्व दूर किया जा सकता है ऐसे इस दुष्ट काल (मृत्यु) पर यह उपेक्षा (बेपरवाही) हो रही है।।104।।

दुष्ट विचार वाले (अथवा अनिमन्त्रित ही अपने आप आये) की तरह खराब और जोर जोर से बोलने वाले भूताविष्ट की तरह, निःशङ्क होकर जो कुछ मुँह में आवै वह बोलने वाले की तरह, पीडा के कारण मैं अनुचित भी बोल रहा हूँ तौ भी आप ऐसे निर्दय (कठोर) हो रहे हैं कि अपनी मौन मुद्रा (चुप्पी) को नहीं छोडते।।105।।

हे विश्व के साक्षी! सब तरह से डरे हुए, संसार की पीडा से विह्वल, इसही लिये आपके चरण के आगे पडे हुए, जिसकी सब अभिलाषायें (भवसागर

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

से उतरने की) टूट चुकीं, अन्य किसी दूसरे उपाय (शरण) को नहीं देखते हुए, तथा निरपराध मेरे ऊपर जिनका हृदय गरीबों के ऊपर स्नेह से व्याप्त है, ऐसे होकर भी, पराङ्मुख (मुँह मोडे हुए) क्यों हो?।।106।।

हे स्वामी! मैं स्वभाव से मलिन, कुटिल (टेढा) तथा चञ्चल हूँ। मेरा बैरी यम का पाश भी ऐसा मलिन, कुटिल, तथा चञ्चल है। आपका भ्रुकुटिपल्लव (भौंह) भी ऐसा ही श्याम, टेढ़ा, और चञ्चल है। भयंकर विष पर विष ही शान्ति के लिये पथ्य (हितकारी) होता है (अतएव यम की तर्जना के लिये आपकी भ्रुकुटी जरा इधर मुड़ जानी चाहिये) यह आशय है।।107।।

बारबार उन्हीं को दुहराये गये, अतएव बासी, मन को उद्वेग (नफ़रत) करने वाले, निष्फल, ऐसे इन प्रलापों (निरर्थक वचनों) से क्या काम है? यह जानता हुआ भी बार बार बडे जोर से क्रन्दन (चीत्कार) करता हूँ क्योंकि आपसे अन्य किसी को भी शरण के योग्य नहीं देखता हूँ।।108।।

आप यदि प्रसन्नता से हँसमुख हैं तो विनम्र वचनों से क्या। और यदि आप किसी पापी पर मुँह मोडकर अनादर दिखाते हैं तो विनम्रवचनों से क्या? यदि मनुष्य का भाग्योदय हो गया तो गुणों में यत्न (कोशिश) से क्या (अपने आप ही कार्यसिद्धि हो जायगी)। और यदि भाग्योदय नहीं हुआ तो गुणों में प्रयत्न से क्या? (गुणोपार्जन होने पर भी भाग्य नहीं हो तो कुछ फल नहीं)।।109।।

यह पूर्वोक्त जानता हुआ भी मैं प्रलापों (निरर्थक बडबडाने) से बाज़ नहीं आता। यह आपकी दृष्टि की तरह यह इस पीडा की करामात है। जो पीडा रात को ही दिन बना देती है (पीडित को यह भान नहीं होता कि यह रात्रि है)। अन्धकार को प्रकाश, अग्नि को हिम (बर्फ) और विष को अमृत बना देती है। आपकी कृपादृष्टि भी ऐसी है कि रात्रि को दिन, अन्धकार को प्रकाश, अग्नि को हिम, और जहर को अमृत कर देती है। किसी ने कहा भी है कि - **'अरिर्मित्रं विषं पथ्यमधर्मो धर्मतामियात्। अनुकूले जगन्नाथे विपरीते विपर्ययः।।१'** वैरी मित्र, विष पथ्य, और अधर्म धर्म बन जाता है। यदि ईश्वर अनुकूल हो तो। और जगत् का स्वामी प्रतिकूल हो तो विपरीत। अर्थात् मित्र भी बैरी, हितकारी भी जहर, और धर्म भी अधर्म बन जाता है।।110।।

दीनजन से सुनाई गई ही पीड़ा आपके हृदय में करुणा को उत्पन्न कर देती है। जैसे शमी (खेजडे) की शाखा अग्निको (तत्काल उत्पन्न कर देती है)। किन्तु यह आश्चर्य है कि जिस पीडा से आपके हृदय में करुणा उत्पन्न हुई वह अपने उत्पादन करने वाली उस पीडा को ही दग्ध कर देती है (जैसे शमी की

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar, New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

शाखा से उत्पन्न हुआ अग्नि उस शमी-शाखा को दग्ध कर देता है) क्या कहैं, ऐश्वर्य (ईश्वरता) बड़ा निरङ्कुश (बेपरवाह, बेमुलाहिजा, स्वतन्त्र) है।।111।।

हे प्रभु! यथार्थता से रहित, पामर (नीच) जनों के योग्य जो कुछ असमंजस (अनुचित-अयोग्य) कहा गया हो, वहाँ भी स्वामी की रुचि (सुनने की इच्छा) ही उचित है, क्योंकि समर्थ बडे आदमियों को बन्दर की उछल कूद भी चित्त में चमत्कार पैदा करती है।।112।।

चोरों से पकड़े, साँपों से डसे, भूत-प्रेतादि से आविष्ट (दबाये), बैरियों से घिरे, जल्दी से खैंचते हुए नाहर आदि से पीछा किये, रोष सहित राजा के सिपाहियों से पकड़ लिये गये, दुष्ट-ग्रहों (राहु-केतु आदि) से (अथवा भूत-प्रेत आदि से) दबाये, समुद्र के जल में डूबे, संग्राम में हारे, दावाग्नि में पड़े, और अधिक से क्या, यमदूतों से खैंचे गये को महेश्वर को छोड़कर और कौन रक्षा कर सकता है?।।113-114।।

व्यङ्ग्यपूर्ण आक्षेप से कहता है कि -मैं बड़ा 'विचक्षण' (बुद्धिमान्) हूँ कि अक्षयसुख को चाहता हुआ मैं दुःख का ही एक स्थान इस अस्थिर (नाशवान्) शरीर को माँगता हूँ (**'मनुष्या नित्यदुःखिनः'** मनुष्य नित्य दुःखी हैं, यह जानता हुआ भी मनुष्य शरीर चाहता हूँ, यह अज्ञता नहीं तो और क्या है)। और संसार समुद्र तरने के लिये-पुराने और उग्रस्वभाव के, तथा आधी डौंगी (छोटी नौका) को धारण करने वाले, पुरुष का आश्रय लेता हूँ (श्लेष से अर्थ होता है कि - सबसे पुराने आदिपुरुष, 'उग्र', अपने प्रणपर निश्चल, 'उडुप' (नक्षत्रपति-चन्द्रमा) के अर्द्धभाग अर्थात् खण्ड को धारण करने वाले श्रीशिव का आश्रय लेता हूँ)।।115।।

जिसके नेत्र भाग में सहसा पडे हुए सूर्य, चन्द्र और अग्नि भी पञ्चत्व (मृत्यु) को प्राप्त हो गये (वस्तुतः अर्थ है जिसकी नेत्रता को प्राप्त हुए सूर्य, चन्द्र और अग्नि भी श्री शङ्कर के 'सद्योजात, तत्पुरुष, अघोर, वामदेव, ईशान, यह पञ्चमुख होने के कारण पाँच पाँच हो गये)। मैं बुद्धिमान् हूँ कि मरणपीडा से डरा हुआ उनही देव सदाशिव को शरण (रक्षक) समझकर आश्रय लेता हूँ। जिनके नेत्रमार्ग में आते ही सूर्य चन्द्र सदृश भी पञ्चत्व को प्राप्त होते हैं, यह वाच्यार्थ है। किन्तु जिनके नेत्रस्थान पर आने के कारण सूर्य चन्द्रादि भी पाँच रूप हो गये। उन सर्वैश्वर्यसंपन्न भगवान् सदाशिव (सर्वदा कल्याण स्वरूप) का शरणत्वेन आश्रय लेता हूँ (यह व्यङ्ग्य तात्पर्य है)।।116।।

जिस स्थान पर स्थाणु (महाप्रलय में अविनश्वर स्थिति वाले श्री शङ्कर,

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तथा ठूँठ) प्रभु हैं, उनकी स्त्री अपर्णा (पार्वती, तथा विना पत्ते वाली लता) हैं। और जहाँ उन दोनों के संतान 'विशाख' (विशाखानक्षत्र में उत्पन्न स्वामिकार्तिक, तथा बिना शाखा का वृक्ष) हैं। मैं बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हूँ कि उसही स्थान में अभीष्टफल (चाहा हुआ मनोरथ परिणाम तथा आम्रादि) की प्राप्ति के लिये प्रवेश करना चाहता हूँ। जहाँ स्वामी और स्त्री, पुत्र, अपत्र, अशाख हैं, उनसे पत्र-पुष्प की भी नहीं, फल की इचछा रखना कितनी बुद्धिमानी है, यह वाच्य निन्दा किन्तु सप्तलोकों में अविनश्वर स्थितिशाली श्रीशिव, पर्णमात्र भी ग्रहण न करके घोर तपस्या करने वाली श्रीपार्वती, तथा श्री स्वामिकार्तिक का अपनी मनोरथ पूर्ति के लिये आश्रय लेता हूँ। यह स्तुतिपर्यवसायी व्यङ्ग्यार्थ है।।117।।

मार्जार, सूअर, सिआर के भयङ्कर हैं मुख जिनके ऐसे सैकड़ों बेतालभूत इनसे भरे हुए, राक्षस और पिशाच इनके शब्दों से भयङ्कर ऐसे शङ्कर के घर में अतिडरपोक स्वभाव वाला मैं प्रवेश करना चाहता हूँ, कितना बुद्धिमान हूँ? यहाँ भी वाच्यनिन्दा से श्रीशंकर के आश्रय करने वाले आत्मा की स्तुति व्यङ्ग्य है।।118।।

कान ही जिसके नेत्र हैं, जिसके चरण (पाँव) नहीं, तीन जिसके फण हैं ऐसे यमराज के नागपाश से डरा हुआ मैं, जिनने हजार फण वाला महासर्प धारण कर रखा है, तथा जिनके हजार मस्तक, हजार नेत्र, हजार चरण हैं ऐसे पुरुष को शरण (रक्षक) बनाता हूँ। कैसा बुद्धिमान् हूँ? तीन फणवाले सर्प से डरा हुआ हजार फणवाले सर्पको धारण करने वाले हजार हजार नेत्र-मस्तक-चरण वाले भयंकर पुरुष को रक्षक बनाता है, यह वाच्य निन्दा। उस (निन्दा) से ऐसे अव्यय परमात्मा का आश्रय लेता हूँ यह स्तुतिपर्यवसायी व्यङ्ग्यार्थ है।।119।।

समस्त जनता (जनसमूह) के अपहरण (संहार) में चतुर, प्रज्वलित अग्नि के समान भयंकर नेत्रवाले ऐसे जीवितेश (यम) से डरा हुआ मैं, समस्त जन के तापहरण में चतुर, अग्नि ही है उग्र (नेत्र जिसका, ऐसे सब जीवितों के स्वामी आपका आश्रय लेता हूँ, कितना बुद्धिमान हूँ? 'जनतापहृतिप्रगल्भ, अनलोग्रदृष्टि, जीवितेश' से डरा हुआ मैं वैसे ही 'जनतापहृतिचतुर' आदि विशेषणवाले पुरुष का आश्रय लेता हूँ, यह उपहासात्मक वाच्यनिन्दा। किन्तु श्लेष से जन-ताप-हृति आदि दूसरा अर्थ होने से स्तुतिरूप चरम अर्थ प्रतीत होता है।।120।।

दक्षप्रजापति के यज्ञ विध्वंसन के समय नष्ट कर दिया है यज्ञ रूपी मृग जिननें ऐसे आपको कालामात्र होने के कारण दूर कर दिया है लाञ्छन रूप हिरण जिसने ऐसे मृगाङ्क (चन्द्रमा) ने आश्रय बनाया, यह ठीक ही है। (मृग को दूर

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करने वाला मृग को मारने वाले का आश्रय ले, यह समंजस ही है) किन्तु आप को काम (कामदेव) का बैरी समझकर भी सकाम (कामना, फल प्राप्ति की इच्छा, हृदय में रखने वाला) ही मैं आपका आश्रय लेता हूँ, इससे मैं बुद्धिमानों में सबसे अधिक हूँ। (यहाँ भी वाच्यनिन्दा)। किन्तु पर्यवसान में स्तुति है। जो सकाम है वह काम के बैरी का आश्रय कैसे लेगा, यह विरोध, किन्तु 'काम' का दूसरा अर्थ हो जाने से उसका परिहार हो जाता है।।121।।

पद्मा (लक्ष्मी) से आश्रय किया गया (अर्थात् बडा समर्थ)। वस्तुतः पद्म (कमल) रूप आसन पर बैठा हुआ। शत अर्थात् अनन्त है धृति, धैर्य जिसको, 'चतुर' (अत्यन्त निपुण) है आनन (मुख) जिसका, (वस्तुतः चार हैं मुख जिसके) ऐसे ब्रह्मा ने भी जिससे वह पराभव (तिरस्कार) प्राप्त किया जो कहा नहीं जा सकता। अब मैं कैसा बुद्धिमान हूं कि श्री (लक्ष्मी) से रहित, धृति (धैर्य) रहित, दुर्बल और मन्दमुख वाला भी मैं उसही ईश्वर (शंकर) से अनुग्रह को माँगता हूँ। लक्ष्मी का आश्रय, अनन्त धृतिवाला, चतुर्मुख युक्त ब्रह्मा भी जिससे तिरस्कार पा चुका है, उस ही से निःश्रीक, अधैर्य, और दुर्बल मुख वाला मैं अनुग्रह की याचना करता हूँ, कैसी बुद्धिमानी है? (वाच्यनिन्दा)। सर्वसमर्थ 'ईश्वर' से कृपा चाहना, यह पर्यवसान में स्तुति।।122।।

जन्म से आरम्भ करके जो काम किये, उनसे जो कुछ फल पाया, चिरकाल तक जिस (फल) को भोगा जा सकता था, उस संपूर्ण को क्षणमात्र में हरण करके फिर न आने के लिये जो अपने भक्त को स्वीकार करता है, उसही ईश्वर की मैं सेवा करता हूँ, कैसा मतिमानों में श्रेष्ठ हूँ? चिरकाल तक भोगे जाने लायक भक्त के जन्मभर के कामों के फल क्षणभर में जो हरण कर लेता है, फिर न आने की रूक्षता भी जिसके साथ है, उस स्वामी को मैं सेता हूँ, यह वाच्यनिन्दा। किन्तु संसार में यातायात कराने वाले कर्मबन्धन से तत्काल छुडा देता है, उस सर्वसमर्थ की मैं सेबा करता हूँ, यह पर्यवसान में स्तुति है।।123।।

श्मशानरूपी एक स्थान में ही रहने का है व्यसन (शौक) जिनको, अग्नि से जिनका नयन महाभयंकर है, जहर के अग्नि की लपटों से जटिल (जटायुक्त सा), कुटिल (टेढा), सर्प ही हैं कडे जिनके। कपालमाला ही है विकट मुकुट (शिरोभूषण) जिनका ऐसे स्वामी को आश्रय करता हुआ डरपोक हृदयवाला मैं बुद्धिमानों के लिये उपहास्य नहीं हूँ। (अवश्य हूँ)। सर्वेश्वर महाप्रलय में ब्रह्मादिक के कपाल भी जिनकी क्रीडा के उपकरण होते हैं, ऐसे आश्रय करने वाला मैं कैसा भाग्यवान् हूँ, यह स्तुतिरूप व्यङ्ग्यार्थ है।।124।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करतल में लगा है एक साँप जिनके, क्रम से जिनने एक एक प्राणी का ग्रास (संहार) कर लिया है। संपूर्ण अंगों में जिनके साँप सुलभ हैं। एक बार ही जो संपूर्ण संसार के ग्रास करने में तत्पर हैं, काल से डरा हुआ मैं महाकाल के शरण जाता हूँ। आहा, कैसा तत्त्वज्ञानी हूँ? (यहाँ भी वाच्यनिन्दा से पर्यवसान में स्तुति)।।125।।

जिन स्वामी का स्फटिक का पर्वत (कैलाश) शृङ्ग (शिखर) वाला है। जिनका पिनाक (धनुष) शृङ्ग से बना है। और स्वामी का प्यारा यह (बैल भी शृङ्ग वाला है, (यों सब 'शृङ्गी' है, संस्कृत में 'शृङ्ग' का अर्थ 'गर्व' (अभिमान) भी है। अतएव अर्थ हुआ कि जिस स्वामी के पास रहने वाला संपूर्ण परिकर ही गर्वित है) वहाँ स्वभाव से ही सरल, थोडा बोलने वाला, अप्रौढ (होशियार नहीं) तथा डरा हुआ मैं सेवा के योग्य समय की प्रार्थना करता हूँ, कितना बुद्धिमान् हूँ (यहाँ भी वाच्यनिन्दा से पर्यवसान स्तुति)।।126।।

हे भव (शंकर)! विपत्तिरूपी गरमी की भयंकर ऊमस (ऊष्मा) से तपे हुए चित्त में कहीं भी शान्ति नहीं। धन के नाश होने पर और पूर्वजन्म के) दुश्चरित्र के यहाँ फलने पर (अर्थात् इस जन्म में यहाँ उस कुत्सित आचरण का फल भोगते हुए)। इस ही लिये अत्यन्त अन्धे हुए, अतएव दीर्घ दुःखरूपी अन्धे कुए में गिरे मुझको उद्धार करने के लिये दया के समुद्र आप को छोड़कर और कौन समर्थ है?।।127।।

जिनको स्वल्पधन के लेश की प्रार्थना रूपी अनर्थ की यह जीर्ण कन्था (गूदडी), आनन्द देने वाला दूसरा स्थान प्राप्त करने को मार्ग नहीं देती (अर्थात् रोकती है), हे उदार! आशा रूपी पाश से व्याकुल चित्तवाले (अतएव) आपके कृपापात्र, उन मनुष्यों को चाही हुई (अर्थात् कृपा से स्निग्ध) दृष्टि दीजिये।।128

हे प्रभु! जरा मुख ऊँचा करिये। मेरे प्रति अभयदान की घोषणा को ऊँचे स्वर से घोषित करिये। निर्मल कृपा दृष्टि दीजिये। इस निरुपाय जन का आश्वासन करिये। अधिक क्या कहूँ, यह रोषयुक्त दृष्टिवाला गर्दन उठायें काल आ गया। इसलिये घने अभिमान से अलस न होइये।।129।।

हे प्रभु! बार बार क्या कहूँ। नागपाश को हाथ में लिये क्रुद्ध यमदूत को सामने आता हुआ सा देखते हुए मेरा धैर्य विचलित होता है। चाल स्खलित होती है (बिगड़ती है), शरीर काँपता है। आसन डिगता है (शय्या जलती है) चैन दूर होता है। स्मरण लुप्त होता है।।130।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जिस भयंकर पीडा के प्रभाव से दुर्गम स्थान भी सुगम हो जाता है। दूर पास होता है, तथा मरु (निर्जल) भूमि भी जिसके प्रभाव से क्रीडा योग्य उपवन (बाग) बन जाता है। जिस पीडा की करामात से बैरी भी मित्र बन जाता है इस तरह इस भूमि में जिस पीडा की इस तरह की अप्रतिहत (किसी से नहीं रुकी) शक्ति है उस पीडा ने मुझ को आपके प्रति क्रन्दन करने के लिये प्रेरणा की। अब आपकी कृपा भी मेरे आश्वासन के लिये आपको प्रेरणा करो (यह प्रार्थना है)।।131।।

हे स्वामी! आपके द्वार में लक्ष्मी और सरस्वती दोनों क्रोध छोडकर रहती हैं। (किन्तु) इस लक्ष्मी ने आपकी चरण चौकी के नीचे सदा स्थिति बनाये हुए मुझको, थोडा सा जो सरस्वती का परिचय है उसके द्वेष से छोड रखा है। इस लिये जैसे समुद्र हृदय में बडवानल को धारण करता है उस तरह मैं अपने हृदय में दुःख रूपी अग्नि धारण कर रहा हूँ।।132।।

हे नाथ! प्राथमिक अवस्था (बाल्यावस्था) पशु की तरह विवेकशून्य होकर बिताई। तरुण अवस्था प्रेम से कुपित हुई स्त्रियों को बार बार मनाने में नष्ट कर दी। अब इस समय बुढापे से जर्जर हुए मेरे कान के पास जब तक यह मृत्यु न दौड आवै तब तक आपके चरणों में पड़े इस दीन की रक्षा करिये।।133।।

अत्यन्तगर्वयुक्त इन्द्रिय समूह से जब तक मेरी आकृति (शरीर) सुन्दर रही तब तक मोह रूपी अन्धकार अन्धे हुए मैंने सामने स्थित भी खड्डा नहीं देखा। अब अकस्मात् गिर जाने के कारण दीनमति हुआ मैं किस की प्रार्थना करूँ, किसका आश्रय लूँ? क्या मैं उठ सकता हूँ? क्या करूँ? अब कृपा करिये, हितमार्ग में नहीं चलने वाले इस आत्मद्रोही की रक्षा करिये।।134।।

जन्म से अन्धा हो और ऊबट मार्ग में किसी का हाथ पकड़े बिना यदि खड्डे में गिरकर विपत्ति (मृत्यु) में पड़ गया हो तो इसमें इसका क्या अपराध? (किन्तु) मुझको बार बार धिक्कार है कि शास्त्ररूपी नेत्र होने पर, बुद्धिरूपी अच्छा दीपक होने पर, तथा दीन पर स्नेह करने वाले स्वामी के मार्ग दिखाने पर भी जो मेरे सरीखा मूर्ख खड्डे में पड़ता ही है।।135।।

अत्यन्त संकटपूर्ण मार्ग में जहाँ रक्षक कोई नहीं, प्रहार करने के लिये मारने वाले जहाँ सजग हो रहे हों वहाँ रक्षा के लिये और क्या किया जा सकता है। जहाँ दया के सागर (त्रिलोकी की रक्षा करने में प्रवीण आप प्रभु मौजुद हों, वहाँ हिंसक (काम-क्रोधादि) वैरी शरणागत पर प्रहार करैं तो यह पराजय किसकी निन्दा सूचित करता है।।136।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

उस सामर्थ्यवान् से भी क्या प्रयोजन जिसका मन करुणा रूपी अमृत से सिँचा नहीं। और उस कृपालु से भी क्या, जो पराये का हित करने में समर्थ नहीं। हे प्रभु! आपकी शक्ति और दया दौनों है। और यह यम के भय से डरा हुआ दीन मनुष्य निःशरण होकर आपके आगे आया है। इसके आगे स्वामी स्वयं जान लेंगे।।137।।

हे स्वामी! आपके हस्तकमल में सदा रहने वाली इस 'झारी' (रामझारा, राजस्थानी, कलश) में ('देवं सुधाकलश-सोम-करं', यह ध्यान है) स्वादु और शीतल यह अमृत संसारियों के दाह को दूर करने के लिये सुलभ आपके संमुख है। स्वर्गनदी (गङ्गा) के प्रवाह में (जो आप के जटाजूट में है) स्वादु, शीतल अमृत भवजन्य दाह को दूर करने के लिये सुलभ है। आपके संपूर्ण कृपारस में भी वह स्वादु, शीतल अमृत भवदाह दूर करने वाला सुलभ है। एवं पूर्ण विकास युक्त इस हिमकिरण (चन्द्रमा) में भी वह स्वादु शीतल अमृत सुलभ है। और यह अर्थी आपके सामने आया हुआ है। इसके आगे स्वामी स्वयं जान लेंगे।।138।।

यह (जन्म-जरा-मरणादि की) पीडा जब तक किसी दयालु हृदय सहृदय के आगे प्रकट नहीं की जाय तक तक बाण की तरह हृदय में खटकती है। किसी कठोरहृदय दुष्ट के आगे प्रकट की जाय तो केवल अपनी लघुता (तुच्छता) प्रकट होती है। इसलिये सर्व के अन्तर्यामी, कृपारूपी अमृत के समुद्र, स्वामी आपके आगे यह प्रकट की है। जो उचित था वह मैंने कर दिया। इसके आगे स्वामी स्वयं जान लेंगे।।139।।

देवसभा में देवगण (ब्रह्मा-विष्णु-आदि) प्रसन्न हों। देवसभा (अथवा-पण्डितसभा) में निर्दोष शास्त्रज्ञान का लाभ हो। मिथ्यादृष्टि (अज्ञान) न हो, निष्कपट तथा दीर्घकाल से 'भोग' (इस लोक तथा परलोक का उपभोग) भी हो। सब पण्डित लोग भी अनुवृत्ति (अनुमति संमति) करते हो। यह सब होने पर भी न्याय से मुक्ति (सब तरह दुःख से निवृत्ति) नहीं होती। जब तक विश्व के साक्षी ज्ञानसागर आप श्री ईश्वर विचार नहीं करते। यहाँ अदालत के 'न्याय' का रूपक है- लेख्यपत्र (लिखावट) साफ साफ हो। पण्डित सभा में 'शुचि' (न्यायानुकूल) 'आगम' (स्वत्व के कारण- राजा से प्रतिग्रह मिलना, क्रय-आदि) हो। 'दृष्टि' अर्थात् साक्षी भी मिथ्या न होकर सच्ची हो। दीर्घकाल से, अन्य किसी के द्वारा नहीं भोगा (रोका) ऐसा 'भोग' (भुक्ति, 'अमलदरामद') भी हो। अदालत के सब सदस्य (सभ्य) भी संमत हों तौ भी न्याय के अनुसार मुक्ति नहीं होती, जब तक ईश्वर विचार न हो।।140।।

Pandit Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हे ईश्वर! रोगी चरणवाला (लूला लँगडा) घुटनों से रेंगकर कौन सुमेरु पर चढता है। उछल कर आकाश से चन्द्रमण्डल को कौन लेता है। मूर्खवचनों से प्रभु का प्रसाद (अनुग्रह) कौन प्राप्त कर सकता है। यह अपने मन में विचार करता हुआ भी मैं इस पीडा (जन्म-जरा-मरणादि, तथा सांसारिक दुःखों) से इस तरह 'वाचाल' (अधिक, कटु बोलने वाला) बना हूँ (पीडा के कारण आपसे कटु तथा अधिक प्रार्थना करने को बाध्य हुआ हूँ)।।141।।

पौंडे (साँठे, गन्ने) की बनाई उत्तम शर्करा भी बहुत काल तक चबाई जाय तौ गले में कटुता पैदा करती है। अन्दर बार बार डुबकी लेने से आकाश नदी (गङ्गा) भी उद्वेग (घबराहट, नीरसता) पैदा करती है। सुन्दर स्त्री भी आसक्तिपूर्वक बहुत काल तक सेवन (उपभोग) की गई हो तो नीरसता पैदा करती है। मीठी कथा (कहानी) भी यदि लंबी हो तो 'विश्रद्धा' (नीरसता) पैदा करती है, इसलिये मैं यहीं स्तुति का विश्राम करता हूँ।।142।।

इस तरह निरन्तर होने वाले अनन्त चिन्ताशत (सैकडों चिन्ताओं) से बड़ा लम्बा जो व्यामोह (मन की मूढता चक्कर) उससे पैदा होने वाले दुःख से खिन्न (उदास) मनवाले मैंने जो दीन (दयापूर्ण) आक्रन्दन (रोना, कल्पना) किया, हृदयनिधान! उसको अपने हृदय में स्थान दें, क्योंकि आप सबके अन्तरात्मा हैं। आप भीतर की सब जानते हैं। इसलिये शरणागत इस प्रार्थी के इस अतिक्रम (ज्यादती प्रौढता से इस तरह बोलने) को क्षमा करने के योग्य हैं।।143।।

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज एकादश शिवचरणधृत।।

दीनाक्रन्दन एकादश स्तोत्र

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तमःशमनाख्य द्वादश स्तोत्र

(१२)

❀❀❀

मख अर्थात् (अग्निष्टोमादि यागों) के द्वारा जो सेवनीय होगा वह 'न-यज्ञसेव्यः' यज्ञों के द्वारा नहीं सेवनीय कैसे होगा? यह विरोध। किन्तु जो श्रीशम्भु यज्ञों (यागों) के द्वारा यजनीय (सेवनीय) हैं वह नयज्ञ (नीतिज्ञ, नीतिशास्त्र को जानने वाले) विद्वानों द्वारा सेवनीय हैं, यों पदच्छेद से विरोध परिहार। जो निरामय अर्थात् 'आमय' (रोग) रहित है, वह प्रसिद्ध है 'उग्र' (भयंकर) 'शूल' शूलनामक रोग जिसके ऐसा कैसे होगा? किन्तु प्रसिद्ध है (शत्रुसंहार के लिये) 'शूल' (त्रिशूल) जिनका, ऐसा वास्तव अर्थ है। जिसको वेद प्रिय हैं वह अश्रुतिवल्लभ' श्रुतियों (वेदों) का नहीं वल्लभ (प्रिय) कैसे होगा? किन्तु 'अश्रुतयः' 'श्रुति' कर्णरहित (सर्प) है, 'वल्लभ' (प्रिय) जिसको, ऐसा अर्थ करने से उसका परिहार होता है। अतएव (अचिन्त्य) नहीं बुद्धिगम्य है सामर्थ्य जिनका ऐसे श्रीशम्भु का मैं आश्रय लेता हूँ।।1।।

हे प्रभु! स्तुति करने योग्य तथा स्तुति करने वाला एवं स्वयं 'स्तुति' रूप सब कुछ आप ही हो। आपको छोडकर और कुछ नहीं (अर्थात् कर्ता करण कार्यरूप, स्थूल, सूक्ष्म, ब्रह्मादि सब कुछ प्रपञ्च आप ही हो। इस 'अद्वैत' को छोडकर और कुछ नहीं है। मैं (स्तुतिकर्ता) स्तुति स्तोत्रों के द्वारा, आपकी स्तुति करता हूँ, यह कर्ता-करण-और कर्म की 'पृथक्' (अलग) बुद्धि होना अविद्या अर्थात् मिथ्याज्ञान है।।2।।

ऐसा होने पर भी मैं आपकी बार बार स्तुति करता हूँ क्योंकि अविद्या का नाश अविद्या से होता है। जैसे **'विषस्य विषमौषधम्'** जहर की काट के लिये जहर देना। 'मुकुर' अर्थात् काच के ऊपर चढी हुई मट्टी को साफ करने के लिये मट्टी के सिवाय दूसरा उपाय नहीं, मट्टी लगे हाथ से ही काच की मट्टी दूर की जाती है।।3।।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

अविद्यानामक अत्यन्त उग्र अज्ञान अन्धकार के फैलने पर भी मैं 'भव' अर्थात् इस संसार में आसक्त बुद्धि हो रहा हूँ। ऐसे ही हे प्रभु! उस तम अर्थात् अज्ञान के नष्ट हो जाने पर उत्पन्न हुआ है अवबोध (तत्त्वज्ञान) जिसको ऐसा मैं 'भवासक्तमति' भव अर्थात् श्रीशंकर (आप) में आसक्तचित्त होऊं (यही मेरी प्रार्थना है।।4।।

हे भगवन्! देवता और दैत्यों सहित संपूर्ण जगत् आपके वशीभूत है, और आप कृपा के वशीभूत हैं (जिधर कृपा हो जाती है उधर ही आपको झुकना पड़ता है)। और वह कृपा भक्तों की दीनता के वशीभूत है। और वह दीनता मुझको बिना प्रयत्न, स्वभाव से ही मिली हुई है।।5।।

मैं जानता हूं कि आप मेरी पीडा दूर करने में कभी शिथिलता नहीं करते, तौ भी मेरे पुराने किये काम, जिनके शुभ वा अशुभ होने में संदेह है, वे ही आपके अनुग्रह होने में अर्गला (रोकने वाले) न हो जाँय, इसलिये आपसे विज्ञापना (अर्ज़) की जाती है।।6।।

हे चन्द्रमौलि! सांसारिक पीडा दूर करने में हित, सच्चा, जगत् के उद्धार का भार उठाने में समर्थ, भक्तों पर स्नेहयुक्त, मनोहर अक्षरवाला, अतएव चित्त को हरण करने वाला, विलास सहित तथा प्रसादगुणयुक्त वचन प्रकाशित करके इस शरणागत को आश्वासन करिये।।7।।

हे प्रभु! आरम्भ में मधुर किन्तु परिणाम में रूखे इन सांसारिक विषयों का जो हम सेवन करते हैं वह शहद से लिपटे जहर को खाते हैं। अन्न (चून) की गोली में छुपे मच्छी के पकडने को बेधने के काँटे को निगलते हैं। भीतर जिसके भयंकर कंटक समूह लगा है ऐसे गन्ने (साँठे, पौंडे) के टुकड़े को खा रहे हैं। हे स्वामी! यह पूर्वोक्त सब जानते हुए भी इस विषय में हम क्या करैं। यह बिचारी जड बुद्धि विषयों में आसक्ति को नहीं छोडती।।8, 9।।

भगवान् शंकर की भक्ति करने वाले साधुजन और पण्डित मोती के हारों की तरह ईश (भगवान् शंकर) के हृदय में कैसे नहीं स्थान पाते हैं- अर्थात् अवश्य स्थान पाते हैं। सज्जन कैसे है- 'मुक्त' अर्थात् छूट गये है सब 'आमय' (सांसारिक रोग) जिनके, बड़े हैं विद्वत्ता-कविता-चातुर्यादि गुण जिनके। अच्छे आचरणवाले, सदा निर्मलता (निर्दोषता) को धारण करते हुए तथा पहले किये हुए सुकृत (पुण्य) फल की संपत्ति को भोगते हुए।

हार भी कैसे है कि 'मुक्तामय' मोतियों से भरे हुए, लम्बे हैं 'गुण' डोरे

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जिनमें, 'सुवृत्त' गोल, 'फलों' (मुक्ताफलों) की 'ऋद्धि' (वैभव) को धारण करने वाले तथा 'भक्ति' गूँथने की रचना चातुरी से युक्त।।10।।

हे भगवन्! आपके अनुग्रह से मैं आपकी तरह कब होऊंगा। आप कैसे हैं- ''गुहाश्रितः' 'गुह' स्वामिकार्तिक के द्वारा आश्रित सेवित। मैं कैसा हूँ 'गुहा' (तपस्या के लिये गुफा में आश्रित) आप कैसे हैं- धर्म (वृषभ नन्दी) में है प्रीति जिनको। मैं कैसा कि धर्माचरण में प्रीति जिसको। आप कैसे है कि -गिरीश (गिरि में शयन, निवास करने वाले) इस तरह की प्रसिद्धि को धारण करने वाले। मैं कैसा- गिरीश अर्थात् शंकर 'प्रथा' पद्धति-मार्ग को अनुसरण करता हुआ। अथवा 'गिरीश' गिरा वाणियों का जो स्वामी (वाणीपति) उनकी पद्धति को अनुगमन करने वाला। आप कैसे- 'सती' पार्वती में स्थापन की है प्रीति जिनने। मैं 'सत्य' सत्य बोलने आदि में लगाई है प्रीति जिसने। आप है 'अहीनभक्ति' 'अहीन' सर्पो में 'इन' श्रेष्ठ जो 'वासुकि' आदि, उनसे है 'भक्ति' रचना-शोभा जिनकी। मैं कैसा- नहीं 'हीन' हुई है भक्ति आपके विषय का अनुराग जिसका, ऐसा।।11।।

जिस एक हरि (विष्णु) का आराधन करके भक्तजन महान् 'अरि' (वैरियों) के समागम से निःसंदेह बचते हैं। हे उग्र (शंकर)! आपके प्रसाद से उस हरि (विष्णु) को 'महारिसंगम' (महान् अरि बैरी का सामना) कैसे हुआ? (महान् बैरियों का संघर्ष रुकना चाहिये, वह उल्टा कैसे हो गया? यह (विरोध)। श्लेष से अर्थ होता है कि 'महान्' बड़े बड़े हैं 'अरा' (चक्र के आरे) जिसमें ऐसा 'महारि' महान् अरे वाला 'चक्र-सुदर्शन', उसका संगम आपके अनुग्रह से हुआ। ''शंकर ने प्रसन्न हो कर विष्णु को सुदर्शन चक्र दिया, यह आगम प्रसिद्ध है।।12।।

हे प्रभु! आप में यह मेरा 'ग्रह' आग्रह, आपमें यह आसक्ति फिर दुर्लभ है (अभी जो भक्ति उमडी है वह फिर जाने रहेगी कि नहीं)। और इस समय यह 'सरस्वती' स्तुति के योग्य वाणी मेरे मुख में आई हुई है। अतएव इस 'क्षेत्र' अर्थात् मुझको अत्यन्त पवित्र कर दें। उचित इस प्रार्थी के मौजूद होने पर भी क्यों विलम्ब करते हैं? दूसरा अर्थ होता है कि 'ग्रह' अर्थात् 'उपराग' (ग्रहण का समय) सुदुर्लभ होता है। बार बार नहीं आता। और संमुख में यह सरस्वती नदी भी संनिहित है। ग्रहण के समय तीर्थ स्थान के योग्य यह सरस्वती नदी भी संमुख में है। और यह 'कुरुक्षेत्र' ग्रहण के समय अत्यन्त पवित्र गिना जाता है। उचित इस अर्थ के समय क्यों विलम्ब करते हो। मेरे सदृश दीन का उद्धार ग्रहण के

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

समान पुण्यजनक है', यह आशय है। 'कुरु क्षेत्रम्' दो पद हैं। तथा दूसरे अर्थ में 'कुरुक्षेत्रम्' एक पद भी हो जाता है।।13।।

सौन्दर्ययुक्त तथा उत्तमभाग्यवाली यह सरस्वती (वाणी) किसको चमत्कार (आश्चर्यजनक प्रभाव) नहीं देती? जो, जीते हैं क्लेश (अविद्या आदि पाँच) जिनने तथा स्थिर है चर्म वस्त्र जिनका अर्थात् सदा चर्म धारण करने वाले तथा अस्थि (कंकाल) ओं से शोभित होने वाले, ऐसे जगत्प्रभु शंकर को भी संमुख उपस्थित कर देती है (सर्वसमर्थ शंकर को भी संमुख उपस्थित कर देने वाली सरस्वती सब को आश्चर्य चमत्कार देती है)। यहाँ शब्दों से जो 'सौभाग्यवती' है वह 'असौभाग्यवती' कैसे? तथा जो 'स्थिराजिन' हैं वह 'अस्थिराजिन' कैसे यह 'विरोध'। किन्तु श्लेष से 'असौ' भाग्यवती तथा 'अस्थि' 'राजिन्' (शोभित होने वाला) यह दूसरा अर्थ होने से विरोध परिहार। विरोधाऽलङ्कार।।14।।

जो प्रभु प्रसन्न होकर तथा कुपित होकर भी प्राणियों को एकसा बना देते हैं प्रसन्न होकर देहियों को कैसा कर देते हैं कि- नहीं छोड़ी है अत्युत्तम दान की संपत्ति जिनने (अर्थात् उत्तमोत्तम संपत्ति को भी दान में दे डालते हैं, बाकी नहीं रखते), 'सदा अखिलज्ञाः' सदा सब कुछ जानने वाले। जो कभी हीनचित्त नहीं होते अर्थात् सदा उन्नत मनवाले। तथा जो कभी काल (मृत्यु) की भीति (भय) से बाधित (उदास-खिन्न) नहीं होते। कुपित होकर कैसा कर देते हैं- अनुज्झित' नहीं छोडा है 'अनुत्त' किसी से भी अप्रेरित 'मद' (नशा आदि का व्यसन) जिनने। अर्थात् सदा सब तरह के व्यसनों से युक्त। 'असंपदः' संपत्तिरहित (दरिद्र)। सदा सब तरह के ज्ञान से रहित चित्तवाले। अकाल (असमय, बेमौके ही) डरने वाले। जिस प्रभु के नेत्र में- विधु (चन्द्र), जिसने कि चिरकाल तक 'वन' जल के बीच स्थान किया (अर्थात् समुद्र में रहा)। तथा जिसकी कुरङ्ग (सुस्से) के साथ 'सौहार्द' मैत्री बँधी है (प्रसिद्धि है कि चन्द्रमा में 'शश' बैठा है, इस ही लिये वह 'शशाङ्क' कहलाता है)। तथा जो रवि (सूर्य) परों (दूसरों) के 'स्वाप' (शयन अर्थात् निद्रा को हरण करता है) सबको प्रातः जगा देता है। ऐसे चन्द्र और सूर्य दोनों की ही जिस प्रभु की दृष्टि में समता है। अर्थात् सूर्य और चन्द्र जिनके नेत्र हैं। यहाँ दूसरा अर्थ होता है कि- जो 'विधु' (विष्णु-विष्णु के अवतार, राम) कुरङ्ग अर्थात् हरिणों के साथ मैत्री रख कर चिरकाल अर्थात् चौदह वर्ष तक वनमध्य में स्थान कर चुके हैं। तथा 'यः' जो 'परस्वापहरः', 'पर'अर्थात् दूसरे के 'स्व' धन का अपहरण करता है- इन दोनों की जिसकी दृष्टि में समानता है (अर्थात् जो श्रीरामचन्द्र सदृश उन्नत, और पराये धन को हरण करने वाले एक प्रावाहिक पुरुष, दोनों को समान देखते हैं, निःसङ्ग,

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

समदर्शी हैं) हे प्रभु! जो आप सदा दया के 'विधेय' अर्थात् वशीभूत हैं। (दयालु) हैं, तथा पूर्वोक्त प्रकार से जो समान दृष्टि रखने वाले हैं, ऐसे आपका हमारे अति अनादर (तिरस्कार) कैसे हो सकता है? यद्यपि हम लोगों ने अपनी आत्मा को सज्जनों से असेवनीय (नहीं जाने योग्य) असत् मार्ग में लगा रखी है तौ भी समदृष्टि रखने वाले दयानिधान आपकी हम सरीखे दया के पात्रों पर दया ही हो सकती है, अनादर नहीं।।15, 16, 17।।

हे प्रभु! आपका एकाग्र मन से ध्यान करने के कारण, प्रसन्न आप को संमुख देखकर-आपके ललाटनेत्रस्थित अग्नि से उत्पन्न हुए धूम से ही मानों नेत्रों में आँसू युक्त, दक्षिण नेत्र में स्थित सूर्य के कान्तिसमूह से ही मानों प्रस्वेद युक्त, आपके किरीट में स्थित जो चन्द्रखण्ड उसके किरण समूह से ही मानों घने उठ आये हैं रोमाञ्च जिसके ऐसा हिम (बर्फ) समूहः के समान शीतल, आपके मस्तक की गङ्गा के जल से ही मानों 'दन्तवीणा' युक्त (शीत से कड़कड़ाते दाँतवाला), आपके बाजूबन्द में फड़कते हुए जो सर्प उनके फूत्कार पवन से ही मानों कम्पित शरीरवाला, आनन्दरूपी अमृत से आप्लावित (स्नान किया हुआ) मैं होऊं (यह प्रार्थना है, इसही लिये प्रार्थना में 'लिङ्') आपके दर्शन से अश्रु, स्वेद, रोमाञ्च, जडता, कम्प, ये सात्त्विकभाव हो जाँये, आनन्द से यह मेरी परिस्थिति हो जाय, यह प्रार्थना है।।18, 19, 20।।

इस चन्दन वृक्ष ने ''मैं प्रभु का प्रिय हो जाऊँ'' इस उत्कण्ठा से कुल्हाड़ी से काटने की पीडा सही। इस ही लिये श्रीपार्वतीपति (शंकर) की समानता इसको मिली है कि सर्पों से इसका भी कण्ठ (तने से ऊपर का भाग) आलिङ्गित है।।21।।

सहन की है नखों के अग्रभाग से तोडने की पीडा जिनने ऐसे इन 'सुमनस्' (पुष्पों) ने जो स्वामी की प्रीति उत्पन्न की (अर्थात् पूजा से उनको प्रसन्न किया) यही इनका 'सुमनस्त्व' (सुन्दर मनवाला होना, अर्थात् उत्तमता) है। 'अगुरु' (धूप) ने अग्नि में गिरकर भी स्वामी की सेवा का अभिलाष नहीं छोडा यह उसका गौरव, बडप्पन है। यद्यपि इसका 'अगुरु' (नहीं गुरु) यह नाम है, किन्तु काम से इसने गुरुता प्राप्त कर ली है।।22।।

हे स्वामी! पहले अत्यन्त सीधापन दिखाकर धीरे धीरे अन्दर प्रवेश पाकर बाण का तरह ये दुष्ट लोग वनों के अन्दर विद्वानों (अच्छे आदमियों) का जो मर्म में वेधन (पीड़ा) नहीं करते यह आपके चरण कमल के रज का अनुग्रह है। तीर पहले सीधे रहते हैं, फिर भीतर जब पहुँच जाते हैं तब तिरछे रहने के

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कारण मर्म को बेधते हैं। इस ही तरह दुष्टलोग वन में रहनेवाले तापसों को जो पीडा नहीं कर सकते, यह आपका ही प्रभाव है।।23।।

हे स्वामी! नीचजनों के द्वारा भी गीतों में गाया हुआ आपका नाम भक्तों के हृदय में जो आनन्द देता है, वह आनन्द अङ्गों में नहीं माता हुआ रोमाञ्च के व्याज से बाहर निकलता है।।24।।

स्वेद, कम्प, रोमाञ्च और वाणी में गद्गदपना इत्यादि अवस्था अन्त समय में आपके दर्शन से अमन्द आनन्द धारण करने वाले पुण्यवानों की हुआ करती है किन्तु पापियों की यही स्वेद, कम्पादि अवस्था यमराज के भय से होती है।।25।।

हे भव! आपके चरणारविन्द की सेवा के अभिलाषी धन्यभाग्य भक्त, जीवन के अन्तिम क्षण में आपके गण बनकर अपने कण्ठ में फणीन्द्र का फण धारण करते हैं। और पापी लोग अपने कण्ठ में फणीन्द्र का फण तो धारण करते हैं किन्तु यमराज के करमध्य के कोने से खेंचा गया। अर्थात् उनके कण्ठ में नागपाश यमराज का पड़ता है।।26।।

हे देव! दयालु जो आप भीतों को अभयदान करने में काल का नाश (समय का अतिक्रम-बिताना) एक क्षण भी सहन नहीं कर सकते उन्हीं आप को श्वेत राजा को अभय देते समय काल (मृत्यु) के नाश का सहन कैसे हुआ? (काल का अर्थ समय और मृत्यु दोनों हैं। पहले अर्द्ध वाक्य में समय, और दूसरे में मृत्यु अर्थ होता है। जो कालनाश करने में अक्षम है उन्हीं को कालनाश करना पड़ा, यही श्लेष से अर्थ हुआ। विरोध अथवा असंगति।।27।।

हे देव! कृपारूपी अमृत से कोमल आपका दृष्टिपात कहीं भी काम (अर्थात् अभिलाष, मनोरथ) का भङ्ग नहीं कर सकता। हे महेश! प्रचण्ड रोष से भयंकर हुए उसही इस आपके दृष्टिपात ने पहले काम (कामदेव) के भङ्ग (नाश) को कैसे स्वीकार किया? (यहाँ भी – 'जो कामभङ्ग का आङ्गीकार नहीं करता वही कामभङ्ग करता है' यह आश्चर्य है। काम का अर्थ अभिलाष और कामदेव दोनों हैं। यहाँ भी वही अलंकार।।28।।

सुमेरु, मन्दर प्रभृति पर्वत अत्यन्त ऊंचे अपने मस्तकों (शिखरों) से इतना बड़ा गर्व (अभिमान) क्यों धारण करते हैं। चन्द्रमा जिनका आभरण है ऐसे शम्भु के प्रणाम के लिये नीचा हुआ यह मेरा मस्तक ही धन्य है।।29।।

हे भव! यह मस्तक और अंगों की अपेक्षा अतिशय सूचन करने वाला

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

'उत्तमाङ्ग' (उत्तम अंग, मस्तक) यह नाम धाारण करता है, यह इस लिये नमस्कार करने योग्य है अर्थात् प्रशंसनीय है। क्योंकि यह आपके चरणारविन्द के तल में प्रणाम में तत्पर है (प्रणाम के कारण उत्तमाङ्गता है अन्यथा और अंगों की अपेक्षा कोई विशेषता नहीं)।।30।।

हे स्वामी! आप 'श्रीघन' (परमैश्वर्य-मोक्षरूपी लक्ष्मी से घने-भरे पूरे) हैं, तौ भी 'असुगत' प्राणियों के प्राणतक पहुँचे हुए हैं, प्राणस्वरूप हैं। जो 'श्रीघन' (बुद्धरूप) हैं वह 'सुगत' नामधारी हाते हैं, किन्तु आप श्रीघन होकर भी 'असुगत' हैं, यह विरोध। किन्तु श्लेष से दूसरा अर्थ होने से परिहार। आप उमा (श्रीपार्वती) के 'धव' (पति) हैं, तौ भी 'जनार्दन' नहीं (जनों को अर्दन पीडन नहीं करते)। जो माधव है वह 'जनार्दन' (जना, माया का अर्दन, विष्णु) होता है। आप माधव होते हुए भी जनार्दन नहीं, यह विरोध। किन्तु 'किम्- उमाधवः' यों पदच्छेद से उमाधव अर्थ निकाल कर उसका परिहार। हे स्वामी! आप 'गजारि' (गजासुर के बैरी) हैं तौ भी 'नगजाप्रिय' (नग-नर्वत-पुत्री पार्वती के प्रिय हैं। जो गज का 'अरि' बैरी है, वह 'नगजाऽप्रिय' अर्थात् गज का अप्रिय ही होता है, प्रिय नहीं। किन्तु श्लेष से 'नगजा' पार्वती यह अर्थ होने से उसका परिहार। अथवा- यह सब कुछ नहीं, सर्वसमर्थ आपकी यह सर्वतन्त्र स्वतन्त्रता है।।31।।

हे स्वामी! प्रभात समय के समान अरुण (लाल) कानित से मन्द कर दिया है 'शीतदीधिति' (चन्द्र) जिसने, तथा प्रकाशित है 'अलिक' ललाट जिसमें, ऐसा आपका भाल का लोचन देखकर मेरा भयंकर यह तम (अज्ञान) कब नाश को प्राप्त होगा? प्रभात काल भी कैसा है कि- 'अरुण' (अर्थात् सूर्य) की द्युति से ग्लपित (मन्द) पड गया है चन्द्रमा जिसमें। और प्रकटीकृत हैं 'अलि' जिसमें ऐसे हैं कमल जिसमें। अर्थात् प्रभात होते ही रात्रि के कमल में बन्द हुए भौंरे प्रकट हो जाते हैं। प्रभात में 'तम' (अन्धकार) नाश हो जाता है। और मेरा तम (अज्ञान) कब नाश होगा। यहाँ भी श्लेषमूलक उपमा।।32।।

पशुपतिसेवाकुञ्ज मञ्जुनाथकरकञ्जकृत।
कुसुमाञ्जलिसुमपुञ्ज यह द्वादश शिवचरणधृत।।

जगद्धरकृत स्तुतिकुसुमाञ्जलि स्तोत्र की देवर्षि भट्टश्रीमथुरानाथशास्त्री 'मञ्जुनाथ' कृत हिन्दी टीका समाप्त।

O

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुसुमाञ्जलि की यह हिन्दी टीका

उमापति आशुतोष भगवान् शिव की स्तुति में लिखे गए शतशः काव्य, शतकों, [illegible] आदि [illegible] ग्रन्थों में लिखे गए शतशः स्तोत्र सहस्राब्दियों से इस देश में विख्यात हैं। रावणकृत शिवताण्डव स्तोत्र और पुष्पदन्त कृत महिम्नःस्तोत्र तो जन-जन के कण्ठहार बन गए हैं किन्तु विद्वज्जनों में जगद्धरकृत स्तुतिकुसुमाञ्जलि की प्रतिष्ठा अनेक कारणों से पिछली सदियों में बनी रही। प्रमुख कारण तो संभवतः यह रहा कि इसमें उनका वरद, आशुतोष, सौम्य और कृपालु स्वरूप प्रमुखतः प्रतिफलित रहा, दूसरे उसकी शैली सरस, प्रसादगुणयुक्त और भावप्रवण है जो तत्काल हृदय को आकर्षित कर देती है। यही कारण रहा कि उत्तर भारत में लिखे गये यह स्तोत्र दक्षिण भारत के अनेक विद्वानों को प्रायः कण्ठस्थ था, शैव मनीषी इसका पाठ कर आह्लादित होते थे।

आधुनिक संस्कृत के युगपुरुष, प्रमुख पत्रकार, विद्वत्प्रवर कविशिरोमणि भट्ट मथुरानाथ शास्त्रीजी ने अपने ग्रन्थ जयपुरवैभवम् में लिखा है कि उनके गुरु वैयाकरणमूर्धन्य, [illegible] शास्त्री, महाराजा संस्कृत कालेज जयपुर के प्रधानाचार्य [illegible] पं. लक्ष्मीनाथ शास्त्री दक्षिण भारत के शीर्षस्थ विद्वान् थे किन्तु [illegible] स्तुतिकुसुमाञ्जलि के पद्यों को सस्वर गाते हुए भावविभोर हो जाते थे।

[illegible]

अस्तु। [illegible] काव्यप्रतिभा के निखार के लिए अनेक महत्त्व उसके पद्यों को कण्ठगत हो गये थे। यह मेरे पिता भट्ट मथुरानाथ शास्त्रीजी कवि स्तुतिकुसुमाञ्जलि पर अनुशीलन करते थे, कुसुमाञ्जलि के प्रारंभ से ही प्रभावित थे। बतलाते रहते थे। अस्तु, आधी सदी से भी अधिक पहले की बात है। भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई थी किन्तु रियासतों का विलय नहीं हुआ था। [illegible] हिन्दुस्तान में मिलें या पाकिस्तान में यह विचार हो रहा था। उस समय जोधपुर [illegible] ऐसी अफवाह फैल गई थी। हैदराबाद आदि रियासतों में — यह दुविधा राजवंशों में हो रही है ऐसी [illegible] इतिहास को विदित ही है। उस समय जोधपुर राजवंश रियासतों के प्रमुखों की ऐसी दुविधा इतिहास को विदित ही है। योगिराज [illegible] गुरु, स्वामी माधवानन्द जी का प्रभाव अनेक रियासतों पर था (जिनमें [illegible] यह बात प्रसिद्ध थी [illegible] अनेक राजाओं [illegible] हैं)। वे विद्वान् थे, तपस्वी थे, त्रिवेदी थे [illegible] नीति छोड़कर भारत गणराज्य में सम्मिलित होने या अपना राज्य अलग रखने की [illegible] राजस्थान की रियासतों [illegible] यह बात उन दिनों सुनाई दी थी। ये ही स्वामी माधवानन्दजी [illegible] के एकीकरण और संयुक्त राजस्थान राज्य के गठन की योजना पूरी होने के बाद

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

(२)

[illegible] राजस्थान के राज्यों का भ्रमण करते हुए जयपुर आए। यहाँ ईश्वर के [illegible] नरेश के संयोजन में अनेक संस्कृत विद्वानों से मिले। संस्कृतरत्नाकर के सम्पादक कविशिरोमणि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री से भी मिले। उनके प्रभाव से पद ही चुके थे। उसी समय उन्होंने भट्टजी से कहा कि जगद्धरकृत स्तुतिकुसुमाञ्जलि आत्मा और ईश एवं अनेक भक्ति स्तोत्र हैं किन्तु इसकी हिन्दी टीका मुझे अब तक नहीं मिली है। अतः आप यथाशीघ्र इसकी हिन्दी टीका लिखें जिसे मैं मूल सहित प्रकाशित करा सकूँ या करा दें।

स्वामी माधवानन्द जी के इस आग्रह पर भट्टजी ने १९५३ में (सरल) हिन्दीटीका लिखना आरम्भ किया। प्रन्थ विशाल था अतः कुछ समय लगना स्वाभाविक था। टीका पूरी हुई। [illegible] स्वामी भलीभाँति अनुमोदन करें इससे पूर्व ही स्वामी माधवानन्द जी का आकस्मिक ही देहावसान हो गया। तब से टीका की पाण्डुलिपि भट्टजी के संग्रह में ही रखी रही, प्रकाशित नहीं हुई। इसका कारण क्या रहा यह पूर्णतः मुझे ज्ञात नहीं है। या तो उन्हें कहीं से यह पता लगा हो कि इसकी हिन्दी व्याख्या आदि पहले छप चुकी हैं या वे अन्य कार्य लेखन, सम्पादन आदि में व्यस्त हो गए हों। इस कारण यह पाण्डुलिपि ज्यों की त्यों रखी रही।

हाल ही में भट्टजी की सम्पूर्ण ग्रन्थावली का जो प्रकाशन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने किया उसमें मेरे सहयोगी सह सम्पादक डॉ. रमाकान्त पाण्डेय (वर्तमान में संस्थान के दूरस्थशिक्षा केन्द्र के निदेशक) ने सूचित किया कि राष्ट्रपति सम्मानित पद्मश्री डॉ. रमाकान्त शुक्ल स्तुतिकुसुमाञ्जलि का सम्पादन और प्रका-शन कर रहे हैं, अतः साथ भट्टजी की यह हिन्दीटीका प्रकाशित हो यह शुक्लजी की इच्छा है। शुक्लजी स्वयं भट्टजी के प्रशंसक रहे हैं, उनके पिता विद्वद्वर ब्रह्मानन्द शुक्ल (खुर्जा निवासी) भट्टजी के प्रिय सुहृद् रहे हैं। शुक्लजी ने सोत्साह भट्टजी की इस हिन्दी टीका का प्रकाशन मूल के साथ करने का निश्चय कर मुझसे आग्रह किया कि तत्काल यह टीका उन्हें भेजी जाए। उन्होंने तत्काल स्वयं अपने प्रति-निधि डॉ. [illegible] श्रीमाली से [illegible] टीका की पाण्डुलिपि मँगवाई। यह आपके हाथों में है। इसमें सरल शैली में मूल पद्यों का आशय बतलाया गया है, उनमें जहाँ श्लेष आदि हैं उन शब्दों के सभी अर्थों को समझाया गया है। अन्त में अलंकार-निर्देश भी है। यह संक्षिप्त टीका पाठक को मूल पद्य का आशय समझने में पर्याप्त सहायता कर देती है। इसके प्रकाशन के लिए डॉ. रमाकान्त शुक्लजी को हार्दिक धन्य-वाद समर्पित है।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री
(महामहोपाध्याय, राष्ट्रपति सम्मानित)

अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रधान सम्पादक 'भारती' संस्कृत मासिक, पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा निदेशक संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार ८/८ [illegible] रोड सी-स्कीम, जयपुर ३०[illegible]

[illegible]

पद्मश्री राष्ट्रपतिसम्मानित डॉ. रमाकान्त शुक्ल
सम्पादक 'अर्वाचीनसंस्कृतम्'
रमाकान्त, ८/८ नागरिक[illegible]
[illegible] उत्तमनगर
नई दिल्ली New Delhi

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ग्रन्थसम्पादकः रमाकान्तशुक्लः

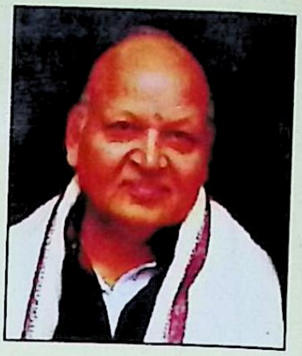

जन्मतिथिः २४-१२-१९४० ई०

जन्मस्थानम् खुर्जा (उ०प्र०)

पिता (स्व०)श्री ब्रह्मानन्द शुक्लः

माता श्रीमती प्रियम्बदा शुक्ला

शिक्षास्थले खुर्जास्थश्रीराधाकृष्णसंस्कृतकालेजः, एन.आर.ई.सी.कालेजश्च।

शिक्षा एम.ए. (हिन्दी-संस्कृतयोः) पीएच०डी० (आगरा), साहित्याचार्यः।

राष्ट्रपतिसम्मानप्रमाणपत्रेण पद्मश्री- सम्मानेन चालङ्कृतः संस्कृतविद्वान्।

उ.प्र. संस्कृत संस्थानस्य 'नारद' पुरस्कारेण सम्मानितः।

प्रकाशिता ग्रन्थाः जैनाचार्य रविषेणकृत पद्मपुराण और तुलसीकृत रामचरितमानस (उ०प्र० शासनपुरस्कृतः), उत्तररामचरितप्रियम्वदाव्याख्या (सहलेखनम्)।

प्रकाशितानि काव्यानि भाति मे भारतम्, जय भारतभूमे (उ०प्र० संस्कृत-अकादमी-पुरस्कृते काव्ये), भाति मौरीशसम् (काव्यम्), भारतजनताहम् (उ०प्र० संस्कृतसंस्थानस्य कालिदास-सम्मानेन पुरस्कृतं कवितासंकलनम्), सर्वशुक्ला (कवितासंकलनम् आशा-द्विशती, मम जननी, राजधानीरचनाः)।

नाट्यकृतयः पण्डितराजीयम् (उ०प्र० संस्कृत अकादमी-पुरस्कृतं ध्वनि-नाटकम्), अभिशापम् (उ०प्र० संस्कृत अकादमी-पुरस्कृतं ध्वनिनाटकम्), द्वयोरपि मञ्चप्रस्तुतिः नैकधा जाताः। पुरश्चरणकमलम्, नाट्यसप्तकम्, (दिल्लीसंस्कृतअकादम्या अखिलभारतीयमौलिकसाहित्यरचनापुरस्कारेण सम्मानितम्)।

सम्पादिता ग्रन्थाः संस्कृतसुधा, संस्कृगद्यगुच्छः, अर्वाचीनसंस्कृत-महाकाव्यविमर्शः (खण्डत्रयम्), अर्वाचीनसंस्कृत-साहित्य-परिचयः (खण्डद्वयम्), अर्वाचीनसंस्कृत-संग्रहः (खण्डत्रयम्), अर्वाचीनसंस्कृतम् (त्रैमासिकपत्रम्) १९७९ तः अद्यावधि (दिल्लीसंस्कृत-अकादम्या अखिलभारतीय संस्कृतपत्रकारितासम्मानेन सभाजितम्)। **अनूदितग्रन्थः**-अमीना (उपन्यासः)।

काव्यपाठः विदेशेषु मौरीशस-अमेरिका-इटली-यू०के० प्रभृतिषु देशेषु भारतवर्षस्य विविधराज्येषु च समायोजितेषु विविधसमारोहेषु किञ्च आकाशवाणी-दूरदर्शनयोः १९६३ तः अद्यावधि संस्कृतकाव्यपाठः कृतः। आकाशवाण्याः सर्वभाषा-कविसम्मेलने संस्कृतकविरूपेण अनुवादकर्तृकविरूपेण च सहभागिता कृता।

साम्प्रतिकवृत्तिः प्रधान-सम्पादकः - अर्वाचीनसंस्कृतम् (त्रैमासिकपत्रम्)।

आवासः 'रमालयः' आर-६, वाणी विहारः, नई दिल्ली-११००५९ (भारतम्) दूरभाषः ०११-२८५६१८४६।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058

email : rsks@nda.vsnl.net.in website : www.sanskrit.nic.in

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi